CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

JangamGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

8.1

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection, Equipment: Heritage Foundation, Jalgac

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सेसर कहानी भोजपुरी के

(५१ प्रतिनिधि कहानियन के संकलन)

□

संपादक

प्रो० ब्रजकिशोर

□

प्रकाशक

भोजपुरी साहित्य संस्थान

शाहगंज, महेन्द्रू, पटना-८०० ००६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Sesar Kahani Bhojpuri ke :

A representative collection of

Leading Short stories in Bhojpuri.

Editor : Prof. Brajkishore

Rs. Thirty five only

(C) प्रकाशक :

☐ संस्करण : पहिला, नवम्बर, १९८१

☐ मूल्य—पैंतीस रुपये

☐ प्रकाशक :

भोजपुरी साहित्य संस्थान,

शाहगंज, महेन्द्रू, पटना-6

☐ वितरक :

रूप प्रकाशन, महेन्द्रू, पटना-६

☐ मुद्रक :

दि प्रेस दीप्ति

भिखना पहाड़ी, पटना-4

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बतकही

'सेसर कहानी भोजपुरी के' अब तक ले छपल कहानी-संकलन में सेसर बा; एकावन कथाकारन के जमवड़ा एके जगे पहिले-पहल जुटल बा, जुड़ल बा जवन भोजपुरी कथा-साहित्य के सभी बिम्बन के साथ के एगो साफ, मनोहर चित्र उरेह रहल बा। जब कवनों मंत्र के सिद्ध करे के होला त ओकर सम्पुट जाप कइल जाला। महामंत्र गायत्री के जाप आदि आ अन्त में होला। एक पुस्तक के सम्पादन-प्रकाशन अइसन के पवित्र काम का रूप में भइल बा जवना के आरम्भ साक्षात् शिव-मूर्त्ति आचार्य शिवपूजन सहाय जी के कहानी से आ अन्त, भोजपुरी के पहिलका कथा-संग्रह जेहल क सनदि (१९४८) के सुजसी कथाकार स्वामी विमलानन्द सरस्वती जी के कहानी 'परम पद' से भइल बा। एह दुनु मनीषियन का बीच में शेष उनचास कथाकारन के चेहरा अपना छवि आ अभिव्यक्ति का सँगे जवराइल बा।

भोजपुरी कथा साहित्य के शुरूआत आजादी का बाद के घटना ह बाकिर एह तीस-पैंतीस बरिस में एकर जतरा बड़ा डेगरगर भइल बा आ लमहर दूरी तय कके आज ई साहित्य जहाँ तक बढ़ चुकल बा ऊ गौरव के बात बा। आज लगभग तीन सै कथाकार एकरा के समृद्ध बनावे खातिर मन रमवले बाड़न आ एह गंगा में तरे-तरे के धार जवरहीं गिर रहल बा। अब केहू का शोध आ समीक्षा लायक प्रचुर सामग्री इहवाँ भेंट जाई।

एह संग्रह में सभ कहानी सेसरे बा, ई दावा नइखे कइल जा सकत बाकिर कोशिश ईहे कइल गइल बा कि एमें भोजपुरी कहानी के सभ रंग झलक जाव; जे कुछ लिखा रहल बा ओकर बानगी आ जाव। कथाकार कवनो खास चउखट में फिट होके नइखन लिखले आ ना कवनो बनल-बनावल साँचा में ढरल कहानी के उजागर कइले बाड़न। एके समय में जे भिन्न-भिन्न कथाकार लिख रहल बाड़न ऊ कवनो एगो खाना में नइखे डालल जा सकत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आजादी के लड़ाई में भोजपुरी क्षेत्र के योगदान केहू से बीस रहे। 'कुन्दन सिं केसर बाई' में एह अगियाइल इलाका का बलिदान के गाथा बा। "भैरवी के साज में बनारसी जीवन के एगो ठेठ लहजा साकार हो गइल बा, शाश्वत प्रेम के गाथा अम हो गइल बा। सामाजिक कुरीतियन, अन्धविश्वास आ बिषमता के खतम करे छटपटाहट 'जेहल के सनद' से जे शुरू भइल ऊ आजु ले भोजपुरी कथाकारन के हृद के मथ रहल बा। 'हरताल', दुलहा के दहेज, अब ना, खैरा पीपर कबहुँ ना डोले परम पद आदि कहानियन में ई छटपटाहट साफ लउकी।

आजादी का कुछे साल बाद जनता में सुराज के लेके एगो क्षोभ उपजे लागल सभे सुराज के लेके आपन-आपन सपना पोसले रहे, ऊ सपना चूर-चूर होखे लागल सपना टूटला के दरद आ सपना से जुटल रहे के मोह-दूनू का बीचे कुछ दिन दोल्हा-पाती चलल बाकिर एगो समय आइल जब मोह-भंग होइए गइल। सपन सपना है. आ साँच साँच। यथार्थ के आँच में झउँसात-कुलबुलात कथाकार मन अ गवें-गवें खिसिआए लागल आ ओकर रुख आक्रामक होखे लागल। विषमता चा आर्थिक होखे भा सामाजिक—ऊ हाथ पर हाथ धइला से ना मेंटी – ओ खातिर कु करे के पड़ी; कुछ सह के, कुछ बढ़ के, कुछ चढ़ के। एह मनोवृत्ति में सउँनाइ कहानियन के रचना पछिला दशक में खूब भइल। बिछउँतिया (तैयब हुसैन पीड़ित) एह देश में (कृष्णानन्द कृष्ण), धुआँ (प्रो. ब्रजकिशोर, आदि कहानी-संग्रह एकर स बा। शुद्ध प्रेम-मूलक कथाकार जगन्नाथो का 'राजपाट लिखे के पड़ल।

जे शोषित बा, दलित बा आज ऊ अपना हक का प्रति, अपना स्थिति का प्र खाली सजगे नइखे भइल बलुक ओकरा के चाहे जेंग हो सके पा लेबे खातिर कद बढ़ा रहल बा। नक्सलवाद एही से जनमत बा। भोजपुरी क्षेत्र एसे अछूता नइखे एगो क्रान्ति चाहे वाला, साफ बदलाव चाहे वाला, हक लेने वाला का प्रति सामन्त छाँह में पलाइल-पोसाइल समाज के रुख 'एगो आउर अभिमन्यु' में उजागर बा आग लाग चुकल बा। बुतवला से ना बुताई। अब निचला तह पर बइठ बइठावल, मरुआइल लोग 'पहिल पाठ' पढ़ चुकल बा। अब मजूर के, गरीब शोषितदलित के आवाज दबावल ना जा सके। 'एह कहानियन से ई सा लउकता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज के जीवन वड़ा अझुराइल बा। परिवार टूट रहल बा, बाप बेटा के सम्बन्ध बिगड़ रहल बा। पहिले जे एगो दीवार उठावल रहै, ऊ भहरा के गिरे लागल बा। 'बैजुआ' के लोग कइसे डाकू बने पर मजबूर क देत बा—ई का आज छिपल बा केहू से ? 'चिखुरा' के व्यथा कम-वेश सभ लइका भोग रहल बाड़न—एसे उनुका व्यक्तित्व के विकास सम्यक् नइखे होत, ओमें कुण्ठा आ कुटेव घर कइले जाता। सभे 'एगो भीड़ आ व्यवस्था' के अंग बन गइल बा।

मन के आपन गणित होला। ओकर आपन हिसाव बा। 'मछरी' में मन के बेंवत खुलल बा। बड़ा बारीकी से शिल्प का हाथे मन के उरेहल बा। मन प्रतीक में बोलेला। 'देवाल' में, 'लाल तिकोन' में ईहे प्रतीक बाड़े सन। मनोवैज्ञानिक कहानियन में भा 'सतवन्ती' में जे सेक्स के चित्रण बा ऊ एह युग के छवि-अइसन झिलमिलात बा। नागरी-संस्कृति का चोट से तिलमिलात गँवई मन के घाव 'दरबा' में उघार हो गइल बा। आजादी का तीस-पैंतीस बरिस का बाद आज सभकर मन लंगटे बा—'सवालन के घेरा' में फँसल 'टूटल आदमी' अपने-आप से पूछता कि ई 'सिलसिला' कब ले चली ?

शैली आ शिल्प में 'झिरिहिरी' खेलत एह कहानियन के रेखांकित कइल जा सकेला। युग का सँगे चल रहल भोजपुरी कथाकारन का मन से शाश्वत प्रेम आ गँवई गन्ध उतरल नइखे। लोग 'अपराधी' बूझो, बना देव बाकिर ओकर 'मरजादा' बनल रही। 'चरवाही के दाग' ना विसरी आ 'भूतहा पीपर' तर बइठ के ऊ आँख से दू बून लोर चुअइबे करी। शहरी मन गाँवे भगवे करी आ 'मूँड़ी गड़ले' अपना बेचारगी पर तारसी; रोई। 'जब सपना टूट गइल' तब का हो गइल, ओकरा के 'सारंगा' के पिरीत राम' बने से के रोकी ?

भोजपुरी कहानी के शिल्प अब गठ गइल बा। मछरी, सुखिया, देवाल, एगो आउर अभिमन्यु, झिरिहिरी सभ में एगो बारीक देखनउक शिल्प उगल बा।

जान-बूझ के हम शैली, शिल्प, कथानक, कथावस्तु, बिम्ब, सम्प्रेषण का सवालन के नइखीं उठावत। एपर विद्वान समीक्षक लोग लिखी आ पाठक लोग विचार करी। जे कहानी पढ़ला का बाद मन में उतर जाय, ओकरा के झनझना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवे —ओकरे प्रभान्विति सफल होले। 'सेसर कहानी' के लगभग सभी कहा
रउरा मन के झकझोर दी; हिला दी—एकर हमरा पुरहर विश्वास बा। भोजपु
भाषा के आपन खासियत होला, ओकर आपन रंग बा, ओज बा। 'भँइसि के
के भाषा भोजपुरी तेवर के चिन्हासी बा।

तीन सँ कथाकारन में से महज ५१ के चुनाव करे के कवनो आधार न
बनावल; एह बिनिया-बिछिया खातिर कवनो कसौटी बना के काम नइखे क
गइल। बहुत नीमन कथाकार घेरा से बाहर रह गइल बाड़न। उनुका से अ
सीमित साधन के दोहाई देत हम क्षमा मांग रहल बानी। मौका मिली त दोसर
कहानी-संकलन में ओह सभ के प्रतिनिधित्व होई आ ओमें भोजपुरी कथा-साहि
के जम के लेखा-जोखा कइल जाई। अबहीं अतने कह के हम ई प्रतिनिधि-सं
रउरा हाथ में सउँप रहल बानीं।

—ब्रजकिशोर

पटना,

२५-११-८१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी आ कथाकार

पृष्ठ सं०

१. कुन्दन सिंह केसर बाई / आचार्य शिवपूजन सहाय ९
२. हरताल / पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय १२
३ मछरी / प्रो० राधेश्वर सिंह काश्यप ... १७
४ सुखिया / प्रो० उमाकान्त वर्मा ... २२
५. दरबा / प्रो० वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय ... २९
६ बड़प्पन (गनिया) / चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह ... ३७
७ सतवन्ती / श्री रामनाथ पाण्डेय ... ४१
८. मूड़ी गड़ाइले रही / श्री अविनाश चन्द्र विद्यार्थी ... ४९
९. राज-पाट / श्री जगन्नाथ ... ५४
१०. दुलहा के दहेज / श्री सिपाही सिंह 'श्रीमन्त ... ५७
११. सिकड़िया / प्राध्यापक अचल ... ६६
१२. भैरवी क साज / श्री ईश्वर चन्द्र सिन्हा ... ७३
१३. सवालन के घेरा / श्री विक्रमा प्रसाद ... ७८
१४. पगला तिवारी / डा० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' ... ८७
१५. भँइसि के दूध/डा० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' (चतुरी चाचा)... ९८
१६. बाजलि बैरनि रे बँसुरिया/श्री गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश'... ९८
१७. बरमाला / श्री कामता प्रसाद ओझा 'दिव्य' ... १०५
१८. खैरा पीपर कबहूँ ना डोले / श्री रामवृक्ष राय 'विधुर' ... ११२
१९. झिरिहिरी / डा० विवेकी राय ११७
२०. तरक्की / पाण्डेय चन्द्रविनोद ... १२६
२१. अब ना / डा० अनिल कुमार 'आंजनेय' १३०
२२. लीला : एक खण्ड / डा० जितराम पाठक १३९
२३. देवाल / सुधा वर्मा १४५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२४. लाल निशान / विन्दु सिन्हा ... १
२५. के भेजल ? / प्रो० हरिकिशोर पाण्डेय १
२६. भोर ना भइल / श्री अरुण मोहन भारवि १
२७. सिलसिला / श्री कन्हैया सिंह 'सदय' ... १
२८. चिखुरा / डा० अशोक द्विवेदी १
२९. बैजुआ / श्री प्रियरंजन १६
३०. बन्द केंवाड़ी / श्री रामेश्वर प्रसाद सिन्हा ... १
३१. एगो आउर अभिमन्यु / प्रो० ब्रजकिशोर १
३२ पहिल पाठ / श्री मधुकर सिंह ... १
३३. ऊ एगो भीड़ आ बेवस्था / प्रो० तैयब हुसेन 'पीड़ित' ... १
३४. टूटल आदमी / डा० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी ... २
३५ खोंता से बिछुड़ल / रूपश्री ... २
३६. करेज के घाव / श्री विश्वनाथ श्रीकृष्ण २
३७. पसेवा के पइसा / श्री घनश्याम मिश्र २
३८ कोढ़ / श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी ... २
३९. तिरिया जनम जनि दीह विधाता / श्री मिथिलेश्वर २
४०. सारंगा / पाण्डेय सुरेन्द्र २
४१. सपना टूट गइल / डा० बच्चन पाठक 'सलिल' ... २
४२. अलबम / श्री ऋषीश्वर ... २
४३ सब चलेला / श्री मुक्तेश्वरनाथ सिन्हा ... २
४४. कुआँर सपना / श्री ब्रजकिशोर दूबे ... २
४५. चरवाही के दाग / श्री अरविन्द कुमार श्रीवास्तव ... २
४६. भूतहा पीपर / डा० वसन्त कुमार २
४७. अपराधी / डा० शिवप्रसाद सिंह ... २
४८. उ कारीगर रहे / दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह 'नाथ' ... २
४९. हरीश / श्री गुलाब चन्द्र प्रसाद 'अभय' २
५०. मरजादा / श्री राजवल्लभ सिंह ... २
५१. परमपद / दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती २

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुन्दन सिंह : केसर बाई

आचार्य शिवपूजन सहाय

दूनों के उठती जवानी रहे । ओह जवानी पर अइसन चिक्कन पानी रहे कि देखनिहार के आँखि बिछिलात चले । गाँव के लोग कहे कि बरम्हा का दुआरे जब सुघराई बँटात रहे तब सबसे पहिले ईहे दूनों बेकती पहुँचले । सचमुच दूनों आप-आपके सुग्घर । बिआह का बेर माँड़ों में देखनिहार का धरनिहार लागल रहे ।

घर-परिवार में केहू ना रहे । दुइए प्रानी से आँगन घर गहगहाइल बुझाइ । जब एगो बनूक छतियावे त दोसर ओकर तमतमाइल चेहरा निहारि-निहारि के मुसुकाए आ भहूँ फरफरावे लागे । एगो जब बँसुरी बजावे बइठे त दोसर चिटुकी बज इ-बजाइ के गुनगुनाए लागे । एगो जब कसरत करे लागे त दोसर दाँते ओठ चाँपि के हुँकारी देत चले । एगो जब खाये बइठे त दोसर बेनिया डोलाइ के सवाद पूछे ।

एक दिन आसिन के पूनो का अँजोरिया में अपने अँगना पटिहाटि खटिया पर सुजनी डसाइ के दूनो बतरस के आनन्द लेत रहले कि एही बीच में एगो कहलस हम तोहरा के बहुत पेयार करीला । ई सुनि के दोसरकी बोललि, हमहूँ तोहरा पेयार के दुलार करीला ।

"वोह दुलार के हम सिंगार करीला । जब-जब हम तोहरा दुलार के सिंगरले बानी, तोहरा जरूर इयाद होई । माघ के रिमझिम मेघरिया में, फागुन के फगुनहट से मस्ताइल रंगझरिया में, चइत बइसाख के खुब्बे फुलाइल फुलवरिया में, जेठ के करकराइल दुपहरिया में, असाढ़-सावन के उमड़लि बदरिया में, भादो के अधिरतिया अन्हरिया में, कुआर-कातिक के टहाटह अँजोरिया में, अगहन-पूस के कँपकँपात सिस-करिया में—जब-जब तूँ हमरा प्यार के दुलार कइलू, हम वोह दुलार के अइसन सिंगार कइलीं कि तोहार आँखि मँड़राए लागलि । बाटे इयाद ?"

अतना सुनिके ऊहो ठुनुकि-ठुनुकि के जम्हाई लेवे लागलि । अइसन रंग ढंग देखि के ई कहलसि कि हमनी का भगवान के दीहल सब सुख भोगत बानी, बाकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना देस के कौनो सेवा अबहीं ले ना संपरल । छत्री का कोखी जनम लेके हमनी का अपना जाति के कौन्नो गुन दुनियाँ के ना देखवलीं । हमरा इ सकूल के साथी सब कहेलनि कि जब से तोहरा बिआह भइल तब से तूँ अइसन मउग हो गइल जे दिन-रति घरे में घुसल रहे ल ।

"एह खातिर हम का करीं ? सरकारे आपन करनी निहारीं । पहिले रउरे उसुकाईले, पाछे लागीले देसभक्ति के गीति गाइके अपना साथियन के ओरहन सुनावे । रावा जवन काम करबि तवना में हमरा साथ देबही के परी । रावा झण्डा लेके निकसी त देखीं जे हमहूँ अपने का सगे निकासत बानी कि ना । हमहूं छत्री के बेटी हईं । हमरा नइहर के सखी के मरद अपना संगे हमरा सखिओ के जेहलि में ले गइल बाड़े । रउरो हमरा के जहाँ चाहीं तहाँ ले चलीं । रावा साथे हम आगिओ में कूदबि त तनिको आँच ना लागी । रउरे संगे तरुआरिओ के धार पर हँसते हँसते चलि सकीला । बाकी रउरा बिना हम कतहीं ना जाइ सकीं । पहिले सरकारे अपना के सुधारीं, हम त पिछलगुई हईं । मरद के परछाँहीं मेहरारू हवे । मेहरिया के पाछा-पाछा मरदा रसियाइल डोरियाइल फिरी त कवन अभागिन होई जे ओकरा के लुलु-आवत रही ?"

"तोहार बात हम काटत नइखीं, बाकी सभ दोस हमरे नइखे ।"—

"अच्छा त बिहान होखे द, हमहीं पहिले तिरंगा झंडा ले के निकसबि ।"

"तब त हमरा छाती सिकन्दरी गज से डेढ़ गज के हो जाई । बात नइखीं बनावत ।"

"तोहारा बात बनावे से अधिका बात चिकनावें आवेला ।"

"अच्छा त काल्हु जब सरकारी चरन चउकठ लाँघी त देखल जाई हमार उमंग-तरंग ।"

२.

सन उनइस सौ बेयालिस ईसवी में भोजपुरियो इलाका अइसन अगियाइल रहे कि जेने देखीं तेने उतपाते लउके । कहीं संडक कटात रहे, कहीं टेसन आ मालगोदाम लुटात रहे, कहीं थाना-डाकखाना फुँकात रहे, कहीं भाला-बरछा-फरसा मँजात रहे, कहीं मल्लू अइसन मुँहवाला टामी लोग के लाटा कुटात रहे, कहीं रेल के लाइन उखड़ात रहे, कहीं कौनो पुलिस-दरोगा ओहारल डोला में लुका के परात रहे, कहीं मकई का खेत में लड़ाई के मोरचा बन्हात रहे, जहाँ सूई न समात रहे तहाँ हेंगा समवावल जात रहे, सगरे अन्हाधुन्हिए बुझात रहे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुन्दन-केसर के देखा देखी गाँवों के लोग कमर कसले रहसु। सभे ईहे बिनवत-मनावत रहे कि गोरन्हि के राज उलटि जाउ। गोरा अफसर लोग जेने-तेने बिललात फिरत रहसु। दूनों के साहस आ उतसाह त काम करते रहे, दूनों के रूप के जादू सबसे बेसी मोहिनी डाले। जेने दूनों के दल चले तेने हंगामा मचि जाइ। दूनों बेकत के बोली सुनला से लोगन के मन ना अघात रहे। जनता पर रूप आ कंठ के टोना अइसन चलल कि अँगरेजी सरकार के माथा टनके लागल। दूनों के नाम वारण्ट कटल। जनता दूनों के पलक-पुतरी अइसन रच्छा करे लागलि। जब थाना-पुलिस के गोटी ना लहलि त फउजी गोरन्हि के तइनाती भइल। तबो गोरा लोग के छक्का छूटि गइल, बाकि दूनों के टोह ना मिलल।

जवना दिन दूनों अपना घर के असबाब एने-ओने हटावे खातिर गाँवे पहुँचले तवने दिन पीठियाठोक गोरो पहुँचले स। दूनों अपना घर के खलिहाइ के भीतर बतियावत, छतियावत रहलेसनि, तबले गोरा धमकि अइलेस, हल्ला सुनि के दूनों के कान खड़ा हो गइल। कुन्दन कच्छा कसि के बनूक में टोंटा भरे लागल, केसर झपट के मियान से तरूआरि खींचि के कमर में आँचर बान्हि लेलसि। दूनों हूह करत धड़-फड़ बाहर निकलले त केवार खुलते गोरा अचकचाइ गइलेस। कुन्दन तीनि जाना के ठावें पटरू कइ देलस आ केसरो दुइ जाना के माथ काटि के दुरुगा-भवानी अइसन छरके लागलि। गोरा लोग के जबले खुले-खुले तबले दूनों के मार-काट से केहू के हाथ कटा के गिरि परल आ केहू के कपार फाटि गइल आ केहू छाती में छेद ले के गिरल कँहरे लागल। अतना छतियाँव दिखवला का बाद दूनों खूनी बहादुर खेत रहले। गोली लगला पर केसर घुमरी खात कुन्दन का देह पर जा गिरलि। अतने में गाँव जवार के लोगनि के गोहार जुटलि, बाकि गोरा आपन पाँचों लास लेके पराइ गइलेस।

कुन्दन-केसर के लोथ उठाइ के लोग गंगाजल से नहवावल, चन्दन चढ़ावल, फूलमाला से सजावल, अँजुरी के अँजुरी फूल बरिसावल, अगरबत्ती-कपूर के आरती देखावल, दूनों के जय जयकार से आकास गुंजावल, गाँवे-गाँव जलूस घुमाइ के दूनों साहसी सहीदन के पूजा करावल आ घरे-घरे देवी लोग लोर ढारि-ढारि अर्घ चढ़ावल। चारू ओर पंचमुखे ईहे सुनाइ जे अइसन मरन भगवान बिरले के देले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हरताल

पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

मेवा बो का जबसे बगसर के मुरूदघट्टी के ठीका दस हजार में लिआइल हा, तब से उनुका घरे आवे के लँवसे नइखे मिलत। मेवा का पियरी भइल बा। घर घाट दूनों मेवे वो का देखे के परता। धर में छोटकी पतोहिया रसोई पानी करेले। बीतला जेठ में ओकर गवना भइल हा। ऊ सुभाव से नीमन, देह जाँगर से सुन्नर, काम करे में गांव ऊपर ह।

ओह दिन बड़ा बरखा बरिसल। फजिरहीं से अइसन बूनी परे लागल कि बाहर निकसल मोसकिल रहे। दुपहरिया में मेवा बो कसहूं घाट से अइली। घर में एको चिरुआ पीये के पानी ना रहे। चुहानी के दुआरी पर खलिहा गगरा ढनढनात रहे। मेवा बो छोटकी पतोहि के कहली जे जो गोंयड़े के बाबू साहेब के कूँआ पर से हाली से एक गगरा पानी लेले आउ।

छोटकी का पानी ले आवे में बड़ा देरी भइल। मेवा बो कुँआ का ओर अपने चलली। बउलिये पर छोटकी से भेंट भ गइल। ओकरा के देखते मेवा बो आपा से बाहर हो गइली। चट पूछि बइठली, "काहें सिसुकति आवतारिस रे? का भइल हा? गगरवो नइखीं देखत! बोलत काहें नइखिस?" अतना सुनला पर छोटकी घूघ उठा के कुछु बोलहीं चाहति रहे कि मेवा बो बमक उठली, "तनी अउरी घूघ त उठाउ। आरे राम! ई पाँचो अँगुरी के दाग गाल पर! कवन मरकी लगवना हाथ छोड़लस हा रे? अँचरवो जहाँ-तहाँ दरकल बा। ई कवना के काम ह? जल्दी बोल ओकरा के काली के देदीं?"

"बाबू साहेब के कूँआ पर पानी भरत रहलीं हाँ। उनुकर छोटका बेटा आइ के गलथोथरी करे लागल। बाते बात में बलाते हाथ धइ पउदरि में खींचि ले गइल।" अतना कहि के छोटकी फफकि-फफकि के रोए लागलि।

मेवा बो के मुँह लाल हो गइल। कहली कि 'चुप रहु, हम बूझि गइलीं। आछा त हम बचऊ के सिखा देतानी। रसरी जरि गइल बाकि अँइठन ना मेटल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जमीन्दारी गइल, घर के खेत बारी विकाइल, तबो नवाबी ना गइल। अब हमनी के ईजति-पानी लेवे पर परल वाड़नस। का गाँव रहे का हो गइल। अइसन लउठई त सुनवे ना कइलीं। केहू का बेटी पतोहि पर केहू नजरि ना उठावत रहे। एह से त सहरिए नीमन बा। नू केहू के लेवे के नू केहू के देवे के। अपना-अपना घर में सभ केहू मोट मेंही खाता, आ परल बा !'

मेवा बो घरे आके अपना मरद से कहली कि चालिस पचास गो रोपेया लेके थाना त चल। अब गाँव में रहल मोसकिल बा। मेवा बहुत तरह से समुझवले। कहले कि अइसन काम जनि कर। ऊ लोग बड़का ह। ओह लोगन का संगे कई पुहुति बीति गइल। जाये द जे भइल से भइल हमनी के पुरखो पुरनियाँ ढेर घोंटले हवे। तूँ हूँ घोंट घाल। मेवा बो ना मनली। थाना जाइके मोकदिमा कइ दिहली मेवा सुनले त कहले कि ई नीक ना कइलू हा। पतोहि के भरला इजलासे चढ़इबू। 'ना चढ़ाईं त का करीं' मेवा बो चट दे बोल उठली—'छोट के ईजति कइसे बाँची ? चानी का कटोरा में दूध भात खाये वाला बबुआ के लाल घर में लोहा के कटोरा में वे हरदी के खिचड़ी ना खिअवनी त हम असल बाप के बेटी ना। नीक घरे नेवता देले बाड़न।"

□

गाँव में आजु बड़ा हलचल मचल वा जब से विनोवा जी गाँवे अइले राड़नि के दिमागे नइखे मिलत। सनातन से लतिआवल गइल जाति के लोग आजु बरोबरी के दावा करता। अब त हरिजनवनि के मन्दिरो में जाये के आ बड़ जाति के कूँआ प नहाये के हुकुम मिलि गइल। गाँव के बड़ कहाए वाला लोग के बटोर रहे। बाबू साहेब सुरु कइले, "रावा सभे जे कहीं, हम त राड़नि के माथ पर ना बइठा सकीं। जिनिगी भर पनही के नीचे रहल लोग। अब ना रही लोग त ठीक ना होई ! केहू का धन होखो। सरकार माथा पर चढ़ाओ। हमनी का ई बरदास के बाहर बा।"

बटोर में के एगो बूढ़ लाला जी बोलि उठले, "समइये अइसन आइ गइल बा ए बाबू साहेब ! देखीं दुनियाँ कहाँ से कहाँ चलि गइलि। आखिर उन्हनिओं का त··

"अनेरे बक-बक कइले बाड़, चुप ना रह।" केहू चढ़ि बइठल। गाँधी टोपी पहिरले एगो नवही कुछु बोलल चाहल कि पहिलहीं बाबू साहेब बोलि उठले, "एह लोग के अन्हेर त हमरा से ना सहाई। ना मनिहें लोग त चिरइनि के खोंता निअर उजारि फेंकबि। परसँवे के बात ह। मेवा डोम के पतोहि हमरा कूँआ से पानी भरि के ले गइली। हमार छोटका हरी, ओइजे खड़ा रहे। कुछु ना बोलल। जेह कूँआ पर ब्राह्मन देवता छाड़ि के दोसर केहु ना चढ़त रहें वोही कूँआ से ऊ पानी भरि ले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गइनी । जेह मन्दिर में बाप दादा पूजा कइले ओही में डोम चमार घुसिहें । हम त ई ना होखे देबि । ना रास्ता पर अइहें लोग त खने खराब कइ देबि ।"

पंचइती का बटोर में बइठल गाँधी टोपी वाला भाई के बोले के मोका मिलल । "बाबू साहेब ! आँखि खोलीं । दुनियाँ देखी । बड़का-बड़का ओहदा पर ई लोग रखाता । कौंसिल कचहरी में इन्हनी लोग के मान बढ़ता । अपने के अंचल अधिकारी. जिनिका के झुकि-झुकि के रउरा सलाम करीले आ सरकार सरकार कहीले ऊहो बिहियाँ का लगे के हरिजन हवे । ई लोग हमरे समाज के ह । हमार राउर भाई ह । जाति-पाँति के बखेड़ा छोड़ीं । अपने के गाँव में सबसे बड़ हईं । सब पर छोह देखावे के चाहीं ।"

"कुछुओ होखो । आपन विचार हम ना छोड़बि ।" बाबू साहेब तूरि के जबाव देले ।

☐

बाबू साहेब अपना बइठका में खटिया पर परल रहले । एगो पुलिस के आवत देखि के उनुकर कान खाड़ा हो गइल । पुलिस का अइला पर मालूम भलहिन कि मेवा डोम के पतोहि के बेईजति कइला के इलजाम में थाना से उनुका छोटका बेटा हरी के नाँवे नोटिस आइल बा । सुनते मातर बाबू साहेब के होस उड़ि गइल । पुलिस के जथा जोग सेवा सतकार कइके विदा कइले । बेटा के थाना पर हाजिर करे खातिर जमानत दे दिहले ।

सिपाही का गइला पर बाबू साहेब सीधे हरिजन टोली पहुँचले । मेवा कीहाँ सतनारायन स्वामी के कथा होत रहे । देखि के जरि बुतइले, बाकी का करसु । मसक्का में परल रहले । देखते मेवा सलाम कइलसि । बाबू साहेब बोलले, "का मेवा, ईहे उचित ह ? जे आजु ले ना भइल ऊ तोहन लोग करे जातार ।"

मेवा कहले; "का करींजा सरकार, अइसन जुलुमो कबो छोटनि पर ना भइल रहल हा ।"

"का जुलुम भइल हा ? तोहरा पतोहि के कम दोस बा ?"

"ओकर त कवनो दोस नइखे सरकार ! बड़ होके रावा बोलतानी त का रउरा मुँहें लागीं ।"

"काहें ना मुँहे लागबि जा" मेवा बो टनकारे बोली में बोलि उठलि । "काल्हुए के आइलि कनियाँ बहुरिया के ई दुरदसा !" बाबू साहेब दाँत चियारि के मेवा बो के चिरउरी करे लगले, "जाये द लोग । हरी तोहनिओं लोग के लइका ह । माफ क द लोग । मोकदिमा उठा ल ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अतना सुनि के मेवा कहले कि 'जायेदीं जब रउआ अइसे कहतानी त मोकदिमा ना चली। बाकी रउरो बेटी बहू बा, सबके एके नजर देखे के चाही।'

☐

बाबू साहेब का घर डकइती हो गइल। थाना में जाके मेवा समेत ढेरि हरिजनन के नाँव लिखवा दिहले। ऊ सब बेकसूर रहस। पुलिस दरोगा आइल आ डाँड़ में रस्सा लगाके उन्हनीं के पकड़के ले गइल।

भोरे पहर मेवा बो बाबू साहेब कीहाँ पहुँचलि। कहलसि "का सरकार नेकी के ईहे बदला? हमनीका डकइती काहें करबि? अनधन केकरो से माँगे के हमरा नइख। रोज दस रापेया क आमदनी घाट से बा। ई रउआ का कइलीं हाँ। बर बारिआति मे रउआ सब घर-दुआर हमनियें पर छोड़ि के जाईले। आजु अइसन बिसवासघात! हमनीं का कतहूँ क ना रहलीं।" कहि के मेवा बो रोवे लागलि।

बाबू साहेब तनिको ना पसीजले। मने-मने खुस हो के बोलले "ओह दिन त तनी छंवड़ा तोहरा पतोहि के पानी भरे से मना कइलस त खन्दान भरि के पारा चढ़ि गइल। हमरा के बेइज्जति करे के फेरा में लागल रहलू। अब देख हम का करतानी। थानेदार कीहाँ त पैरवी करे आवते बा। जवान बेटी पतोहि बड़ले बड़हू। जा-जा पैरवी कइल।"

मेवा बो बोलि उठलि, "अइसे काहें कहतानी मालिक। जरला पर नीमक जनि छिरिकीं। आछा, जातानी, बाकी भगवान एकर निसाफ करिहें।'

पैरवी कइके बाबू साहेब डोमन के सजाइ करवा दीहले। नतीजा भइल कि कुल्हि डोम हरताल कइ दिहले। कतहूँ केहू हरिजन काम पर जाते नइखे।

वोही दिन बाबू साहेब के पिता जी के सरगवास हो गईल। बड़ा पुरनिया रहलीं ऊहाँ का। बड़ा धूमधाम से रंथी घाट पर पहुँचल। चनन के चिता पर पितम्मरी ओढ़ा के ऊहाँ के सुतावल रहे। पुरोहित जी तिल, अछत, दही मुँह में दीहलें। भईलि कि चिता में आगि लगावल जाउ।

केहू आगि नइखे लगावति। बाबू साहेब कहले कि का देरी बा। सभे चुप रहे। पंडित जी बोलले, "सरकार, आगि के लगावो। अगिनि दान जब घाट के चउधरी दीही तबे नू आग दिआई, आ तबे नू मृत आत्मा के सद्गति होई।"

"हँ, हँ, त बोलाव लोग जी, काहाँ बाड़े स? बाबू साहेब अपना भाई गोतिया लोग के ओर ताकि के फरमवले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"कुल्हि डोम त हरताल कइले बाड़े स। डकइती वाला मोकदिमा के काल्हुए नूँ फसिला भइल हा।" जमाति में से केहू बोलि उठल।

बाबू साहेब के जाड़ा में पसेना छूटे लागल। एहिजा उनुकर सब चाल-बाजी भुला गइल।

सामने चन्दन के चिता पर से बुझाइल जइसे उनुकर पिता जी कहत होखसु, "बेटा! तूँ मेवा के जेहल में बन करववल, मेवा आजु तोहरा पितरन के सरग के दुआरी बन करवा दिहलसि। मेवा के जेल का भेजववल सरग से खींचि के अपना पितरन के नरक में ढकेल दिहल।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मछरी

रामेश्वर सिंह काश्यप

ताल के पानी में गोड़ लटका के कुंती ढेर देर से बइठल रहे। गोड़ के अंगुरिन में पानी के लहर रेसम के डोरा लेखा अझुरा अझुरा जात रहे आ सुपुली में रह-रह के कनकनी उठत रहे जे गुदगुदी बन के हाड़ में फैल जात रहे। कबहूँ, झगवा मछरी एँड़ी भिरी आके कुलबुलाए लागत रहीसन त सऊँसे देह गनगना जात रहे। कुछ दूर पर सरपत में बेंग टरटरात रहसन आ कवनो-कवनो, जब तब पानी में कुद जात रहसन जेकरा मे ताल में चक्करदार हल्फा उठे लागत रहे आ तरेंगन के परछाहीं लहर पर टूटे लागत रहे।

झींगुर के अजब मनहूस झनकार हवा में भर गइल रहे। नीम के फूल के गंध से मातल बेआर ढिमिलाइल फिरत रहे। दिन भर के तवँक से अँउसाइल कुंती के मन भइल कि गते से पानी में उतर जाय आ अपना देह के पानी में बोर दे। कहानी में साँझे से चूल्हा फूँकत-फूँकत ओकर जीव उजबुजा गइल रहे। मारे पसेना के लूगा देह में सट गइल रहे। कसहूँ जीव जाँत के, सब केहू के बीजे करा के फजिरे बरतन बासन मले खातिर पानी ले आवे निकलल रहे। राते में डूभा, छीपा आउर लोटा पानी में ना फुला दिआई त बिहने जूठ अइसन खरकट जाई कि छोड़वले ना छूटी। बाकी, कुंती से पानी में उतरल ना गइल। अपना देह के आउर ढील के ऊ चुपचाप बइठल रहलि।

बगले में, दहिने ओकरा घर के दुआर लउकत रहे। निकसार में ढिबरी बरत रहे। ढिबरी के मइलछहूँ लाल अँजोर में अपना पोंछ से मच्छड़ भगावत भँइस लउकति रहे। धवरा बैल कोना में बइठल पगुरात रहे। कुंती के बुझाइल कि ओकर माई सूत गइल होई आ ओकर नाक फोंय फोंय करत होई, बाबूजी भी आँख मूँद के मड़हटिअवले होइहें आ दम्मा के मारे उनकर साँस अदहन लेखा हनर-हनर करत होई। सीतवा, गीतवा, मोतिया, गएत्रिया आ ललखवा, कनिया सब एके खटिया पर गुड़मुड़ा के सूतल होइहसन। कवनो के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लात कवनो के मूँड़ी पर चढ़ल होई, कवनो के मूड़ी लटकल होई, कवनो के गाड़ खटिया के ओरचन में बाझ गइल होई। अब ओकरा जाके सबके सोझ करे के परी। सब पिल्ला लेखा काँय-काँथि किकिअइहनस आ माई काँचे नींदे जाग के अलगे अनरवाह करी—"अइसन कुलच्छन ई कुंतिया बिया, दिन रात लइकन के डॅहकावत रहेले, एकर बस चले त ई सब के छछना-छछना के मुआ दिही।" बाबूजी अलगे अपना खटिया पर से गुरगुरइहें—"काहे रोवावत बाड़िस रे, हमारा के जीए देबिस कि ना? एक त हमार जीव अपने· ·खों खों· ·।" आ ऊ सब के ओइसही छोड़ दे त माई लगिहें बिख बोले—"एकर रहन देख के त हमार पित लहर जाता। काठ के करेजा हइस। पत्थल ह पत्थल। एकरा कवनो दम-फिकिर हऊस! लइका मूअसन भा जीय सन।"

घर के इयाद आवते कुंती के जीव उदास हो गइल जइसे खॅखार पर गोड़ पर गइल होखे। कुंती के ना चहला पर भी पहिले के याद ओकरा आँख के आगा पवँरे लागल।

कुंती नौ बरिस के रहे तबे ओकर माई मू गइल रहे। ओकरा अपना माई के मउअत सोझा लउके लागल। माई मउराइल बैंगन लेखा हो गइल रहे आ ढकना में लाल मिरचाई जरा के टहल ओझा बेंत पटक-पटक के ओझाई करत रहन, फिर माई के मूड़ी एक देने लटक गइल आ बुढ़िया मेहरारु सब सियार लेखा फेंकरे लगली स, आजी हमरा के करेजा में जाँत के माई के गुन रो रो के गावे लागल रहे। कुछ दिन बाद बाबूजी आ चाचा मूड़ी छिलवा लेलन, खूब भोज भंडारा भइल आ छौ महीना बाद नैकी माई आइल। पहिले दिन ओठ बिजुका के हमरा के देखते पूछलस "तूँही हमरा सवत के बेटी हऊ?" हम मूड़ी हिला के कहलीं—हूँ। तहिया से आज ले ऊ हमार जेतना, साँसत कइलस ओतना कवनो दुसमनो केहू के ना कइले होई। के जाने ओह जनम के कवना कमाई से हम दस बरिस में जीयते, छछात नरक के भोग भोग लेलीं। माई के बरसाएने लइका भइल। पांच गो त मूँ गइलेस। ओकरो पाप माई हमरे कपार पर थोपेले कि इहे हॅड़साखिन मुअवलस। बाबूजी के दम्मा हो गइल। माई रोज कवनो ना कवनो रोग कछलहीं रहेले। चाचा माइए से आजीज आके अलगा हो गइलन। लइका देखीं त हम, खैका बनाईं त हम, भँइस गोसि के सानी पानी करीं, गवत लगाईं त हम। माई अपना हाथे खर्गो ना टारे। दस बरिस से दिन रात चंग पर चढ़ल रहीला, मिजाज चरखा भइल रहेला, अतनों साँवस· ना मिले कि अएना में सुबहिते मूँह देखीं।" सोचत-सोचत कुंती के बुझाइल कि हजारन चिऊँटी ओकरा सऊँसे देंह में रेंगे लगलीसन। ओकरा बुझाइल कि ओकरा देंह में देंहे नइखे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अठमी के चनरमा, सड़ल तरबूजा के फाँक लेखा बाँस के फुलुँगी में अझुराइल रहे फीका, उदास, सकुचाइल। मारे धूर के असमान सिलेट लेखा साँवर लागत रहे। पानी में डूबल-डूबल कुंती के गोड़ कठुआ गइल रहे, पेंड़ुरी चढे लागल रहे। ऊ गते से आपन गोड़ पानी से बाहर निकाल लेलस। एक मन कइल कि घइला भर के घरे चलीं। ढेर रात बीत गइल। बाकि ओकरा से टकसल ना गइल, आलस ओकर गतर गतर बान्ह देले रहे। कुंती गते से एगो खपड़ा टकटोर के अपना एँड़ी के मइल छोडावे लागल।

चिंता के टूटल धागा फिर जोड़ा गइल। एने तीन साल से त हमरा अपने चुप-चाप बइठे के मन ना करे। जहाँ अकेले बइठ, मन में किसिम-किसिम के विचार उठे लागेला। ई सभ सोचला से फैदा? बाकि जहाँ इचिको सँवस लागल कि फिर बैताल ओही डाढ़ पर। मनवाँ खराबे बात देने झुकेला। एही से जान बूझ के हरदम अपना के काम में अझवले रहीला। जेनना हमउमरिया सखी सहेली रहीसन सभ के बिआह कहिए भइल। कै गो त लरकोरिओ हो गइलीसन। जहाँ ऊ सब बइठिहसन। खाली ससुर के बात, अपना मरद के बात। खोद-खोद के दोसरा से पूछिहसन आ रस ले ले कहिहसन। हमरा त ई सुनल इचिको नीमन ना लागे बाकि केहू सुनइबे करे त का कान मूँद लिहीं? झूठ काहे के कहीं, जहिया ई सब सुनीला नींद ना लागे सऊँसे रात करवटे बदलन बीतेला। मने-मने हमहूँ सपना देखे लागेला कि कइसन हमार ससुरा होई, कइसन सास के सुभाव होई, सवाँग खिसियाह मिलिहें कि मिठबोलिया? ऊँह, कइसनो मिलस। आपन आपन भाग ह। नइहर में सौतेली मतारी के दिन-रात के किचकिच से त नीमने होई। माई के बोली हइस? बुझाला कि चइली से मारत होखे। बाबूओ जी के मत न फेर देले बिया। परियार साल बाबूजी एक जगे ठीक ठाक कइलन त माई ठेन बेसाह देलस कि एह साल बैल किनाई। बँटइया पर खेती ना होई, अपने हर चली। जब रोपेया बैल में उठ गइल, हमार तिलक कहाँ से दियाव? परसाल फिर बाबूजी एक जगे बात चलवलन। लइकवा दोआह रहे। डाकपीन के काम करत रहे। एक तरे से सब कुछ पक्के रहे। सखी सहेली में केहू हमरा के मनीआडर वाली कह के चिढ़ावे, केहू लिफाफा पोसकाट वाली कह के चउल करे। हमहूँ मनेमने गाजत रहीं कि दोआह बा त काह? करकसा मतारी से त जान बाँची। बाकि माई बेंड़ देली कि हम अपना जीयत जिनगी कुंती के बिआह दोआह बर से त ना होखे देब, नाहीं त सब केहू मेहना मारी कि सवत के बेटी रहइन एही से दोआह के गले मढ़ देली, जिनगी भर के अकलंक के अपना माथे लिही? बाबूजी त हर बात में माई के मूँह जोहत रहेलन। लागल बात कट गइल। भितरिया बात त हम जनबे करीला। माई सोचली कि कुन्ती चल जाई त लइका के खेलाई??

कुन्ती के बुझाइल कि ओकरा कंठ में कुछ अँटक गइल बा आ दुखाता। पँजरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ हँसुली के हाड़ में जइसे नभक अमा गइल होखे, सऊँसे देह जइसे धवदाह हो गइल होखे, माथा के नस के जइसे केहू ताँत लेखा तान देले होखे आ ऊ टन टन बाजत होखे। कुन्ती के साँस तेज चले लागल या गरम साँस के धार ओकर ओठ पर साफ बुझात रहे। गदराइल देंह समुन्दर के हलफा लेखा साँस के ताल पर उभरत रहे, डूबत रहे, ओठ रह रह कर के ओइसहीं काँप जात रहे जैसे भोरहरी के हवा में बबूर के पतई काँप जाला। बहुत दूर पर मनियारा साँप के कतार लेखा छोटी लैन छुकछुकात चलल जात रहे। मधिम अँजोरिया बेरमिया लेखा बेदम होके गते हाँफत रहे। कुन्ती के एगो लमहर ठंढा साँस निकल गइल आ ओकर सऊँसे देंह लूक में परल मोजराइल आम के गाछ लेखा सिहरे लागल।

"अइसे कबतक चली ? डेग-डेग खाई खंधक बा। ओह दिन अछैवट सिंह के छत पर गेंहू सुखावे गइल रहीं त उनकर भगिना गते से आके हमार नाँव पूछे लागल। सुनीला जे पटना पढ़ेला। मन त भइल कि खूब सूना दिहीं कि बहरकू तोरा हमरा नाँव से मतलब ? बाकि पित घोंट के रह गइलीं। हमार खिसिआइल मुँह देख के ऊ अपने लवट गइल। बिरीछ काका के बेटवा के भी उहे हाल, जहाँ हम ताल मे नहाए अइलीं कि केवाड़ी का दोबा में लुका के अपना दलान पर से घटन निहारल करी। मउगा कहीं का। मन त करेला कि कान धर के मारी दू थप्पर। सीक अइसन त बाड़न, एको थप्पर के मउआर ना होइहें आ रसिया बने के सवख बा। आ बसियो का कम आफत कइले बा, सिलिक मिरजई पेन्ह क दिन भर में चार भाँवर हमरा गली में फेरा लगावेला। हम का ओकर रंग-ढंग ना चीन्हीं ? बाकि बोले उले ना। जहिया टोकलन, अइसन उघटब कि फेन हमरा सोझा आवे के नाँवें ना लीहें।.......
............बाकि कब तक ? अइसे कहिया ले चली ?

कुन्ती के बुझात रहे कि साँप के बिख के लहर ओकरा देंह में उठ रहल बा आ गोंइठा के धुआँ में जइसे ओकर दम घोंट रहल बा आ ओकर गत्तर गत्तर अब पारा लेखा चारो देने छितरा जाई। गाँव के दखिन सिवान पर कुकुर भूँकत रहलन। खेत में सियार फेंकरत रहसन। काली माई के मंदिल से पाठ कर के चरित्तर काका लवटल आवत रहन। उनका खड़ाऊँ के खटर-खटर साफ सुनात रहे। कुन्ती सोंचलस कि एह रात के चरित्तर काका ओकरा के ताल किनारे बइठल देखिहें त का सोंचिहें ? झप्प से घइला बुड़का के घरे चलल। निकसार के बगल में तनी दहिने हट के नेनुआ के लत्तर चढ़ावल रहे। ओहिजा कुछ आहट बुझाइल। कुन्ती चिहा के पुछलस के ह ? बंसी के काँपत, खखन से भरल आवाज आइल—"हमार किरिया, तनी एगो बात सुनजा।" मारे घबराहट के कुन्ती के हाथ-गोड़ काँपे लागल। ऊ धड़ से निकसार के भीतर जाके केवाड़ी के पल्ला भिड़ा ले लस। एह समय ओकरा अपना करेजा के धड़कन साफ सुनाई देत रहे ओकरा माथा पर पसेना चुहचुहा आइल रहे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ साँस बहुत तेज हो गइल रहे। घइला थवना भिरी रख के ऊ मने मने वंसी के खूब गरियवलस।

आँगन में माई न रहे। लड़का सभ दँवरी लेखा खटिया पर पटाइल रहसन। बाबूजी के घर में दिया बरत रहे। पल्ला ओठँघावल रहे आ बुदुर बुदुर के आवाज आवत रहे। आपन नाँव सुन के कुंती गोड़ जाँत के गते से जाके केवाड़ी में कान लगा के सुने लागल। माई बाबूजी के समझावत रहे "एह साल कुंती के बिआह के नाँव लेल त ठीक ना होई। तोहार बेरामी एह साल बहुत उखड़ गइल बा। चल बनारस रह के दवाई कराव। हमहूँ ओहिजा डाकटर से जांच कराइब।" बाबूजी कहलन—"से त बड़ले बा बाकि लोग बाग अब अँगुरी उठावता, जवान जहान बेटी के कबले कुआँर रखबू ?" माई तड़प के बोलली "वाह रे, लोग बाग कही त कुँइयो में कूद जाइब ? एह साल ना सही, पर साला सही, कवनो मछरी ह जे सड़ल जात बिया।" बाबूजी मान गइलन—"ई त ठीके कहत बाड़ू, कवनो मछरी त ह ना जे सड़ जाई। परे साल सही।"

कुंती के बुझाइल कि पचासो बिच्छू एक साथ डंक मार देलन। बेहोसी में अपना खटिया देने बढ़उ बाकि अचक्के ओकर गोड़ लगो जूठ थरिया में पर गइल। झन्न से आवाज भइल। माई भीतरे से चिचिया के पुछलस—"काहे रे कुंतिया, का भइल।"

कुंती के फफक-फफक के रोए के जीव करत रहे। मन करत रहे कि लाज लिहाज के छोड़के बाबू जी से अभी जा के कह दे कि बेटी मछरी ह बाबूजी, पानी के बाहर कब तक जिही ? सड़ी ना त बिलाई ले भागी।

कसहूँ रोआई जाँत के कहलस " कुछ ना रे माई, बिलार रहे एगो।........ भाग, बिल, बिल।............"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुखिया

●

श्री उमाकान्त वर्मा

●

चक्कर खात गोला नीचे गिरत रहे। पानी के तेज धार में बिखरल किर तेज रोआवे वाली इथाद जइसन चमकत रहे। गाँव के मोजराइल सुखिया के मन चाह के उज्जर मुर्दा चल फिर के कोना-कोना के झकझोरत रहे। कगार पर खड़ सुखिया के आँख में समन्दर सिमट आइल। ऊ धूँआ के घुटन में रसे-रसे पसरे लागल पलक ढँप गइल। सिमटल समुन्दर मन के रेगिस्तान में सुकठा गइल आ अ रेगिस्तान में सूतल अभाग के ढेर सा मनहूस कउआ आ उल्लू, जाग गइलन स।

'ईहो कवनो बात ह। केकर लइकी आँख क पुतरी ना होखे। बाकी अइसन कहीं होला कि लइकी के मन सिकहर पर चढ़ा दिहल जाय। चढ़ल दरियाव आ उमड़ल मन एक होला। हरियर ककरी के मोल मुड़ला में ह, पातर बेंत के मोल नवला में आ गमकत डाढ़ के तव्वे मोल होला, जब ऊ झुक जाय। कहलो गइल बा—'जनम लइकवा, बिहउते कनियवा, जवने लौ लगाइ, तवने लौ लागी।'

माई के मुर उमड़ल—कटिया सुखिया जुठार देलस त का भइल। ईहो भाग सिरपतिया। एकरे खातिर दशरथ जी केतना दिन रोवत रहलन। जसोदा मइया भाख भाखत रहली। लइका क मन त छन में छिनक जाला। लइका दुखी होला त सु ला देवता-पितर तक खिसिया जालन।

दोसरे दिन।

तिरपतिया अपना बहिन से कहत रहे, 'सुनले बहिना! कलमुँही के काली माई मर गइलि। बाप साथ छोड़ देलसं। एगो भाई रहे, ओकरा के पहिलहीं भकोरा लेलस। भला केकरा कुकुर कटले बा, जे एकर देख-भाल करे के भार अपना कान्ही पर लेके जानबूझ के जियते माछी निगले के कोसिस करी। पउरा निमन रहित हो चलत-फिरत महतारी एतरे ना उठि जाइत आ ई कुलच्छनी अपना कंकाल महतारी के गोद में भूख के मारल निहचिन्त ओकरे छाती में सटल रहित। मुआ रामनाथ जाता ले जाय, हमनी के का? कपारे पड़ी त अपने आँटा-दाल क भाव मालूम हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाई। थोड़ा सा सहर से का गिटिर-पिटिर सीख आइल बा, ओह दिन लेक्चर झाड़त रसे—तू सब न मदद करव त का एगो गरीब के ठेकान ना लागी। बूढ़ रामनाथ अबहीं मरा नइखे गइल। चार आना पइसा बचल बा। आज ना पीही। डोम के दे दी। ना त अपने पीही आ सुखिया के माई के गंगा के छाती में सुता आई।'

......सुखिया के मन के मुड़ेरी पर गुलाबी चादर गिर गइल। जागल मनहूस कउआ आ उल्लू रंगीन चादर में अपना के सजा के नाचे लगलन। आँख के समुन्दर फेर पसर गइल। किरन उतर के, अब जूही आ चमेली के गंध से सजा के ओकर कोमल धड़कन के बाँधे लागल।

एक दिन।

'राम! राम! के आपन लइका के चूल्हा में झोंक दी। डाइन आ आदमी में कहीं कव्वो गाँठ जुरल ह। अपना गाँव क ई लइका सब त दुधमुहां बाड़न स। कवनो के कुछो बुझाला? सब ओकरा खूबसूरती के आँधी में बहत जात बाड़न स। रात-दिन ओकरा घर के चारो ओर घिरनी जइसन नाचत फिरत रहेलन स। ऊ सबके का मालूम जे नागिन कहीं डस ली त पनियो पीयल दूभर हो जाई। रामनाथ त ओह जनम के जिन्न होई जिन्न, जे अबही तक मुसरचण्ड अइसन घूमत-फिरत बा।

कुछ दिन बाद।

नीमन भइल जे चलि गइल। हम त आज मइया के पियरी चढ़ाइब, तुलसी चउरा पर दियरी बारब आ पीपर वाला बरम बाबा के खुस करे खातिर रात भर हरिकीरतन कराइब। आज गाँव के कोढ़ चलि गइल। ई लइका त छछुन्दर रहलन स जे ओकर सादी काटे खातिर आकास से पाताल एक कइले रहलन स। सादी भइल त लाज-लिहाज छोड़ के ओकरा के पहुँचावे खातिर गाँव के सिवान तक चलि गइलन स आ बेर-बेर उसास ले के गावें स—

कइसे कटी अब रतिया हो राम मैना गइले बिदेस।
के अब अँचरा हिलइहें हो राम हँसि-हँसि भेजिहें सनेस॥

पर दिदिया! सोच जिन। लइकन के खुमार ताड़ी जइसन होला। छनि में कपार धरेला त छनि में भुँइया लोटेला। समय त बड़ घाव भर देला। ई त कुछो हइए ना ह। समय आवे द डाइन के मंतर अपने आप उतर जाई। तोहार धनेसरो ठीक हो जाई। मोहब्बत, मोहब्बत कवनो चीज ह। मरद के कवनों साँस चाहीं जे रात में बाँह में बाँध ले आ अपना गरमी से ओकरा मरम के भिगो दे। चहबो करे त भीतर के तनाव से भी जले जाय सुख ना पावे। अरे मरल बेटा क दरद जब खतम हो जाला त तोहार बेटा, भी एक दिन आपन छाती में खिंचल ओकर लकीर के मेटा दी।'

सुखिया देखलस कि बिना आधार के बहत जिनगी जइसन लहर के हिलकोरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में नाव दलकत जात बा। मन के हर डाली पर ओकरा कउआ आ उल्लू के सोर जम के बइठल बुझाइल। घुटन के सेवार के हटा के ऊ मनभर उसास लेवे के कोसिस कइलस........।

(उसास —?)

'आज मँगरु आई।'

'चुप।'

'हाँ ! तोर देवर। खूब घुल-मिल के बात होला। कहेलिस कि हम त जनमे से टूअर हईं। दुख सहत-सहत घाठा पड़ गइल, एसे जहाँ इचको सनेह मिलेला, बह जाईं लें।'

अठन्नी भर हँसी; 'तूँही त, कहेल कि नीमन आदमी ह। तोहार जान कई बेर बचवले ह आ इज्जत ओ घरी बचवलस जब आपन लोग मुँह लुका के अँचरा में हँसी के बहार लूटत रहे।'

हँ हँ रुपया भर, एही से त आज छोड़ के जात हईं रात रही आ ऊ पूँ। गह के बात करिहे। देखिहे पीये में रचिको छूट न जाय।

'हम अकेले........।'

खुलत हँसी आ फेर बोली में भोंपा के तेजी आ तनाव। 'मुँह बन्द रख ना त धौंकनी बना देब। मेहरारु क मोल चुप पियला में ह। सीता-सावित्री सब पियली, ऐसे सती कहल जाला। खुल ओतने जेतना हईं, ना त हमरा से बुरा दोसर केहू ना होखी।

आ फेर सेर दो सेर गारी बेंत के मार।
सी - ऊ - सटाक, ताला जकड़ गइल।

□

(उसास —२)

'केतना त्रेलस।'

देह लुजुर-पुजुर। चोली के वन्द टूटल। एने ओने खून छितराइल, साड़ी सनल।

भरपूर लात। 'बोलत काहें नइखस। अइसन ताकत बाड़े जइसे सहजे लील जइबे। बूढ़ चाचा रामनाथ के खात त देरिए ना लागल। अब गुमान केकरा पर। केकरा पर गरब के पाँख। उड़े के चाहत बा। तोरा अब बा के। अब ते हई का? गोबर के चोत। जे जब जेने चाहे तोरा के चिपरी जइसन थोप दे। अइसन महँगी में, जब सब चीज आकास छूअत बा रेकसा पूरा दिन खिंचलो पर नइखे जुटत। तोरा के भकोसे के कहाँ से आई।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फेर लात। 'उठु हाली से पइसा निकाल, नाहीं त खाल उधार लेब। गरीब आदमियो के कहीं इज्जत होला। इज्जत त होला ओकरा जेकरा इज्जत ना होखे जे दोसरो के इज्जत लूट के अपना नंगापन के ढाँप के इज्जत धीला होला। सती बनु, सती। मरद के खिया के खुस रखु। हम कहत हईं तब्बे सरग मिली ना त नरको ना रहे के मिली। हम असीस देत हईं। अइसन कइला पर भगवान तोरा के दोसर जनम में खास आपन मेहरारु बना दीहें।

सप्........सप्........सप्।

रात में भोंकार पारत कुक्कुर जइसन फेंकरत आवाज।

धप्....धप्....धप्।

खन्....खन्....खन्। चानी के पाँच रुपया खन से मुँह पर आ पड़ल। रुपया उठा के हँस के आसमान थामत, 'ओह! पाँच रुपया! भगवान तोरा के रोज बरक्कत देस। एसे चोट थोड़े लागेला हमार रानी। लछिमी चाहीं त उल्लू बनहीं के पड़ी। जानस ना कि लछिमी जी के सवारी उल्लू ह। तें कवनो खराब काम थोड़े कइले ह। दोसरा के दान दे, दोसरा के बहत कजराइल गंगा के बाढ़ के अपना में समेट ले ओकरा के जीए के साहस दे आ ओ घड़ी भर जे समाज के बाढ़ से बचाले, ऊ कवनो खराब काम थोड़े कहल जाई। ऊ त पुन्न क काम ह रे। आ अब त तोरा सबके कीमत बहुत बढ़ गइल बा। आज दूगो वकील साहब हमरा रेकसा पर बइठल रहलन। ऊ बतिया-वत रहलन कि समाज के ठीक से चले खातिर पतुरिया के रहल जरूरी बा। पतुरिया के बिआह के बात सुनि के आ सरकार के कड़ाई से पतुरिया के बिआह कर लेला के कारन आज घर में पतुरिया के राज हो गइल बा। बहिन भाई से, बाप बेटी से, भतीजा अपना चाची से आ बहिन के बेटा आपन मउसी से मरद मेहरारु वाला सम्बन्ध रख के उनका के पतुरिया बनावे में दत्तचित बाड़न। अइसन समय में तोरा अइसन दानी के कीमत केतना बढ़ जाता। जे ई रोग के फइले में रोकावट डालत होखे आ साथे हमनी जइसन लोग जे महँगाई के भट्ठी में जा रहल बा, उनका के मरे से बचा लेत होखे। हम त समझीं ले काम कामे ह चाहे ऊ देहि दान के काम काहे ना होखे। भीख माँगल बुरा ह। बाकी कुछ दे के समान लेहल, ई त समान के बनावल चाल के परचलन ह।

काल्ह राजू आई। तोर सबसे सुन्नर देवर। ऊ तोरा के कम से कम सइ रुपया दी। नया-नया चटकल से आइल बा। अबहीं आपन हीनता के छिपावेला आ ओह लोगन के देखावेला जे ओकरा के पहिले हीन बूझत रहलन। कड़कत कागज के नोट निकाले में ओकरा कवनों दुख ना होखे। अपना आँख से बैंक से निकलल कड़ा नोट के काल्ह देखलीं।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाँव के बँसवारी में रात के करिया साड़ी गिर गइल। बजड़ा के खेत से सियार के आवाज नदी के मुर्दघटिया तक आवे लागल। सुखिया गदहा जइसन दुख के लादी उठवले खड़ा हो गईल। गाँव से जाए वाला आखिरी नाव भी चल गइल। नाव से अबहियों मल्लाह के तान गूँजत रहे—

सवे नचावत राम गुसाईं।
नाचत नर मरकट की नईं॥

सुखिया के बिल्ली जइसन आँख गाँव के ओर टँग गइल। दूर गाँव के टिम-टिमात रोसनी ओकरा मुँह बवले लेखा लरकाई में सुनल राछस जइसन लागल।

सोचलस, ई गाँव ना रहित, मठ ना होइत, मठ के सुन्दर राजा जइसन मन रखेवाला महन्थ ना रहितन, ई सुन्दर संस्कृत, तन देला पर हर बात पचाने वाला समाज ना रहित त आज ऊ कहीं के ना रहित।' उसास से गति लेके ओकर पैर पहिले जइसन गाँव के ओर बढ़ चलल। पीपर वाला बरम्ह बाबा के पास पहुँच के ऊ ठमकल।

एगो करकस आवाज पैर के बाँध लेलस।

'के ?'

'हम'

'सुखिया माई।' आवाज ठंढा गइल। आँख के नरम सनेह पैर के धो देलस। एगो सुरसरी छा गइल सुखिया के गोर देह में—'माई, महन्थ बाबा के ईहाँ जातानी का ? जाईं माई ! पूजा पाठ में महन्थ जी अपने के छोड़ केहू से मदद थोड़े लेलन। ई त अपने के सौभाग्य बा जे अइसन पिरीत अपने से लागल बा। ऊहाँ के त सब जगह कहींले कि ऊहाँ के अपने में योगमाया के दरसन करींले।

कुछ रूक के, 'अपने निहचिन्त रहीं। मइया अब राउर ऊ सहरी खसम राउर कुछ ना क सकी। अबकी आई त ए नदी में ओकर लास हमेशा खातिर डूब आई। जेकरा पर लाला क किरपा हो जाय ओकर अंगुरी के पोर केहू छू दे त हमनी के ओकर आँख निकाल लीं। गाँव के जमींदार त अब अपने के नाम पर एगो मन्दिर बनवावे जात बाड़न। अबहिएँ ऊ महन्थ जी के ईहाँ गइलन ह। आज कवनों समाज कल्याण के धरम जग्य बा। हम पाठी आ लबनी पहुँचावे गइल रहनीं हाँ।'

दूनों बढ़ के सुखिया के चरन छू के धूर के माथा पर लगा लेलन। जइसे थरमामीटर के पारा अचानक गिर जाय, सुखिया के लागत जइसे समूचे सरीर में के बरफ के पिचकारी छोड़ देले होखे आ ओकर व्यक्तित्व गिर के काफी ठंढा गई होखे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तनिके दूर ऊ गइल होई जे दूनों में से एक के स्वर सुनाई पड़ल —'भगवान माई के जुग-जुग जियावस। अगर आज ई गाँवे ना आइल रहती त बड़ महन्थ के मठ कब्बे टूट गइल रहित। ऊ रईस लोग आवल छोड़ दीत जेकरा किरपा से आज ई मठ जियत-जागत बा। रामदुलारी के मुअला के बाद ई माईये हई जेकरा अइला के बाद से ठाकुर वीर सिंह जे हमेसा पायल के झनकार आ आँख के रस में डूबल रहें, आज सब छोड़ के जादे समय मठ में बितावेला आ दिन रात पूजा-पाठ में बाझल रहेला। आपन मउसी के लइकी के कब्बो भगा के ले जाय वाला माई के एक किरपा खातिर हमेसा हाथ जोड़ने रहेला। माई के अइला से गाँव आ मठ दूनो के भलाई भइल, एकरा के के ना मानी।'

ठूँठ पेड़ जइसन सुखिया अब ऊहाँ ना रूक सकल। गति तेज हो गइल। बात इयाद आइल, 'देवता के कुछो आपन ना होखे। लोग भोग लगावेला भोगे खातिर। जेकरा के भोगल जाय, चाहे जेकरा जरिए भोगल जाय, ओकर आपन बिसात का ह, कुछो ना। अगर ह त ईहे कि ओकर कवनों बिसात ना ह।'

मन के कउआ आ उल्लू धीरे-धीरे सूति गइलन स। बिल्ली जइसन आँख आ तनल पंजा ले ले ऊ मठ के नगीच पहुंच गइल। मन के गुलाबी चादर कठिया गइल। रेगिस्तान में हवा जोर से बहे लागल।

देवता जइसन लागे वाला कई दिन पहिले के रघू ठाकुर के बोल सरीर से टकराए लागल, 'ना जाने ई सुखिया माई कइसन बिया। रात में जब केवनों बाँह में बँधेले त कहेले कि भगत खातिर सरीर के कौनल आ बेचल के मोल का ह। मठ चले, हैजा से गाँव बचल रहे आ गरीब के आपन गरीबी के दूर करे खातिर रुपया मिलत रहे त माई सुखिया हमेसा हर रात कवनों बाँह में जाति, बरन, आ समय से परे बँध में कवहीं ना हिचकी। हाँ त एक बार एगो अंक के ऊ गंध से भर सकी। एक बार एक सीता एके गो न अंक में जा सकेले, दूसर अंक के त सून रहे के पड़ी। एक रात के सधवा आ बिधवा होखल सदा बिधवा होखल से कहीं अच्छा होला। कसम ई बदले कि केहू के अगर दुख सुने के मिली त अंक में रहला पर भी अंक छोड़ के चल जाई!

मठ के दरवाजा से जब ऊ मठ में घुसल त मन के तनाव ढीला पड़ गइल आ ओंठ हास से भर गइल। मजबूत पैर आ हृदय लेले आगे बढ़त एतने बात दिमाग में आइल, सचो पहिला खसम के साथ के जिनगी आज के तुलना में कहीं नीमन रहे। ऊहाँ बिना कवनो रहस्य के के सब खुलल रहे। समरपन ऊहाँ रहे। खरीद बिक्री के भी बात उहाँ रहे। पर साथे एगो बिसवास आ गरिमा रहे ओह समय। फरक एतने रहे कि आज जइसन ऊ देवता कह के पूजल ना जात रहे।

सवाल के राजहंसी कतार मन के आकास में बिछ गइल। नाविक के सुर अचानक ओकरा इर्द-गिर्द फिरे लागल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सबै नचावत राम गुसाईं ।
नाचत नर मरकट की नाईं ॥

ऊ पहिल जइसन मठ में एने-ओने चक्कर काटत अपना सूते वाला सेज प निढाल हो गइल जहां महन्थ के भेजल क्रम के सुरता करत एगो लोक कथा के धं राजकुमार ओकर इन्तजार करत रहे । अपने आप अंक में बंधत ओठ खुलल आ गी के कड़ी फूटल जे कबो ओकरे गाँव के तथाकथित गरीब राजकुमार आपन अका उड़त मनवा से अपना राजकुमारी के प्रेम जाहिर करे खातिर गाँव के सिवाने गवले रहल ।

कइसे कटी अब रतिया हो राम, मैंना गइले बिदेश ।
के अब अँचरा हिलइते हो राम, हँसि हँसि भेजिहें सनेस ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दरबा

वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय

रजनी के भावना के सहजोर धक्का लागल जब अपना सखी लोग के मुँह से ई बात सुन लेली कि ऊ जवना घर में रहेली, ऊ दरबा ह। कुछ देर ले उनकर हिरदिया दरद के धुँआ से भरल रहे आ उजबुजाइल रहली। बाकिर ई हालत बहुत देर ले ना रह सकल। ऊ अपना के बटोर लेली। ऊ दरबा में रहेली त दोसरा के का बिगड़त बा ? कोई महल में रहेला, त रहो, उनका खातिर उनकर इहे महल घर महल बा। सीसमहल। ई सोच के रजनी अपना के समझा लेली। काल के जहर बड़ा खराब होला, कुछ सुन लेला पर तकलीफे होला, एह से लोगन से कम मिले जुले के चाहीं। इहे सोच के रजनी पड़ोस में आइल-गइल बन्द कर देली। उनका नमस्ते भर से नाता अगल-बगल के सखी-सलेहर लोग से रह गइल। रास्ता में भेंट भइला पर नमस्ते कर लेस आ हालचाल पुछला पर हाँ-हूँ में जबाब दे के आगे बढ़ जास।

रजनी के ठीक से इआद बा कि जब ऊ पाँच बरिस के रहली तबे उनकर बाबूजी ए घर में आइल रहलन। आ तबे से ऊ लोग ए घर में बा। मकान मालिक दत्ता बाबू उनका बाबूजी के दोस्त हउअन, एही से ए मकान के ऊहे भाड़ा बा जे पहिले रहे। अगर ऊ लोग आज ए मकान के छोड़ देवे त चालीस रुपिया भाड़ा दे के रहे खातिर बहुत लोग तइआर बा। बीस रुपिया भाड़ा देला पर घर के के कहो, एगो कोठरियो मिलल असंभव बा। एगो मास्टर खातिर बीस रुपिया भाड़ा दे के मकान लेहल कवनो बहुत सुविधा के बात नइखे। कम कमाई में खर्चो चलावल आ लइकी के कालेज में पढ़ावल कम हिम्मत आ धीरज के बात नइखे। इहे सब सोच के रजनी अपना मन के समुझा लेली आ अपना के बराबर संतुष्ट रखेली। रजनी के मन में बहुत कम इच्छा जनमे। अगर कवनो इच्छा जनमतो रहे त ऊ आवे वाला काल्ह के मधुर कल्पना में डूब के, इच्छा बिसार देस।

आवे वाला काल्ह के बहुत चिन्ता-फिकिर रजनी के ना रहे। उनका ई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूरा भरोसा रहे कि आवे वाला काल्ह् में ऊ, ऊ ना रहिहन जवन आज बाड़ी। आवे वाला हर पल उनकर आपन होई जवना के ऊ मस्ती में भोगिहन। ऊ बी० ए० में पढ़त बाड़ी। बी० ए० पास करते उनका कहीं ना कहीं नोकरी लागिये जाई आ तब ऊ अपना बाबूजी के बोझा हलुक करिये दिहन, अपनो खातिर एगो नया जिनगी पा जइहन, जवना में सुख-आराम के हर चीज मौजूद रही। ऊ मने-मन ए नया जिनगी के सुख करे के योजना बना लेली। जब कमाये लगिहन त एगो लमहर पक्का के घर भाड़ा पर लिहन। ओ घर के सामने वाला कमरा में ड्राइंग-रूम बना के ओकरा के नया दुलहिन लेखा सजइहन-सँवरिहन। दोसरा घर सब के बहुत बढ़िया से साफ सुथरा करके रखिहन। ई सब हो गइला पर कवनो ना कवनो बहाना से अपना सखी लोग के आपन घर देखा दिहन। तब ओहू लोग के ई बात समझ में आ जाई कि दरबा में रहेवाला के निमनो घर में रहे आवेला।

ड्राइंग रूम के सजावट आ दोसरा घर के व्यवस्था के रूप-रेखा, रजनी मने-मने बना लेली। ड्राइंग रूम में एगो सोफा-सेट रखिहन आ एगो टेबुल रखिहन, जवना पर गुलदस्ता रही। ऊ रोज-रोज गुलदस्ता में ताजा फूल सजइहन। अइसे ऊ अपने कागज के फूल बनावेली बाकिर अपना गुलदस्ता में ताजा फूल लगइहन काहे कि उनका रसहीन गंधहीन बनावटि फूल से प्यार नइखे। खिड़की आ केंवाड़ी के परदा के रंग आ ओह पर के वेल-बूटा के कढ़ाई के नमूना पहिलहीं तय कर लेली। ई सब बात के साथ अनजान में एगो अइसन बात उनका मन में जनमल जवना से ऊ पल भर खातिर अनचिन्हार सिहरन से भर गइली आ नया-नया सपना उनका आँखिन में टँगा गइल। ऊ एतना चाव से ड्राइंग रूम सजइहन सँवरिहन, पर्दा के बेल-बूटा बनइहन, घर के साफ-सुथरा रखिहन, बाकिर जब उनकर बिआह हो जाई, त उनको त ससुरा के घर के सजावट आ सफाई नू करे के पड़ी। बिआह के बात मन में अइला पर एगो अनचिन्हार रूप मन का आँखिन में उभर आइल, बाकिर एगो सहजोर आँधी अनचिन्हार रूप के उधिआ ले गइल। रजनी उहँवे आके ठहर गइली जहवाँ पहिले रहली। उनका सामने अपना परिवार के अझुराइल स्थिति के साफ चित्र झलके लागल। अगर ऊ बिआह क के चल जइहन, त ए घर के साफ-सुथरा के करी, गुलदस्ता के फूल के बदली आ सब त सब उनका बूढ़ मतारी-बाप के रोटी बना के, के दी? ई सवाल उनका मन में आइल आ ऊ झँवरा गइली। उनका आँखिन में ठहरल रूप आँधी में उधिआ गइल आ ऊ सोचे लगली कि उनका सिवा ए दुनिया में मतारी-बाप के देखेवाला के बा? अपना मतारी-बाप खातिर उहें बेटा आ बेटी दूनो बाड़ी, उनका दूनो के जिम्मेदारी निभावे के बा। बिआह हो गइला पर उनका अपना पर कवनो अधिकार ना रही, फेरू भला ऊ कइसे मतारी-बाप के सेवा कर सकिहन, कइसे घर के सजा-सँवार सकिहन। ई सोचते-सोचते ऊ घबड़ा उठली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिना कुछ सोचले फैसला कइली कि ऊ बिआह ना करिहन। जिनगी भर कुँआर रह के बाप-मतारी के सेवा करेके फैसला कर लेली।

× × × ×

कुछ दिन से रजनी के साफ-साफ बुझाये लागल रहे कि उनकर बाबूजी कवनो लमहर गंभीर सवाल में अझुराइल बाड़न। अपना बाबूजी के अझुराहट आ चिन्ता देख के रजनी बहुत घबड़ा गइल रहली। उनकरा घबड़ाये के कारण रहे कि ऊ ई बात ठीक से जानत रहली कि उनकर बाबूजी घरकच झंझट से घबड़ाये वाला अदमी ना रहलन, जरूर कवनो अइसन बात बा जवन उनका बाबूजी के मन के सुख सांति छीन लेले बा। उनका चेहरा पर बराबर उभरल रहे वाला लकीर, रजनी खातिर टेढ सवाल बनल रहे। ऊ हर पल ई जाने के कोसिस करत रहली कि आखिर बात का ह? उनका सवाल के जवाब ना मिलत रहे। खाली असगुन के नया-नया डेरावना सूरत नाचत रहे। असगुन के डेरावना सूरत देख के ऊ भीतरे-भीतरे काँप उठस।

एक दिन अचक्के में ऊ अपना बाबूजी आ माई के बतिआवत सुन लेली। उनका लोग के बतकही से रजनी के मन के बोझा हलुक हो गइल आ उनका दिल-दिमाग के छटपटाहट कम हो गइल। उनका जान में जान आइल जब उनका ई बात मालूम हो गइल कि उनकर बाबूजी, उनके बिआह के चिन्ता से एतना उदास रहत बाड़न, रजनी अपना से बतिअवली—'बाबूजी जब हमरा फैसला के जान जइहन त उनकर सब चिन्ता-फिकिर खतम हो जाई आ उनका मन के तूफान कम हो जाई। हमरा फैसला से हमहीं ना मइयो-बाबूजी के खुसी होई। बिआह हो गइला पर मेहरारू के सब आजादी खतम हो जाला, इहाँ तक कि अपना मन के अनुसार कोई के सेवा तक ना कर सके। जानबूझ के, भला के अइसन गुलामी किनी?' उनका अपना बात पर अपने हँसी आ गइल आ ऊ खूब खुल के हँस लेली।

रजनी बेफिकिर त हो गइली बाकिर उनका बाबू जी के हालत ना बदलल। उनका बाबूजी के उदासी आ दरद के परत मोट होत गइल। उनकर चिन्ता दिन पर दिन बढ़त गइल आ एगो अइसन समय आइल कि ऊ खटिया पकड़ लेलन, उनकर उठल-बइठल, चलल-फिरल सब बन्द हो गइल। रजनी रोज हिम्मत करके, अपना मन के लाज छोड़त अपना बाबूजी का सोझा ई कहे खातिर जास कि उनका बिआह खातिर चिन्ता कइला के कवनो जरूरत नइखे। बाकिर उनकर हिम्मत बटोरल खतम हो जाय, जब ऊ अपना बाबूजी का आँखिन में पँवरत उदासी देखस, आ ऊ जब ई देखस कि उनका बाबूजी के चेहरा पर के अझुराइल लकीर आउर अझुरा जाय। ऊ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना बाबूजी के सोझा से भाग आवस। एक दिन जब उनका मन के बेचैनी आ घबराहट बहुत बढ़ गइल त ओही हालत में अपना बाबूजी का लगे गइली आ साफ-साफ कहली—'रउरा बेकारे फिकिर में पड़ल बानीं। हम फैसला कर चुकल बानीं कि रउरा लोग के छोड़ के कहीं ना जायेब। दोसरा के खूँटा में बन्हा गइला पर, हम रउआ लोग के सेवा ना करेब त हमरा मन के सान्ति ना मिली, हमार धर्म पूरा ना होई। हम बिआह ना करे के फैसला कर लेले बानीं।'

रजनी सब बात बड़ा सहज ढंग से कह गइली। रजनी के सहज ढंग से कहल ए बात के अजब असर उनका बाबूजी पर भइल। उनकर ई बात सुनते उनका बाबूजी के चेहरा के रंग एक-ब-एक उड़ गइल आ उनका आँखिन का कोर में ठहरल लोर बाहर आवे खातिर जोर लगावे लागल। उनकर बाबूजी, उनका के बहुत गौर से देखत, करवट बदललन। ऊ मुस्कियाये के कोसिस करत कहलन—'बेटी पराया धन होले। लड़की पति आ सास-ससुर के सेवा करके मुक्ति पावेले, सास-ससुर आ पति के सेवे कइल ओकर धरम ह। तोहार बिआह कर देब त हम निश्चिन्त हो जाएब, हमरा मरे का बेरा कवनो तकलीफ ना होई। मतारी-बाप के जाँघ पवित्र तवे होला, जब ऊ लोग कन्यादान करेला।' कहते कइत उनकर बाबूजी उदास हो गइलन आ उनका आँख से एक बूँद लोर टपक गइल। रजनी चकरा उठली। उनका अगर ई तनिकों भर मालूम रहित कि उनका ए बात के एतना उलटा असर उनका बाबूजी पर पड़ी त ऊ कबो ई बात ना कहती। ऊ ई बात एह से कहली कि उनका, बाबूजी के खुस करे के रहे, उनका मन के चिन्ता दूर करे के रहे। ऊ लाख ई समझे के कोसिस कइली कि उनकर बाबूजी एतना उदास आ आउर दुखी काहे हो गइलन, बाकिर ऊ कुछ ना समझ पवली। कुँआर लड़की के भला ओह बूढ़ बाप के दरद के थाह का लागो, जेकरा जवान कुँआर बेटी बा आउर अपने लाचार हो गइल बा आ खटिया पकड़ लेले बा। रजनी बाप के सामने से, तेजी से रसोइया घर में चल अइली। ऊ रसोइया घर आवते देखली कि चूल्हा पर के बोझल पथलकोइला के ताव झँवरा गइल आ ऊ एक बेर चूल्हा के गौर से देखत, चूल्हा पर, फेरु से कोयला बोझे लगली।

× × ×

रजनी के बबूजी के बेमारी बहुत बढ़ल जात रहे। रजनी आवेवाला काल्ह के कल्पना से भीतरे-भीतर ओह लकड़ी लेखा जरत रहली। उनका बाबूजी के चेहरा पिअरइ आ आँखिन के नीचे के करिअइ डेरावन भइल जात रहे। अपना बाबूजी के बेमारी के चिन्ता से रजनी दिन-रात घबड़ाइल रहस। उनका कुछ समझ में ना आवत रहे। उनका दिन-रात ई बुझाय कि घर के पुरान छप्पर, उनका माथा पर झुकल आवत बा आ कब टूट के उनका माथा पर गिर पड़ी कवनो ठीक नइखे। ऊ बरो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एही डर से डेराइल, सोच में पड़ल बेजान लेखा जहाँ बइठस तहवें बइठल रहस। उनका अपना देह आ पढ़ाई के कवनो फिकिर ना रहे। बुझाय कि ऊ जिनगी ढोअत बाड़ी आ ए जिनगी से इनका कवनो लगाव नइखे।

ऊ रोज-रोज अपना बाबूजी से कहस कि कहीं त कवनो बढ़िया डाक्टर के बोलवा के रउवा के देखवा दीं। बाकिर रोज उनकर बाबूजी ई कह के टाल देस कि-'घबड़ाये के कवनो बात नइखे, सब अपने ठीक हो जाई। सर्दी-खोंखी में भला एतना घबड़इला के कवन बात बा। तुलसी जी के पत्ता आ गोलमिरिच का काढ़े से सब ठीक हो जाई।'

एक महीना से अधिका हो गइल, तुलसी जी के पत्ती आ गोलमिरिच के काढ़ा दिआत आ छाती पर गाय के पुरान घीव मलात, बाकिर कवनो फायदा नजर ना आइल। दिन पर दिन हालत गिरते जात रहे। मिले-जुले आवे वाला लोग से उनकर बाबूजी खाली इहे कहस कि हमरा बेटी के बिआह खातिर लइका खोज के हमरा के उबार ल लोग। सभे उनका के आसरा बन्हा के जाय, बाकिर ना हो सकल। कुछ लोग त एही डरे देखे आइल-गइल छोड़ देलस कि भेंटइला पर फेरू ऊ इहे बात पूछ दिहन।

ई बात सुन-सुन के रजनी के दरद आउर बढ़ल जात रहे। उनका अपना जिनगी पर तरस आवे आ जब ऊ अपना बारे में सोचे लागस त उनका बुझाय कि उनकर जिनगी बेकार बा, उनका दुनिया में रहला से उनका मतारी-बाप के बहुत दुख उठावे के पड़त बा।

रजनी के जब अपना बाबूजी के बिगड़त हालत आ तकलीफ ना देखल गइल त ऊ एक दिन बिना कोई से कहले-सुनले डाक्टर के बोला ले अइली। डाक्टर उनका बाबूजी के बहुत ठोक से जाँच कइलन—'अबहीं हम कवनो दवाई ना लिखेब, पहिले इहाँ के खून जाँच करावल जाय आ छाती के एक्सरे करावल जाय, तबे हम दवाई लिखेब।'

ई राय दे के डाक्टर चल गइलन आ रजनी चुपचाप खड़ा भइल छप्पर में लागल मकड़ी के जाला निहारत रहली। रजनी के धिआन तब टूटल जब उनकरा बाबूजी के खोंखे के आवाज कान में पड़ल। ऊ घबड़ाइल अपना बाबूजी का लगे खड़ा हो गइली। उनकरा क डबडबाइल आँखि से देखत ऊ कहलन—'कहत नू रहनी हँ कि डाक्टर लोग कमाये खातिर बहुत लमहर-लमहर बात कहेला लोग, अगर एतना बात ना कहितन त उनका के बड़ा डाक्टर के मानित। तोहरा घबड़ाये के कवनो बात नइखे, हम अपने ठीक हो जायेब।'

ना बाबूजी, अब राउर हम एगो बात ना सुनेब, रउआ आजे खन जाँच

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करावे आ एक्स-रे करावे चले के पड़ी।' ई कहत बीच में रुक के माई के देखली, फेरु कहली—'माई, बाबूजी के कपड़ा बदलवा दे, हम तइयार होके बानी, आज सब जाँच करा के काल्ह से ठीक से दवाई चली। आज बिहान करत रोग बिगड़ल जात बा।' कहत ऊ उहाँ से झटका मे अपना कमरा में गइली। अपना कमरा में मे तइयार होके जब निकलली त देखली। कि बाबूजी तइयार बइठल बाड़न आ उनकर माई देवी-देवता के गोहरावत बाड़ी बिना कुछ कहले बाहर निकल गइली।

बाहर लवट के कहली—रेक्सा बोला ले अइनी, चलीं।

उनका के भरपूर नजर से देखत उनकर बाबूजी उठलन आ उनका पर हाथ रख के गते-गते चले लगलन।

रिक्सा पर बइठल लोग। रेक्सा जब बढ़ल त रजनी गते से कहली 'बाबूजी, अपने के कहितीं त हम नोकरी कर लेतीं। बगल के बचचन के स्कूल में नोकरी के बात पक्का हो गइल बा।'

ई बात सुनते उनकर बाबूजी कड़ा होके तन के बइठ गइलन। उनकर आउर झँवरा गइल आ ऊ काँपत आवाज में कहलन—'हमरा जिअत जिनगी तोहरा काम ना करे के पड़ी बेटी, जब मर जाइब तब त हम कुछ देखहूँ ना आ लोग हमरा के का कही? हमरा बेमारी आ मजबूरी पर केहू हँसी उड़ावे, सह ना सकीं। तोहरा मन में ई बात आइल कइसे?' ई सवाल पूछ के ऊ बाबूजी, उनका आँखिन में झाँक के उनका मन के भाव जाने के कोशिश करे लगलन।

रजनी कुछ कहे के चाहते रहली कि रेक्सा एक-ब-एक 'एक्स-रे-क्लिनिक' सामने रुकल। अपना बाबूजी के समझावे के चाहत रहली बाकिर उनका मौका ना मिलल। रेक्सा रुकते उनकर नजर एक्स-रे-क्लिनिक के दुआरी पर बइठल के चेहरा पर गइल। मरीज के चेहरन के उड़ल रंग आ आँखिन में फइलल दर्द के बदरी देख के रजनी काँप उठली। उनका बुझाइल ऊ रेक्सा पर से बेजान ढिमला जइहन। ऊ जल्दी से रेक्सा से नीचे उतर के, बाबूजी के हाथ पकड़ के उतार लेली। जब ऊ बाप-बेटी रिक्सा पर से उतरल लोग त मरीज सब एगो भाव से उनका लोग के घूरे लगलन सन। मरीजन के अपना ओर घूरत देख रजनी घबड़ा गइली आ उनका बुझाइल कि तनियों देर ले ओह लोग के खड़ा ना रह सकेली। बाकिर अपना के कड़ा करत आ सब सवाल भरल नजर के चुभन सहे खातिर तइयार करत ऊ गते-गते आगे बढ़ गइली। जब ऊ मरीजन के लगे पहुंचली त उनका ओह लोग से अपनापन आ हमदर्दी मिलल। ऊ लोग से तनिये देर के जान पहचान में बहुत बात पूछ लेलस लोग। ओ लोग से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेला पर ई बुझाइल कि सभे एगो अजब निराशा से भरल वा लोग आ सभे के जिनगी के मोह गते-गते छूटल जात बा। ऊ ओह लोग से बतिआवत रहली आ के रह-रह के अपना बाबूजी के चेहरा पर के उभरल भाव के देख लेत रहली। उनका ई साफ-साफ बुझा गइल रहे कि दोसरा मरीज लोग लेखा उनके बाबूजी के मन में ओहे सब बात भरल बा, ऊहो निरासा के समुन्दर में डूबत-उतरात बारन।

रजनी एक्स-रे करा के जब घरे लवटली, तब रह-रह के उनका मन में मरीजन के बात आ मन के उदासी नाचे लागत रहे। एगो अइसन तूफान उनका दिमाग में उठत रहे जवना में उनका आवेवाला काल्ह के सपना आ विसवास उधिय जात रहे। ऊ अपना के काम में बझवले रहे खातिर, छप्पर में लागल मकड़ी के जाला साफ करे लगली आ किताबन पर जमल धूर के परत साफ करे लगली।

× × × ×

रजनी एक्स-रे प्लेट आ खून के रिपोर्ट लेके, दवाई लिखवावे डाक्टर किहाँ पहुँचली। डाक्टर के बइठका के दुआरी पर पहुँच के उनकर गोड़ लड़खड़ाये लागल आ ऊ दुआरिये पर रुक गइली। अपना के भीतरे भीतर टटोरली। उनका ई बुझाइल कि उनकर हिम्मत पस्त पड़ गइल बा आ ऊ डाक्टर के सामने ना जा सकस। उनका रह-रह के ई विचार आवत रहे कि उहाँ से भाग जास बाकिर ऊ अइसन ना कर सकली। हिम्मत बटोरत ऊ झटका से डाक्टर के बइठका में बढ़ गइली।

डाक्टर के प्रणाम करत काँपत हाथ से एक्स-रे-प्लेट आ रिपोर्ट उनका ओर बढ़ा देली। डाक्टर एक्स-रे-प्लेट आ रिपोर्ट लेत भरपूर नजर से रजनी के देखलन आ फेरु रिपोर्ट आ प्लेट के देखे लगलन।

रजनी मने-मन देवी-देवता के गोहरावे लगली, मनौती माँगे लगली। डाक्टर दवाई लिखे खातिर कलम खोलत कहलन—'हम दवाई लिख देत बानी, मरीज के दोक से इलाज करावे के पड़ी। दवाई से अधिका मरीज के संजम के जरूरत बा। मरीज के दूध, अंडा, फल आ दोसर पुष्टई वाला खाना देवे के पड़ी। एक महीना के चलल-फिरल, उठल-बइठल सब बन्द रही। सब बात पर पूरा धियान देला पर भगवान चहिहन त उहाँ के बहुत जल्दी अच्छा हो जायेब।' ई सब कह के डाक्टर दवाई लिखे लगलन। उनका बात के कइसन असर रजनी पर भइल, ऊ ई ना देखलन।

रजनी के चेहरा पर करिया रंग के एक परत लेपा गइल आ उनका आँखिन में डर के डोरी तना गइल। रजनी घबड़ाइल काँपत आवाज में पुछली—'डाक्टर साहेब, बाबूजी के कवनो खराब बेमारी हो गइल बा का ?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डाक्टर दवाई लिख चुकल रहलन। ऊ आपन माथा ऊपर उठवलन आ रजनी के उदास आँखिन मे झाँकत कहलन—'घबड़ाये के कवनो बात नइखे। दवाई ठीक बेरा पर द आ मरीज के संजम पर पूरा धियान रख, भगवान चहिहन त जल्दी रोग दूर हो जाई।' ई कह के डाक्टर दवाई के पुरजी बढ़ा देलन।

दवाई के पुरजी काँपत हाथ से लेत रजनी अँचरा के छोर से आँखिन के टपकत लोर पोंछे लगली।

उनका के रोअत देख के डाक्टरो तनी देर खातिर उदास हो गइलन। अपना मन के भाव के दबावत कहलन—'एगो बात कहे के त भुलाइये गइलें हँ।' उनकरा ए बात पर रजनी कुछ बोलली ना, ऊ खाली नजर से डाक्टर के देखे लगली।

डाक्टर कहलन—'मरीज के साफ-सुथरा हवादार कमरा में रखल जरूरी बा। ई रोग गन्दगी आ धूर-गरदा से बहुत बढ़ेला। जेतना जल्दी हो सके, घर बदल द आ एगो साफ-सुथरा हवादार घर भाड़ा पर ले ल।'

'साफ सुथरा हवादार घर?' लमहर साँस लेत, रजनी डाक्टर के बात के अजब भाव से दोहरा देली।

अपना बात के अइसे दोहरावत देख के डाक्टर सवाल भरल नजर से रजनी के ओर देखे लगलन। डाक्टर कुछ कहे चाहत रहलन कि रजनी झटका से डाक्टर के बइठका में से निकल गइनी। बाहर अइला पर फेरू ऊ मने मन डाक्टर के बात दोहरवली—'साफ-सुथरा हवादार मकान?' ई दोहरावते उनका बुझाइल कि उनका माथा पर उनका घर के झुकल छप्पर अररा के गिर गइल आ उनकरा कान में नोनिआइल भीत के धमाका भर गइल। ऊ डर के मारे अइसन चिखली कि अगल बगल के लोग उनका ओर घबड़ा के देखे लागल।

रजनी के डेग आगे ना बढ़त रहे, उनका बुझात रहे कि उनका चारो ओर कुहा बढ़ल आवत बा। ऊ कसहूँ-कसहूँ अपना के बटोरत आगे बढ़ली। कुछ डेग आगे गइला पर फेरू पीछे मुड़ के डाक्टर के बँगला के ओर पथराइल आँखिन से देखली। उनकर नजर बँगला पर से हटल ना कि उनका कान में उनका सहेली लोग के बात गूँज उठल। ऊ घबड़ा के आँख मूँदत बुदबुदइली—'ऊ साँचो दरवा में रहेली। दरवा में, जहाँ से निकले खातिर चिरई पाँख फड़फड़ावत रह जाले।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गनिया

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

गनिया टमटम उड़वले चल जात रहे। टमटम ढकर-ढकर करत रहे। ओकर पाट-पुर्जा बुझात रहे कि अलग-अलग हो जाई। सड़कि उभड़-खाभड़ रहे। टमटम पर बइठल डाक्टर मने-मन अनसात रहन। डाँटे के मन करत रहे बाकिर चुप रह जात रहन। जानत रहन कि एकर पुरान आदत ह। कतहूँ रोगी देखे जाये के होखी तब असहीं करेला। कुछ कहल। पर कहे लागी—

'डाक्टर बाबू, रउरा बाहर के हईं। इहाँ के लोग के नइखीं जानत। तनी-मनी कुछ हो गइला पर लोग डाक्टर के पास ना जा। अब-तब के घरी लाग गइला पर लोग डाक्टर के पास जाला। रवे कहीं कि अइसन में देरी करे के चाहीं? परान छूटे में का कवनो समय लागेला?'

आ घोड़ा के चाल आउर तेज कर दी। जबाब देत ना बनी।

भर रहता बकत रही।

'चल बेटा! हीरा रे! एक जान के सवाल बा। बहुत पुनि होई। लोग के ओठे पर तोर नाँव रही। देख के। गड़हा बा। ऊँचा बा। जोर लगा के। बहुत दूध पियले बाड़। आज मलीदा खिआइब। खुदा हो। दया कर। रोगी के उमिर द। डाक्टर के हाथ में जस द। तूँ मालिक हव। तोहरे भरोसा बा। गाड़ी से बच के। चल सुग्गा। किनारे से। बच-बच के। हाय हाय ई का? अबहिएँ से थकान! गाँव दूर बा। चाल बढ़ा के! रोगी बचावे के बा। बेचारा के एके लइका बा। खनदान के दीया बुताय मत। हाय अल्ला। रहम कर। नूर द। परवरदिगार हव। ससुरी हवा बढ़हीं नइखे देत। कइसन गर्मी पड़ रहल बिया। लोग रहता से हटते नइखे। सुराज नू हो गइल।'

जब गनिया घोड़ा के मनावेला तब डाक्टर के बुझाला कि ऊ उनकरे मनावन करत होखे। सुरू-सुरू में उनका ओकर बड़-बड़ाइल खराब लागत रहे। अब ऊ ओह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर धेयान ना दे स। तबो कब्रों-कब्रों ऊ अइसन बात बोलेला कि डाक्टर के हँसी हवा में पँवरे लागेले।

गनिया स्वभाव के खरा ह। केहू के चुगली करे के हाल ना जाने। डाक्टर ओकरा के अउर टमटम वालन से जेयादा एह से मानेलन कि ऊ बहुत दिन से अस्पताल के डाक्टर लोग के चढ़ावत आ रहल बा। चरित्र के अच्छा आदमी ह। विसवासघात करे के हाल ना जाने। कवनो समय कहल जाय तइयार रहेला। कवनो फुरमाइस ना करे। गाँव-देहात के लोग ओकरा टमटम के सगुनिया मानेला। बड़-छोट के लेहाज ओकरा नजर में रहेला। मँहगा-से-मँहगा सवारी छोड़ के डाक्टर के ले जाये खातिर तैयार रहेला। कवनो गाँव के केहू के घर जाये के होखे ओकरा रहता पूछे के ना परे।

गनिया के नजर में रोगी के ना जात होले ना धरम। जवना तेजी से मुसलमान के घर जाला ओही तेजी से इसाई भा हिन्दू के घर भी। नाँव से मुसलमान होके भी ऊ हिन्दू ह। ओकरा माई के एगो फकीर पर बहुत विसवास रहे। ऊहे फकीर एकर नाँव गनिया रखले रहन।

'डाक्टर साहब ! रउरा भगवान पर विसवास करीला कि ना ?'

डाक्टर के धेयान टूटल। पहिले त ओकरा सवाल के ना समझलन। फेर से पूछे के चाहत रहन। तवले खियाल हो गइल।

'काहे ? का बात ह ?'

'कुछ ना ! असहीं पूछत रहीं।'

'हम भगवान के मानीला। ढकोसला के ना। एगो अनजान सक्ति के आगा माथा झुकाईला। ओही सक्ति के भगवान जानीला।'

'ठीक बा, मानीं। रउरा मान सकीला। हमा-सुमा के त ढकोसला के मानहीं के परी।'

डाक्टर के दिमाग गनिया के बात के साथ कदम से कदम मिला के ना चल सकल। मन में पूछ के समझ लेवे के लहर आइल। एगो बड़प्पन के चादर ओढ़ले रहन। ऊ घसकत बुझाइल। टाई ठीक कइले। कोट-पैंट पर के धूर रुमाल से उड़वले। मुँह पर रुमाल गते-गते चलावे लगले। मन में कुदार चलत रहे। अपना के ना रोक सकले।

'काहे ?'

गनियो आदमी ह। सब कोई अपना के सबको से बड़ समझेला। हाथी भा कार पर चढ़ेवाला लोग सइकिलिहन के हटत देख के हँसेला। हमरो से बड़ लोग दुनिया में बा, ई भुला जाला, बाकिर अपना से छोट के नाँव अँगुरिये पर रहेला। डाक्टर के दिमाग में अपना बात के ना पकड़ात देख के गनियों के खुसी भइल। ऊ खँखार के गला साफ कइलस आ कहे लागल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'केहू कहे कि मिठास होले । सभे कही ऊ कइसन होले ? मीठ लागे से मिठास ह । रउरा मान लेब । हमरा दिमाग में ना धँसी । केहू मिसरी खिया के कही कि जइसन लागत बा उहे मिठास ह । हम मान लेब ।'

गनिया चुप हो गइल डाक्टर के डर लागे लागल । ऊ गनिया के एके सवाल से डरेलन । ऊ जब पूछेला कि बबुआ लोग कब आई, मेम साहेब कब आएब, तब साँच बोले के साहस ना पड़े आ उनका झूठ बोले के पड़ेला ।

आजो उनका बड़का लइका के चिट्ठी आइल रहे । लिखले रहें कि बेबी जाये खातिर रोवेले । ओकरा के पढ़ते बूझ गइल रहन कि उनकरे लिखावल होई । आगे अउरी साफ लिखल रहे कि छुट्टी मिली तब चल अइह चाहे केहू के भेज दीह ना त माई बरखा सुरु होते चल आई ।

अइसन बात ना रहे कि ऊ ले आइल ना चाहत होखस । कवनो तकलीफ ना होखे, कवनो खरचा कम होखे, कवनो अपना औरत से प्यार ना होखे, घर के लोग रोकत होखस, सेहू बात ना रहे । सोचत रहन कि ई लोग ना रही तब खूब लिखाइत । अब बुझात बा कि ओही समय ढेर लिखात रहे ।

'हजूर' रात दू-तीन गो हित लोग आ गइल रहन । दाल-चाउर सब राते में साफ हो गइल रहे । अब लौटब तब खरीदाई । घर में पइसो नइखे । मिलबे का करेला कि बाँचो ? मंहगी जान मरले बिया ।'

डाक्टर छुटकारा मिलल देख के अपना के हलुक महसूस कइले । बलाय टर गइल रहे । दोसर केहू कहित तब बिसवास ना करतन । सोचितन कि कुछ माँगे खातिर बहाना कर रहल बा । गनिया पर बिसवास हो गइल । ऊ माँग के कुछ ना ले सके ।

'तब अनगुते से असहीं बाड़ ?'

आवतखाँ नथुन साह के दोकान पर चाय पी लेले रही । नथुन साह के जानीला नू ? अस्पताले के पास में उत्तर भीरी दुकान बिया । बेचारा गरीब आदमी ह । दिल के खराब ना ह । हमरा साथे पढ़त रहे । मयभा मतारि के चलते ओकर ई हाल भइल बा ना त ओकरा कवना चीज के कमी हइस ।'

टमटम के रुकते लइका घेर लेले सन । उतर के डाक्टर सीधे रोगी के पास गइले । बक्सा लेले पीछे-पीछे गनियो रहे । डाक्टर के चपरासी टमटम के पास रह गइल रहे । रोगी के खाटी के दहिना ओर एगो कुर्सी पर डाक्टर बइठले । गनिया खाटी के सिरहाना बायीं ओर जाके खाड़ा हो गइल । डाक्टर रोगी के कलाई देखत रहन आ गनिया उनकर चेहरा । उनकरा चेहरा पर उभरत भाव के ऊ पढ़ के समझत गइल । डाक्टर लोगन के साथ रहत-रहत बहुत कुछ जाने लागल रहे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"सुसुम पानी चाहीं। जल्दी। हालत ठीक नइखे। गर्मी खातिर सुई देवे के परी।' रोगी के छाती पर आला घुमा के डाक्टर बोलले।

सुसुम पानी तैयार रहे। तैयार ना करे परल। जल्दिये मिल गइल। रोगी के दहिना हाथ डाक्टर के आगा उघार पड़ल रहे। उनका हाथ में सूई रहे। एक हाथ में स्पिरिट में भींजल रुई के फाहा रहे। साहस ना होत रहे कि सूई देस। मन के सँस्कार मुर्दा के खोभे से मना करत रहे। गनिया के तरफ देखलन। ओकरा नजर में घिरना भरल रहे। ऊ दरवाजा तरफ बढ़ल। डाक्टर के बुझाइल जइसे कि ऊ उनकरा जइसन पापी के हत्या करे खातिर हथियार ले आवे गइल होखे।........ रोगी मर गइल एह में हमार का दोष?...........हमरा पास लोग गइल तब हम अइबे कइनी।...........तनिको देरियो ना कइनीं। हम त आइल बानी।........ हमार समय लागल।.......हमरा त फीस मिलहीं के चाहीं।........कह देब की मर गइलन........तब के फीस दी?........लोग रोवे गावे लागी।........बाबूजी के मुकदमा खातिर, करज चुकावे खातिर रुपया चाहीं।........भाई के कालेज के फीस चाहीं।.... लइकी के ८-९ साल बादे भारी तिलक चाहीं।........भावुक बनला पर कहाँ से आई?.......हाथ पर स्पिरिट मलत देर भ गइल। मन कड़ा करके आँख मूँद के सूई धँसा देले।

दवा के पुर्जा थम्हा के, खिआवे-पिआवे के तरीका बतला के, फीस टेटिअ- वलन आ जाके टमटम पर बइठ गइलन। गनिया से नजर मिलते झुका लेलन आ दोसरा ओर देखे लगलन।

डाक्टर के बइठ गइला पर गनिया टमटम बढ़ा देलस। लोग के तरफ देख के हाथ जोड़ के बोलल—'तब हम जात बानी।'

एक आदमी घोड़ा के तरफ बढ़ल। हाथ में हरियर पाँच रुपया का नोट र 'अपना टमटम के भाड़ा ले लेजा।'

गनिया सुन के अनसुना कर देलस। घोड़ा के चाबुक मार देलस। हाथ के इशारा से बतलवलस कि भाड़ा ना चाही।

घोड़ा पर के चाबुक डाक्टर के अपना पीठ पर महसूस भइल। ऊ देखलन गनिया के आँख से झर-झर लोर बहत रहे। ऊ ओकरा बड़प्पन के ऊँचाई देखे लगलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सतवन्ती

रामनाथ पाण्डेय

आज चउथा दिन रहे। पेट में अनाज के एको दाना पड़ला। भूखे आंत अँइठात रहलीसन। कान लगे झन झन झिनझिनाहट सुनात रहे। आँखि में भक भक धँधोक नियर कबो धधके त कबो चट चट लूती नियर चटके। आँखि के जोत ओराइल जात रहे। चले फिरे के हियाव ना करत रहे। बुझात रहे देहि के बल विला गइल होखे।

एतना भइलो पर मनबोध अपना मन के अबो बोधले रहस। सावन भादो के झमझम झमरत बरखा में निमन निमन उधार पइचा देवे वालन के हियाव फाट जाला। गरीबन के किछु देवे में त केहू इचको भर सुगबगइबो ना करे। सावन भादो में गरीबन के जवन दसा होखेने तवन आज ले भगवानो के पता ना चलल ह। ना त ऊ ओकनी खातिर कवनों वेंवत जरूर बइठावे के जोगार लगवतन।

ना जाने केतना जुग बीत गइल।

सतयुग, द्वापर, त्रेता आ कलयुग के पहिया ना जाने केतना बेरी घुम चूकल बाकिर गरीबन के गरीबी जस के तस बनल रहल। ओकनी के दशा ना सुधरल। आज ले गरीबन के भूख से कुलकुनात पेट कुलकुलाते रह गइल ना भर सकल।

बुझाता जब ले भगवान के राज रही अइसने चलत रही।

गरीब मुअत रहियें।

अन्न बिना।

दवा बिना।

मनबोध सोचस। मने मने बिचारस। आ पेट के अँतरी जब अधिका अकुलाये लगे त भगवान के राज पलटे के उपायो सोचे लागस। ना रही बांस ना बाजी बंसुरी। ना अमीर गुलछर्रा उड़इहें। ना गरीब के भूखे मउअत होई।

धरती के लोग अनेरे समाजवाद समाजवाद के चिचिअहट पर मोहता। भला लाख करोड़ के हिसाब जोड़े वाला धरती पर समाजबाद ले अइहन सन ? पाला आ गरमी के दुख से दूर रहे वालन के गिरोह भला गरीबन खातिर धरती पर सरग उतारी। कवनो पागले मन एह बात पर भरोसा करी। बिसवास करी। पतिआई।

गरीबन खातिर सरग धरती पर उतरे के चाहीं। कही, सभे। खाली कहे खातिर। उतारे खातिर ना।

आ एह चाहीं के चक्कर में परल गरीब पिसा रहल बा पिसात रही। ओकरा के हुलका के, बहका के, हुदका के आगि में कुदावल जाई। ऊ कुदत रही। जरत रही। धनकत रही। झउँसात रही। मुअत रही। बाकिर ओकरा पेट के भुख ना मेटाई। मन बोध के मन आज उनका बोधला से ना बोधात रहे ओकर सोचल बन ना होखत रहे।

सावन भादो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कड़ कड़ कड़कत, तड़ तड़ तड़कत चम चम चमकत बिजुरी। घहरात, मेड़रात झमा झम झमक झमक बरसत बदरी। नदी के उमरल उमकल जवानी त आपन सिवाना लाँघ के अरार के ऐड़िया के गाँव के वंड़ेरी ठेकल चाहे खातिर उछिलत रहे। जब नदी नेवर भइली त घास फूस के सड़ला से गाँव में नरकवाहिन भ जात रहें। बसाये लागत रहे। गोड़ हच हच ठेहुना ले पांक में धंम जात रहे। गरीब मउवत से जूझत रहे लोग बाकिर अमीरन के त आठो पहर मउजे रहे। सावन भादो उनका लोगिन खातिर फागुन नइत रहे।

उनकर मन सोचत सोचत जब उबिया जाय, उजबिजा जाय, अकुता जाय त ऊ भगवान के दु चार गो खट-मीठ सुनावे लागस। बिना जोगर चलवले मेवा मिसठान भकोसत भकोसत पेट भर गइल बा। पेट भरला पर सभे आकासे ठेकेला। कर न मउज। जबले लोग आँखि बन क के तोहरा के गोहरावता। फूल माला पहिनावता तवले तुहूँ चउल क ल धरती के लइकन के दुध के दरस दुलभ भइल बा आ तू दुध के समुंदर में नागबाबा के पीठी पर अपना मेहर जोरे चउल कइले बाड़।

गरीबन के गोहार तोहरा नइखे सुनात। लाज लेहाज कुल्हि घोर के पी घलले बाड़।

नाग बाबा आपन पोंछ पटकताड़न, डोलावताड़न, हिला हिला खेलवाड़ करताड़न त तोहरा निमन लागता। मउज बुझाता। दुध के समुंदर में हलफा उठता, हिलकोरा उठला से जब मखन निकसत बा त तू चट दे चाट जाताड़। मखन चाटत चाटत तोहरा पेट के भुख के आगि बुता गइल बा। भुख के पीड़ा नइखे बुझात त समुझताड़ सभे तोहरे अइसन अघाइल बा, ना त मुख से तड़पत लोगन के रोआई तोहरा जरुरे सुनाइत।

लोग नाहके रवना के दोस देला। ऊ बड़ा निमन कइले रहे देवता लोगिन के भुखे उलटा टांग के। जब मुसुक बांध के टंगले रहे। होम जाप बन कइल रहे त भुख के दरद बुझात रहे। मउगी के लेके जब भागल रहे त कइसन बने-बने फेंकरत राम चलत रहन। बाप घर से निकसले रहन त कोल-भील, केवट आ किरातो के अंकवारी धड़त चलत रहन। भीलनी के जुठो इमरीत नियर लागत रहे। ओह घड़ी तो गिधो के अंकवारी में धरे में लाज ना लागत रहे। बाकिर पेंच से छुटते कुल्हि बिसर गइल।

मनबोध ठेहूना भर पानी में छीप धइले ठार सोचत रहन। नदी के तेज धार में ना जाने केतना चीज बहत रहली सन। भगवान। घबरा जन।

अब एगो गरीबन के भगवान बनावे के पड़ी।

ना त दूनिया आराम से ना रहे पाई।

सुख चयन से ना रहे पाई।

एक दिन भुखे मुये बालन के आह ऊपर चहुँपी। ऊपरो तुफान उठी। सरग के आसन डोली। सरग उजरी। धरती के भाग जागी। समय पलटी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गरीबन के खून से ललिआइल धनिकन के भगवान के एक दिन जरूरे ठेकाना लागी। ऊ सरग से पटक के धरती पर गिरावल जइहें। उनकर विधान बदली।

मनबोध के बंसी के डोर तना गइल। उनकर धेयान पानी पर उतराइल करेना कावरी खींचा गइल। जवना के एगो छोर रह-रह के पानी में बुड़ि-बुड़ि जात रहे। मनबोध के आस हरिहरा गइल। घंटा भर से पानी में ठार रहला के फल मिले के चाह उनका आँखि के सोझा नाच उठल। बुझाता अबकी दमगर मछरी बाझल बिया। ऊ छीप अपना हाथ में कस के ध लेलन। गते-गते उठावे लगलन। उनकर करेजा धक-धक धड़के लागल।

ऊ तनी अउरो पानी में बढ़ गइलन। उनकर गोर पाँक में थोड़का धंस गइल।

"हे भगवान सेरो भर के बाझ जाइत त रात कट जाइत। दुनो परानी खा के अघा जइतीसन। बझा द भगवान। तोहरा के सबसे बड़का गुरिया भोग लगा देब।" ......मनबोध मने मने भगवान के गोहरवलन आ छीप के डोरी के तनिका ढील देलन। ढील देला पर मछरी के गलफर में बंसी आउरो अंटक जाले। मछरी भाग न पावे। मनबोध के करेजा के धुक-धुकी आउरो बढ़े लागल।

"कहीं, फेनु सरक जन जाव। मछरी के भागे के डर उनका के बेचैन कइले रहे। मछरी भागे के माने आजो उपासे रही। ऊ गते-गते डोरी खींचे लगलन।

भारी लागत रहे। उनकर मन मुसका उठल। आज रात आराम से कट जाई। भारी बिया। सेर भरसे अधिका के बुझ तिया। उनकर पेट के भुख मेटात बुझाये लागल। ऊ गते-गते डोरी खींचत रहन।

डोरी तन गइल। अब भार खूबे बुझाये लागल।

'हे भगवान छुटे ना पावे। दूगो गुरिया चढ़ायेब....' मनबोध फेरू दोबारा भारा भाखत भगवान के गोहरवलन। बाकिर उनकर धेयान ओधा डूबल करेना पर रहे। ऊ कबो-कबो पूरा डूब जात रहे।

उनका पेट के आगि अब बुता गइल रहे।

डोरी पुरा खींचा गइल रहे। हाथ भर बादे बंसी में फंसल पानी में मछरी के छपिटाइला के भान उनका साफ बुझात रहे।

सेर भर से अधिका के जरूरे बिया।

मनबोध अपना मन के बोधलन।

चाकी धरे त तेलो ना होखी......ऊ मने मन सोचलन।

फिकिर के करिया बदरी उनके के चारो अलंग से तोप लेलख।

उनकर हाथ डोरी गते-गते खींचत रहे।

उनकर मन घर में के कोना कोनी ढूंढ़त रहे। कतो मरीचा आ हरदी के एकी टूसी ना भेंटाइल। ऊ मने मने झुझुआये लगनन।

दू सेर के होखित त मिमन होखित। सेर भर बेच देला पर चाउर, नून, तेल आ मसाला किना जाइत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनकर मन फेरू हरिया गइल। आस के किरिन फुटल। उनका चारो अलंग अंजोर छिटके लागल।

"हे भगवान दया कर। तू दयवन्त हव। तीन गुरिया चढ़ाग्रेब।....हूँ।....कहत मनबोध एक बेरी अपना देहिके पुरा जोर हाथ में समेट के छीप झटकवलन।

सुरूज के अँजोर में चाँदी के पेटी नियर रोहू के पेटी चमकल। मनबोध के हिरदया मारे खुसी से लहालोट भ गइल। आरे ई त तीन सेर से अधिका के विया।

मनबोध के नस बस मुसुका उठल।

उनका भाग के केवाड़ी फट फट खुलत बुझाइल।

चट दे एगो आवाज भइल। फट दे डोरी टूटल आ गप दे मछरी पानी में ढूक गइल।

मनबोध छपाक दे पानी में कूद पड़लन आ मछरी धरे के चहलन बाकिर पानी के जीव धरती के जीव से धराव। अगारी के पोरसल थरोया खींचा गइल। उनका मुख के आग अतना तेज धनके लागल जे छाती भर पानी में रहलो पर उनका बुझात रहे उनकर सगरी देह धाँय धाँय धधकत होखे।

हाथ के छीप छट के पानी में गिर गइल रहे। जिनगी में कबो कबो साथ देवे वाली आखिरी आसों पानी में बह चलल।

मनबोध अपना के तनी सभंरलन आ पानी में बहत छीप के लपक के लेलन किनारा आके दोसर बंसी बधलन। बचल आखिरी जियना के ओकरा में नाथ के बंसी पानी में जोर से घूमा के फेंक देलन।

उनकर धेयान करेना पर रहे। आस लगवले टूकटुक ताकत ठेहूना भर पानी में ठार भ गइलन। फेरु कवनो बाझी। पेट भरी। नदी अपन जावानी के जोम में उमड़ल अईंठत बइठत रहीं। धार तेज रहे।

मनबोध के मन फेरु झुझुआये लागल।

भगवान वगवान किछ ना ह। मन के भरम ह। ना त तीन सेर के बाझल मछरी हाथ में आवत आवत हाथ से निकस जाइत? पेट के भुख उनका से चिचिया चिचिया के कहे लगल। ई कुल्हि मटियामेट करे के पड़ी। भगवान के मानेवालन पर उनकर खीस बढ़ गइल।

कमाई से खाई।

मउज करी।

बइठ के खायेवालन के मास जबले ना होखी। मेहनत क के खायेवालन के पेट ना भरी। ऊ कबो अदमी नीयर ना रहे पइहे लोग धनिकन के घेरा तुड़ल जरुरी बा ना त गरीबवन के संसरी टंगाइले रही। ससुरा ना कामे दींहेसन ना खाये के। जाग सड़ा सड़ा के गरीब मुओ। ओकनी के का? ओकनी के त पांचो अंगुरी घीये में रही भगवान।

मनबोध के अपन मन फेरु भगवान कावरी खींचा गइल। लोग कहेला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दयमन्त हवन। उनका राज में कवो अन्हेर ना होखे। फेरु अइसन काहे होखता हम चार दिन से भूखे छपिटात बानी। केहू पूछवइया नइखे। एगो मछरीयो बाझल त डोरी टूट गइल। इम गोहरावत रह गइनी। कहवो कइनी अकेले ना खाएब तोहरो के खियायेब। बाकिर भगवान के दया ना लागल।

भगवान गरीबन खातिर नइखन।

पानी कावरी टुकुर टुकुर ताकत मनबोध सोचत रहन। जब कवो करेजा के छोड़ हिले त उनका मन में आस के किरिन फुटे बाकिर करेजा के सोझ होखते अलोप भ जाय।

करेना चुपचाप पानी में दहाये लागे। हिलत। डोलत। गते गते गदबेर भ गइल। चारो अलंग भकसावन अन्हरिया आपन घेरा घेरे लागल। झुंड के झुंड बदरी ना जाने केने से देखत देखत उमड़ पड़ल। बुना बुनी पड़े लागल मनबोध अपन मन मारत घीब उठवलन आ पानी कावरी तकलन। मने मन कहलन—आज इहो संधातीन ना भइली। ऊ आपन मुड़ीं गरले चुपचाप घर कावरी चल देलन। उनकर मेहर रुपिया आस लगवले चउकठ पर बइठल रहे। आज पेट भरे के कवनो जोगार लगा के जरूरे अइहें।

रुपिया।

मनबोध के मेहर। जवना के जवानी छहलत चलत रहे। ओकरा के पकड़े के ना जाने केतना लोग चहलख। बाकिर ऊ छहल गइल, धिछला गइल पकड़ा ना सकल। लोग टूकटुक देखते रह गइल।

ऊहे रुपिया भुख के आवा में झउसात रहे अपना मरद के खाली हाथ आवत देख के ओकरा आस पर पानी फेरा गइल। ओकर आँख डबडबा गइल। दुआरी के नियरा भइला पर ऊ डबडबाइल आँखि से अपना मरद कावरी तकलख।

"का देखताड़े ? आजो चुल्हि नेवार बा। ससुर बनेला भगवान। गरीबन के नेवाज। बाकिर निकलल निठाह अमीरे नेवाज। गरीब के डहकत देख के उहो चउल करेला। न त तीन सेर से अधिका के बाझल रेहू ना भागित।····मनबोध अपना मेहर के अपना ओरी तक त देख के कहलन।

"तीन सेर के ?····रुपिया चकचिहा के पूछलस "हे, रे। डोरी ना टुटित त भाग जाग जाइत। अब त आजो नियर लिपे रहे के पड़ी।

"अब हमरा से नइखे अड़ात।····रुपिया कहलस।····"तू काम धाम त करब ना। खाली मछरी के फेर में रहब।····"

"कवन ससुरा काम देता जे हम नइखीं करत। बुनी बरखा में कुल्हि काम ठप पड़ गइल बा। कवनो काम मिले तब न करीं।····मनबोध कहलन।

"तू जांगर चोर भइल जातार। ना त हमनी के भूखे ना रहे के पड़ित उपासे ना सुते के पड़ित।····" रुपिया के आँखि उमड़ पड़ल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"चुप हरामजादी। तोर आँखि झुट गइल बा। देखतं नइखिस दिन भर पांक पानी में ठार भइल आवलानी। तें कवन पहाड़ ढाहत रहले ह। बइठल बइठल अड़चत बाड़ू।"'मनबोध झुझुया के कहलन।

"अधिका गरमा जन। मरद होके हाथ दुमावत चल अइल। खाये के कवनो जोगाड़ ना जुटा सकल। हम मेहरारु होके का करीं ···।" रुपिया कहलस।···

"हमरा सोझा अधिका पिंगल जन छाँट। ते तं तनी कवनो से आँखियो लड़वले होखते त चना चबेना खातिर किछ मिल गइल रहित।···मनबोध बेकाबू होके कहलन।

"अभागु, तोरा लाज नइखे लागत।"···रुपिया गरमा गइल···"हम कवनो रंडी पतुरिया हईं जे आँखि लड़ा के तोर पेट भरब।··"

"अधिका सतवन्ती जन बन। हम कुल्हि जानिला···" मनबोध कहलन।

"का जानताड़ ? रुपिया खीसे काँपे लागल।

"उगिलाव जन। पेट में के पेटे में रहे दे।··" मनबोध कहलन।

"भगवान झूठ अछरंग लगावे वालां के जीभ गला दीहें···" रुपिया कहलस।

"झूठ होखीं तब नू। रात रात भर ना जाने कतना के गर में लपिटात चलत रहस। हम का नइखी जानत। तोर बाप कवना कमाई पर सेर सेर भर गोस ले आवस आ रात रात भर दारु पिअस। अंगना में कवनो नोट के गाछ जामल रहे।···मनबोध कहलन।

भगवान गवाह बाड़न। तोर देह छोड़ के कवनो दोसर मरद के देह छुवले होखब त हमरा देह में घून लाग जाई। हमार देह गल जाई। ना त भगवान तोरा के उठा लीहें।··"रुपिया कह के रोवे लागल।

"दुइये झांपड़ में तोर सभ तिरिया चरितर निकास देब। हमरा अगारी छहंतर जन कर।··" मनबोध ओकर झोटा ध के खींचत रहलन—"हम मर जायेब त तोरा मउज करे के मिल जाई। इयार लोग त ताक लगवलहीं बा।··" रुपिया जोर जोर से रोवे लागल।

"भगवान उठा लेस अभागा के हमरा पर हाथ छोड़ता। खायेक जुटावे के बेरी अभागु के जाँगर सड़ता। मारे के बेरी बल जुट जाता। हे भगवान एकर हाथ गल जाय।··" रुपिया रोवत कहलख। मनबोध के मन तनी नरम पड़ गइल। रुपिया कावरी ताकत ऊ कहलन—"ते नाहके खीस बढ़ा देले। सासतर पुरान के बात तें ना जानतारे। जान बचावे खातिर कइल कवनो काम पाप ना होखे। पेट भरे खातिर एक बेरी नारदो बाबा कुकुर के गोस खइले रहन। पापी पेट खातिर कइल कवनो काम पाप ना होला। चुप रह।··मनबोध रुपिया के बोधलन।

रुपिया चुपा गइल।

"रुपिया दुनिया में किछु झूठ साँच ना ह। सभ समे के फेर ह कवो साँच झूठ कहाला त कबो झूठ साँच। अदमी के आपन जिनगी बचावे खातिर सभ किछ कर के पड़ेला। देह रहला पर नू पाप पुन्न होखी। पराने ना बाची त देह रह के का करी। दूसरे दिन में त बसा उठीं।··मनबोध कहलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"तू ठीक कहताड़। पेट पापी ह। एकरा खातिर सभ किछ करें के पड़ेला।..." रुपिया कहलस।

"त तें हमरा बात पर उखाड़ काहे गइले ह।" मनबोध कहलन।

"..." रुपिया किछ बोललख ना।

"त एगो काम करबे। ना करबे त अब हमार परान ना बचे पाई। अब नइखे अरात। दू दिन त अपने उपासे रह के तोर जोगार लगवनी। आज चउथे दिन अइसहीं काटे के अब हमरा में दम नइखे रह गइल।........."मनबोध कहलन।

"का करीं।...." रूपिया पूछलख।

"सुरेश बाबू त एक दिन तोर हाथ गते से सुहरवले रहन नू। आ जब हमार नजर पड़ल त गते से खिसक गइलन।..." मनबोध कहलन।

"हँ।...." रूपिया कहलस।

"हमरा बुझाला ऊ आजो तोरा के चाहेलन।...." मनबोध कहलन।

"हम का जानी।...." रुपिया कहलस।

"ना, रे उ तोरा के चाहेलन। ते एगो काम कर।...." मनबोध कहलन

"का..." रुपिया पूछलख।

"तें उनका पँजरा जो। ना त आज रात हमार काटल मुसकिल बा।...." मनबोध के बोली लटपटाये लागल।

"अइसन कुभाखा जन बोल। भगवान तोहरा पहिले हमरा के उठा लेस।...." रुपिया के आँखि डबडबा गइल। उ मनबोध के पंजरा सट गइल।

"रुपिया।...."मनबोध ओकरा ओरी ताकत कहलन।

"तू इ का कहताड़? पाप लागी।...." रुपिया सकुचाइल।

"नारे पुन होखी। अदमी के परान बचावला से लम्हर कवनो दोसर पुन ना होखे। परान बची तबे त धरम होखी। पाप पुन के झमेला पर हमनी दूनोके परान चल जाई। परान बच जाई त तोरा के गंगा नहवा देब। कासी घुमा देब। पापे न काटे के। पाप काटे के सहतर गो उपाय हमनी के धरम सासतर में बा।...." मनबोध कहलन।

"बाकिर!..." रुपिया कुछ कहे के चहलख।

"किछ ना रे। जनले गरीब अइसन ना करी आ केसेना उठी। देखत नइखस। देवतो लोग सरग में बइठल इहे करता। अमीरन के जालसे निकसे खातिर ओकनी के राह पर चले के पड़ी। पाप से डरे के ना पड़ी। भगवान से डरे के ना पड़ी। ना त गरीब हमनीये अइसन भुख से तड़प तड़त के मुअत रही। ओकर दुख कबो ना मेंटाई।...." मनबोध कहलन।

"त ओह दिन तू आँखि काहे तरेरले रह।..." रुपिया पूछलख।

"ओह दिन पेट भरल रहे। चारो अलंग हरिअरी छवले रहे। कवनो कमी ना रहे।..." मनबोध कहलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"जाये द आजो रात काट लेवे के।..." रूपिया कहलख—"काहे हमनी आपन अकबद बिगाड़ीसन।..."

"रूपिया हम आपन पेट काट के तोरा के खिआवत अइनी ह। अब हमरा देह में बल नइखे। ना त हम आज कवनो के जाने मार के किछ ले अइनीं आ तोर पेट भरतीं। दिन भर पानी में ठार भइल भइल देह के नस जमक गइल बा अब तनिको हिले डूले के मन नइखे करत। तें हमरा खातिर ना जे। हम तोरा के अपना सोझा भुख से छपिटात ना देख सकब। तें जो हम कहतानी। हम तोर मरद हईं। अपना मरद के बात मानल सतवन्ती नार के धरम ह।...मनबोध कहलन। रुपिया कि बोलल ना। चुपचाप उठके एक ओरीचल गइल।

"रुपिया।...." मनबोध पुकरलन।

"का ह?...." उ पूछलस।

"तोरा दुगो काम करे के पड़ी।...."मनबोध कहलन।

"कह।...!" रूपिया कहलस।

"ते अधिका देर उनका लगे मत रहिये। आ उनका से इहोजन कहिये जे हम तोरा के भेजनी ह।...मनबोधन कहलन।

"आछा।...." रूपिया कहलस आ चल गइल।

"मनबोध दुआरीये पर बइठ गइलन। उनकर माथा झुकल रहे। उ सोचत रहन।

देह में तनी वल आवे त किछ करे पड़ी। अब सहला से काम ना चली। पंडा...पुजारी...भगवान...सभन के पछारे के होखी। पाप पुन के झमेला हमरा खातिर मेटावे के होखी। जब ले इ ना होखी तबले धरती खुसहाल ना होखी सरग के देवता अपसरा जोरे हमनी के कपार पर मउज करस त पुन आ हमनी अपना परान बचावे खातिर किछ करीं त पाप। ई विधान अब ना चली।

अबेर होखत देखि के मनबोध बेकल होके दुअरा से उतर के कबो कबो नीचे खड़ा होखस आ अन्हरिया ओरी ताकस।

ससुरा भर अँकवारी के हमरा रूपिया के धइले होखी।

छोड़त ना होखी। ना त बेचारी कबे आ गइल होखित।

बेचारी केतना निमन बिया।

रात आधा बितला पर रुपिया अपना जोरे एगो कटोरा में रोटी तरकारी ले आइल आ मनबोध के हाथ में पाँच रुपेया के नोट धरवलख त मनबोध के बुझाइल सरग धरती पर लोटता।

ऊ अपना कमजोर हाथ से रुपिया के खींचलन। ओकरा के अंकवारी में कसके ओकर मुँह चुमलन आ कहलन "रुपिया हमरा आज बुझाइल ह ते सांचो सतवन्ती हइस।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूड़ी गड़ाइले रही

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

पूरे पनरह बरिस प प्रोफेसर साहेब अपना गाँव का रेलवे स्टेशन प उतरल बाड़े। अबकी अकेले। ६२ का बड़ा दिन में परिवारो आइल रहे। का करसु, काम के बोझा एह कान्ह से ओह कान्ह प राखत दमे ना लेवे पावसु। महानगर कलकत्ता के धावाधूपी जे देखले होई सेही बूझी। एगो के कहो जहँवाँ दू-दूगो जिलन का बरोबर लोग ठकचल बा, आदमी प आदमी चलता-फिरता बोझा अस गँजाइल-लदाइल रहता, उहँवाँ साँझि-बिहान, दूपहर-आधारात एके समान लउकेला—दल-फल, हलचल से भरल। प्राइवेट बस अस धावते रहेले। भोरे पाँच बजे से राति के बारह बजे ले खटेले। पुरान आदमी ठहरले, दू-दू जगहा के नोकरी सम्हारे के परेलहिन। एगो कालेज में दिन के डिउटी रहेलहिन त दोसरा में राति के। भोरे तीन गो टिउसन करेले, साँझि खा दूगो। रोपेया कमाये खातिर बिजली के घोड़ा अस फुरती देहे राखे के परेला।

पछिला बेर सात साल प गाँवे आइल रहले। सबखे ना, पेचे। सरकारी सरवे के काम जवार में जारी रहे। महरारु का उचिलवला, उदबेगला से टकसल रहले। अपना हिसदारी, पटिदारी के हिसाब बूझे खातिर। पनरह दिन के छुट्टी तमाम भइला प मन मसोसि के दस दिन आउरो बढ़ावे के परल रहे। तब से एह साल ओह साल प गाँव के जतरा टारत-टारत एक दिन उजबुजाइले उठले आ बेगर कवनो सर-सलाह भा तर-तेयारी के चल दिहले एगो जवरिहा नोकरिहा जवरे सियालदह स्टेशन का ओर।

गाँव स्टेशन से बेसी ना पौने दुइये कोस बा। अबकी दू-चार गो ऊँचो टमटम लउकतारे स। लोग एक्का पड़ाव का ओर धावल जा रहल बा, टमटम प सीट पावे खातिर। कान्हे कम्मर आ हाथे चमड़ा के सूटकेस टँगले गुमटी प ठाढ़ हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तारे। केहू हाँक पारता, "मास्टर साहेब ! हेने आईं, हेंने।" काने परल टम आवाज परिचित जनाता। मुनीर मियाँ बुझातारे। आगे आके 'सलाम सरका कहत अटैची ले लेतारे। अगिला सीट प बइठा के चाह पानी क लेवे के सला दे तारे। अगते एगो टुटही पलानी में तेलहा मिठाई के दोकानि रहे। अब त लक का गुमटी में सात-सात गो लउकतारी स। पान के, चाह के, मिठाई के। ए दोकानि प अंगरेजी दवाइयो के साइन वोर्ड टँगाइल बा। बाह, अब त बहुते सुधा हो गइल। अगते अस कुँइयाँ प लोंहरा-डोलची के जोह नइखे। रोड का दूनो ओ एक-एक गो चंपाकल से पानी हराहर झरता।

चाह के नाँव सुनते मन अगरा गइल। माटी का पियाली में ना, सीसा गिलास में चाह धरा जाता दोकानि के नोकर टमटमे प। 'हँ-हँ रहे दिहल जा कहत मुनीर मियाँ चाह के पइसा नइखन देवे देत।

एकवान लेले सात आदमी टमटम प बइठल बाड़े। आगा हँकाइल एक्कन टकदुम-टुकदुम चाल के दुतुकारत-फुटकारत ई टमटम खट-खट-खट-खट करत आ निकल आइल। बगइचन में बोझा गँजाइल बाड़े स। खरिहान लिपा रहल बा कहूँ दँवरिओ हँकाता। धान के बालि कतना बड़-बड़ बा। आन बेर त अइसन होत रहे। कतेक साल मोआरियो छिला।

'ई सब बोरिंग के एकबाल ह। जनाता जे अपने ढेर दिन प एह बहे आ जिाता।" कहनिहार के मुँह देखला से त कुछुओ थाह नइखे चलत। परिचे पूछे हिम्मत नइखे होत।

घुरहूचक निअरा चलल। गाँव का बहरी पोखरा प केहू उतरता। कुछ आ कुछ अगरहट, कुछ ललक, कुछ संकोच लेले प्रोफेसर साहेब का तनी फयलाँव मिल उनुका त बजार में उतरे के बा। ढेर दिन प गाँवे आवतारे। मन में किसिम-कि के भाव उठता। सड़क प उतरते "हई देखी" के जवाब "पाँव लागीला" देत उठता, गिरता। अनेकन आँखि टक-टक लागल बाड़ी स उनुका ओर। आगा ब प "परनाम मास्टर साहेब ! चलले आवतानीं ?" सुनाता। ई त तपेसर हवे। मे कते-कते हो गइल बड़हिन ? आजु बाजार के दिन नो ह। फँफराह बा। गली- पार करत "ढेर दिन प" के जबाब मूड़ी नवाइ के देत-देत आपन दुआर आ गइ चउतरा प लटू जमवले लइका चिहातारे स। काका नइखन लउकत ? ठाढ़ पटिहाट बिछावत-बिछावत केवाड़ का फँफरा में फुसुर-फुसुर होखे लागल। निहु निहुरल केहू चउकठ हेलता। काकिये हई। चरण छूअत चिन्हारो होता—" लइके, चीन्हत नइख स ? तोहनी के बड़का बाबूजी नूं हवे। कालकाता वा चकचिहाइल लइकन के हाथ-मुँह जोराता-खुलता। दलानि के जँजीर उ जाता। एगो लइका लोटा-गिलास धइलस हा। हाथ धोवे का पहिले काने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चढल। तनी गिछूती से ही आइल जाउ। कुकुरबन्हा के जंगल में गोड़ धइल मोसकिल बा। देवाल के ईंटो खोंढ़ हो गइल बाड़न स। थाका के थाका नोनी झरल बा। ओरिआनिओ भसहीं भसे बोलनिया। बुझाता जे ढेर दिन सें खपडा नइखे फेराइल।

तोसक-तकिया लागि गइल बा। केहू कमरो सरिआइ के सिरहाना ध देले बा। एक बाँहि के कुर्सी प अटैची बिराजतारी। अहा हा, मेथी के त सवादे भुला गइल रहल हा। मुँह पोंछत खा खोरी में खट-खट सुनाता। चटर-चटर खड़ाऊँ प उपरोहित जी आ रहल बानीं। लोटा में जल लेले। सिवाला में जातानी बुझला। खड़े-खड़े "पावलागीं" "चिरंजीव" होता। हाथे ऊखि लेले कको आ गइले। चमरूआ जूता में धुरि आइल गोड़। माथ नवावत खा दूगो बून ढरकि गइल। छन भर खातिर अन्हार छा लेनमि। "खुस रह" सुनि के आँखि खुलल।

गझिन कुहेस फारत जइसे घाम उगल होखे। धुआँ भरल घोनसारि में के ठाढ़ आदमी जइसे खोरी में आ गइल होखे। दम नइखे फूलत। माली में करुआ तेल धरा गइल। एक जोड़ी काठ के चटियो। कुरता-बंडी उतारल जाउ। इनार प गगरो-बाल्टी भराता। कोड़ार में आलू नीमन लागल बा। कोंबिओ। बाल्टी में से लोटा-दू-लोटा पानी डालत-डालत "ठहरीं, ढेर दिन प आइल बानीं, नीके तरे नेहाईं" कहि के मँहगू उठतारे आ भ-भ-भ-भ भरलो गगरा माथ प उझिल दिहले। मंहगू एह दुआर के हरवाह रहले जब घरहीं खेती होत रहे। इनार के गगरा भरल जल से भरपेटा नेहान भइल। रोंआँ निहाल हो गइल। कल प के नेहान ओछवाहें रहत रहल हा।

पूस का घाम से आँगन उजिआर बा। दूनो पीढ़ा का लगे लोटा-गिलास धराता। वइठत कहीं कि दालि-भात से भरल उलटी बारि के दूगो थरिया रखा गइल। छिपुली में साग बुझाता। दालि अतना मीठ? बूँट का जवरे बथुआ कमाल कइले बा। एह में के मघड़ा मरिचा बड़हीं चोख बा। एँ, कटोरा में का आवता? ई त दही ह। तामा का रंग के ललछूँहू छाल्ही परल। गलती हो गइल। जाँतल भात के अँटकर ना लागल। जुठिआवे का पहिले आधा निकालि देवे के चाहत रहल हा। "का खनिहार नखहू?" काकी का कहनाम के का जवाब दिआउ।

ऊपरी बेरा कतेक आदमी भेंटातारे। बघारिये चलल ठीक होई। नदी में अब पानी कहाँ से? रघुनाथ के बड़का बेटा आगा आगा लोटा उठावता। सुनील नाँव हइस। नउँवां में पढ़त रहल हा। बेचारा फेल हो गइल असो। 'बड़का बाबूजी' का सवालन के जवाब लजाइले सँकाइल "हँ"—"ना" में देत काली माई भिरी चलत रेहट से लोटा भरि ले आइल। बूँट गहुम का हरिअरी प सरिसो के पिअरई। आँखि बिछिलाता। रहरि में के रेंड़ त बँसवारि में के फेंड़ के मोकाबिला कइले बाड़ स। धरती सचहूँ वसुन्धरा हई। सुतार भइला प सोना उगिलेली। लइका से भला लोटा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मलवावल जाउ ? भतिजवन खातिर आउर ना त गंजिओ गमछी लेले आइल चाहत रहल हा !

किरिन डूबत डूबत इहँवाँ ठार गिरे लागल। कउड़ लहका दिहलेस लड़का सभ। गते गते आदमी बटुरा गइले। उनुकर कमे, बेशी हाल कलकत्ते के पुछनिहार। घरी भर राति जात जात सन सनाटा। कतो कवनो आवाज ना। हर-हर पट-पट के नाँव ना। एकदम दुनिएँ दूसर। ट्राम बस के टन टन हर्र हर्र से भरल कान खातिर अबिभो। आँखिओ के आराम। मरकरी के अभाव अखड़त नइखे। ललटे-नियें काफी बा। आह, पुअरा का गलइचा के सुख कतना दिन प भेंटाइल बा। सोफा में अतना पसारा कहाँ ? तिलवा का बाद चाहो ? कवनो हरज ना। बहरवाँसू खातिर अतना खेयाल बा। जाड़ जानि के खायेक दलानियें में आ गइल। मकुनी के सोन्हाई अगतहीं मन भर देलसि। असली घीव नू ह। तरकारी संगे चोखो ? बैंगन के अइसन सवाद अनते दूलम रहेला।

एक दिन दू दिन, आजु ई तिसरका दिन ह। काका जवरे काल्हु बधारि घूमे गइल। दू दिन आ राति में घर के सइँकी-सइँकी हाल काकी सुना दिहली। इहँवाँ के दिन दसा उहँवा भइले ना लउकत रहे। आँखि पर छोपनी एक प एक ना परल रहे। बाबु के त चेहरो ना मन परे। मतारिओ का गइला पचीस बरिस भइल। जब ले रहली, गाँव ना छूटल। लगहीं का हाई स्कूल के नोकरी रहे। साइकिल से आना-जाना। प्राइवेट एम. ए. तक ओहिजे से कइल गइल। ममहर का, लोग के कमाई देखि के कलकत्ता धराइल। ओने चकमत के चकचवन्ही, एने घर का कलकान के खबर। मेहरारू लइका पछलगुआ बनले। जे पोंछि जनात रहे सेही सूँढ़ बनल आ लपकल कइल एह डाढ़ि से ओह डाड़ि के पुलुई खातिर। ठाकुरजी का छोह तीनि काठा के गड़हा गजरा का मोले मिलल। भरहीं में जे लागल से लागल ना हामा सूमाँ से मकान बनित महानगर में ?

महानगर कलकत्ता के मकान। घुरहूचक के घर। दूनो दू छोर प। सभ तरे कांच सूत के तुनुक तार भर के नाता। ई जोरल कवनो जोरल ना ह। काका कवनो अधामति उठा ना रखले रहले। बुढ़ारी में माई के मतिये मरा गइल त का कहल जाइत ? चूल्हा दू जगे जोरवावे का वेर के बिरोध ना कइल आजु पितिया भतीजा के अतहत फाँक डालि देले बा। चचेरा छोटा भाई के मरेटरी का कमाई से कुछ उजिआइ नइखे बुझात। लइका बहँगवा भइल जातारे स। के देखो ? राम भरोसे दिन, रात कवनो तरे कटल जाता। बखरावाला तीनो घरन के ताला मुरचा गइल रहन स। बड़ही मोसकिल से खोलल गइल। मुसकोइल से केंवारी के जाम हटते ना रहे।

ई त भीतर के बात ह। के का जानता ? दलनियाँ बाकी एके बा। इजमाल ईजति। एकर लमजान धान्हि देखि के राह चलनिहार मोहात होई। पुरनका आदमी दू गो आसिरबादो सुनावत होइहें। काका के ? ना कलकतिहा कमासुत के। रो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गनगना जाता। ई अखरखन ह। बेबी के मतारी का कहिहें। दिन में तीन बेरि घर पोछवावेली। जूता बरमदे में रहेला। ड्राइंग रुम क कारपेट प चले खातिर चप्पल अलगे बाडी स। एहिजा बेटी पतोहि का राति बिरात बहरीं निकले के परता, उघारें गोड़े। सेप्टिक पैखाना बनवावल बहुते जरूरी बा। गाँव में हजार-बजार खरच होता बिआह सादी में बाकी मेहरारुन के एह जरूरत का ओर काहे दो लोगन के आँखिये मुँदाइल रहता। असल में केहू बतवनिहारे नइखे। आगें चलि के राह देखवनिहार नइखे। जहाँ एक आदमी बनवावल कि देखा देखी सभे एह तरीका के अपना ली, रीनो करज ले के।

ना कुछुओ होखो, दलानि भसे ना दिआई। सामिलात अड़ान ढहे ना दिआई। बीस हजार ईंटा में फरिआ जाई। पैखनो बाथ रुम समेत। आइल गइल, हीते नाता सभ केहु बाह-बाह करी।

बन में मोर नचबे कइल त का? अलगाउझ वाला कलकाता के मकान अपना जगे रहो। जवर के चिन्हा घुरहुचक के दुआर अइसे छोड़ल ठीक नइखे। बेबी का बिआह में दू बरिस के देरी बा। चार पाँच हजार घसकवला से कुछ बने बिगड़े के नइखे। उनुका मतारी के समुझावल जाई। एने ओने करिहें त ईहे नूं कि दू बरिस खातिर दू गो टिउसन आउर उठा लिआई। बाप रे बाप, ई भार जब ले ना उठी मूड़ी गड़ाइले रहा।

(शिवाजी पथ, यारपुर, पटना-१)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राज-पाट

जगन्नाथ

दू-तीन घंटा से महेस महाबीर अस्थान का चउराहा पर रेक्सा लगवले खड़
बाड़न। ऊहे ना, उनुका निअन पच्चीस-तीस गो अऊरी रेक्सावाला खड़ा बाड़सन
केहू लरिका बा, केहू जवान बा, केहू बूढ़ बा। केहू खइनी मलि रहल बा, केहू बी
खींचि रहल बा, केहू रेक्सा पर बइठल झपकी ले रहल बा। सवारी ना मिलला
चिन्ता सभके बा बाकिर महेस ढेर उदास लउकताड़न। सड़क के कोलतार से मिल
जुलत पसेना से चुहचुहाइल उनुका चेहरा पर चिन्ता के रेघारी साफ-साफ झलक
ड़ीसन। पनरहियन का बाद आज रेक्सा निकलबो कइलन त ई हाल। चिचिआ
चिचिआत घेघ बइठे के ठेकान लागल बा बाकिर सवारी कवनो पँजरा सटत नइ
मिनी बस आवताड़ीसन। तनिकी-सा ठमकताड़ीसन आ भर पेट ठूसि के स
निकल जाताड़ीसन। महेस का बुझाता जइसे मिनी बस सुरसा हो गइल होखस
कतनो लीलताड़ीसन एहनी के पेट नइखे भरत। पेट ह कि भरसाईं। कतनो लील
केहू रोके वाला नइखे। अइसहीं लीलत जइहन सन रोज-रोज। एक दिन महेसो
लीलि जइहन सन। महेस के रोंआ-रोंआ गनगना जाता। सोचे लागताड़न—
सहर में जहाँ एक ना अनेक सुरसा बाड़ीसन जान ना बाँची। जान बँचावे के हो
एह सहर के तेजे के परी। कवनो छोट सहर में जाये के परी बाकिर करसु का? ग
छोड़ला के बाते सोचत उनुका कइसन दो लागे लागेला। हाथ-गोड़-मन सब सु
जाला। सउँसे उमिरि, सउँसे जाँगर त एही सहर के सड़कन के, गलियन के अ
तिनपहिया से गुदुरावत बीतल। सहर के कवना गली से, कवना सड़क से उनु
चीन्हा-परिचे नइखे, मेल-मोहब्बत नइखे। आ अब त बुढ़ारी आइलि। कतना
अउरी रेक्सा खींचि पइहन। हद से हद छ महीना भा एक साल। काहें खातिर
सहर के इयारी तूरे जासु, आपन पत बिगारे जासु। इहँवे जमलन। इहँवे के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धाकर में अपना लरिकइयाँ के सउनल सवँरल। इहँवे होटल में जूठ मलला से लेके एकावानी तक कइलन आ आखिर में जब कतहूँ परता ना परल त रेक्सा के हैंडिल थम्हलन। ना, अब उनुका से ई सहर ना छूटी। जब कुल्हि करम इहँवे भइल त माटियो इहँवे लागी।

पश्छिम में सुरुज के गोल लाल चक्का धरती में समाये का उतजोग में लागल बा। महेस के नजर जइसहीं ओह चक्का पर पड़तीया, उनकर खून सुखा जाता। जइसहीं ई चक्का धरती में समाई, अन्हार अपना करिया चादर में धरती के तोपे सुरू कर दी। कुछे देर में सउँसे धरती करिया कुच-कुच अन्हार में तोपा जाई। महेसो तोपा जइहन। फेरू कुछ ना बस चली उनुकर। थउसि जइहन। देंह-जाँगर रहते असक परि जइहन। करसु का। सभे लूटि रहल बा। उमिरिओ लूट रहलि बा। ताबर-तोरी उनुका आँख के जोति छीनति जा रहल बिआ। दिन त अबे साथ दे रहल बा बाकिर रात दगा देत जा रहल बिया। आ तवना पर सड़क के रोसनी नदारदे रहतीया। कवनो सड़क पर एकाध गो बल्ब जरि जाता ऊ ढेर होता। खाली आँखिये का जोति से रस्ता देखे के बा। दिन के कमाई में दमे नइखे आ रात के कमाई होइये ना सके। पहिले चेतलन ना। सबखे ना पेचे। अब चेतवे कइलन त होई का? पइसा होई तब त आँख देखावल जाई। पइसा तब होई जब कमाई होई। कमाई तबे होई जब आँखि ठीक रही। पइसा के अइसन परधानी ऊ अपना जिनिगी में कबो ना देखलन। दया-ममता सब पइसे के पराधीन होके रहि गइल बा।

'ए रेक्सा खाली बाड़?' एगो सवारी के आवाज से महेस के बिचारन के लर टूटि-टूटि के छितरा जातीया। उनुकर चेहरा अइसन लागता जइसे घनघोर नींनि में सूतल उनुका के केहू अचके जगा देले होखे। चकचिहा के कहताड़न, 'हँ, सरकार, आईं बइठीं।' अउर दिन रहित त कहाँ जाये के बा, पूछबो करितन, भाड़ा तय-तापर करितन बाकिर जानि-बूझि के कुछऊ नइखन पूछत। ईहो सवारी हाथ से निकलि जाई त आज का दिने खर मेंटावो ना हो सकी।

महेस के रेक्सा सड़क पर रेंगे शुरू कर देले बा। कछुआ के चाल से अपना मंजिल के दूरि तय करे में ऊ जी-जान से जूटि गइल बाड़न। सवारी रहि-रहि के अनसा रहल बा। जइसे-जइसे सवारी के अनस बढ़त जा रहल बा, रेक्सा के पाइडिल के चाल तेज होत जा रहलि बा। महेस के हाथ त हैंडिल पर बा बाकिर रेक्सा पर उनुकर आँकुस नइखे। आवाज सुनि-सुनि के कइसहूँ बचे के कोसिस करत जा रहल बाड़न।

'ए रेक्सा! रोक! हमार जान छोड़। हम दोसर, रेक्सा ले लेब भा पयदले चलि जाइब। राति खा लउके ना का?

महेस रेक्सा रोक देत बाड़न। कुछ छन खातिर त उनुकर बकारे बन हो जाता। फेरु तनी अहथिर होके कहताड़न, 'हँ, सरकार रात में कुछ देखे में एने तपलीख हो रहल बा। पता ना उमिरि के असर ह कि रतवन्ही। बाकिर रउवा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चिन्ता मत करीं। कुछो ना होई।'

'तू आपन जान त लेबे करब, सवारियो के जान, लेब। आँखि से जब लउकत नइखे त रेक्सा का चलावताड़।

'का करीं सरकार। पेट जवन करा दे। एने आँखि तनले बिया, ओने पेट तनले बा।' कहि के महेस चुपा जाताड़न।

सवारी एगो अठन्नी थम्हा के चल देता। उदास मने महेस फेरु सीट पर बइठ जा ताड़न आ रेक्सा के अपना घर का ओर मोड़ देताड़न। घरे पहुँचि के ऊ मेहरारु के हाथ में अठन्नी थम्हा के खटिया पर भहरा के गिर जाताड़न। बिचारन के आन्ही में उनकर दिल दिमाग एने-ओने उधियाये लागता। सोचत रहलन एगो लइका बा। आठवाँ में पढ़ता। पढ़ि जाइत त कतो छोटो-मोटो नोकरी लाग जाइत। एही खातिर कवन-कवन उतजोग ऊ ना कइलन, कवन-कवन तकलीफ ऊ ना सहलन बाकिर आँखि जब एह तरे जवाब दे देलस त का करसु। अब उनुका बस के बात नइखे रहि गइल। जतना सहाइल ओतना सहाइल। अब सहाये के मान के नइखे।

'लखना का करता हो ?' मधिमाहे सुर में मेहरारु से पूछताड़न।

'पढ़ता बा, बोला दीं का ? आजु तोहार मन ठीक नइखे बुझात।'

'मन ठीके बा। ठीके रही। आ, बेठीक होइयें के का करी। लखना के तनी बोलाव।'

लखन पँजरा आ जाता। बाप के चेहरा पर ओकर निगाह जमि जातीया। कुछ अनहोनी के आभास ओकरा मन में समा जाता। मेहराइले सुर में कहता, 'का बाबूजो, का काम बा।'

'बहुत काम बा, बेटा। अस्थिराहे बइठि जा,' महेस गंभीर आवाज में कह ताड़न। तनी थथमि के ऊ फेरु कहे सुरू करताड़न, 'बेटा हमार बहुते साध रहे तोहरा के नीमन तरे पढ़ाई-लिखाईं, नोकरी दियवाईं बाकिर सोचल समका साथ ना दे। का करीं। आँखि अब साथ नइखे देति। देहि-जाँगर साथ नइखे देत। अब ई कुल्हि राजपाट हमरा से सँम्हरे मान के नइखे। तोहरे अब एकरा के सम्हारे के बा। ल थाती मधे ईहे एगो रेक्सा बा। तोहरा के सउँपि रहल बानी। तूहूँ सोचबे बेटा-कइसन अभागा बाप का घरे जनम लिहलीं। अपना जाने में त जतना ले संपरल बाप के करतब के निबाह कइलीं, तनिको कोर-कसर एकरा खातिर ना उठा रखलीं बाकिर एह दगाबाज उमिरि के का कहीं। ··माफ करिहे बेटा।'

महेस के आँखि डबडबा आइल बाड़ीसन। आँखि स सरवत लोर उनके चेहरा पर पसरि गइल बा। सोचताड़न अब एह आँखिन में जोति का बदला खाली लोर भरल रही। अइसहीं सरवत रहिहसन ई जिनिगी भर। काँपत हाथे लखना के रेक्सा के हैंडिल थम्हा दे ताड़न।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुलहा के दहेज

सिपाही सिंह श्रीमन्त

जेठ के दुपहरिया। घाम अपना चढ़ाव जवानी में। सरेह में तकला पर आग बरसत रहे। हम गाँव के पूरुब महंथ जी वाला पीपर के नीचे भुइएँ एगो हलुक दरी बिछा के सूतल रहीं। नींद त ओह गरमी में का आई बाकिर पीपर के छांव के सहारा पा के अबगे पपनी तनीमनी लदपदात रहे, तले कान में भारी भरकम आवाज आइल—'का जी बबुआ जी, आरे, हमनिओ के बइठे-उठे के पूछल जाई, आकि खाली अपनहीं सूतनाई होई !'

हम अकचका के उठ बइठलीं। सामने खड़ा रले गंडक पार के बाबू पलटन कुँअर आ उनका साथ में चार आदमी आउर।

पानी-वानी पी के ठंढइला का बाद बाबू पलटन कुँअर कहले जे 'रउरा एही घामा में तनी तकलीफ उठावे के पड़ी ! हमनी अइली हं रउरा के हेमू छपरा ले चले खातिर।'

'बात का बा कुछ सुनाएब लोनी तब नू।' हम चिहा के पूछनी।

कुँवर जी का साथे उनकर पुरोहित पं० गोखुला तिवारी रले। उहे बतावे लगले।

'कुँअर जी के बेटी के बिआह के बात रहे। हेमू छपरा के बाबू तिरबिकरम सिंह त तइयार बारे, बाकी उनकर पोतवे अबहीं एने-ओने कइले बा। पता लागल ह कि उनका पोतवा से रउरा बहुत निअराही बा। रउरा साथे पढ़ले बा। रउरा समझाएब त बात तै हो जाई।'

'पोता बाबू के उजुर का बा ?'

हम पूरा मामला समझ लेवे खातिर पुछलीं।

'कुछुओ बतइते तब नु ? कहतारे कि अबहीं बिआह ना करब। का कहल जाव बाबू साहेब अब त अइसन जबाना आ गइल जे लरिको फरिको अपना बिआह के बात अपनहीं करे लगले स। जब तिरबिकरम सिंह का जिनिगिए में उनकर पोता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना मन के बात करे के तेआर हो गइल बा, त दोसरा के कवन बात बा ? बाव के ठीक कइल बात पोता बेठीक करे पर उतारु बा ।'

पुरोहित जी अबहीं अउरो कुछ कहे का मूड में रले तले हम बीचहीं में टोक देलीं—'पंडी जी, रउरा लोगीन का ई बात भलहीं कुछ तींत बुझात होई बाकी हमनी का त एमें कवनो अइसन बात नइखे लउकत जवना के लाज मानल जाव । जेकर बिआह होखे वाला बा ऊ मुँह बन कके लुकाइल रहो, आ बुढ़ऊ लोग अपना जमाना के पसः ओकरा पर लाद के कहत रहो लो जे वाह रे बबुआ, भलमानस, अब जिनगी भर एह लदना के ढोअत रह । ई बात हमनी का तनिको पसंद नइखे ।'

बाबू पलटन कुँअर हमरा के पोल्हावे का मूड में कहले—'जवाना के बात ह । जब जइसन, तब तइसन । अब रउरा लानी आइ० ए० बी० ए० पास क के बिअहल जातानी त रउरो लोनी के बात-बिचार बिआह में कुछ-कुछ माने-मतलब रखवे करी । अब तनी हमरा कठिनाई पर धेआन दीं । जेकरा घर में कुँआर बेटी बइठल बा ओकरा नीन ना पड़े, बबुआ जी । चलीं, अपना साथी के समझा के हमार भार कुछ हलुका करीं ।'

बाबू पलटन कुँअर का चुपाते पुरोहित जी फेनू कहल सुरू कइले-हँ बबुआ जी, चल के अपना साथी के समुझा दीं । रउरा त हमरा गांव के भगिनमान बानी, सब कुछ जानते बानी, दोसरा जगे दान-दहेज चाहे जे मिलो, अइसन लड़की रउरा साथी का ना मिली ।'

'कवना बात में ओइसन लड़की दोसरा जगे ना मिली, कुछ बिसेख बात बताईं जवना से हम अपना साथी के समझा सकीं । हमरा ममहर गइला बहुत दिन हो गइल, बहुत बात के जानकारिओ नइखे ।'

पंडी जी कहले —'आरे साहेब, ऊ लड़की अइसन बा जवन आज ले अपना हाथ से एक गिलास पानी ढार के ना पियले होई ।'

हमरा हँसी आ गइल । ओह लोग का साइत ई अच्छा ना लागल । सभे का चेहरा पर तनाव आ गइल । हम कहलीं – 'माफ कइल जाई पंडी जी, अगर ई हाल बा कि लड़की आज ले अपना हाथ से एको गिलास पानी ढार के नइखे पिअले त हम अपना साथी के अइसन लड़की से बिआह करे के ना कहब । अब ऊ जवाना बहुत पीछे छूट गइल, पंडी जी, जब काम ना कइल बड़प्पन के निसानी रहे । अब त हमनी का अइसन लड़की के पसन करब स जवन रात—बिरात के पिआस लागला पर चट से उठ के प्रेम पूर्वक एक गिलास पानी पिआवे के तइयार होखे ।'

बाबू पलटन कुँअर बात के सम्हरले—'ठीक कहतानी बबुआ जी । पंडी जी का कहिहें । जबाना उनका नइखे लउकत । उठीं; चलीं हेमू छपरा । रउरा मेहनत से, जो बात लह जाई, त भारी हरानी पेसमानी से जान बाँच जाई ।'

हेमू छपरा गइला पर जब अपना साथी से हम झूठ-साँच फेंट के लड़की के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़ाई कइलीं त असल बात के पता चलल। दोस लइका के ना रहे। अबहीं ओह घर में बाबू तिरविक्रम सिंह के बहुत रोब रहे। मजाल ना रहे जे उनकर आई० ए. पास पोता बाबा के मरजी का खिलाफ जबान हिलावस। बबे के सिखावल रहे जे पोता कहल सुरू कइले रहले—'हम अबहीं बिआह ना करब'।

हमरा झूठ—साँच के अइसन असर पड़ल कि बीरबदन (बाबू तिरबिकरम सिंह के पोता) हमरे पर सउँप देले कि जे तू कहब सेही हम करब। लइकी के झूठ-साँच बड़ाई के साथ-साथ दान-दहेज के सामानन के हम अइसन सबुज बाग देखवलीं कि कि बाबा ओ पोता दूनू जने एह रिस्ता खातिर तइयार हो गइल लोग आ बिआह के दिन बदा गइल।

बाबू पटलटन कुँअर त खुसी का मारे गहगह भइल रले बाकी हमरा आगे के बात सोच के मने-मने काफी बेचैनी बुझात रहे। ना जाने बिआह का बेरा का होई; का जाई, हम बेकार बीच में पड़ गइली हँ। लेकिन फेर मन में ई बिचार आवे कि जवना समाज में लइकी के अनबोलता धन समझल जाता आ लइकी वाला के हरान कइल बड़ाई के बात मानल जाता, ओह समाज में लइकी वो लइकी वाला का तरफ से कुछ झूठ-साँच कहला से ओकर भलाई हो गइल त ई कवनो बेजांय काम ना भइल। ई त पुन्न के काम बा।

हम कतनों देह छटकवलीं बाकी हमरो बरियात जाहीं के पड़ल। दूनू ओर से मुस्तैदी रहे, हम निकले ना सकलीं।

बाबू तिरबिकरम सिंह बड़ा ठाटबाट से बरियात ले गइल रले। सतरहगो त हाथी रहे। एक दरजन घोड़ो होइहें स। तीन सौ से कम बरिअतिहा लोग ना रहे।

बाबू पटलटन कुँअर बरिआत के बड़ा प्रेम से अगवानी कइले। दुआरी लागला पर खूब आव-भगत भइल। बड़ा ठटगर नास्ता करवले।

अगेआँ आइल, बहस भइल। कनियाँ निरेखन का बाद धीरे-धीरे लगभग पूरा बरियात खा—पी लेलस। कुछ लो टेन्ट में आराम करे लागल, कुछ लो समियाना में बइठ के नाच देखे लागल।

हमहूँ अपना एक उमिरिआ लो का सँगे समियाना में बइठ के नाच के मजा लेवे लगलीं। जइसे-जइसे रात बीतत गइल, नाच जमत गइल।

लगभग दू बजत रहे। बेहद दरदीला गला से एगो नचनियाँ निरगुन सुरू कइले रहे। पूरा समियाना निरगुन का गुन में बन्हाइल मोहित होके गला के मिठास पीअत रहे। अतने में बेटिहा किहाँ के एगो आदमी हमरा पास आके कहलस कि तनी बाहर आइल जाव, अपने से एगो बहुत जरूरी काम बा।

समियाना छोड़े के मन ना करत रहे, बाकी ऊ आदमीओ हमरा के छोड़े के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तइयार ना रहे। बाहर गइलीं त कहलस, अपने के बोलावल ह लोग। अँगना में कुछ झंझट हो गइल बा।

हमरा त सुनते टनाक दे लागल। आउर अलगे ले जाके पूछलीं—का बात बा ? कुछ बताव तब नू ?

ऊ आदमी जे कुछ कहलस ओकर सार-संछेप ई रहे कि बिआह का वेदी पर सेनुरदान ओगैरह बिधि-बेवहार होखे का पहिले, जब लइका के धोती बदले खातिर नया धोती दिआइल ह, त धोती पेन्हे का नेग में मोटर साइकिल मँगले हँ। तब से लगभग घंटा-डेढ़-घंटा हो गइल; ऊ सबलोग मनावन क-के हार गइल, ऊ धोती पेन्हे के तइयारे नइखन। ना धोती पेन्हतारे ना बिध आगे बढ़ता। सबकुछ ठप पड़ल बा। बिआह का वेदी पर लइकी, लइकी के माई आ लइकी के बाप दू घंटा से बइठल बा लोग। अब सभे अगुता गइल बा।

हम दन से ओह आदमी का साथे बेटिहा किहाँ चल देलीं। ओह गांव में ममहर भइला से ई फायदा रहे कि हमरा से औरत लोग ना परदा करे, ना लजइबे करे।

आँगना में पहुँचलीं त उहां के सनाटा देख के सटाक दे लागल। बिआह वाला आँगन भला अतना चुप्पा आँगन होला ? औरतन से पूरा आँगना आ ओसारा भरल रहे, लेकिन केहू का मुँह में बोली ना रहे। बिअहुती चद्दर से समूचा सरीर तोपले, नीचे मुँहें-मुँह कइले, लइकी चउके-मुके बइठल रहे। बगल में मतारिओ तनीअन-क्षटाहे घूघ तनले मुँह लटकवले बइठल रली। बाबू तिरबिकरम सिंह कान्ह पर धोती के फेंटा फेंकले दुआरिए कोरी टकटकी लगवले रले। साइत हमरे राह निहारत रले। हम जइसहीं चहुंपली तइसहीं सबसे पहिले पंडी जी कहले—"आईं, आईं, हई अपना साथी के समुझाईं। घंटन से बिध बन्द बा। इहाँ के हठ का आगू केहू के कवनो बस ना चलल ह। जब सभे हार गइल ह, तब रउरा किहाँ बोलाहट गइल ह।"

हम दुलहा का लगे पहुँच के पूछलीं—"काहे हो बीरबदन, का बात बा ?"

"बात का बा, पहिले-पहिल एगो अदना-सा चीज मँगलीं हँ आ ओही खातिर सभे एक ढाका बात बना रहल बा। जबले हमरा मोटर साइकिल ना मिली तबले ना धोती बदलब ना सेनुरदान करब।'

बीरबदन के हम बहुत तरह से समुझवलीं ! इज्जत-प्रतिष्ठा के ख्याल करे के कहलीं। सम्बन्ध हो जाई त मोटर साइकिल माँगे के बहुत मोका मिली। मिलबो करी। अबहीं त लगन के बेरा बीत रहल बा। जइसे-जइसे पंडी जी कहतानीं तइसे-तइसे जल्दी-जल्दी बिध-बेवहार समाप्त कर। हम कहतानीं कि तहरा के बाद में कहियो जरूर मोटर-सायकिल दिअबाएब।

बीरबदन कहले, ---"अतने भर बतिआ ई लोग सकार काहे नइखे लेत। हम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवनो एही घड़ी ठावें पर मोटर साइकिल देवे के थोड़े कहतानीं। बाकिर वादा त हो जाए के चाहीं।"

हम बाबू पलटन कुँअर से कहलीं—"अपने कह दिआव कि बाद में जब अपने का सुबहिता होई तब इनका के मोटर साइकिल कीन देब।'

"ई बात हमरा से ना कहाई बबुआ जी! हम वादा कर दीं आ ना पूरा होय त मरद का जबान के मोल चल लाई। अगर मोटरसाइकिल के बात रहे त तिलक दहेज तै होखे का बेरा एकरो जिकिर करे के चाहत रहे। सकतीं त देतीं, ना त भाग परइतीं। जवन तै रहे तवन त हम पाई-पाई तिलक में चढ़ा देलीं, अब इहवाँ त हँसी-खुसी के दान दहेज बा। मोटर साइकिल देहल त तिलके लेखा एगो भारी भरकम बखेड़ा हो जाई। बबुआ जी से कहीं जे बिध-बेवहार आग बढ़े देस, जवन हमरा सरधा म आई हम बाज ना आएब। ह, जब दोंगा का बेरा इहाँ का आएब त नया सिरा से इहाँ का माँगे के हक रही आ हमरा ओह माँग के पूरा करे मे आनन्दो आई।"

सुनते मातर बीरबदन तुनुक के कहले—'हमरा बिआहे का बेरा मोटर साइकिल ना मिली त हम कवनो बिध-बेवहार ना करब।'

हम फेंनू तरह-तरह से निहोरा पाती करके बीरबदन के मनावे लगलीं। हम जोर देके कहलीं—"बीरबदन' तू हमार बात मान जा, हम वादा करतानीं जे दोंगा का बेरा तहरा के इहाँ से मोटर साइकिल जरूर दिअवाएब।"

हम कतनों कहलीं बीरबदन ना मनले। झपट्टा लेखा जबान चलावत सुनवले —"जा, जा, एह जगही हम केकरो बात ना मानेब। जबतक मालिक का तरफ से मोटर साइकिल देवे के वादा ना होई तबतक धोती बदले के-के-कहो, हम सेनुरदानो ना करेब।"

बीरबदन के बात खतम होत-होत ओह जगही एगो अनहोनी हो गइल। बिअहुती चद्दर से तोपाइल, मूड़ी निहुरा के बइठल लइकी झटाक से खड़ा हो गइल आ जोर से ई कहत उहाँ से चल देलस कि 'हमार इहाँ कवन काम बा? ई त मोटर-साइकिले के सेनुरदान करिहें। हम अइसन लइका से बिआह ना करेब।'

जले लोग समुझे-समुझे तले लइकी चल गइल भीतर घर में। अतना झटाक से ई घटना घटल कि कुछ देर ले सभकर बोलती बन्द हो गइल। सब से पहिले पंडी जी बोलले—"आँगना से ओसारा ले माइए-बहिनी लो बइठल बा, ओही परे बबुई गइल ह आ केहू से पार ना लागल ह जे ओके मनाई भा रोकीं। अइसन भला कहीं होला? बोलाईं लोनो महराज ओके जल्दी से!"

लइकी के छोटका भाई अर्जुन चट से सामने आ गइल आ लागल गरजे—"जिन जइहें ओकरा के बोलावे उनकर एको बिध हम ना छोड़ब। बन्द करीं लोगन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई सब बखेडा । ई बिआह अब ना होई । दीदी ठीक कहलस ह । एह लइका के बिआह मोटर साइकिले से होई ।"

अर्जुन आई० ए० पास क के अबगे बी० ए० में गइल रले । हमरा ममहर भर में ऊ होनहार लइका गिनात रहे । उनका बोलते उनकर मतारिओ उहां से उठ के भीतर चल गइली ।

दन-दन ई सब घटना एक का बाद एक होत चल गइल । हमरा त जइसे ठकुआ मरले रहे । होस भइल तब, जब बाबू पलटन कुँअर हमरा तरफ मुँह क के हमरा से पूछले—"बबुआ जी, अब का होई ?"

हम अबहीं बोलहीं के रहीं तले बीचे मे बोल पड़ले अर्जुन—"होई का ? अब ई बिआह ना होई । दुलहा-फुलहा के अब इहाँ कवनो जरूरत नइखे । जाव लोग ई लोग अपना समियाना म !"

हम बीरबदन का तरफ तकलीं । उनकर सब हेंकड़ी खतम हो चुकल रहे । मुँह लटकवले बइठल रले । हमरा दिमाग में एगो बिजुरी चमकल । बुझाइल कि बीरबदन अब कहेब से मान जइहें । चट दे हम बइठ गइलीं उनका लगे । कहलीं—"दुर मरदे, अबहुँओं तहरा इज्जत के गम बा कि ना ? पहिन भाई, जल्दी से धोती आ होखे द सब बिध-बेवहार ।"

अबकी हमार कहल जादू लेखा काम कइलस । तुरंत बीरबदन पिअरी धोती उठवले आ खड़ा हो गइले आपन धोती बदले खातिर ।

बाकिर अबहीं पिअरी धोती के दूनू छोर दूनू हाथ ध के फइलावहीं के चाहत रले तले फेर ठनका ठनकल आ बिजुरी गिरल । अर्जुन दउर क उनका हाथ से धोती छीन लेले । कहले, "लइकी एह लइका के इनकार कर चुकल; अब ई पिअरी धोती पेन्हें के इनकर हक खतम । हमरा दीदी के अनबोलता धन समझल भारी भूल होई । हम सभे के चेता देत बानीं ।"

बीरबदन खड़ा के खड़े रह गइले । हमार त जइसे सब अकिलि हेरा गइल । छने ताकीं अर्जुन का ओर; छने बीरबदन का ओर । बीरबदन त अतना हठधर्मी देखला चुकल रले कि अतना फजीहताओं से उनका खातिर केहू का हमदर्दी ना जागल । हमरा त मने-मने प्रशंसा के भाव जाग गइल रहे ओह साहसी लइकी पर आ ओके खुलके समर्थन देवे वाला छोट भाई पर । बाकिर, तबहूँ हमरा ई उमेद ना रहे जे बीरबदन अतना कायर निकलिहें । उनका अतनो ताव ना आइल कि अँगना से निकल के चल दीते ।

सभकर लाज बचवले पंडीजी । चट से उठले आ पट से एक हाथ बीरबदन के बाँह आ दोसर हाथे हमार धके दुआर का तरफ घींचत कहले—"चलीं लोगीं बाहर दालान में, उहँई बइठ के विचार होई ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सनसनी बरिआत ले चहुँपल। चारू ओर हल्ला हो गइल कि लइकी ओह लइका के नावदर कर देलस। नून-मरिचा लगा के ई बात-बतकही कहाए लागल। गाँव से बरियात ले दू दल बन गइल। एक ओर हो गइले नवही लोग, जे लइकी के तारीफ करे लागल। दोसर ओर रहे लोग बूढ़—पुरनिया मरद-मेहरारू, जे जबाना के दोस देवे लागल।

गाँव के नवहो त एगो अउरो कांड कइले सँ। हम आ बीरबदन जहाँ बइठल रही सँ उहाँ एगो मोटर साइकिल ले अइल सँ। ओही में से एगो कागज में सेनुर ले ले रहे। बीरबदन का लगे जाके कहे लागल—"उठीं जी भाई जी, मोटर साइकिल के सेनुरदान करीं। पढ़ीं; पंडी जी, मतर पढ़ीं।"

बीरबदन के त हालत खराब रले रहे, हमरो हालत हो गइल रहे साँप छुछुन्दर के। गलत परपरा के एगो कड़ी टूटत देख के भीतर से मन हुलसित होत रहे। बाकी बीरबदन के अकेले छोड़ के हटल उचित ना बुझात रहे। भारी अहजह में पड़ल रहीं। तब तकले देखत का बानीं कि सामने से बाबू तिरबिकरम सिंह चलल आवत बाड़े। पीछे—पीछे बरिअतिहन के एगो झुंडो रहे। सब लोग दालान का नीचे ठाढ़ हो गइल। अकेले तिरबिकरम बाबू दालान में हमनी का लगे ले चल अइले। अइसन रोबइल समधी के दुआर पर आइलो देख के केहू कवनो परवाह ना कइल। बइठहूँ के केहू ना कहल। जब हमरा लगे आके खड़ा हो गइलें त हमार होश जागल। हम चट से खड़ा होके कहलीं—"आइल जाव; बइठल जाव।"

बइठ के हमरो के बगल में बइठा ले ले। हमरा बड़ा अचरज भइल ई देख के कि तिरबिकरम बाबू अइसन रोबइल आदमी का चेहरा पर खीस-क्रोध के कहीं नांवों-निसान ना रहे। शात आ गंभीर आवाज में कहे लगले—"बबुआ जी, हम सब कुछ सुन चुकल बानीं। दोस बीरबदन के बा। धनुहा के डोरी हद से जादा टालन जाई त टूटबे करी। तीर चलावे वाला का अतना अकिल चहबे करी। बीर-बदन के हठ हद से फाजिल चल गइल ह। नतीजा सामने बा। अब लाज रउरे हाथ में बा, बबुआ जी। लइकी के केहूँ गईं मनाईं। रउरा ओकर ममिआउत भाई लागेब। हमार बात ओकरा लगे पहुँचाईं। हम ओके तनिको दोसी नइखीं मानत। ओकरा साहस से हमरा मन में ओकर बहुत इज्जत बड़ गइल बा। हम पुरनका जबाना के आदमी बानीं, बाकिर हमेसा बहादुरी के पूजा कइले बानीं। हम एह लइकी के मान-सम्मान खातिर अपना बेटा का तरफ से खुद माफी माँगे के तइयार बानीं। जाके ओके हमार बात बताईं। कह दीं जे हम गंवे चलला पर अपना परिवार के सब बेकती के एकठ्ठा कर के किरिआ धरा देब जे अब से हमरा खानदान में केहू अपना बेटा के बिआह तिलक-दहेज लेके ना करी। मांग—मँगउवल सब आज से खतम।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा बुझाइल जइसे हम सपना देखत होईं। तुरन्त कहलीं, "रउरा थोड़े देर बइठीं हम आवतानीं।"

अँगना जाके अर्जुन के धइलीं। मान--मनउअल क के लइकी का लगे चले के राजी कइलीं। जब बाबू तिरबिकरम सिंह के सनेस सुनवलीं। त लइकी रोए लागल। ओकर मतारिओ सुसुके लगली। हम धीरज धर के अर्जुनो के मनावे लगलीं---"भारी क्रांति होखे जा रहल बा हो अर्जुन। बाबू तिरबिकरम सिंह का किरिआ के साधारण किरिया मत समुझ। ओकर बड़ा दूरगामी प्रभाव होई। जिला-जवार ले असर पड़ी। एकरा अलावे तहरा बहिन के बहुत इज्जत बढ़ जाई ओह परिवार में। जेकरा मान-सम्मान के खेआल बाबू तिरबिकरम सिंह करे लगले ओकर मान-सम्मान गाँव-जवार करे लागी। ई बिआह अब होखे द। गलती खातिर पश्चाताप क लेला पर गलती गलती ना रह जाय।"

अर्जुन पर हमरा बात के असर पड़ल। अपना बहिन से पूछले---"का कहतारे दीदी अब सब सुनला पर? भइया के आपन बात बताव।"

तनी ठहर के लइकी बोलल—"कह द भइया उहाँ से जाके जे हम उहाँ के चरन छूअत बानी। आशीर्वाद माँगत बानीं। उहाँ अइसन ससुर पाके हम धन्न हो जइतीं। बाकिर जेकरा से बिआह करे के बा ऊ त हमरा से बेसी मोटर साइकिले से नेह लगवले बा। सउँसे जिनगी निबाह कइसे होई? जवना समाज में हम अबले जिअल बानीं ओमें लइकी के अतना बोलल अपराध मानल जाला। एह से हम माफी माँग के निहोरा करत बानीं कि उहाँ का आपन आशीर्वादे देके हमरा के छोड़ दीं।"

लइकी के दरद हमरा समझ में आइल। हम बीरबदन का तरफ से कुछ सफाई देवे का अन्दाज में बतिआइल शुरू कइलीं। बाकिर लइकी आँचर से आपन आँख पोंछत कुछ बोलल मनाकर देलस। कहलस, "भइया, छोड़ सब बात। खाली हमार जवाब पहुँचा द उहाँ का लगे।"

हम अर्जुन के धइले बाहर चललीं। विरोध ना कइले। बाबू तिरबिकरम सिंह का समाद के असर उनका पर पड़चुकल रहे। अबहीं, दुआर पर दलान से अलगहीं रहीं सँ, तले दस बारह नवही स हमनी के घेर ले ले सँ। ओमें बराते के नवयुवक जादे लउकले सँ, गाँव के कम। ओह सब के बात के सारांश ईहे रहे कि बाबू तिरबिकरमो सिंह से अधिक धन-संपत्ति वाला परिवार के एगो नवयुवक जे ओह साल बनारस युनिभरसिटी से प्राचीन इतिहास में फस्ट कलास फर्स्ट घोषित हो चुकल रहे, एही लगन पर एह साहसी लइकी से शादी करे के तइयार बा। युवकन में काफी जोश झलमलात रहे। अमरेश से हम परिचित रहीं। उनका प्रतिभा के प्रशंसक बीरबदनो रले। हम अर्जुन कावर तकलीं। ऊ कहले—"चल भइया, पहिले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अवना काम में चलल बार तवन काम कर।"

अबहीं डेग उठवलहीं रहीं सँ, तले बीरबदन दालान में से उठ के हमनी का लगे आ गइलें। आवते अर्जुन के दूनू हाथ अपना हाथ से थाम के कहे लगले—"अर्जुन जी, हम कसूर कइले बानीं, बाकिर अइसन कसूर ना जवना के जिम्मेवारी खाली हमरें पर होखे। हम जवना समाज में पोसाइल-पलाइल बानीं ऊ समूचा समाज कसूरवार बा। तबहूँ हम जवन बेवकूफी कर चुकल बानीं, तवना खातिर तहनी से माफी माँगत बानीं। हम तारीफ करत बानीं तहार आ तहरा बहिन का साहस के जे हमरा बाबूजी अइसन पुरातन पंथीओ के बिचार में सूर्योदय कर देलस। जवन बीत गइल तवना खातिर हमरा पूरा पश्चात्ताप बा। हम बिना संकोच के तहरा बहिनो से माफी माँगे के तइयार बानीं।"

नवहिन का गोल में सें अमरेश निकल के बीरबदन के अँकवारी में ले लेले। कहले—"लाज राख लेल बीरबदन भाई नया युग के। संकोच के जाल काट के तूहूँ कम हिम्मत ना देखवल। बेटहा—दुलहा के झूठ अभिमान के परंपरा एके झटका में तूड़ के फेंक देल। अब सावित हो गइल जे ओह लड़की खातिर तूं योग्य वर बाड़।" अर्जुन का तरफ मुखातिब होके कहलन—"अर्जुन जी, अब शादी में देर ना होखे के चाहीं।"

अर्जुन छन भर थथमइले, बाकिर तुरंते सँभल के कहलें—"बिना दीदी से पूछले कुछुओ नइखे हो सकत।"

हमरा उत्साह आ गइल। धइलीं अर्जुन के बाँह आ आँगन कावर घींचत कहलीं—"आव हेने; अब सब ठीक हो जाई। चल एकबेर फेनू अपना दीदी का पास।"

कहे के जरूरत नइखे जे बीरबदन के बिआह बड़ा उमंग आ हुलास से संपन्न भइल। आजो ले ओकर कथा-कहानी कहात रहेला। बाबू तिरबिकरम सिंह त अइसन किरिया धरवले जे तिलक-दहेज के बात उनका परिवार से हमेसा खातिर खतम हो गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिकरिया

●

प्राध्यापक 'अचल'

●

सन ओनइस सौ सत्तर क खिचड़ी क तिहवार हमके जिनगी भर ना भुलाई। पाँड़े लोग घोसना कइल कि खरवाँस बीत गइल। दिन निम्मन हो गइल। हमहूँ कहब कि साँचो क हमरो खातिर ओइसन निम्मन दिन जीवन भर में ना भेंटाइल बाकी ईहो कहब कि ओइसन जबूनो दिन एह जिनगी भर में ना आइल। निम्मन ई रहे कि हमार एगो गाय अंकरहो ओही दिने बड़ होनहर, सुच्चा धावर, दहिने लहसुन वाला बछरु बिआइलि। सभका मुँह से निकसल—'तोहार जमा खड़ा हो गइल। दुसरकी गाय तीन-चार महीना बिअइला का बाद ओही दिन आसरा क नेंव चाँति दिहलसि। सभ कहल—'ए भइया! तूँ त बड़ा भगिगर बाड़।' जबून एसे कहब कि हमार बाल-बच्चा हमके फँसावे बदे महाजाल डालि देले रहलन। महीनन ले हम बरकि जात रहलीं। ऊ पैंतरा ददल के घात में बइठि गइलन। सिकारी घात में बइठेला त केवनो सुनगुन ना होखे दे। कुल्हि सुनगुन बन्न रहे। हम वेखटक विचरे लगलीं। हमरा घमड रहे कि हमरा घरे बेकहल केहू नइखे बाकी ओही दिन भूमा का थईं हमार मेहरारु लइका लोग हमरा के बइठा दिहल। घर क अनुशासन क डोर तोर दिहल गइल। एही से हम कहीले कि ओइसन जबून दिन हमरा जिनगी में ना आइल रहे।

कुछ दान-पुन्न क के संक्रान्ति क चिउरा-दही सिकमभर खा के अलसाइल घम्मघमाँ ओलरल रहलीं। आगा-पाछाँ हमार तीनो संतति हमरा सोझाँ से निकललि। ऊ तीनो ऊ निहाल रहलन कि गेना का बड़का फूल नियर उनकर मुँह खिलल रहे। पेट-पोंछनी हमके खुदकवलसि—'बाबूजी! बड़ा सुघर बा। टुकुर-टुकुर ताकत बा।'

हम ओने ताकि ना पवले रहलीं तले मँझिली मन के उटकेरलसि—"कुल्हिन ले छोट ह बाकी होनहर बा।'

लइका आपन मरदुमी बखनलसि—'बाबूजी! ई कुल्हिन ले तेज बा। देख, एकर कान खड़ा-खड़ा बा। लरिका लोग घात लगवले रहल ह बाकी हमहन के लेके भागि अइलीं हँ जा। आजु नीक दिन बा। राखल जाई।'

हम बकर-बकर ओहन क मुँह ताके लगलीं जेवना जाल से अपना के बाँचल जानत रहलीं ओही में अपना के फँसल पवलीं, हम आपन दृष्टि उठवलीं—प

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क बच्चा मानव का बच्चा का कोरां बइठल रहे। ओघरी, व च्चन का पशु-मानव क अन्तर ना जनात रहे। नन्हकी हमरा कोरां बइठा दिहलसि —'बाबूजी! तोह के ताकत बा। बड़ा भोला-भाला लागत बा। राख ल। ई कहाँ जाई? ए जाड़ में बेचारा काहाँ रही आ का खाई।'

हम खुझलीं — 'हमहीं सभके घर-भोजन देबे क ठीका ले ले बानी। ई का होई? एकर भोजन गाय खाई, दूध देई। बछरु खाई, बड़ होई हरे चली। ई का करिहन? हमन का कमाए के बा आ लगले हाथ खा घाले के बा। का बटोरब जा जेवना के ई अगोरिहन? ई बेमतलब क कपार पर बोझ लिहला क का जरूरत बिया?'

जइसे पूस-माघ का रात में पाला परला पर सबेरे रहर आ बरं क थान मरुआ जालन स ओइसहीं ऊ लइका मरुआ गइलन स। ओ अबोधन के आवे आली दुर्गति क गियान ना रहे, न ओ जीव का ओ बच्चन क असमर्थता आ निराशा क अनुभव होत रहे। हमार मेहरारु आपन माया पसरली—'लइकन का मन बा। लइकन खातिर का का ना कइल जाला? लइकन खातिर गांव फूंका जाला। ई केवन बड़ बात बिया। रउवां एही तरे बे मोह-छोह क झिझिकार देइलां। एगो पिल्ला का खाई? घर-दुआर खाई? कवरा खाके निहाल रही।'

हम समझ गइलीं कि एमे इनहूं क चाल बिया। इनके लइकन क खेलवाड़ क फिकिर बिया बाकी हमरा कपार पर लदात बोझ क चिन्ता नइखे। हम का समझइतीं। जे जिम्मेवारी समझल ना चाहे ओके जिनगी भर समझावल ना जा सके। हम हँसलीं—'राखि ल। हम तोह के मना ना क सकीं। तोहार ए समय राज बा। बहुमत तोहरा पक्ष में बा। हम कइ का सकत बानी? बाकी जिमेवरिया क कुछ लवछेर तोहरो पर आई। दुख ईहे बा कि तहिआ तूं रोइ-रोइ भरबु। हमरा के का? जइसे छप्पन ओइसे घप्पन।'

हम जान-बूझ के लइका-मेहरारु क मन राखि के खन्हक में गिरलीं। सन्तोष क लिहलीं कि ए कुकुर क पूर्वजन्म क हमरा पर रिन बा ओहीके भरे बदे ई संजोग घटल ह। उरिन होखे खातिर हम काछा कछलीं।

संझा में ओकर नामकरन-संस्कार भइल। नाँव सिकरिया धराइल। सिकरिया परिवार का सदस्य सूची में अँका गइल। जाड़ा क रात रहे। ओके ओढ़न-बिछावन मिलल। जले लइका जागल रहलन तले हाथे पर लिहले रहलन। जब सूते जाये लगलन तब ओसारी का कोना में बिछा-ओढ़ा के ओहू के सुता दिहलन। रात में सभ सुति गइल। सिकरिया जरूर हमरा लइका लोग ले तेज रहे। ओ जाड़ा का रात में आपन ओढ़न-बिछावन छोड़ि के भिन्सहरे फर-फराकित होके आंगन में टहरे लागल। ओ घरी ओके एगो हलखोरिन क जरूरत रहे। लइका लोग जागल। गूह-मूत साफ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करे के केहू तेयार ना होखे। सभ नाक मुँह बन्न करे लागल। मँझिली लइकी कपार पर आइलि भार टरलसि। बाकी लइका लइके ह। एक दिन दू दिन आ तीन दिन बीतल। पूरा लइका हड़ताल क दिहलन। अब का। श्रीमती जी क कपार पर बज्जर घहरा गइल। रोज सबेरहीं रोइ-रोइ गूह-मूत फेंके लगली। उनके रोवत देख के हमरा से कहा जा-'ई रोग काहे के बेसहलू ह ?'

'ई त हम ना जानत रहली हँ कि ई मरकिनवनाँ हमरा से गूह मूत कराई। काहाँ से अइसन गलीज उठा के ले अइलन हँ स ?'

'ओहन क का दोष बा ? ऊ कुल्हि अनबूझ बालक बाड़नस। तोहरा ई बूझे के चाहत रहल ह। जे बे विचार क काम करेला ऊ पछताला।'

'ठीके कहतानी। बबूर लगाके आम क फर कइसे तोरब। ई लइका न हमके बउरहिया बनवलन हँ स।'

'लइकने बढ़े न गांव फूँकाला। जो कुकुर क गूह-मूत फेंकाइल त ई केवन मउवति आ गइलि ?'

'गभिया जनि बोलीं। हम वूझत बानी। एगो हमरे पिल्ला पोसाइल ह कि ढेर आदमिन का बा ?'

'सभकर केवन दाँज बिया। संगे-संगे लंगड़ो देवाल फनिहन त का गति होई? सभ अपना-अपना सहूर से काम करेला। गों-बिचार से ना रही त दुर्गति होइबे करी।'

'अब त कपारे परि न गइल। जेवन कइले बानी तेवन भोगब।'

'तूहें ना, हमहूँ।'

'रउवां का भोगब ?'

'तू हमार अभिन्न अंग न हऊ त हम बँचि जाइब ! हमरा कपार पर ई रोइहन आ कुल्हि बइठका खनि-खनि बले से बइठिहन।'

सुनते उनकर बकार बन्न हो गईल आ संठ लगवली।

लइकन के केतनो झिझकरली, धमकवली आ फुसिलवली बाकी मोका पर पर ऊ घुसुकि जाँ स। साँझ क समझावसु डाँटसु, आ हुकुम देसु कम खिआवस। ऊ बिरोध ना करँस बाकी खिआवस भरपूर। ऊ अन्याय करे के तेयार ना रहलन स कि ऊ भरपेट खा स आ ओहन क खेलवना सिकरिया भूख से छटपटा। सिकरिया पहलवानी तन खियावल गइल। दिन-दिन दून होत गइल। महीने दिन में मलकाइन क हलखोरिन क पद छिना गइल। सिकरिया सयान होत गइल। सिक्कर में बन्हाये लागल। साँझ-बिहान घुमावल-फिरावल जा। समय से खाये पीये लागल, समय से हगे-मूते लागल। ए कुल्हि कं कबों जरूरत होखे त अपना हरकत से बता दे। मलकाइन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निहाल हो जासु-'बाहरे सिकरिया ! तूँत आदमी के झूठ क देले बाड़े। हम डेराइल रहलीं कि हमरा के बड़ा हलकान करबे।'

सिकरिया क देह छरहर, गठनगर आ रूपगर रहे। आँखिन में तेज अपना के रहे। कान खड़ा खड़ा। पूँछ पातर, अइँठाइल, ऊपर के गोलाई में घूमल। गरदन बाघ मतिन। रोवाँ सफेद मोलायम, झलकत। ऊ भूके ना, गरजे। घोघिया त लरिकन फरिकन के के कहो बड़कन क जाँघ काँपि जा। केतने आदमी दुआर पर क आइल छोड़ि दिहलन आ पजराँ का गली मोहें जाये क हियाव ना करसु। भिखमंगन क बोझ कुछ हलुक क दिहलसि। के ओसे आपन देह थोंचवा के सातगो कुआँ झाँको। सिक्कर पर सिकरिया हुमचत रहे। ओकर अजगुत, भूकल, जनगर आ सुघर शरीर देखनउक रहे। केहू देसी क अन्दाजे ना करे। केहू पूछे—'ई सिकरिया काहाँ से आइल ह ? ई नीक नसल क कुकुर जनात बा।' ऊ एतना भगिगर रहे कि ओके खाए पीए क कबो कुसारो ना भइलि। कई आदमी बधिया करावे क राय दिहलन। जीव क कलपना परे का भय से हम ऊ करम ना कइलीं। ओकरा में जवानी क जोस पुरहर छलकलो ना रहे तले ओकर काल कुआर कातिक क महीना ओकरा कपार पर आके चढ़ि बइठल।

कामदेव महाराज ओके बेधे लगलन। पहरा देवे क ओकरा सुधि ना रहल। उ कतहीं लुकाके बान मारि देसु। सिकरिया भोंकर-भोंकर रोवे लागे। जनाकि बाई का झोंक में सिक्कर तोरि देई। ओ समया में एगो उहे दुखिया ना रहे। ओकर कुल्हि भाई-बिरादर रोगी रहलन। कामातुर होके ओकर पूरा जाति रोवत, कलपत, बेकल आ पागल रहे। केहू समझावे वाला ना रहे। दूसर समझा ना सकत रहे काहें कि 'खग जाने खगही की भाखा।' ई प्रकृति क उत्पात रहे। ई रोग विश्वव्यापी रहे। रोवला, कहंरला आ कुहिकला क धुनि रहि-रहि रात में आवति रहे। ऊ सिकरिया क रोग क पीर के उटकेर दे। ऊ सुर बान्हि-बान्हि भोंकरे लागे। रात क सूतल हराम क दे। लरिकन का ओकरा भोंकरला क गम ना रहे। उ कुल्हि टाँग पसार के सूति जाँ स। ओहन का कपार पर दस गो नगारा गरगराइत तबो ओ जावन का ना सुगबगाए के रहे। हम बेकल हो जाईं। मालकिन गुरमुसासु, झखसु, गरियावसु आ सरापसु बाकी ओ बेधवास, जीव पर ओ संत के सराप ना परे। हम छिटकुन ले के धाईं, चुप हो जा। ऊ पोंछि हिला के हमरा दूनों टाँग का बीचे सरन लेवे लागे। खिनिस में हम कई तोर ओ के बना वना क पीट दिहलीं बाकी उ अपना सोभाव से बाज ना आवे। कुकुर क पोंछ बारहो बरिस बान्हि के चाहे गाड़ि के सोझ राखल जाई छुटला पर मोका पावते टेढ़ क टेढ़ हो जाई। सिकरिया जेवन टेढ़ भइल कि हमरा से सोझ ना होखे। ओकर सुघर-साघर रूप-रंग देखि के मन ना करे कि ए खिलत फूल के कनई में गिरे देईं। सिक्कर से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छोरल ओके बेहंगवा बनावल रहे। ओके बचावे खातिर ओकरा उत्पात से बड़ा बजनी कइलीं बाकी चीत हो गइलीं। ऊ खलल क दिहलसि। तीन दिन ले एक सुरका रात क रोवते रहि गइल। जी अउंजिया गइल। बेहंगवा आ लहेड़ा बने बदे ओके छुट्टी दे दिहलीं। ऊ एगो नाया दुनिया में धावल। ओहिजा क रहन-सहन, तौर-तरीका, घात पेंच आ नेम-धरम का ओकरा जानकारी ना रहे। काटा-काटी, झपटा-झपटी, चोंथा-चोंथी आ दांत-चिअरला क अइसन मोका कबों ना आइल रहे। पहिले बहुतन के कटलन-पिटलन फेर त चारू ओर ले झुंकि के ऊ कटलन स कि उनुकर कुल्हि देह खूने-खून हो गइलि। ई ओहिजा खातिर सहज रहे। काहे कि एक त कुकुर आ दूसरे कातिक। ओहू हालत में ऊ कुकुरन का झूंड़ि में चउबीस घन्टा मारल-मारल घूमल। पहिला हरका रहे एसे ढेर अड़लन बाकी बारह मसिया भूख बेकल कइलसि। ना चाहत रहलन तबो ओहिजा लवटे के परल जहवां ले भागि के गइल रहलन।

आपन घर जान के बइठलन। चारू ओर ले दुर-दुर, दुर-दुर होखे लागल। पहिले जनलन कि दूसरा कुकुर के दुरदुरावल जात बा। एसे कान उठा के एने-ओने देखलन, तकलन, दउरलन, भोंकलन बाकी उनकर जाति बिरादर दूसर ना रहे। उनका के अपना के दुरदुरवला क अनुभव हो गइल। माथा हेठ हो गइल। जहवां क तहवां बइठि गइलन। लइका लोग खेदे-बगेदे लागन्ल। श्रीमतीजी डंडा ले के धवलो बाकी ऊ अपना जगह ले इचिको जुमुस ना खइलन। सभ हारि गइल। माया से माया ना हटलि। बेलाग हम कुल्हि तमासा देखत रहलीं। छिटुकुन उठवलीं। बे मोह-छोह क घर निकाला क डंड दे दिहलीं। ऊ घर का इर्द-गिर्द चक्कर मारे लगलन। घर का बन्न दुआरी पर दू दिन धरना देले रहि गइलन। रात क आठ बजत-बजत पलिवार नरम परे लागल। भूखल पियासल एगो सवांग दुआरि का आगे पसरल परल रहे। ओ क उपास देखि के छाती फाटे लागे। दू दिनले अधिका उपास चले लागल। हमरा से केहू कुछ ना कहे। ऊ सत्याग्रह हमन के हिला दिहलसि। हमरा फेर से सोचे के परल। जेतना हम सोचले रहलीं ओतना ऊ अपराधी अब ना जनासु। काहे कि प्रकृति सभ के नचावति बिया त चाहू के ऊ ओकरा से बाहर कइसे रहि सकेलन। चाहू के केहू हमरा से चेरउरी ना कइल तबो हम सभकर मनवाली क दिहलीं—'देख जा। ओके भोजन दे दिहल कर जा। मोका पर रहे त ओके कवरा फेंक द जा। पानी पिया द जा। ओकरा से अउरी कुछ मति चाह जा। नात ईहे दुख क कारन बनी। उनका गर में सिक्कर मत बान्ह। जहवां मन करे ओहिजा रहसु आ जासु।"

सभ निहाल आ राजी हो गइल। हमार मेहरारू समझवली-"नीक कइलीं हँ। जेवन फेड़ अपना हाथ से लगावल आ सींचल जाला ओके अपना हाथ से ना काटे के।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'ठीके कहत बाड़ू । ई कवनो अपराधियो नइखे । दूई महीना क न अपना पहरा से छुट्टी चाहत बा । दस महीना खातिर त आपन सेवा देवे के तेयारे बा । आजु क आदमी एहूले गइल बा । एको दिन आपन नोकरी मन से नइखे कइल चाहत आ लम्मा कुल्हि मारल चाहत बा । ई बेजायँ नइखे करत । एहू के बरिस दिन में कुछ त छुट्टी चाहीं । ई अनबोलता जीव ह । आपन पच्छ कहि नइखे पावत । ई निरपराध बा । ए के राजा बना के रक बनावल आ दुआरि-दुआरि घुमावल न्याय नइखे । ई बेचारा प्रकृति क नियम पालत बा । ई हमन के सतावत नइखे ।'

ओकरा खातिर दुआरि खुलि गइलि । अब केहू ओके अपराधी ना समझे । सिकरिया माथ नववले घर में पइठल । लजइला मतिन आँगन का एगो कोना बइठि गइल । खइलसि, पियलसि आ कुछ बेर ले बइठल आ हेठाँ-हेठाँ नजर कइले, सभसे क्षमा क भीख माँगत उठि के चलि गइल । ओ दिन से ऊ मनमाना हो गइल । जब मन माने, आवे आ जब मन चाहे, चलि जा । आवे-जाये में केवनो रोक-छेक ना रहि गइल । ए दुनिया में ऊ छूट क लकड़ी खेले लागल । ऊ ओकर घाटा-नाफा दूनो देखलसि । ऊ दुनिया में ठोकरियाइल ना रहे, ठोकरिया गइल । केहू क लात-जूता ना सहले रहे, ऊहो सहलसि । पहिले ले कुछ भिन्न रहे लागल । ओकर मन क दशा बदल गइलि । ऊ चोर मतिन आवे आ भुसहुला घर का कोना में लुका जा । केहू के आपन मुँह ना देखावे । बोलवला पर आके खाके भागि जा । लरिकन-फरिकन का संगे खेलल-कूदल बन्न क देले रहे । कबो अइसन होखे कि हम दुआरि पर खड़ा रहीं, ऊ अवारागर्दी से लवटे । हमरा सोझाँ ना ताके । मूँड़ी हेठाँ गाड़ि के घर का पिछवारा सरकि जा । भीतर भेंट भइला पर दूर जाके खड़ा हो जा । मालकिन का आगे मूँड़ी गड़ले रहे । दू महीना ओकर ईहे गति रहलि । अपना कामुकता का नंगई से ऊ लजाते रहि गइल । पहरादारी क काम छोड देले रहे । एसे बे कमाइल-धमाइल दूसरा क कमाई खाऐ-पीये में हिचिकत रहे । ओकर बरतन में खायेक परे लागे त कनखी से ताकत रहे । नगीच ना जा । मालकिन कहसु—'बेचारा सोचत बा कि जब हमरा कुछ करहीं-धरहीं के नइखे त खायेक माँगे क केवन अधिकार बा । बे काम क अधिकार ना रहे । भोजन दीहल हमन क दाया समझत बा । हमन का नेकी से दबल जात बा ।'

लइका कहस—'ना, बाबू जी ! सिकरिया बडा गियानी ह । ऊ आपन असुद्ध परछाहीं हमन पर परल दिहल नइखे चाहत । ओकरा अनेसा बा कि ओकर परछाहीं परला से हमनो का लहेन्ड़ा हो जाइब जा । ऊ देखहीं के कुकुर ह ना त आदमी ह ।'

दिन जात देर ना लागे । कुआर-कातिक बीत गइल । प्रकृति क उदबेगल थिरागइल । ऊ पहरा पर डटि गइल । ओकरा मुँह पर क लागल करिखा जइसे-जइसे धोवाये लागल ओइसे-ओइसे ऊ पहिले मतिन खायेक बदे छरिआए लागल,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लरिकन-फरिकन का संगे खेले-कूदे-फाने लागल आ हमरा सोझाँ ठाढ़ होके पोंछ हिलावे लागल। हमार देह चाटि दे। ऊ हमरा सनेह क परसाद पावे क उतजोग करे आ ओकर अपना के पात्र जाने। ओघरी ओकरा देह में मांस, बल आ जोर ना रहि गइल रहे। वधराई कतहीं लुका गइलि रहे। ओ हाड़ का पंजरो में खालि चेतना रहि गइलि रहे। हमइन क संग छोड़े में ओ के कल ना रहे। ऊ अपना छुट्टी का समय क कुल्हि कसर पूरा क दिहल चाहे।

ऊ सिकरिया आजुले पलिवार का संगे बा। बरिस में ओही तरे दू महीना क छुट्टी लेला। फेर अपना पहरा पर कमर कसि के डटि जाला। कबों दुआर पर ओके ना देखि के केहू-केहू पूछ देला—'कुकुरा काहाँ गइल बा।'

हम कुछ जबाब ना दे पाईं तले ऊ आवाज सुनते घर से भूँकत निकलेला आ सभके चुप क देला। ऊ श्रीमती जी के बहुते मानेला। जब पोंछ हिला के उनका देह चाटल चाहेला तब ऊ ओकर मूँड़ी थपथपाके मोहाइ के कहेली—'सिकरिया क लाज-बीज ह। ई ओ जनम क आदमी ह। कमाई क केवनो चूक कइले बा जवना से कुकुर हो गइल बा।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भैरवी क साज

ईश्वर चन्द्र सिन्हा

'बारे बलम फुलगेनवाँ न मारो लगत करेजवा में चोट'

सिंहवाहिनी देवी के सालाना सिंगार के समय माई के दरबार में जब चम्पा बाई अलाप लेके भैरवी सुरू कइलिन, त उहाँ बइठल लोगन क हाथ अनजाने में करेजा पै पहुँच गयल। रात भर गाना सुनत-सुनत जे झपकी लेवे सुरू कय देहले रहल, ऊहो अचकचाय के उठ बइठल जइसे केहू ओनके उप्पर लोटा क पानी उड़य देहले होय।

चम्पा बाई के गला जइसन सुरीला रहल वइसहीं ओनकर रूपो अइसन रहल कि देखवइयन के झाँई आवे लगे। औ भैरवी के ओन्हे जइसे सिद्धि मिलल रहल; बनारस में ओह समय ओनके जोड़ के भैरवी गावे वाला केहू दूसर नाहीं रहल।

चम्पा बाई क टीप ओह भोरहरी के बेरा गंगा के चीर के ओह पार रेंती तक पहुँचत रहल। जइसहीं चम्पा बाई दोहराय के गउलिन—'लगत करेजवा में चोट' सउँसे दरबार झूम उठल।

'वाह मालिक, तनी बताय के'—मन्दिर के ओर के सीढ़ी से ई आवाज लगते, दरबार के एक कोने में जइसे हलचल मच गयल। चम्पा बाई चक पकाय के ओहर तकली, त देखें कि बचऊ महराज क छ फुटी काया सीढ़ी पार कइके सामने आइ गइल हो। चम्पा के गइबै जइसे भुलाय गयल।

बचऊ महराज आवाज देहलन—'सुरू होये दा चम्पा, रुक काहें गइलू। का सच्चौं के पीर उठ गयल ?'

बचऊ महराज के एतना कहतै दरबार के जउने कोने में हलचल मचल रहल, ओहर से आठ दस जवान लाठी लेहले तनतनाय के खड़ा हो गइलन। ई पट्ठा बल्ली बाबू के रहलन, जेकरे नाम के दबदबा ओह समय बनारस पै रहल। हर समय दस बीस पट्ठा दुआरे पै पड़ल भाँग-बूटी छानल करें औ जरूरत पड़ले पै सौ दू सौ के एकट्ठा करे में देर न लगे।

बल्ली बाबू के पट्ठन के लाठी खड़कतै, लोगन के देही के जइसे खून सुखा गयल। बाकी बचऊ महराज पै एकर तनिको असर नाहीं देखायल। ऊ अगिला पट्ठा के ओर ताक के कहलन—'का रे सुमेरवा ! जाय के बल्ली से कह दीहे कि हमसे मिल लीहें।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुमेर टकटकी लगाय के देखत रह गयल। बचऊ महराज कंधे से खसकल दुपट्टा उप्पर चढ़ावत घाट के ओर वढ़ गइलन। दरबार खतम हो गयल। कुछ लोग घरे गइलन औ कुछ लोग नहाये वदें गंगा किनारे। चम्पा बाई बल्ली बाबू के पट्ठन के घेरा में दालमंडी के रस्ता धइलिन।

बात ओह समय के हौ, जब तुरुकुन के अमलदारी के धूर चटाय के फिरंगिन के कोतवाली चौक के करेजा पर खड़ो होय के भद्दोमल के हवेली से आँख लड़ावे सुरु कइले रहल। बल्ली बाबू के घर एही हवेली के पिछवैं लख्खी चौतरा से सटले रहल। कहल जाला कि एकर नाम लख्खो चौतरा एह वदे पड़ल कि हाथ भरके चौतरा बदे जब दुइ बनारसिन में ठन गयल त दूनो ओर के कुल मिलाय के एक लाख रुपयाँ लड़े मे खरच हो गयल। बल्ली बाबू बनारस के सराफा बाजार क राजा कहल जाँय। का मजाल कि एवको गुल्ली सोना चाहे एवको सील चाँदी बिना ओनके मरजी के बिकाय जाय। उमिर त अवही पचीसिये में रहल, बाकी सराफा के वूढ़-वूढ़ दलाल ओनके गुरू कहैं औ मानैं। जब वल्ली बाबू सराफा में पहुँचै त बड़े-बड़े सेठ हाथे में पान के दोना लेके खड़ा हो जाँय। बल्ली वाबू खाली दलालै ना रहें। बल्ली बाबू के रहत सराफा के ओर केहू आँख नाहीं उठाय सकत रहल। सराफा के नइकी कोतवाली पै ओतना भरोसा ना रहल, जेतना बल्ली बाबू पै।

वचऊ महराज पैंतीस के पास पहुँचल रहलन। बाल-बच्चा वाले रहलन। शरीर औ रियाज खानदानी रहल। बाप दादा के बखत से जजमानी होत आइल रहल। जजमानियो एकठे रियासतै होले, जेकरे रच्छा वदे मालिक के गुंडा बने के औ चेलन के एकठे फउजो पाले के पड़ेला। बचऊ महराज ई दूनो में बनारस उप्पर मानल जात रहलन। ओनकर हवेली वालूजी के फरस पै रहल। ऊ हवेली का रहल एकठे किला रहल। सदरी दुआर एवकै, बाकी ओम्मे अँगना इग्यारह ठे। बचऊ महराज लँगोट के पक्का रहलन, बाकी ओह समय के रईसन मतिन गाना सुनै के सउख ओन्हऊ के रहल। साल भर पहिले जब बनारस के रईसन के महफिल में चम्पा बाई के धूम मचल रहल, बचऊ महराज कब्बौं-कब्बौं चम्पा बाई क कोठा पै जाय के गाना सुन आवें। बाकी साल भर से चम्पा बाई मुजरा त बन्द करी देहलिन, महफिल में जाब छोड़ि देहलिन, चाहे केहू ओनके एक लाख देवे बदे काहें न तइयार होय।

साल भर पहिले चम्पा बाई के भेंट जब बल्ली बाबू से भइल, त चम्पा अपने मतारी के कुल सिखावल-पढ़ावल भुलाय के बल्ली बाबू पर लट्टू हो गइलिन। बल्ली बाबू उहाँ जाये त सुरू कइलन गाना के आनन्द लेवे, बाकी धीरे-धीरे ऊ दूसरे आनन्द में पड़ गइलन। ऊहो समय आय गयल, जब मोजरा के समय रईस लोग दालमंडी पहुँचै त चम्पा बाई के खिरकी बन्द पावें। ई बात दालमंडी के घरे-घरे फइल गयल कि अपने रईस के कहले से चम्पा कोठा बन्द कय देहलिन। दालमंडी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में बल्ली बाबू चम्पा के रईस कहल जाये लगलन औ चम्पा के रोब-दाब ओह गली में सबके छाप लेहलस। नया-नया आयल कोनवाल फरजंद भली के भी तरस के रह जाये के पड़ल। चम्पा के गाना सुने के लालसा ओनके मने में झुराय गयल।

चम्पा नाचब-गायब कुल छोड़ त देहलिन बाकी जब सिंहवाहिनी देवी के सिंगार के समय नगिचायल त ओनके अपने माई के कहल इयाद पड़ गयल। ओनकर माई हर साल सिंहवाहिनी देवी के सिंगार के दरबार में गावे बदे जरूर जांय। ऊ बतउले रहलिन कि चम्पा के नानियो उहाँ जाये में कउनो साल नागा नाहीं कइले रहलिन। ओनके ई बिसवास रहे कि देवी जी के किरपा से ओनकर वंस फूदत-फलत आवत हौ। चम्पौ जब से नाचब-गाइब सुरू कइलिन, देवी जी के दरबार में जाय अपने हुनर से माई के रिझावे से ना चूकें। ऊ बल्ली बाबू के राजी कइ लेहलिन कि भोर के बखत मन्दिर में जाय के एक ठे भैरवी सुनाय अइहे। ओनके संगे बल्ली बाबू के दस बारह पट्ठा उहाँ गइलन। संयोग क बात कि ओही समय गंगा नहाये जात के जब बचऊ महराज मन्दिर के पास पहुँचलन त चम्पा के टीप सुनके माई के दरबार में पहुँच गइलन औ अन्यासे ओनके मुँह से ऊ बात निकल गयल, जौन दरबारै के खड़बड़ाय देहलेस।

बल्ली बाबू अपने पट्ठन से जब ई कुल सुनलन त मारे गुस्सा के ओनकर चेहरा लाल हो गयल। ऊ टप से लाठी उठौलन औ दलान के बाहर होय गइलन। गल्ली में पहुँचते ओनके मन में न जाने का आयल कि मुड़ के लाठी फेंक के खाली हाथ बचऊ महराज के घरे पहुँच गइलन।

बल्ली बाबू के देखतै बचऊ महराज उठ के आदर से ओनके बइठावे चहलन, लेकिन बल्ली बाबू खड़े-खड़े कहलन—'सुमेरवा कहलेस ह कि महराज बोलउले हउवन। सुमेरवा कउनो गुस्ताखी कइलेस का ?'

'नाहीं हो। चम्पा के भैरवी साल भर पै सुनै के मिलल, तवन ऊ ससुरा लाठी खड़कावे लागल। चम्पौ त अइसन लजाइल जइसे तोहार बिअहुता होय।'

'बिअहुता' सुन के बल्ली बाबू तिलमिलाय उठलन। तब्बौ अपने के संभार के कहलन 'कल भोर में मनकनिका घाट पर चम्पा के भैरवी सुने के तोहके नेवता हौ महराज।'

बल्ली बाबू के चुनौती समझत बचऊ महराज ले देरी ना लगल। ऊ झगड़ा बढ़ावे नाहीं चाहत रहलन। ऊ त लाठी खड़कले पै सुमेरवा के ई चेत दियावे बदे कि हम तोहरे मतिन पट्ठा नाहीं, बल्कि गुरू हईं, बल्ली बाबू के भेज देवे वाली बात ओनके मुँह से निकल गइल रहल बाकी बल्ली बाबू के बात से ऊ समझ गइलन कि बात उहाँ तक बढ़ गइल हौ, जौने से पीछे नाहीं हटल जा सकत। बल्लिओ बाबू बिना जवाब के इंतजार कइले उलट के बाहर चल गइलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई खबर बिजली मतिन सहर भर में फइल गइल। सबकै जबान पै एकै बात रहल कि कल का होवे वाला हौ। दूनो ओर के पट्ठा लाठी चिकनावे सुरू कय देहलन। दूनो कोठियन में हलचल मच गयल। रात दुइये बजे से मनिकनिका पै लोग जुटे लगलन। भोर होत होत बचऊ महराज औ बल्ली बाबू अपने-अपने पट्ठन के साथ पहुँच गइलन। ओहारदार पालकी में चम्पा बाई भी उहाँ ले आवल गइलिन। चम्पा जबसे ई खबर सुनले रहलिन तबै से दाना पानी छोड़ के रोवत रहलिन। रोवत रोवत ओनकर आँख फूल गइल रहल। बार बार ओनके मन में आवल कि रोय धोय के बल्ली बाबू के रोकीं, बाकी ई सोच के कि फिर बल्ली बाबू बनारस में कवन मुँह देखइहें, मुँह न खुलि पावें। चम्पा पत्थर के करेजा कय के ई तय कय लेहलिन कि चाहे जवन कुछ हो जाय, बल्ली बाबू के सान में बट्टा चम्पा के मोहब्बत औ चम्पा के अपने स्वारथ बदे न लगे पायी।

बचऊ महराज सामने के मढ़ी पै बइठल रहलन। बल्ली बाबू उहाँ जाय के पुछलन—'का महराज भैरवी सुने के तइयार हउवा।'

'हाँ हो! हम त सुरू होवे बदे अगोरत हईं।' बचऊ महराज मुस्कियाय के कहलन।

'साज पै का बजे के चाहीं।' बल्ली बाबू तनी तिरछा होके कहलन।

'चम्पा तोहार हई औ साजो तोहरे मन के रहे के चाही।' बचऊ महराज तनी ठनक के कहलन।

बल्ली बाबू लउट गइलन। चम्पा के पालकी से उतार के सामने के मढ़ी में बइठा देहलन। हाथ में तलवार ले के माथे पै लगवलन आ आगे बढ़के बचऊ महराज से कहलन—'आवा महराज! पहले साज मिलाय लेवल जाय।'

बचऊ महराज अपने चेला से तलवार लेके माथे लगउलन औ जय जगदम्बे कहके सामने आ गइलन। जइसे जइसे तलवार खनकै, वार अउर ओकर काट होय वइसे वइसे देखवाइन के साँस टँगाये लगल। एक घड़ी बीत गइल, लेकिन दूनो लड़वइन के तेजी में कउनो कमी ना आयल। चम्पा दाँतें से जीभ दबउले करेजा थाम के बइठल साज मिले के घड़ी टकटकी लगाय के अगोरत रहली। बाकी साज त भैरवी से मेल खातै नाहीं रहल। झलफलाह होवे लगल। नहवइया घाट पै आवे लगलन। बल्ली बाबू के निगाह तनी अँजोर में जब चम्पा के झुरायल मुँह पै पड़ल, त ओनके देह में जइसे बिजली दउड़ गइल। अब त ओनकर वार एतना तेज हो गयल कि बचऊ महराज के बचावै करे के फुरसत न मिलै। देखवइन के अइसन बुझाइल कि अब मैदान बल्ली बाबू के हाथ में हौ। तब ले त चारो ओर हल्ला मच गइल। चम्पा के भाग फूटल। बल्ली बाबू के वार रोके बदे जइसहीं बचऊ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महराज तलवार चलउलन, बल्ली बाबू के गोड़ गोबर पै पड़के अइसन बिछलायल कि झटका से चलावल गइल बचऊ महराज के तलवार पर, ओनकर गर्दन अपने-आपै लटक गयल।

बचऊ महराज झपसे तलवार फेंक के बल्ली बाबू के दूनो हाथ में उठाय लेहलन। ओनके उठउले तुरते अपने घर पहुँचलन। चेला भेज के डाक्टर बोलउलन। तबले त कुल खतम हो चुकल रहल। चम्पा के जइसे काठ मार गयल। ऊ न त रोवलिन न कुछ बोललिन। बल्ली बाबू के पट्ठा रोय-रोय के चम्पा से घरे चले के समुझवलन, बाकी ऊ त जइसे पत्थर हो गइल रहलिन। न कुछ बोलें न कुछ सुनें। दुइ घंटा बाद मनिकनिका पर चिता सजावल गयल। बचऊ महराज रोवत-रोवत लास के चिता पे सुतवलन। ओनकर रोवाई देख के पत्थर के करेजा पिघल जाय। अइसन बुझाय जइसे सगै छोट भाई के चिता में आग लगावे के होय।

चिता में आग लग गइल। चिता जल गइल। बाकी चम्पा अपने जगह से हिलली नाहीं। जब लोग चिता बहाय के चले लगलन त अइसन बुझायल जइसे झटके से चम्पा के नींद खुल गइल हो। बल्ली बाबू के पट्ठा ओहीं रहलन। चम्पा चकपकाय के कह उठलीं—'हमें भैरवी गावे के रहल न। जगउला काहे नाहीं। देरी न हो गयल होई। बल्ली बाबू नराज न होइहें ?'

चम्पा के देख के सुमेर के आँख से पानी झरै लगल। चम्पा उठलीं। धीरे-धीरे उहाँ गइलिन; जहाँ बल्ली बाबू के चिता जलावल गइल रहल। पलथी मार के बइठ गइलिन। कुछ गुनगुनइलिन। फिर अलाप लेहलिन। ओकरे बाद ओनके कंठ से फूट निकलल भैरवी—

सैयाँ बेदरदी दरदिया न बूझे, रहत नजरिया के ओट।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सवालन के घेरा

विक्रमा प्रसाद

नगर के बाहर—डगर-डगर से झुण्ड के झुण्ड लोग पयदल बढ़ल आवत रहे। कुछ लोग कार भा जीपो से चहुँपे लागल रहे। जेने नजर जाय ठट के ठट लइके सियान लउकत रहे। बाकिर, ई ना कवनो मेला रहे, ना तिरिथ ना धाम बलुक एगो 'एक्जाम सेन्टर' (परीक्षा-केन्द्र) रहे, जहाँ इम्तहान के घंटा भर अगाड़िए लोग जुमे के सुरू क देले रहे।

बिमला बाबू इहाँ आवे के ना चाहत रहस। बाकिर उनका 'घरे' जब बेर-बेर हुरियावे लगली त उहो अनमनाहे चल दिहले। अइसे उ एह बात के हामी रहस कि लइका के अपना जोगता से पास करे के चाहीं। तबे लइका जिनगी में कवनो लाएक बन सकता। मुख-मंत्री के अपील अखबार में पढ़के त उनका अपना विचार के बहुते बल मिलल रहे। उ सोच लेलें रहस कि जाले इम्तहान चली अपना लइका के मदद त दूर ओकरा देखहूँ ना जइहें।

आ साँचो बिमला बाबू अपने ना जाके ओकर डेरा-डण्डा दोसरे से ठीक करा देले आ सर-सामान का साथे अपना आदमी जवरे पठाइयो देले। बाकिर उनका 'घरे' जब जनली जे मलिकार लइका के इम्तहान देखे ना जइहें त उनका बड़ा अनस बरल—'ई का जे जगतर के गार्जियन अपन-अपन लइका के इम्तहान दियावे जाई आ इहाँ का घरे में फूल के बइठल रहब ? एह मरद के इचिको दरद नइखे अपना लइका खातिर—'' आ घर में एतना झनक-पटक सुरू कइली कि बिमला बाबू के आपन गुनल कवनों कामे ना आइल। झींख-कान के इम्तहान दियावे जाहीं परल।

भर रस्ता, बस के धक्कम-धुक्की का बीचे टंगाइल बिमला बाबू के मन भरियाइल रहल। ई सोच के अउर कि मुख-मंत्री के अपील पढ़ के अबकी दाँव बहुत कम गार्जियन अपना लइका के इम्तहान देखे (मदद करे) चहुँपिहें। बाकिर स्कूल से माइल भर अगाड़िए आँखि के पट्टर खुल गइल। इहाँ त स्कूल कावर जइसे गार्जियन के गंगा बहत रहे। अतमा में तनिका धक्का जइसन लागल बाकिर, मन पर पछतावा के बोझो हलुकाइल जान पड़ल।

केतना अन्तर होला अतमा अउर मन में ? बुरा काम के बोझ बरमहल के दुःख बन के जइसे अतमा के सालत रहेला। बाकिर, मन ? मन त कवनो ना कवनो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहाने अइसन बोझ से तुरत-फुरत छुटकारा पावे के कोसिस करेला। अउर कुछो ना त फेरू अइसन करम ना करे के—किरिया खा के गँवे-गँवे निफिकिर हो जाला।

बिमला बाबू इहाँ आवते मातर अपना लइका से भेंट कइलें। इम्तहान में जोड़-जुगुत करेला ललनजी के लेले आइल रहस। उनहूँ के अपना लइका से भेंट करा देले। बिमला बाबू के हित लोग ललनजी के नाँव असहीं ना सुझवले रहे। इम्तहान सुरू होते 'पेपर' उपरावे आ 'चिट' लिखवा के लइका भिरी पहुँचावे में ललनजी सेसर रहले। चाहे कतनो पहरा पड़त होखे कवनो ना कवनो बेंवत से 'चिट' चहुँपाइए के छोड़स। ई सब काम में ललनजी केकरो अपना बावें छोड़ दहिने ना बहे देत रहले। से एह काम के जिमा ललनजी के लगा के बिमला बाबू एकतरे से निफिकिर रहस। उ खाली तमसबीन बन के तमासा देखिहें; करिहें ना कुछो। एह से झूँठ भा साँच मन में तनिका सन्तोखो बुझात रहे। ई मन केतना चाल्हाँक होला ? कइसे-कइसे भरमा के आदमी के गलत-सलत काम में फाता पर चढ़ा देला ?

ललनजी का जवरे स्कूल के एगो चक्कर काट के बिमला बाबू स्कूल के पिछुआरा उत्तरवारी मैदान के किनारे वाला पीपर के नीचू आके ठाड़ भइलें। बाहर चरखी बिदोर घाम में चानी करकराए लागल रहे। गरम सूट त सहाते ना रहे। पाकिट से रूमाल निकाल के बिमला बाबू मुँह के पसेना पोछ लेहलें। कवनो आदमी केम्हरो से एगो दरी ले आइल आ बिमला बाबू के बगले में बिछा देलस। दरी बिछते कुछ लोग अपन-अपन जगहा दनफन दखलिया लेलस। ओ लोग में तीन-चार जना मास्टरो बुझात रहन। एह बात के पुहुटी तुरतले भ गइल।

"मास्टर साहेब, कोश्चन कइसे आउट होई ?"

एगो गार्जियन अपना जवरे आइल आदमी से पूछलें।

"सब हो जाई रउरा फिकिर जन करीं।"—पहिले से कार्बन-कागज सरिआवत मास्टर के जबाब सुनाई देलस—"रउरा चुपचाप बइठ के ई सब किताब देखत रहीं। अइसन जगहा से किताब-कलम ढेर गाएब होला।"

बिमला बाबू एक नजर सामने स्कूल के छरदेवाली कावर तकलें। बहुते इस्कोलिया छरदेवाली पर कहीं बइठल कहीं घूमत लउकलें। पक्का छरदेवाली में ठाँवे-ठाँव काट के खोंढ़ी बना लेइल गइल रहे। ई काम बिमला बाबू के बड़ा करेजगर बुझाइल। उ ललनजी से पूछ लेहलें—"ई सब के कइले होई ललन जी ?"

"दोसर के करी ?···उत्साही गार्जियन लोग के कमी थोड़े बा ?···रातिए ई सब काम भ गइल। ईहे ले ना, हर किलास के जंगला से पाला कबाड़ लियाइल बा ताकि, लइका अउर गार्जियन का बीच सीधा सम्बन्ध बनल रहे।"

"आ स्कूल का तरफ से कवनो रोक-टोक····?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"के रोक-टोक करी ?"—ललनजी बीचे में बात लोक के कहलें।—"रोके वाला मास्टर लोग ठहरल। इहाँ ओही लोग के पटिया लियाइल होई।...नाहियों पटियावल गइल होई त कवन मास्टर के मजाल बा जे इस्कोलिया लइकन का वर खिलाफ कवनो काम करे? ओहू में तब, जबकि, खुद गार्जियने लइकन के अइसन काम में मदद करता ?"

बिमला बाबू अइसन पकिया गार्जियनपना पर अछोपित खा के रह गइले। इम्तहान सुरू होखे का पहिले लड़ाई का मोर्चाबन्दी जइसन सब तइयारी क लेहल गइल रहे। बिमला बाबू के निगाह छरदेवाली से सरकल त मैदान में चहलकदमी करत पुलिस के दरोगा अउर दूगो सिपाहियन पर गइल। पुलिस के देखते मातर उनकर तरवा चटकल।

"का हो ललनजी ? इहाँ पुलिस का तयनात होखी ?"

विमल बाबू घबड़ाइले पूछलें।

"निफिकिर रहीं ! पुलिस-उलिस ना तयनात होखी।....हम पाता लगा चुकल बानी।"

"ई सामने जे पुलिस लउकता ?"

"इन्स्पेक्टरो साहेब के लइका इम्तहान देता। ओकरे मदद में ई सभे आइल बा।"

"मदद करे ?....मदद में दरोगा जी के आइल त समुझ में आवता....बाकिर, ई दूनो सिपाही ?"

"एक पन्थ दूई काज....।"

"का माने ?

बिमला बाबू फेर चिहइलें।

"माने ई कि इम्तहान के डिउटी अउर मदद के काम दूनो एके साथे पूरा होई।"

ललनजी बात साफ कइलें त बिमला बाबू कले-कले कान खजुआवे लगलें जइसे ओपर चिउटी सोहरत होखे।

टन् !

—स्कूल के घंटी बाजल आ स्कूल का बहरी एगो लहर जइसन दउड़ गइल। सभे टकटकी लगा के छरदेवाली कावर ताके लागल जहवाँ इस्कोलिया लइका बड़ी बेसबुरी से उझिकि-उझिकि इम्तहान-घर कावर तिकवत रहस कि, कब 'पेपर' बंटाय कि उ ले उड़सन। आ 'पेपर' साइत बंटाए के सुरू भइयो गइल काहें कि, छरदेवाली पर बइठल इस्कोलिया टपाटप भीतर कावर कूदे लगलेंस। कुछ गार्जियनो छरदेवाली टप गइलें। ललनजी त अगवाहिए अन्दर उतर चुकल रहन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोसकिल से घंटी बजला दस मिनिट बीते पावल होई कि जेने-तेने से—'पेपर आउट हो गइल' के दबल सोर सुनाई देवे लागल। चारो ओर भागाभागी सुरू भ गइल। तनी सा में, देखते-देखत गोल के गोल बन्हाए लागल, जहवाँ हाथा-हाथी 'कोश्चन' उतारे के लोग दनादन सुरू क देहल। फेरू, कार्बन के सहारे 'चिट' तइयार होवे आ जेने-तेने भेजाहू लागल।

गजब सहयोग के भावना देखे के भेंटल बिमला बाबू का। केकर तइयार कइल 'चिट' के ले के चल देता··केकर किताब के पन्ना फाड़ के के ले जाता ई केहू ना पूछत रहे। जइसे आपन-पराया के भेद-भाव एकदमे खतम भ गइल रहे। सभे गार्जियन मिल के जानू एक हो गइल होखस आ एकजुट होके सब इम्तहनिया लइकन के समिलाते पास करावे के कोसिस में लागल होखत। साँचो ई अजगूत मरदाही के बात बुझाइल। बिमला बाबू ठाढ़े ठगाइल सब कुछ देखते रह गइले। उनका जोर से एहसास होखे लागल रहे कि उनका में अइसन गार्जियनपना के···अइसन मरदाही के बेलकुल अभाव बा। भीतर एगो हीनता के भाव सुगबुगाए लागल रहे। उनका अपना अन्दर के गार्जियन उनके पर हँसत बुझाइल। उ उजबुजा के जोर से मूंड़ी झटलें आ फुर्ती से दूनो हाथ चेहरा पर फेर के एगो लमहर जम्हाई लेवे लगले।

'जाए द, अइसन घोड़दउवल में पछुआइले निमन।'—दबल कुचराइल अतमा फुसफुसाइल—'का फायदा एहतरे लइका के पास करवला के? अइसे त ओकरा भीतर कबो आतम बिसवास ना जागी····उलटे कवनो काम नाजाएज तरीका से करे के ओकरा लत लाग जाई। तब कवनो नाजाएज काम करे में ओकरा तनिको अहस ना लागी।''

"धुत् ! का तिल के ताड़ बनवले बाड़ ?"—बिमला बाबू के मन उनका के झिड़की देलस—"अइसन बरमहल थोड़े करे के पड़ी जे लइका के बिगड़े के मोका होखे ?···आरे, एह इम्तहान के बाद लइका के पढ़ाई अउर रहन-सहन पर तनिका धेयान दे देला के त काम बा।···लइका तब भर हिक मेहनत करी आ सब जगे से फुन-फुन निकसत चल जाई।··अइसन जो ना रहित, त ई सब गार्जियन मूरख नइखन नू जे अपने हाथे अपना लइकन के जिनगी खराब करत होखस ?"

आ बिमला बाबू अपने भीतर अझुराए लगलें। ओने ललनजी के 'दउड़-बढ़ा' अबहीं चलते रहे। लइका सेयान केकरो फुर्सत ना रहे।

पीपर के पतइयन के फाँक से सूरूज भगवान के खीसी जरत चेहरा लउके लागल रहे। उ जइसे चोरी में लागल गार्जियन लोग पर आँखि गुड़ेर के ताकत होखस। बाकिर, सभे अपना धन्धा में अइसन भोराइल रहे कि एह बात के एहसास तक केकरो ना रह गइल रहे। साइत बिमले बाबू अकेले आदमी रहन जेकर एह माहौल में मन उजबुजाए के सुरू क देले रहे। उ तिले-तिले कलाई घड़ी कावर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिकवत रहलें। लगभिग, दोसरका घंटा बीते पर आइल रहे एसे 'चिट' के तइयारी में एक बेर फेर तेज़ी आ गइल रहे।

लइका इम्तहान में कइसन क रहल बा ई जाने के उत्सुकता भइल त ललन जी के रोक के पूछे लगलें बिमला बाबू—

"का हो ललन जी! का हाल बा सुरेश के ?"

"बहुत फाइन! समुझ लीं जे इनकर फर्स्ट डिविजन धइल बा।"

"आरे हुँऽ····अबकी फर्स्ट-डिविजन त बउको बताह के आई।"

तनी मेहराइल बोली में बिमला बाबू कहले।

ललनजी एह बात के मूँड़ी हिला के सकरलें—"हँ, अपने त ठीके कहत बानी बाकिर; ई बहुत कुछ गार्जियनो पर निर्भर करता। सवाल के सही जवाब किताब से उतरवा के लइका भिरी भेजे में केकर गार्जियन केतना चटकवाही करता एही पर कुल्ह दारमदार बा।····बुझीं जे इम्तहान लइका के ना ओकरा गार्जियन के होता।"

"एमें का सक बा ?"

"जी, एही बात के लेके एगो निमन तमसो देखे के मिल गइल ह।"

"कइसन तमासा ?"—तनिका चिहा के बिमला बाबू पूछले त ललनजी हँस के बतावे लगले।

—"सुरेशे के हॉल में एगो अइसन मुँहजोर लइका इम्तहान देता जवना के गार्जियन पढ़ल-लिखल त बाड़े सही के बाकिर, सुभाव से थोड़का सोझबक बुझातारें। उहे लइकवा एक बएग अपना गार्जियन के बड़ी जोर से डपट के कहे लगुए—'हम तहरा के राते कहनी जे 'डायमण्ड' ठीक से पढ़ ल ताकि बिहने फुर्ती-फुर्ती 'एन्सर' निकालल बनी। बाकिर, तूं हमार बात थोड़े मनब ?····साँझे तान के सुत रहल। अब दस घंटा में एगो उत्तर खोजब त हम लिखब का कपार ?"

सुन के बिमला बाबू ठंठा के हँसे लगलें। बाकिर हँसी तुरतले बेजान होके बन्द हो गइल। अतमा जइसे पूछ बइठल—'का, ई हँसे के बात बा ?' आ बिमला बाबू के दिमाग साँय-साँय करे लागल। बुझाइल जानु एके साथे कय गो सवाल बिजुरी जुगुत लवके लागल होखे! —'हमनी कइसन करनधार देश खातिर तइयार क रहल बानी ? ई नवहियन के का हो गइल बा ?· ·आचार-विचार देश समाज से काहे गायब भइल जाता ?····अगर ईहे दशा रहल त देश के का होई ?'—आ बिमला बाबू का बुझाइल जइसे दिमाग में उभरल ढेर मानी सवालरु के चिन्ह सुरसा जइसन बढ़ते-बढ़त सँउसे आसमान छेंक लेले होखे। उ घबड़ा के अबहीं दूनो हाथे आँखि मींसहीं चाहत रहले कि सड़क कावर से जोर से हल्ला उठल—

"भा···ग····स···रेऽ····ऽ····। 'स्ववाड' वाला आ···व· ·ताऽ····ऽ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ लोग जेने-तेने पराए लागल। बाकिर भाग-परा, के केहू दूर ना गइल, सिरिफ छरदेवाली छोड़ के थोडके दूर पर थथम के तमासा देखे लागल।

एगो करिया कार तेजी से आके स्कूल का फाटक पर रूकल आ जोर-जोर से हॉर्न बजावे लागल। स्कूल के चपरासी धउड़ के फाटक खोललस त कार से चार-पाँच गो अफसर जइसन आदमी खमाखम उतर के स्कूल में घुस गइलें। हेडमास्टर साहेब झटकले आगे आके ओ लोग के अगवानी करत अपना आफिस में ले गइलन। बहरी देखवइया लोग आपुस में कनफुसकी करे लागल—

"हेडमास्टर साहेब बहुत चाल्हाँक बाड़ें। साहेब लोग के ले गइले अपना आफिस में फुसला के। अब ओही जे नास्ता-पानी करइहें आ आफिसे से उ लोग के टरका दीहें।"

"तब्रो आधा घंटा का पहिले थोड़े जइहें स ?"

"ताले त केतना नोकसान हो जाई लइकन के ?"

"टाइमो बहुत कमे बाँचल बा।"

"एकनी के कसहुं खेदे के चाहता।"

ज किसिम के लोग त किसिम के बतकही। सुन-सुन के बिमला बाबू के ब्रह्मण्ड फाटे लागल रहे।••अपना सवारथ में आन्हर आदमी केतना उतावला भइल रहेला ? सबर त इचिको ना रह जाला भीतर।

जतने समय सरकत जात रहे बहरी लोग ओतने कसमसाए लागल रहे। कुछ लोग दबल जबान गरियाहुँ के सुरू क देले रहे 'स्क्वाड' के। हेडमास्टर साहेब अफसर लोग के साइत नास्ता-पानी करा के जल्दिए छुट्टी क देलन। काहे कि, उ लोग पनरे मिनिट का बादे आफिस से निकल के सीधे कार में बइठ गइल। सभे दम सधले आ टकटकी लगवले ओम्हरे तिकवत रहे। जब कार लवट के चलल त बहरी जेने-तेने छितराइल-लुकाइल लइका भरभरा के मैदान में आ गइलेंसन अउर रबुर के कबूतर ओकनी का हाथ से जइसे फुर्र से उड़ गइल। ओकनी के थपड़ी पार के जोर-जोर से चिचियाए लगलेंस।—

"गइल रे s s ! गइल रे••s····s···s ? लिख सं फेर से s s।"

आ बे रवाँ-दवाँ के लइका फेरू छरदेवाली पर चढ़-उतरे लगलें स। कुछ गार्जियन लइकन के अइसन ढीठाई देख के दाँत पीसले—

"रे, च····उ····पट स !••हल्ला काहे करतार सं ?····'स्क्वाड' के चल जाए द सं !···ना त सब गुड़ गोबर हो जाई !"

बाकिर बेकार। के बात मानेला ? 'स्क्वाड' चल गइल सही क बाकिर, लइकन के हुरहो देख के गार्जियन लोग का मन में खुटका समा गइल—'पेपर कहीं 'केन्सिल' मत क द सन ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोग के अनेसा साँच हो के रहल। इम्तहान बीतला चारे-पाँच रोज भइ कि 'पेपर' केन्सिल भइला के खबर अखबार में छप के आ गइल। जवना-जवना 'सेन्टर' पर जवना-जवना 'पेपर' में खुल के चोरी होत पावल गइल रहे, उहाँ के ओ पेपरन के 'केन्सिल' क दिहल गइल रहे।

लइका लोग के हृदस समा गइल कि अब जे फेर से इम्तहान होई त ओ कस के कड़ाई होई। 'चिट' ना चहुँपे पाई। गार्जियन लोग कपारे हाथ धके सो लागल कि फेर से इम्तहानी-फीस अउर खरचा काहाँ से जुटी ?'

काल्हे तक बिमलो बाबू सोचत रहले—'चल इम्तहान चाहे जवने वि भइल, लइका पास क जाई....आ पास क जाई त माथ के कम से कम एगो बोझ हलुक होई ; हँ, आगे कुछ चेत के जरूर चले के पड़ी। कुछ अइसन करे के पड़ी लइकन के इम्तहान में फेर केकरो मदद के जरूरत ना पड़े। बाकिर... बाकिर एक खातिर कइल का जाई ?'

आ बिमला बाबू के सोचावट के पहिया अंटकत बुझाइल रहे। काहें लइका के कॉपी-किताब कीने में कबो कोताही ना कइले, निमन मास्टर से टिउसन पढ़वलें, घरो पर पढ़े खातिर लइका के दांव-दांव करत रहलें, तबो इम्तहान मे कुक करे के पड़ल। आखिर काहे ?'

एह सवाल के जबाब उ जोहते रहलें कि पेपर 'केन्सिल' होखे के खबर गइल। एगो धक्का जइसन लागल।...ई का हो गइल ?....कइसे भइल ई सब ? ओह !...दउड़-धूप खरच-बरच सब बेकार हो गइल।

बिमला बाबू गँवे से सुरेश के कोठरी में झाँकि अइलें। साइत सुरेश के ए खबर लाग चुकल रहे। उ चउकी पर मुँहकुरिए परल सुसुकी लेत रहे। उनक 'घरे' ओकर पीठ सुहुरा के समुझावत-बुझावत रहली। बिमला बाबू चुपेचाप लवट छत पर आ गइलें। उनकर मन भरिया गइल रहे... आ दिमाग काम ना करत रहे उ एगो लमहर साँस लेके आराम कुर्सी में धीरे से पलर गइलें।

पच्छिम में लुकलुकात संझउकी किरिन के लाल लहंगा आसमान में दूर ले लहरा के बगुलन के कतार समेटले आवत रहे। नीचे पानी के टंकी पर हार हार कबूतर उतर के बइठल रहसन जवन छत से देखला पर जतन से गूँथल मा जुगुत बुझात रह लेंस। दूर-दूर ले फइलल ऊँच-नीच अटारियन के छत पर कुछ कुछो करत भा नजारा मारत रंग-बिरंग के लेबास में खानी-बिखानी के मर मेहरारू अपनहीं नजारा बन गइल रहें लोग। प्रकृति के नगरूआ रूपो क कटाह ना होखे। कुछ देर ले उहो मन के भोरा लेला। बिमल बाबू जाने कब भोराइल रहते कि उनकर लइका सुरेश आके खबर कइलस—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"नीचे सुकुल जी आइल बानी।"

बिमला बाबू सुरेश कावर तकले ओकर दूनों आँखि गुलर बनल रही स। एगो हूक जइसन उठल करेज में। बाकिर बिमला बाबू कुछ बोलले ना। चुपचाप छत से उतर के बइठाका में आ गइलें।

सुकुल जी कुर्सी में बइठल-बइठल साँप जुगुत अइंठत रहले। मुंह बहुत गोसियाइल लागत रहे। उ जानत रहले जे सुकुलो जी के लइका इम्तहान देले बा।

"अखबार देखनीं ह ?"

सुकुल जी के दू सबद के सवाल में मन के कुल्ह घृणा जइसे लपेटाइल बहरी आ गइल रहे। बिमला बाबू भीतरे अच्छोपित खा के रह गइलें। मन के बरखिलाफ काम आदमी का अन्दर कतहक उथल-पुथल क जाला ?····कि विवेक के दामन छूट जाला ····विचार के धार बदल जाला ? बिमला बाबू के आपन दुःख भुला गइल आ उनका भीतर फेर विवेक सुगबुगाए लागल।

"हूँ, सुकुलजी····परीक्षा-समिति के नोटिस हमहूँ पढ़ली हँ।"—शान्त स्वर में बिमला बाबू कहले—"पेपर कुछ केन्सिल भइल बा जवना के इम्तहान लइकन का फेरू देवे के पड़ी ?"

"हुँह····!· ·इम्तहान देवे के पड़ी।" —कह के सुकुल जी एक चोता थूक पच से जंगला का बाहर थूक देलें।—"ई सुराज ह कि नादिरशाही राज, कि जब मन में आइल नोटिस निकाल दियाइल कि पेपर केन्सिल ? हम पूछतानीं जे ई अनेयाव बा कि ना ?"

"कइसन अनेयाव सुकुल जी ? जवना 'पेपर' में—खुलके चोरी होत पावल गइल नियम का मोताबिक ओकरा के समिति 'केन्सिल' क देलस····।"

"नियम····।····नियम से कहाँ-कहाँ काम होता ? नियम से स्कूल-कालेज खुलता; कि नियम से पढ़ाई होता ? जवन लइका चोरी करत में पकड़ल जाय ओकरा बरखिलाफ कारवाई होखे त बातो बुझाय बाकिर, ई कइसन नियम कि चोरी करे तवनो आ ना करे तवनो दूनो के सजाय दिहल जाय ?"

बिमला बाबू के जल्दी जबाब ना जुरल। कुछ सोच के कहले—"से त सुकुल जी ! रउरा सोरहो आना सही कहतानी। बाकिर, हमरा समुझ में आवता कि दोस हमनियों के कम नइखे। अगर हमनी का नियम कायदा का मोताबिक चले के आदत डालीं त दोसरो का मजबूर होके नियम पर चले के पड़ी।"

"एह खातिर बिमला बाबू ! बेकती-बेकती के आपन आदत बदले के पड़ी आ एमे बहुत जादे समय के दरकार बा। तत्काल जे ईमानदार इस्कोलियन के गल्ला काटल जा रहल बा। ओकर का होई ? काहे अइसन लइकन के दोबारे इम्तहान देवे के कहल जा "जबकि कयगो गार्जियन अइसनों हीइहें जे लोटा-थारी बन्हिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धके अपना लइका के 'फारम भरवले होइहें ? अब उनकर लइका दोबारे इम्तहान केंगो दी ?"

"ई एगो चिन्ता अउर सोचे के बात बा।"

"खाली हमनिए के सोचे के बात बा ? ई आदेश निकाले का पहिले सोचे के चाहत रहे समिति का, सोचे के चाहत रहे सरकार का आ सोचे के चाहत रहे देश के नेता लोगन का। सोचे के ई बात रहे कि इस्कोलिया-कालेजिहा लइकन के, आपन उल्लू सीधा करे खातिर नेता लोग राजनीति में बरिसन झोंकत आइल। स्कूल-कालिज बेर-बेर बन्द होते रहल।....खुलबो कइल जब-तब त पढ़ाई का भइल? स्कूल-कॉलेज के भीतर-बाहर सब कुछ बिगाड़ के अब उमेद कइल जाता जे लइका ईमानदारी से इम्तहान द सन। ना द सन त गार्जियन के आर्थिक दण्ड दिहल जाय। हमरा त नेता लोग के नियते पर सक होखे लागल बा।"

सुकुलजी का मुँह से बोली के गोली लगातार निकलत जात रहे-आ मानसिकता के मोहाछ पर घवाहिल बिमला बाबू अपना के सम्हारे में लागल रहस। आँखि का सामने जोन्ही फूलइला जइसन ढेर सा सवाल उड़े लागल रहे।

"विद्यार्थी अउर ओकनी का गार्जियन का साथे का, साँचो अनेयाव होता आ कि सोचावट में कहीं गलती बा ? आज हर आदमी का सोचावट में एतना फरक काहे लउकता ?....कवनो समस्या के समाधान ईमानदारी से काहे नइखे खोजल जात ?....हर जगहा, हर धन्धा में राजनीति कइसे ढुकल ? अउर त अउर, शिक्षा में राजनीति के कवन काम ?...विद्यार्थी-समाज के राजनीति में घसेटे के आखिर मकसद का रहे ?....का, ई देश के हित में बा कि विद्यार्थी पढ़ल लिखल ताखा पर धके देश के अगुई खातिर आगे आवे ?....आजु के लइके सब देश के भावी करनधार बाड़ेस सही के, बाकिर, ओकनी के आजे करनधार बना के नेता सब देश के कइसन भलाई करे चाहता ? बाकी देश के पकल-पुरान नेतृत्व का नपुंसक हो गइल ? अपूरन शिक्षा वाला युवा वर्ग सम्पूरन किरातीं में काहाँ ले सफल होई ? का, एह वर्ग के अइसे में बहके के संभावना बढ़ नइखे जात ? का साध्य खातिर साधन के निमन-बाउर के विचार छोड़ देहल गइल।

—आ बिमला बाबू के रेजा-रेजा धुनाइल दिमाग जइसे सएकड़ टुकड़ा होके रूई का माला जुगुत उड़े लागल रहे। उनका बुझाइल जइस हर टुकड़ा गंवे-गंवे आग के गोला में फेरू, हर गोला लहकत, लपलपात सवाल में बदल के उनका के अपना घेरा में घेरे लागल होखे। फेरू ऊ घेरा अतहक हो गइल होखे कि ओमे गंवे-गंवे गाँव जवार लगाएत सँउस देश समा गइल होखे।

बिमला बाबू हड़बड़ा के तरहथी से दूनू आँखि मींसे लगले फेरू कुर्सी का पीठ पर ओठंग के लमहर-लमहर साँस खेवे लगलें। तनिका देर बाद मन अहथिराइल त देखलें-सुकुलजी कब ना कब दो बइठाका छोड़ के चल गइल रहस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पगला तिवारी

●

रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'

●

पगला तिवारी ! लगभग छव फुट के पातर, लाम जवान, ऊपर के ओठ प 'ब्रस' लेखा मोंछि, चमकत लीलार, आँखि से अँगार बरसत, बोली में गर्जन, माथ-मांग मूड़ी, पूरा गठल सरीर, बीसवीं सताब्दि में जनमल बाकिर सतयुग आ त्रेता के बात करेवाला एह पंडित राजधर तिवारी के उनका विभाग के सभ सहकर्मी 'पगला तिवारी' कहेला। एकदम हरफन मौला, फक्कड़, संसार से उबल जीव ! जहवां दू आदमी मिलल कि आपन आदर्सवादी भाखन बिना कहले सुरू करिहें। फिर उ बिना पूर्ण विराम भा अर्द्ध विराम के लगातार घंटन बोलत रहिहें। स्वचलित रेडियो हवे। बीच में उनका के कुछ कम भा सान्त ना कर पाई कोई। कभी-कभी त सुनेवाला चलि जाई फिर भी अकेले में उ पुत्र के पिता के प्रति कर्त्तव्य, पत्नी के पति के प्रति कर्त्तव्य, सेवक के मालिक के प्रति कर्त्तव्य आदि बिसयन पर अकेले बोलत रहिहें। जब कुछ घंटा के बाद कुछ नेवर होइहें त देखिहें कि सुने वाला गायब वाड़ेस। फिर लाख कोटि उन्हनी के भ ड़िहें। एह से सभ कोई उनका के पगला तिवारी कहेला।

केहू अपना दोस्त-मित्र से पसगइबत में बात करत होखे, बस के इन्तजारी में खड़ा होखे भा 'पोस्ट औफिस' में लाइन लगवले होखें, उ धिना बोलवले ओकरा बीच में टपकि पड़िहें। आपन परिचय वड़ा सान से दिहें—'हमार नांव पंडित राजधर तिवारी, पिताजी के नांव पंडित मुरलीधर तिवारी, गाँव—चौराकला, डांकघर—ऊज, थाना—गोपीगंज, जिला—बनारस। अबहीं विस्वकर्मा लाइन, गोलमुरी में रहिला। गरीब सेवक के अर्ज सुनल जाउ।' अतना बड़ परिचय दे ना के वाद उनकर भाखन सुरू होई। सुनेवाला के परिचय जाने के इन्तजारी ना करिहें। फिर उ घटन एह कलियुग में सतयुग ले आवे के अनुरोध करिहें। दुनिया के दसा पर लोर बहइहें।

कभी-कभी त स्कूल बस के इन्तजार करेवाली लइकिन के पास भी पहुँच जइहें आ आपन पूरा परिचय देला के बाद—पढ़ाई में ईमानदारी, आ आछा गृहस्थी सम्हारे के सिक्षा तक दे जइहें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कबही रात के दू बजे उनकर निर्गुण भजन सुनाई पड़ी—

"अरे मन दो दिन का मेला रहेगा।
बाकी इहां ना झमेला रहेगा।।"

त कबहीं सड़क पर अलापत चलिहें —

"साँच कहौं त मारन धावै, झूठे जग पतियाना।
नेमी देखे, धरमी देखे, प्रात करहिं असनाना।।
आतम मारि पाखनहि पूजैं, उनम कछु ना गियाना,
सन्तो दखौं जग बौराना।"

तिवारीजी के बाप लइकाइयें में मर गइलन। एह से तीन गो छोट भाई एगो विधवा बहीन आ महतारी के पाले-पोसे के भार इनके प परल। अपना जिम्मेवारी के निवाहे खातिर ओही उमरि में बहरा निकलले। उ सिर मालिस, पानी ढोवल, गमछा आ दतुअन बेंचल से लेके कारखाना आ पुलिस विभाग तक में काम करिके उन्हनी के पलले-पोसले। आजु पैंतीस बरिस के उमरि हो गइल बाकी आपन सादी ना कइले। सादी के बारे में उनकर बिचार ह—"सादी कइल घर में कल-कानि बेसाहल ह। बाप-महतारी, भाई-बहीन से माया फारल ह। आजु काल्हु के लइकी घर में आवते अपना मरद के अंगुरी के इसारा पर नचावे लागत बाड़ीस। रोज सास ननद, देवर-गोतिनी के सिकायत करत-करत, आ अठान परि के अलग होखे पर मरद के मति मारि देत बाड़ीस। उ बुड़बक मरद काल्हु के आइल औरत के बात पर विस्वास क लेता आ बचपन से साथ रहेवाला—आपन सहोदर भाई आ जनम देवे वाली महतारी के बात अनसुना क देता। उ लागत बा डंटन ठेठावे आ बखरा बंटावे। एह से ओ कुफुत से अलगे रहे के चाहीं।" हलाँकि इनकर कुल्हि छोट भाई आपन सादी क लेलेस। सादी ठीक भइला प इनका खबर मिलल त हँसत गइले। सादी में खूब पइसा लुटवले बाकिर इ ना कहले कि बड़ हम हईं, पहिले हमार सादी भइल चाहत रहल हा।

अब उनकर कुल्हि भाई काम करत बाड़ेस, तबो अपना वेतन के अधिक भाग से उन्हनीके कपड़ा-लत्ता, भवहि के सवख सिंगार के समान, महतारी-बहीन के जरूरत के चीज खरीदिहें। अपने उन्हनी के छोड़ल कपड़ा पहिरिहें। एक समय भोजन करिहें। घर छुट्टी गइला प अपने आँगन में खाढ़ होइहें, महतारी से कहिहें कि बबुआ बो के घर के दुआरि प आवे के कहु आ पाला ओठघा दे। फिर उ आंगना में खाढ़ आपन भाखन सुरु करिहें—"बेटी ध्यान से सुन……जीवन के क्षण भंगुरता, सास, ससुर, गोतनी आ देवर के प्रति कर्त्तव्य से लेके समाज के प्रति कर्त्तव्य तक प घंटन बोलत जइहें। सुने वाला भी उबि जाई, सुनत-सुनत सुति जाई। त महतारी कही कि केकरा से भूकत बाड़? बबुआ बो बइठल बइठल सुति गइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाड़ी। जाके खाके सूत।

एक बेर तिवारी जी के लाइन से गुजरत उनकर आवाज सुनाइ परल। उ अपना छोट भाई प बिगड़ल रहलन जवन उनका। क कहि देले रहे—बनारसी बोली में—'भइया खा ऽस।' एही प नाराज होके पगला तिवारी कहत रहलन—'ना, भइया के पेट बा ? अरे दुष्ट ईहे पूछे के तरीका ह। खिआवे के तोर मन रहित त इ ना कहिते कि चल भइया बीजे भइल बा, खा ल। तें अपने ढेकारत चलल आवत बाड़े आ हमरा से पूछत बाड़े कि 'खा बऽ'।

'तें हमरा के भइया काहे कहले ? आरे नासमझ तें भाई शब्द के अपमान कर रहल बाड़े। एह कलयुग में भाई कहवाँ बा ? भाई सब्द के बदल के अब कसाई राखि देवे के चाहीं। जवन एक-एक इंच जमीन खातिर काल्हु के आइल मेहरारु के बात पर अपना सहोदर आ महतारी पर हाथ छोड़त बा।'

'भाई त बस राम भरत आ लछुमन रहले हा। एह कलयुग में भाई कहल भाई सब्द के दुरुपयोग कइल बा। आजु से कभी तें हमरा के भइया कहबे त पटरी ना खाई आ ओही घरी धूरि लगाइ के तोर जीभ सट देना एक हाथ बाहर खींच लेबि।'

उनकर छोट भाई उनका गोड़ पर गिरल रहे आ कलपत रहे-"भइया माफ कर। भूल हो गइल, तू राम हव।" एह पर तिवारीजी तड़प के कहले—"हूँ, हम राम हईं, एह से त रावन बनल बाड़े। फेरु आउ घनघोर युद्ध हो जाउ, तें लछुमन ना बनबे।" एही बीच हम उहाँ पहुँचलीं। फेरु तिवारीजी के मुस्किल से सान्त कइलीं।

कबहीं त पगला तिवारी के हृदय कवनो जाड़ा से कांपत भिखारि के देखि के मोम लेखा पिघल जाई त आपन सभ कपड़ा उतारि के ओकरा के दे दीहें। त कबही कवनो भिखारि के एक पइसा खातिर रीगिर कइला प लगिहे ठेठावे आ सरकार के गरिआवे। मारि उ एह तरह से मरिहें कि जेमें उ मर जाउ आ उ चिल्ला-चिल्ला के कहिहें कि तोरा जियला के का जरुरत बा ? जियबे त दु;खे भोगबे। तोरा से समाज के भी कवनो फायदा नइखे।

कबहीं उ व्याख्यान देत पंडित के पास पहुँचिहे आ आपन पूरा परिचय देला के बाद कहिहे कि हम सिरी मुरलीधर के बेटा आ हमरा भगवान दिखाइये ना पड़ले त तोरा कइसे दिखाई पड़त बाड़े। तें आजु हमरा के भगवान के देखाउ आ ना त दुनिया के बुरबक बना के ठगल छोड़ि दे।

गाजीपुर-बनारस के दूध बेचे वाला भा अपना लाइन में उ 'पगला स्वामी' के नाम से प्रसिद्ध बाड़न। जब कवनो देखिहें स त 'दंडवत स्वामीजी' कहिके स्वागत करिहें स। तिवारीजी आँखि बन कके—'कल्य.ण हो बच्चा ! कल्याण हो बच्चा !!'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहिके आसीस दीहें।

हमार समय उनका साथ में ढेर कटल बा। उ बिना बोलवले हमरा कोठरी में जब-तब पहुँच जइहें। हम डियुटी से आके सूतल होखी भा कवनो रचना लिखे में मस्त होखीं उ बिना बिचरले आपन परिचय देला के बाद (हालां कि उनका के हम बहुत दिन से जानत बानीं) दुनिया के लोगन के नासमझी प व्याख्यान देवे लगिहें। कभी-कभी त उनका आँखि से टपटप लोर चुए लागी। कबहीं मस्ती में भरल अनेकन निर्गुण भजन से ले के मेहररुई झूमर सोहर खेलवना तक सुनइहें।

एक बेर हम पसगइब मे पूछलीं– "तिवारीजी रउरा के लोग पागल काहे कहेला ? का रउरा सचहूँ के पागल हईं ?" एह पर उ मुस्कात कहले कि पहिले रउरा बतलाईं कि हमरा के रउरा का समझेलीं ? हम कहलीं कि हमरा बुझाइत त रउरा से पूछतीं ? त उ हँसत कहले – "हमरा त बूझाला साहेब कि हमरा के पागल कहे वाला खुद पागल ह। एहिसे हमार बात ओकरा बुझाइ ना। हइ पइसा होइ पइसा करे वाला लोग भला हमार बात का समझी। पगलन के बुझात नइखे कि मरला के बाद एको छदाम साथ नइखे ले जाये के, भा एहिजे एक पेट में कतना खाई डेढ़ पाव भा आध सेर। ओतने एगो साधारण आदमी भी खात बा। कपड़ा से ओकरो तन ढकल बा आ एगो गरीबो के। फरक बा ओकरा कपड़ा आ भोजन में थोड़ा आछा आ खराब के। फिर भी सभ पइसा के पीछे दीवाना भइल बाड़े स। 'जहँवा सइ कसाई, उहवाँ एगो के का बसाई साहेब ! हमार बात के सुनत बा ? 'उल्टे चोर कोतवाल के डांटे'—देखीं सभ हमरे के पागल कहत बा !

जब दुनिया के बात भा मत से कोई के बात भा मत ना मिले त दुनिया ओकरा के पागल कहेले। ईहे नू पागल के परिभासा बा। तिवारीजी साधारन लोग के सूझ-बूझ से ऊँच स्तर, भा समझ से परे के बात करिलें। एहिसे लोग सायद इनका के पागल कहेला ! हम उनका के निकट से देखि के ईहे समझले बानीं आ हमेसा पवले बानीं कि जवन उ बात कहिहें उ होई सोलह आना सांच आ उचित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भँइसि के दूध

चतुरी चाचा

सात भँइसि के सात चभक्का; सोरह सेर घीव खाँउ रे।
कहाँ बाड़ें तोर बाघ मामा, एक पकड़ लड़ि जाँउ रे।।

भँइसि का दूध में ऊ काबू बा कि जेवन पाड़ा खाली बैलन का हुरपेटि दिहला पर खून मूते लागेलन ऊहो बाघ से लड़े के समाती राखत बाड़ेन। ईहे सोचि के दूबर करज-गुलाम काढ़ि के भँइसि कीने के ठानि लिहलन। मेहरारू हाले के मूअलि रहे। दूबर का लरिका पोसे के रहे। लमहर चाकर पलिवार रहे। सोचलन कि घीव वेचाइ जाइल करी। माठा पानी से लरिकवा मोटंजो मजे में खा लिहल करिहन। गोरस-पताई से कुल्हि बेकतिन के गुजर हो जाई। लरिका कें नाँव भीम एह खातिर धइलन कि का जाने नाँवों के असर परत होखे। उनुकर माई बाबू उनुकर नाँव 'दूबर' धर दिहलन तेवन जिनिगी भर दूबर केतनों धूरि लगवलन उबरेंगवाँ ना भइलन। दूबर के कोसिस त ईहे रहे कि भीम के महतारी के मूअल ना बुझाउ। घीव-दूध के अलमगंज रहो। भीम का जेवने मन करे तेवने खात रहसु आ देंहि बनावसु। भँइसि ठीक-ठाक भइल सवा तीन सौ में। तोड़ा के रुपया दूबर सहेजलन त कुल्ही आठ बीस आ पाँच गो भइल। बुटुखुरी राय से जोड़ववलन त पैंतीस, कम दू सौ भइल। अबहीं आठ बीस अउरी रुपिया रहति तब जाके त मामिला फरियाइत।

अबकी दूबर सोचि ले ले रहलन कि असों गूर बेचि के सेठ फटकचन्द के लहना-तगादा साफ कइ देइबि। करज गुलाम आदिमो इज्जते खातिर खाला। एगो त सूदि देत-देत नाकि में पानी हो गइल बाटे। उनुकरा रुपया के सूदि हलुमान जी का पोंछि नीयर बढ़ते जात बा। हर साल हिसाब साफ कइल जाला बाकिर साल के आखिर में जब हिसाब कइल जाला त फेनु जस के तस। करजा देवे खातिर दूबर दसो नोह जोरि के तेयार रहेलन बाकिर डहरी-घाटे जबे सेठ फटकचन्द से भेंट हो जाई माहुर नीयर बोले लागेलन। हीत-नात केहू दुआर पर आइल रही, उनुकर तगादिहा चोंहपि जाई आ लागी माहुर ढकचें। बेचारू दूबर चिरइता के घोंट पीके रहि जालन। करबे का करसु। अबर के खीस खोंटि बरोबर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूबर अपना समाती मोताबिक बराबर साहु से हाजिर रहेलन। तर-तिवहार के बराबर दही चोंहरावे लन। कातिक का एकादसी के कचरस आ ऊँखि जरूरे चोंहपइहन। जब से खेत में गदरा हो जाई गदरा जरूर सेठ का घरे देवे जइहन। ई दूबर के धरम हो जाला। दूबर कहबो करेलन—

गुरु से कपट साहु से चोरी।
कि हो निरधन कि हो कोढ़ी॥

एतना कइलो पर दूबर के साहु उनुका से सोझ मुँह से ना बोलसु। एही से दूबर मन में ठानि ले ले रहलन कि अब आगे करजा ना लेइबि। जेवन करजा हो गइल बाटे ओही के केहू तरे साग-सातू खाइ के साफ करबि। बाकिर अचके मे मेहरारू मरि गइलि। कामो-किरिया ना करितन त गाँव-घर गारी देइत। नाहियो नाहीं करत में दस गो भाई बाँभन खियवही के परल। देखते-देखत नगद रुपया लागि गइल। आजु काल्हि बजार मे गइला पर नू आंखि के पट्टर खुलि जात बा। खाली कंइया नीयर रुपये नू लउके के बा केवनों सउदा थोरे लउके के बा।

एही कुल्हि में दूबर बूड़त-उतरात रहलन कि मन मे आइल कि दूबर भीम के जिआवे के बाटे। बिना गोरस-पताई के काम ना चली। भइसियो डाँगर लंके का होई। जब ले थान, चूँची आ दूध ना रही तब ले सहुओ त ना नू खड़ा रही। एही से सवा तीन सइ में एगो गभिना थलथलाइल भंइसि ठीक कइलन। विकास का लोटिस में सुनले रहलन कि सरकार जगहे-जगहे सोसाइटी खोले जात बाटे गिरहत्तन के कम सूद पर रुपया दिहल करी। आजु से छ महीना अगते बीस रुपया दे के दूबर दू गो हिस्सा कीनि के सोसाइटी के मेमर बनलन कि तनी एहू के घाटा-मुनाफा देखल जाउ। आजु छ महीना हो गइल। सुपरवाइजर कीहें धउरत-धउरत एँड़ी खियाइ गइल। मीटिंग में त सुपरवाइजर साहेब बतसफेनी नीयर मीठ चीकन-चाकन अइसन बतियवलन कि आजु किनाई काल्हि रुपिया मिलि जाई। बाकिर बाद गइला पर सोझ सलामियो मइखन लेत। चिरौनी-मिनती कइला पर ठोठिया के चढ़ि बइठत बाड़न कि हम का करीं, घरे से रुपिया देईं? जब बंक मे रुपिया आई त लिह जा।

दूबर सोचले रहलन कि कम सूद पर रुपिया ले के फटकचन्द के हिसाब साफ कइ देइबि। बिना हरे-फिटकरी के करजा से जान बाँची। बाकिर ई त घरवो के आटा गील हो गइल। जब फटकचन्द ई बाति सुनलन कि दूबर सोसाइटी के मेमर हो गइलन त लाल पीअर होखे लगलन। आके कहलन—का हो दूबर तोहरो पाँखि जामे लागलि? हमार करजा देवे के तोहरा रुपिया नइखे आ सोसाइटी के मेमर होखे खातिर रुपिया फरकत बा?

दूबर दाँत चियारि के रहि गइलन आ मन में सोचलन कि जरूर एही रुपिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से सेठ के करजा साफ कई देइबि। बाकिर मन के गुनान मने में रहि गइल। भँइसि कीने खातिर अब कहाँ जासु ? उनुका आगा ई एगो लमहर-चाकर सवाल रहे। बहुत सोचला-बिचरला का बाद दूबर थेथर होके अपना मन में कहलन कि चाहे सेठ मरिहन भा गरिअइहन उनहीं का गोड़-हाथ पर गिरि के आपन काम निकासबि। साहु जे हवें से माई बाप हवें। उनकर गारी के अमरख ना माने के चाहीं।

दूबर जब रीनि काढ़ें सेठ फटकचन्द कीहें चोंहपलन आ आपन अरज-गरज कहलन त पहिले त सेठ छान-पगहा तुरवलन बाकिर बाद में कहलन कि पहिले पछिला हिसाब कर। पाँच सइ रुपिया के पाई रुपिया का हिसाब से कुल पौने चौरानवे रुपया भइल। तूँ पुरान असामी हउव। उपरा के पौने चारि गो छोड़ि देत बानीं। ले आके सोझ-सोझ नब्बे गो दे द। मूर ना देव त कम से कम रुपयवा क मइलियो त साले-साल साफ कईल कर। फेनु आगे के करजा के बाति कर।

'रोजा के गइलीं नमाज परल बखरा।' बेचारू दूबर बड़ा सँकेता में परलन। बीस रुपिया ओने सोसाइटी में फँसवलन। एने नब्बे रुपया सेठ के देसु। फेनु नगद भँइसि किनाई। केतनों हाथ-गोड़ पटकलन बाकिर सेठ ना सुनलन। झख मारि क दूबर घरे अइलन आ घर से ले जाके नब्बे गो रुपिया जब्बे सेठ के दिहलन तब्बे उनुकर मुँह सोझ भइल। सेठजी रुपिया टेंटिआइ के कहलन—देख दूबर ! असामी जे हवे लरिका हवे। एके पोसले हमार काम हवे। देवे-लेवे से आदिमी के सन्निका बने ले। अब तूँ अधो राति खानी अइब त जेतना के काम होई हम नाहीं थोरे करबि। ले जा जेतना के काम होखे।

चट देने तिजोरी में से तीन सइ रुपिया निकासि के गनि दिहलन। दूबर कहते रहि गइलन कि अधिका का होई कामे भर देईं। बाकिर सेठजी कहलन कि ले जा जवन लागी तेवन लगइह। कुल्हि सोझ-सोझ आठ सइ रुपया हो गइल। जब दूबर चले लगलन त बोलाके सेठजी कहलन—हेइजा हमरी बहिया पर तनी टीप देले जा। तनी जल्दी में बानीं। सुचिता बइठि के साफ कइ देइबि।

दूबर घरे अइलन। जाके भँइसि ले अइलन। खूँटा प बान्हि दिहलन। रुपया कहाँ से आइल हवे आ कइसे-कइसे आइल हवे केवनों बेकती से ना बतलवलन। कहबे केकरा से करसु। घर के मालिक त ठहरलन दूबर। घर का अउरी बेकतिन के फिकिर में डलला के कामे केवन रहे ? दूबर लाख से लीखि करसु। तबों केहू साँसि-ढेकर लेवे वाला ना रहे।

टोला-परोसा के लोग अचंभा में परल कि दूबर का मेहरारू का मुअते ना जानी कहाँ से इनका घर में माया टूटि परल कि दुआर पर मथुरही बन्हाई गइल। दूबर का रामजी पाँच गो बेटा देले बाड़न। चारि गो के बिआह हो गइल बाटे। घर में तीन पतोहियों आ गइल बाड़ीस। एगो के अबहीं फागुन में गवना होई। एगो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुँआर बाड़न भीम। जेठका लरिका के लरिकनी सेयान भइल चाहति बाटे। धी आ धमोइ के उपजत देरी ना लागे ला। दुइ एक साल में ओकरो सादी करे के परी। बाकी दू गो पतोहन का कोरा में एक-एक गो लरिका बाड़नस। घर के लेके बहरा ले रामजी दूबर के एह घरी खूबे बुझले बाड़न। खेत में जजातो नीक होति बाटे। मुद्दई मुँह बिजुकावत बाड़न। बाकिर ओसे का रामजी का मुँह बिजुकावल ना चाहीं।

भँइसि का अईला पर सब वेकती का सुतार हो गइल। खूँटा पर अइला का अठवें दिन भँइसि पाड़ा बिआइल। दूबर कउड़ा बइठि क आगो तापत रहलन। जब उनुकर छोटका नाती भँइसि के पाड़ा बिअइला के हाल सुनवलसि त दूबर मोंछि पर ताव देत उठलन आ कहलन—

भँइसि बिआइलि पाड़ा।
त साहु भइल खाड़ा।

यानि अगर भँइसि पाड़ी बिआइल रहित त ओके जिआवे खातिर आधा दूध कई महीना ले पिआवे क परित। बाकिर पाड़ा बिआइल त कंवनों फिकिर नइखे। खूब कचरि के दुहला के काम बाटे। पाड़ा राम मुअवे करिहन त का करी। एह लोगन के अरदुआइ त आनहीं थोर हवे! दू एक महीना में केंचुअटि जालन आ फेनु केतनों दवा-बीरो होखे उलटि जइहन।

दूबर धारि फोरलन। फेनुस दुहाइल। पाकल। कुल्हि लरिका-फरिका एक जून खूबे छउकि छउकि के खइलन। दूबरो खइलन। रतौन्ही के दवा हवे फेनुस। फेनुस खाते दूबर के रतौन्ही नीक हो गइल। आँखि के पट्टर त खुलिये गइल संगे संगे दूबर के कुल्हि बेकति अँखफोरू हो गइली। सभके आँखि खूलि गईल। बिना दूध के अब तीनों पतोह के लरिका दुवराये लगलन।

छोटका नाती नधियाइल त थाने तर बोलाके दूबर चोंका पिआइ दिहलन। भीम का गिलासि में थोरकी भर गाज आ दूध ढरकाइ के बड़की पतोहि के दही जमावे के दे दिहलन।

सभका लरिका बाटे त कंवनों कामे आई! जेठकी का लरिकनिये बाटे त का करी? ऊहे नू ओकरा दिन-राति के वा। ओकरा अब क दिन अपना घरे रहे के बा। एक दू बरिस के मेहमान बाटे। फेनु आन का घरे त बाछी चलि जइहन। जई दिन बाछी खाई-बदरि लेसु। जेठकी पतोहि अपना लरिकनी के बोलाइ के छिपुली में बसिया भात आ दूध उझिलि दिहलसि। कोठिला का आड़ा बइठि के लरिकनी मंड़े में सरपोटि लिहलसि। ओके दूध-भात खात मझिला नाती देखलसि त ऊ काहे के कल लेउ। ऊ भुँइया लोटिआये लागल। ओकरा के जबे दूध दिआइल तबे दूध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महरा पर बइठे पावल। विहान भइला जब दही महाये लागलू त केहू का खराई मारे लागलि, तनी सढ़िये ले के केहू खराई मेटावल। केहू का मदरसा जाये खातिर कुजून होखे लागल। ऊ छिनुई दही का संगे लीटी खाय खातिर अकुताये लागल। लँनू खातिर कोरा में के लरिका नधिआये लागल।

सभका महतारी रहे। अपना-अपना हिस्सा-परता पर सभे अपना-अपना लरिकन के दूध-दही आ घीव खिलावे। वेचारू भीम का त महतारी रहे ना। उनुके के देउ ? ऊ आपन हाथ गोड़ चलावल सुरू कइलन। आ सुनाये लागल कि आजु के दूध सगरे विलरिये पी घललसि हवे। त आजु के लँनू सगरे मूसे काटि घललनस। कबों-कबों त अइसनों भइल कि नादी तर तोपल दूध, साढ़ी ओही तरे बाटे, नींचे से गायव बाटे। मन कई कोठिला जाये लागल। कहँतरी फूटल नइखे कि दूध हेठा से चू जाई। फरुइलो के केवनों दागी नइखे। उझिललो के केवनों निसान नइखे लउकत। फेनु दूध भइल का ? जरूर केवनों भूत-परेत आवत बाटे। दोसरा जगह दूध अँवटाये लागल। बाकिर परिकल भूत थोरे मानी। घर के मेहरारू टाही में लगलीस आ एक दिन भीम रेंड़ का फोंफी से अँवटल दूध सुरुकत पकड़ाइ गइलन। ओह दिन भउजाइन का गोड़-हाथ पर परलन त मोकदिमा ओही जा सुलह हो गइल। आगे बढ़े ना पावल।

भँइसि के दूध आ घीव देखि के दूबर हिसाव जोरत रहलन कि साल भर में भँइसि के दाम निकसि आई। ना होई त सेठजी के रुपया दे दिहल जाई। ना त सूदि बढ़त जात बाटे। एने अचके में एक दिन सुनाइल कि भँईसि टँगरी उठाइ दिहलसि। से त खूब हरियरी दियात रहे। आखिर एतना जल्दी काहें बिसुकी ? अनगुतहा दूध नीकें दे। बाकिर चरि के अइला पर साँझि खानी एको चिरुआ दूध ना दे। नेटुआ बाबा के दूध-बतासा चढ़ावल गइल तबों ना भँइसि सुधरलि। आखिर भँइसि का का भइल बा ? केहू के नजरि त ना लागि गइल ? साधू बाबा के एक कहतरी दही देके नजरि झरवावल गइल तबों किछु ना उजियाइल। दूबर बड़ा सँकेता परलन। कतों भँइसि के दूध धामिन त नइखे पी घालति ? अगोरे खातिर जेठका बेटा वन में भँइसि चरावे के ले गइल। चरवाहन से पता लागल कि धामिनि ना, बड़की धामिनि दूध पी घालति रहे। बर का पतई के खदोना बनाइ के भीम चरवहिए में भँइसि के दूध दुहकि लेसु ! घरे अइला पर डाँट-डपट भइल। भीम मुँहे लागे ना देसु। खैर, भँइसि के दूध केहू तरे बढ़ि गइल। दूबर टूअर लरिका के का बोलसु ? इरिखा आई कतों भागि-पराइ जाई त बड़ से बुरा होई।

एने पतोहि मन ही मने गुरमुसा सन। अपना पुतरइला के नइखन बोलन। अमनी का अपना लरिकन का मुँहे जावी देले बानीं जा आ भीम सगरे दूध-घी सहोथि त बाड़न।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखते-देखते घर में सभे छूटि के लकड़ी खेले लागल । जे जहँ पावे तहँ सहोरे लागे । अपना-अपना लरिकन के आँखि बराइ के दे घाले । लरिका ना रहें स झाँपी में चोराइ घालल जा । चोरी-चोरी घीव बेचाहू लागल । आ एने दूबर हिसाब जोरसु कि एके बेरि लगनि में घीव बेंचला पर किछु लज्जति भेटाई । खुचुर-खुचुर बेंचला से किछु ना होई । ए तरे दस रुपया हाथ में होखी त केवनों कोन साधे होखी ।

गते-गते कलह के आगि सुनुगे लागलि । आ दूबर का अँगना में दूनों बे सुनाये लागल—

तोरा पूत के खटिया निकसो ।

तोरा पूत के माटी लागो ।

कइसे सगरे दूध अपना पूत के पिआ मललसि हवे ?

पियवली हाँ त का ? हम अपना भतार के कमाई ।

वाह ! वाह ! रे भतार वाली ! तनी मुँह ना देखु । जइसे हमार भता बइठल रहता ।

आ एक दिन साँझि खानी टोला भर के लोगन के बटोरि के जेठका लरिका का कहहीं के परल कि हमार बखरा बाँटि द । हमार गुजर तोहरा में ना होई । दू माथे हाथ दे दिहलन । आपन इज्जति दूबर कइसहूँ तोपि-ढाँकि के चलावत रहलन ऊ अब पंच का आगा पियाजु का बोकला नीयर बितिके-बितिक फरियावे के पर सेठ फटकचन्द के आठ सइ रुपया करजा सुनि के कुल्हि लरिका कूदे लगलन । जेठ लरिका कहलसि—हमनीं का जिनिगी भर जाँगर ठेठाइ के मरि गइलीं जाँ । ऊ स कमाई कहाँ गइल जे करजा लिआइल हवे ।

'करजा ले के हम केवनों रेवड़ी-मिठाई थोरे खइले बानीं? केवनों रंडी-पतुरि के नइखीं देले न आपन बिआह कइले बानीं । तोहने लोगन पर नू लगवले बानीं दूबर आपन सफाई दिहलन ।

पंच लोग दूबर से हिसाब माँगल त ऊ हिसाब कहाँ से देसु ? केवनों लि पढ़ि के बही में थोरे धइले रहलन । केहू का केहू से छक्का-पंजा थोरे रहे कि हि लिखाउ । हाँ हिसाब होई त सेठ का घरे । सेठ जी बोलावल गइलन । ऊ सरखत आके पंच का आगा पटकि दिहलन । के कहता कि आठ सइ रुपया हवे । हई स सइ रुपया के सरखत बाटे देखि लेईं सभे । सेठ जी कहलन ।

दूबर कबों पंच लोगन के कबों लरिकन के आ कबों सेठजी के तिकवसु ।

भँइसि के दूध के असर दूबर का लरिकन पर त ना परल बाकिर सेठ रुपया पर जरूर परल रहे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सेठ जी कहलन—दूबर का घरे बांट-बखरा आगे-पीछे होई। हमार सोरह सइ रुपया लेले बाड़न साल भर में अठारह रुपया सैकड़ा का हिसाब से दू सइ अठासी रुपया सूदि भइल। सवा तीन सइ रुपया में भँइसि ले अइलन दूबर। साल भर मजे में दुहलन। अब ठठरा भँइसि सूदि मिहें बईलाइ ले जात बानीं। पंच लोग सुनत बाटे हमार सोरह सइ मूर के मूर अबहीं इनिका कीहें रहि जात बा।

सेठजी भँइसि बइलाइ के चललन। दूबर दउरल घरे गइलन कि साल भर के घीव बटुराइल बाटे ओहू के बेंचि के किछु अउरी बोझा हलुकाई। घरे जासु त घीव के बेंहुडा झाँपी में से निकासि के बहरा फेंकल बाटे। बिलारि ओके चाटि के साफ करति रहे।

दूबर बहरा अइलन आ कहलन अच्छा भइल सेठजी भँइसि ले गइलन। बिना भँइसि के दूधे के लरिका नीके रहलन। भँइसि का दूध से त दुवराये के नौबति लागलि बाटे।

हमनीं का भँइसि के नइखे काम—जेठका लरिका कहलसि।

भीम भँइसि का ओरि टुकुर-टुकुर तिकवत रहलन। दूबरो का आँखि में से दू ठोप लोर गिरि परल। का जाने लोहू रहे कि पानी भगवान जानसु।

दूबर के चित्त आ भँइसि के दूध दूनों फाटि चलल रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाजलि बैरनि रे बाँसुरिया

श्री गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश'

पाकिस्तान के मारि के हमार सिपाही ओकर छक्का छोड़ा दिहलनस। चीन क कुल्हि चल्हाँकी भुला गइल। मिठाई खाइब···हो···हो। ईहे हई नगरी, जहाँ बाड़ी बनरी, लइकन क धइ-धइ खींचेली टँगरी। एगो बीड़ी बाबू साहेब···ना सिगरेट पियला से करेजा जरेला। हो···हो बेईमान····हमरा के लूटि के कंगाल बना दिहलनस। राधा तोहरा पर हम खुनसाइल ना रहलीं। हमके माफ क द राधा··· तोहरा खातिर जिनगी एही तरे बिता देइब। सेवक आ चाकर हम हईं राधा रानी के····बम बम भोले····या अली तोड़ पाकिस्तान की नली। अयूब खाँ क एगो दाल ना गली। बम····बम···भोले···हा····हा····ही····ही —

> बाजलि बैरनि रे बाँसुरिया, टूटल सिवसंकर के ध्यान,
> केथुवा चढ़ल सिवसंकर आवे, केथुवा चढ़ल भगवान,
> बाजलि बैरनि रे बाँसुरिया····

हा····हा····हा····हो····हो····संसार में सभी लोग चोर हैं···आई मीन आल आर थीफ सम आर स्माल एण्ड सम आर बिग····हा····हा····माई डियर मास्टर साहेब····गुडमार्निंग।

हम चकचिहा गइलीं। लइकन क झुण्ड लिहले ऊ पागल हमरा कीहें आके बइठ गइल। दांत का पीरा से परेसान रहलीं। कवनो खोढ़रा ना हमरा बुढ़ि के दांत जामत रहे एह बुढ़ौती में। सरकार रबी अभियान मनावे के आदेस देले रहे। एही में गाँव-गाँव घूमि के लइकन से खेती करावे के रहे। पचोखर में सिकुमार का दुआरे बइठल रहलीं। गाँव में केहू का दुआरे साइति सँजोगे कवनो मास्टर चलि जावे त ओनकर खूब आदर होला, ओहू में जब लइका राम कवनो गलती में पकड़ा जाई त का पूछे के। सिकुमार ओही गलती में पकड़ाइल रहलें। सब खेत पर काम करे गइल रहे, ऊ रेडियो पर फिल्मी गाना सुनत रहलन। महतारी सुनलसि त गरम हलुआ भेजलसि कि मास्टर बबुआ के कम मरिहन। बाप पान के बीड़ा थम्हवलन। अबहीं खाये के तइयारी करत रहलीं तबले पागल आके बइठ गइल। सिकुमार क बाबू बतवलन कि ई पहिले बहुत बड़ आदिमी रहल ह। आसनाई में एकर ई दसा हो गइल। एकर दसा देखत बानीं—ईह न ईसर क मरजी ह कमाला केहू खाला केहू। इनकरा कमाई पर भाई रंग लेत बाड़े स आ ई गली-गली क बहार लूटत बाड़न। ना त पचोखर में एक दिन मदन साहु क तूती बोलति रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'ई राधा के हं ?' हम टोकलीं।

'पानी पी लेईं त कुल्हि कहत बानीं।'

पानी पी के हम अहथिर भइलीं त सिकुमार क बाबू कहे लगलन।

ना····ना····ना····अइसन मति करी···हम मेहरारू हईं····रउरा के छोड़ि के हमार एह संसार में के बा ? रउरा खातिर घर छोड़लीं····माई-बाप छोड़लीं। अब हम कहां जाइब सरग से नरक में हमें फेनु मति ढकेलीं। हमके जेतना चाहीं मारि लीं बाकिर हमके छोड़ के जाईं मति। हम अपना कहला-सुनला क माफी मांगत बानीं। राधा मदन क गोड़ छानि लिहली। आँखि क लोर गंगा-जमुना की धारा नीयर मदन क गोड़ धोवे लागल। मदन पत्थर नीयर खड़ा रहलन। उनुका बुझा कि अब ढेर देरी ले खिनुसाइल ना रहि सकेलन बाकिर बेटी क सूनि माँगि, आँखि में लोर भरलि सूरति नाचि जा ···ना····ना बाप के कइल बेटी ना भोगी···· बाप अपना प्यार के बलिदान क देई। उनकरा ना बुझा कि राधा के सनेहि के कइसे झटकि के चलि जाईं। एक ओर भरल-पुरहर परिवार दूसरी ओरि राधा क लोर भरलि आँखि। राधा के ले के कइसे जा सकेलन। एगो मेहरारू रहते ई दूसर अनरथ ? प्रेम उनुकरा आँखि पर पट्टी बान्हि देले रहल।····पनोखर क बच्चा-बच्चा उनुकरा पर थूके लागी। बड़की लड़की सयान भइलि बा। ओकर हाथ पीयर करे के बा। के करी बिआह ? सब कही—एकर बाप कुजाति ह ·······पतुरिया रखले ह। ई बात जेवन कुल्हि आज बा ऊ राधा क दिहल ह बाकिर ऊ त कुल्हि छोड़ि के जात बानीं खाली अपना मेहनति क कीमत ले ले बानीं। राधा क जिनगी कटि सकेले। मदन क आँखि पर ऊ दिन आके अटकल जेवना घरी गाँव से एगो लोटा आ कमरा ले के झरिया टीसन पर उतरल रहलन। ओकर मदन क गोड़ छनले राधा क आँखि क लोर बीतल दिन क परछाहीं हो गइल।

झरिया में राधा बाई क चललि रहे। कोयलरी क कुल्हि मनेजर राधा बाई के मुंह माँगल धन देसुं स। आजु धनबाद ···काल्हु कतरास गढ़ ···परसों सिन्दरी···· राधा क रोज परोगराम बनले रहे। ओह दिन कोयलरी में नाचे गइल रहली। नाचि खूब जमनि। नोट से राधा तोपा गइली। खुन झोंके एगो कजरी कढ़वली—

बाजलि बैरनि हो बाँसुरिया, छूटल सिवसंकर क ध्यान,
कथुआ चढ़ल सिवसंकर आवें, कथुआ चढ़ल भगवान;
केकर जियरा हुलसल लागे, केकर जिया मसान,
बाजलि बैरनि हो बाँसुरिया··।

गाना खतम होत-होत कोयलरी क एगो मनेजर उठलन आ कहे लगलन—

'राधा बाई के गाना सुनि के हमार कोयलरी क मिठाई वाला मदन साहु एतना खुस बाटे कि आजु दिन भर क कमाई राधा बाई के भेंट करि रहल बा। एकरा अलावे ई एक महीना तक रोज क कमाई राधा बाई के देवे के निसचय कइले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बा। गड़· ·गड़····गड़ ताली बजली स अवाजि उठली स····सावस जवान····बाड़े ते कलाप्रेमी····रण्डी का नाचि के मुरच्छा कोष बना लिहले। बाहरे राधा बाई·· एक नजर में कमाल करतारू।

राधा बाई सोचली कि एगो बेवकूफ फँसल। बाकिर ओह राति मदन के नीनि ना परलि। पलकि पर राधा खुमारी नीयर छवले रहली। सोचसु त बुझा कि राधा क कुल्हि हाव-भाव उनहीं खातिर रहल ह। ऊ मुसिकयाइल, ऊ दूध क धोवल दाँत····राधा इनरासन क परी ले कम मदन के ना बुझासु। रोज राधा का घरे जाए लगलन। दिनभर क कमाई हाथ पर ध के चलि आवसु। राधा बड़ा हरान भइली। कवनों कहानी नीयर उनकरा ई बुझा। भला ई कवन लति ह कि आवत बा आ पइसा थम्हा के चलि जात बा····न गाना सुने के न कुछ। बिचित्र आदिमी बा। पूरा बेवकूफ ई बा। पहिले त राधा बेवकूफ पर टारि दिहली बाकिर एही तरे पन्द्रह दिन बीतल त मन क दया उभरि आइल। ए राधा तोहके केहू के दिनभर के मजूरी सेतिहाँ लिहला के का अधिकार? का अधिकार? राधा कान मूँदि लिहली। सोमार क दिन रहे। आजु घरे केहू ना रहे। छोटकी बहिन गीता एगो कोयलरी में गोमो नाचे गइल रहली। अम्मा ओकरा साथे गइल रहे। बुढ़वा बाबा रहलन से बजारे गइल रहलन। राधा के दिन भर उदासी घेरले रहे। अकेल बितावे के परे त दिन पहाड़ हो जाला। मन क उदासी तोरे खातिर उनकी ओठ पर गीत फूटल-

बैल चढ़ल सिवसंकर आवें, गरुड़ चढ़ल भगवान,
पिया संग जियरा हुलसल लागे, पिया बिन जिया मसान,
बाजलि बैरनि रे बाँसुरिया।

राधा चिहुँकली····केहू क गोड़ क आहट पाछे पवली। देखली मदन हाथ बढ़वले खड़ा रहलन। हथोरी पर दिन भर क कमाई हँसति रहे।

'ले जा रुपया हम ना लेइब। हम खटि के खाये जानींला ई हराम क रुपया हम ना लेइब। हमरा के बेवकूफ बनावे के अच्छा उपाय सोचले बाड़।'

'गलत समुझत बानीं····ई हराम क ना ह····ई रुघराई के कीमत है।····ए बहाने कम से कम एक बेर देखि त लेत बानीं। ई बहुत बा····ई पूजा क फूल भगवती का मंदिर में चढ़ावत आवत बानीं बड़ा साधि से आईं ला'—मदन मिनती कइलन।

'जा····जा ई कुल्हि बेवकूफी हम ना करबि। अब मत कबों अइह। मेहरारू लइका खइला बिना मरत होइहन एहिजा दिन भर के कमाई रण्डी पर लुटावत बाड़े· ·जा बाबू साहेब····जा मरद-मेहरारू क नाता बड़ा पवित्र होला ओके एहतरे ना तोरल जाला।' राधा घर में चलि गइली। ना जाने काहें राधा के अपना जवार की ओर के लोगन के मोहि लागे ले। अम्मा एह काम में ढीठ परे। कहेले—मोहि कइसन बेटी! पतुरिया केहू क न जोरू न तबलची केहू क बा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाकिर राधा के ना जानी काहें ई कुल्हि ठीक ना लागे। अम्मा का सोझा कुछ ना बोलति रहली। आजु बड़ा नीक मोका मिलल रहे। घर में जा के केवाड़ी बन क लिहली। मदन भारी मन से लवटि गइलन।

साँझि क बेरा राधा क मन अउरी भारी हो गइल। सुनले रहली विहार टाकीज में भोजपुरी खेल लागल बा। सोचली चलीं देखि आईं तबले त दस बजे वाली गाड़ी से अम्मा चलि अइहन। पहिर-ओढ़ि के तइयार होके जइसहीं घर से निकलल चहली तब ले कोयलरी क मनेजर सोझा खड़ा हो गइलन।

'बाबू साहेब एह घरी त फुरसत नइखे फिर कबों आइब'—राधा कइली।

'राधा हम नाच देखे नइखी आइल। हम बहुत जरूरी बात तांहसे कहल चाहत बानीं। मदन मिठाई वाला आज सवेरे से बेहोस बा। जब ऊ थोड़ी देर खातिर होस में आवत बा त तहार नाम लेके गीत गावे के बिनती करे लागत बा। तूं जल्दी चलि के ओकर जान बचा ल। हम तोहके मुँह माँगल ईनाम देइब।'

मनेजर साहब क चेहरा पर बदहवासी नाचत रहे।

राधा क जीव धक से हो गइल··एतना मदन उनुकरा के चाहत बाड़न। राधा ई कब्बों ना सोचले रहली। अब ले जानत रहली बेसवा से परेम कम, खेले अधिक लोग जानेलन। एकरा खातिर न कवनों दुख न सुख····राधा कुछ कहि ना सकलीं। अइसन बुझा कि करेजा के केहू खींचत बा····मदन क सबेरे वाला चेहरा आँखि पर नाचल। चुप-चाप आके मोटर में बइठ गइली।

मजूरन क भीड़ि लागलि रहे हाथे-मुँहे करिखा पोतले। मनेजर आ राधा के गाड़ी से उतरते सब हटि के रहता दिहल। एगो छोटीमुकी कोठरी म मदन सुतल रहलन। ओहिजे बगल में कुरसी पर कोयलरी क डाक्टर बइठल रहलन। डाक्टर बतवलन कि रोगी के कवनों बाति क अइसन सदमा पहुँचल बा जेवना से ओकर दिमाग पर असर पड़ल बा। जदि ठीक से इलाज ना भइल त हो सकेला ऊ पागल हो जा····राधा····राधा··गीत ऊ चिचिआत बा। राधा सोकता हो गइली। ई ना जानति रहली कि एह गरीब आदिमी का मन मे एतना उनुकरा खातिर प्यार बा। करेजा मिमोरा उठल।

मदन बड़बड़इलन····राधा····राधा····ऊ गीतिया सुना द··राधा। राधा बेहोस मदन की ओर देखली····लिलार पर हाथ धइली तावा नीयर जरत रहे। धीरे से गोहरवली····मदन····मदन हम तोहार राधा गोहरावत बानीं बोल····बोल ना····। रोगी आँखि बन कइले सुतल रहे। राधा क लाजि से गाल लाल हो उठलन स। लिलार पर पसीना चुहचुहा आइल। कुरसी पास मे खींच के ले गइली····कान कोहें मुँह ले जा के धीरे से कढ़वली—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के रामा जेंवे सोने क थारी, के खा मगहीं पान,
पियवा जेंवे सेने क थारी, धनिया कचरे पान,
बाजलि बैरनि रे बाँसुरिया, छूटल…।

गीत जादू नीयर असर कइलस। मदन क आँखि खुललि। राधा के टुकुर-टुकुर देखे लगलन…फेनु कुछ खियाल पारि के चकचिया गइलन तूं… राधा… राधा चुप करवली—'बोलीं मत हम राउर राधा हईं आप के जवन कुछ कहे रहलीं ओहके माफ करीं…आप रोज हमरा कीहें आइल करबि'—राधा क आँखि लोर में ना जाने काहें डूबि गइली स।

'राधा!' मदन राधा क हाथ ध लिहलन 'राधा हम तोहरा बिना जी ना सकीं। ई साँच बा कि हमरा मेहरारू लइका कुल्हि बा बाकिर तोहरा के छोड़ि हमरा ओंठ के मुस्कुराहट केहू ना दे सके…दिनभर क थकावट केहू ना हर सके…हम गरीब बानी बाकिर मन से ना…देखिह जइसे जिअवलू ओइसे निबहि ह। मदन क आँखि क लोर खरकि के गाल पर आ गइल। ई सब बात-चीत सुनि के डाक्टर मनेजर साहब का साथे भीतर अइलन। मदन क नाड़ी देखी के डाक्टर साहेब कहलन—अब कवनो खतरा क डर नइखे।'

मदन त नीक हो गइलन बाकिर राधा उनुकरा प्यार में बेमार हो गइली। दिन-राति क गाड़ी अपना गति पर रहे। दूनों एक दूसरा का पंजरा अइसन आ गइलन कि एगो का बिना दुसरका क जिनगी बेकार रहे। अम्मा से जब राधा मदन से बिआह करे क बाति कहली त खिनिस से ऊ लाल हो गइली—'सादी त हमनी के एगो मरद से होले…ऊ मरद ह रुपया…दूसर कवनों मरद पतुरिया क बाँहि ना थाम्हि सके। एही से हमनी का सदासुहागिन हईं जा। तूं छोकरी बाड़ू। तूं अबहीं का जनबू की कइसन धोखा ई समाज आ ई मरद हमनी के देलन स।'

बाकिर राधा अपना कहला पर टस से मस ना भइली। कमरा में आके उदासी तोरे खातिर रेडियो पर हाथ गइल त गीत क आखिरी लाइन कमरा में गूंज गइल—

आली रे मोरे नयनन बानि परी मोरे नयनन बानि परी
मीरा गिरधर हाथ बिकानी लोग कहे बिगरी
मोरे नयनन बानि परी।

राधा रेडियो बन्द क दिहली। आँखि गंगा-जमुना हो गइली स। ओही दिन राधा मन में निसचय कइली—'मदन क संग ना छूटी।' राति के मदन का घरे चलि गइली। नाँवें बंक में पचास हजार रुपया रहे। जिनिगी क नाव खेवे खातिर काफी रले। अम्मा सुनलसि त राधा का नाँव पर थूकी के गोड़ से दरि दिहलसि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झरिया में मदन लाल क लकड़ी क गोला मसहूर हो गइल। राधा त उनका के मिलवे कइली साथे एगो मोट संपति उनुकरा के मिलि गइल जेवन उनुकर गरीबी तोपि दिहलसि। पचोखर में हवेली उठि गइल। धूरि लपेटले जवन लइका उनुकर घूमें स ऊ चिकन-चाकन लउके लागलन स। जवना घरी कमा के मदन पचोखर में गोड़ धइलन लोग माला फूल से उनुकरा के लादि दिहल। गाँव क बड़कवा लोग उनकरा धन का आगे आँखि मूँदि ले। उमा साहु अँकवार दिहलन। गगा साहु पीठि ठोकलन। मुनीर मियाँ जयहिन्द कहलन। लाखन क कारबार एह से गाँव में तूती बोले लागलि। मदन राधा वाली बात के मन में रखलन। केहू से ना बतवलन न ओके संगे ले अइलन। बाकिर दुसमन जे रहे ऊ दाँव खोजे। दूसरी बेर झरिया से जब गाँवे अइलन ओकरा ले पहिलहीं एगो गाँव क आदिमी झरिया कमात रहे ऊ आके कुल्हि बाति कहि दे ले रहे। बिरादरी क कान खड़ा हो गइल काहें से कि एगो मोट आसामी भेंटाइल रहे। कन्हई मास्टर मोंछि पर हाथ फेरलन—अब बच्चू पकड़इलन। लइकी सयान भइल रहे। भाई मदन के समुझवलनस भइया ! ई का कइल ह'''बबुनी क बिआह कइसे होई ? बिरादरी कुजाति निकाले के सोचति बा''''आ मदन साहु का आँखि का सोझा फूल नीयर बेटी माला क लोर से डूबल चेहरा नाचि गइल। मदन साहु के आपन इज्जति धूरि में मिलति लउके लागलि। प्रेम क भूत उतरि गइल। समाज का आगे घुटना टेके के परल। लोग के समुझवलन--पंच बिसवास करो हम अइसन काम नइखीं कइले''' ई झूठ ह''''हमरा माला क बिआह होवे दईं जा। बाकिर पंच ना मानल निरनय भइल—अगर तूँ नइख कइले त सफाई खातिर गाँव पर आके कारबार कर। झरिया छोड़ द अब। मदन कपार पीटि लिहलन।

मदन साहु बदलि गइलन। राधा के ना बुझा कि बाति-बाति पर काहें मदन अब खिनुसात बाड़ें। आजु त मारि दिहलन ह जवन कबों ना कइले रहलन ह। राधा का ना बरदास भइल ह ऊ जबाब दिहली। एह पर मदन साहु झरिया छोड़ि के जात बाड़न। राधा कहाँ जासु। बंक क कुल्हि रुपया बैपार में लागि गइल। आजु ले बेसवा सबके ठगलीस आजु ऊहे ठगा गइल''''राधा का सोझा अम्मा क मुसकियात चेहरा नाचि गइल। राधा मदन साहु क गोड़ छानि लिहली—दया करीं''' हम जेवन कहि देहलीं ओकरा खातिर माफी माँगत बानी''''हमरा अब के बा''' खियाल करीं हम रउरा के कइसे अपनवलीं''''रउरा के हम जिअवलीं। हमरा के मारीं मति।' मदन क करेजा मिमोरात रहे बाकिर पत्थर बनल रहलन। आँखि का सोझा पंचन क आ माला क मुँह पारी-पारी से घूमि जा। जाके समान बान्हे लगलन। सबेरे गाड़ी जाति रहे। तय कइलन इहिजा क कुल्हि संपति छोड़ि दीहें। लोटा कमरा के बान्हि के ध दिहलन। राधा कमरा में जाके रोवति रहली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सवेरे मदन हाथ-मुँह धोके जाये के तइयार होत रहलन तबले नौकर दोउड़ल आइल आ कहलसि—बाबूजी, मलकिन पागल हो गइल बाड़ी। मदन भीतर गइलन देखि के जीव धक्क से हो गइल। राधा कुल्हि सिंगार ओइसने कइले रहली जइसन क के कोयलरी में पहिली बेर नाचे आइल रहली। मदन के देखते नाचि के कढ़वली—

बैल चढ़ल सिवशंकर आवें, गरुड़ चढ़ल भगवान
पिया संग जियरा हुलसल लागे, पिया बिन जिया ममान
बाजलि बैरनि हो बाँसुरिया....।

राधा....राधा....मदन क मन क बान्ह टूटि गइल। हम ना जाइब राधा—हम ना जाइब। राधा रुकि गइली आ धाँय से गिरि पड़ली। मदन दउरि के उठा लिहलन। राधा....राधा आँखि खोल राधा! हम तोहरा बिना ना जी सकीं। सावन भादों नीयर आँखि चूवे लगली स।

राधा आँखि खोलली आ कहली—'खियाल करीं एक बेर आप हमरा खातिर मरत रहलीं बाकिर हम आप के जिया लिहलीं बाकिर आज आप खातिर हम मर बानीं हो सके त जिया लेईं।' राधा क मूँड़ी एक ओर लटकि गइलि। माहुर करियई ओंठ पर हँसे लागलि। मदन चिचिआये लगलन—राधा....राधा....अवाज कमरा ले लवटि आइल। के जबाब दे। जबाब देवे वाली राधा मदन क रास्ता जाके खोजति रहे।

सिकुमार बाबू क आँखि पोछलन। फेनु कहे लगलन। ओहिजा क लोग मदन के घरे पहुँचावल काहें से कि मदन क दिमाग ओही दिन फेल हो गइल। आजु देखते बानीं गाँव की गली-गली में घूमि के राधा के गोहरावत बाड़न....घर भाई जेवन इनहीं की कमाई पर धनी भइलन स आजु बाति नइखन स पूछत।

पागल उठल। भागि चलल....हा....हा....संसार में सब धोखा....बिसवास....बाबू दूधनाथ क जय....सिपाही भइया राजनरायन भाखन द....राधा कीहें जाई लकड़ी बेचब....हा....हा....ही....ही....गावे लागल—

बाजलि बैरनि रे बाँसुरिया, टूटल सिवसंकर क ध्यान....।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वरमाला

श्री कामता प्रसाद ओझा 'दिव्य'

अन्हरिया····घोर अन्हरिया····भादो के अन्हरिया राति। छपनो कोटि बरखा जइसे सरग में छेद हो गइल होखे। कवहीं कवहीं कड़कड़ा के चमकि जाता त बुझाता जे अबकी पहाड़ के छाती जरूरे दरकि जाई। मातल पिअक्कड़ अस झूमि झूमि अन्हड़, गाछ-बिरिछि पर आपन मूँड़ी पटकत बा। जीये के आखिरी लालसा ले ले गाछ-बिरिछि लोग ममोराइ-दबोराइ के धरती तक ले चलि आवता लोग आ फेरू से सोझ होखे के कोसिस करता। जिनगी के मोह केकरा नइखे। जब ले साँस तब ले आस। जब-जब अन्हड़ तेज हो जाता, कुटिया बुझातिआ जे उखड़ि के फेंका जाई। छप्परि पर के खर-पात खड़-खड़ाए लागताड़ें स। कवही बेआकुल जंगली जीव उजबुजा के चिकरि देत बाड़ें स। किसिम किसिम के, एके में मिलल-जुलल भेयावन आवाज काँपि के अन्हड़ के पागल हँसी में अमा जात बाड़ी स। चारों ओरि भय भरि गइल बा।

अचके में खूब जोरि से गरजता जइसे असमान के जाल फाटि गइल होखे आ जाल में अतना दिन से अँटकल सब गरह-नछत्तर धरती पर गिरि के टुकी टुकी होके छितरा गइल होखें स आ एने ओने मछरी अस छटपटात होखें स। कुटिया के कोना में पोसल हरिना के बच्चा····'सुकांति' डर से चिहुँकि जाता आ सुकन्या के देंहि में एकदम सुटूकि जाता। अतना गुल-गुल अतना मोलायम सुकन्या के देंहि सिहरि सिहरि गइलि आ उनकर नींद एकदम टूटि गइलि।··बरबस ऊ सुकान्ति के गरदन सुहुरावे लागतारी। ओह! एहमें कतना सुख··एह छन के—सुख के बराबरी काठ-पथल के दसगो जिनगी भी ना करि सके। सुकन्या के मन उचटि गइल। ऊ उठि के कुटिया के दुआरी पर चलि आवतारी। अन्हड़ कम चलत बा बाकी बरखा पहिलहू से जोर हो गइल बा। रहि रहि चमकता—गरजता। अन्हरिया के चदरि पर कहीं कहीं भगजोगनी के फूल खिलि जाताड़ें स।

सुकान्ति के छूअला के सुख सुकन्या के भीतर से जात नइखे—जइसे ई सुख उनका हिरदेया में मरहम अइसन पेहम हो गइल होखे। लेकिन ईहाँ त सभ ओरि कठोरता बा, पथल के कठोरता—सुकन्या सोचली। हँ, कठोरता बा···सभ चीज में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कठोरता, जिनिगी के डेग-डेग पर सासन····आतमा पर सांसति।····सुकन्या टठा हँसतारी। उनुका हँसी से छन भरि खातिर बुझाता जइसे ओह लंगल के पता-ठठा के हंस दिहल। महरसि च्यवन के आसरम के सभ कुटिया ओह हँसी से के रहि जातारी स।

कठोरता··बारह बरस के कठोरता।····सुकन्या फेरू सोचतारी। उनका भहूँ चढ़ि जातारी स—आँखि करोध से लाल-लाल। थोरे देरि खातिर उनका बुझा कि उनकर उमिरि घटि के बारह बरिस पीछे चलि गइलि होखे। फेरू उनका जिनगी के ऊ दिन किताब के पन्ना अइसन उघरि के सोझा चलि आवता जवना उनका जिनिगी में कठोरता के ई जहर सनाइल रहे।

सोहर बरिस के राजकुमारी सुकन्या ओह दिन कतना अठान डलले अपना पिता राजा सर्याति से संगे अहेरि करे जाये खातिर। राजा सर्याति के एकलौता लइकी रही। एह से राजा के मन आखिर पसीजि गइल। लइकी अनबूझ ठहरलि--सोचि के ऊ चले के हुकुम दिहलें। रथ सजाइल, दासि के लहबरि संगे चललि। राजा सर्याति हाथी पर असवार भइलन आ पाछा उनकर लसकरि चललि। बंसत त रहबे कइल ओह दिन ओह जंगल में रितुराज के सदेह अवतार हो गइल। अहेरि के हाहाकार, हँसी-ठट्टा, गीत आ ढमका से वन के कोना-कोना गूँजि गइल। जंगल के गाँछि-बिरिछ फल-फूल पसु-परिन्दा सभ में जइसे बसन्त खातिर एगो मोह आ भीतरे-भीतर एह हलचलि एक किसिम के संका व्यापि गइल रहे। खाली तपस्वी च्यवन रिसी पर एह हल्ला गुल्ला के कवनों परभाव ना परल। ऊ पहिलहीं अस अपना धेयान में मगन रहु तपस्वी च्यवन····जीयत हड़खारि···हाथ गोड़ बुझा जइसे अलगा से जोड़ि दि गइल होखे।····सुकन्या सोचतारी आ च्यवन रिसी के ऊ रूप इयादि आवते उनक रोआँ-रोआँ खड़ा हो जात बा।

सुकन्या ओह दिन सेकरा हे सिंगार-पटार कके फूल तूरे निकललि रहीं, अके जंगल के गाँछ-बिरिछ में जइसे खाली फूले-फूल हो गइल रहे··· लाल-पीयर, गुलाबी डाढ़ि-पत्ता के नाम-निसान तक ले ना रहे। ऊ कवनों गीत गुनगुनाए लगली। कवन गीत रहे सायद बहुत मन परलो पर उनका ऊ गीत इयादि नइखे पड़ तबहीं बगल के झूर में से एगो खरहा कूदि के भागल रहे ऊ डेरा के दू-तीन पीछे हटि गइल रही। उनकर पवजेब झुनझुना गइल आ उनकर आँचर फूल डेहुँगी से अझुरा गइल रहे। ओ घरी छन भरि खातिर उनकर जीव धक दे हो गइ रहे जब ऊ च्यवन रिसीं के आवाज पहिले पहिल सुनले रही····सुकुमारी! तु हऊ····· ·सुकन्या के बुझाइल रहे जइसे आवाज कवनों झुराइल कंठ से निकल होखे। एकदम सूखल आवाज। आँचर छोड़ के ऊ घूमि के देखली। जीय हड़खारि····सिरिजना पर खाली दूगो चमकत आँखि····चमकत ना जरत आँखि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुकन्या के छन भरि काठ मारि देलसि—पूछले रही—'रांवा के हईं तपस्वी महाराज ?'

तपस्वी के ठठरी थोरे काँपिल आ एगो आवाज जइसे अपने आप निकलि आइलि—'हम तपस्वी च्यवन हईं।'

फेरु च्यवन रिसी के चेहरा के कठोरता कुछ कम हो गइल रहे जइसे पथल पर माखन पोति दिहल होखे—सुकन्या देखली आ जवाब देले रहीं—'हम राजा सर्याति के लइकी सुकन्या हईं।'

सुकन्या के रूप 'वंसत के रंग आ चारों ओरि किसिम किसिम के फूलन के गंध। च्यवन रिसी के मन के कठोरता पघिल गइलि। बुद्धि पर हिरदेया चाँप चढ़वलसि आ उनका सुकन्या खातिर मोह हो गइल—पूछले रहन 'सुन्दरी !⋯तहार रूप, तहार जवानी हमरा सूखल मन में आज रस के नदी बहा दले बा। ऊ मन, जवना के ज्ञान आ योग से हम छोड़ देले बानी, आजु तहरा रूप पर डांलि गइल। आजु हमरा बुझाइल जे हमार पिआस अबहीं खतम नइखे भइल। हमार पिआस मेंटही के चाहीं। सुन्दरी सुकन्या तूँ हमार पिआस मिटाव। तू रिसी च्यवन के आपन पति बनाव।'

ई सुनि के सुकन्या लजा गइल रही, लेकिन एकर नतीजा सोचि के उनका देंहि में आगि लागि गइल रहे—सुकन्या च्यवन रिसी के ओह दिन के बात इयादि कइके तनी गंभीर हो जातारी। मन होता कि अब एह बारे में ना सोचती। ऊ कुटिया के दुआरी पर से उठि के अपना आसन पर चलि आवतारी बाकी नींद नइखे आवत। फूही अबहिओं परता। अन्हड़-तूफान खतम हो गइल बा। कुटिया में उनका गरमी मालूम होता। थोरे देरी ले ऊ करवट बदलतारी आ आखिर में फेनु से कुटिया के दुआरि पर आके बइठि जातारी। बिचार के टूटल डोरा फेरू से जुटि जाता।

'माफ करीं, रिसिराज ! सरम के बात बा कि अतहत बड़हन ज्ञानी होके बिना हमरा भविष्य के विचार कइले रावाँ अइसन बात कहतानीं। तनी अपना देंहि के बारे में सोचीं। मन कतनों सपना देखेवाला होखे बाकी देंह में सकती ना होखे त ऊ आदमी बेपाँखि के पंछी अइसन होला जवन की असमान में उड़ला के मजा खाली अपना मन में सोचि-सोचि के लेत रहेला, उड़ि के ना। च्यवन अइसन लोक-बेद जाने वाला रिसी एतना बरिस के कठोर-तपस्या कइलो पर अपना पिआस के ना जीति सकल ?'

हँसारत के बात बा⋯आ सुकन्या ठठा के हँसले रही। सुकन्या के मन करता कि ऊ फेरू एक हाली ठठा के हँससु बाकी मन के ना जाने कवना कोना में कुछ अइसन बा कि खाली एगो लमहर साँस निकल के रहि जाता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुकन्या कुटिया के दुआरि पर से दूर तकले तेज नजरि से देखतारी ज अन्हरिया के परदा के चीरि के ऊ सभ किछु देखि लेवे के चाहत होखसु ज अन्हरिया के ओह पार रहेला। दुआरि के सोझावाला देवदार के मोटकी गाछि दूगो भगजोगनी बड़ा तेज बरतारी स जइसे च्यवन रिसी के आँखि। सुकन्या के परता — च्यवन रिसी के आँखि! अपना सँउसे तेज के अपना आँखिन्ह में उतारि क्रोध से कांपत रिसी कहले रहन....'सर्याति-पुत्री! जवानी के घमंड में च्यवन रि के अतहत बड़हन अपमान। हम छन भरि मे आकास-पाताल एक करि सकीले'। अपना करम के रेख भिटिकारे क कोसिस मति कर। तहरा हमार पत्नी ब के परी।'

सुकन्या के ओकाई आ गइल रहे, ऊ जोर से थूकले रही—आक्....थू क्....थू। आ अपना रावटी में लवटि आइल रही।

एकरा बाद सुकन्या के अपना बाप, राजा सर्याति के चेहरा इयादि पर अहेरि पर आइल सभ दास-दासी, अमला-फैला आ सिपाही-सागिर्द लोग के गरसि ले ले रहे। राति-दिन के बाप-माई आ जिअनी-सुअनी के रोअला-कलपला राजा सर्याति एकदम निरास आ दुखी हो चुकल रहन। सुकन्या के ऊ छन इ परता त उनका आँखि में से ना मालूम कब से बटोराइल लोर ढरकि जाता, उनकर बाप एकदम दीन-हीन होके सुकन्या से रिसी के संगे बिआह कइ के परजा दुख दूरि करे के कहले रहन। सुकन्या पिता के बात चुप-चाप मानि ले ले रही परजा के भलाई खातिर च्यवन रिसी के पत्नी बनि गइल रही। दस के भलाई खा —परजा के सुख-सान्ति खातिर अपना देंहि के बलिदान जवानी के हवन....अपना बिचार से सुकन्या के हिरदया में बहुत सुख मिलता। ऊ सुकांति के गरदनि दुलार से हाथ फेरे लागतारी। फेरू ना मालूम नींद कब उनका के अपना अंक में भरि लेत बिया।

च्यवन रिसी खूब भिनुसहरे पूजा पाठ करसु। सुकन्या के पूजा के सरजाम रातिए में ठीक क के राखे के परे। रिसी पूजा वाली कुटिया में सुतसु सुकन्या बगलवाली कुटिया में जवना में घर गिरहस्थी के दोसर जरूरी सर धइल रहत रहे। ओह दिन सुकन्या बहुत राति गिरला ले जागल रही एह से उन नींद ठीक बेरा पर ना टूटलि। रिसी जब नहा-धोके अइलें आ पूजा वाला घ ढुकलें त देखताड़े कि हवन-कुंड आ वेदी लिपाइल तक ले नइखे। ऊ करोध से आ चिचिआइ के बोललें—'सुकन्या!' लेकिन सुकन्या त ओंघाइल बाड़ी। रिसी पुकार सुनसान जंगल में गूंजि के रहि जात बिया। हाथ में कमंडल ले ले आ बूत भइल च्यवन रिसी लमहर लमहर डंग डालत सुकन्या के कुटिया का ओरि आधताड़ें। खंड़ाऊँ के चटर चटर आवाज सँउसे जंगल में भय भरि देता। ऊ सु के कुटिया के दरवाजा जोर से भीतर ढकेलि देताड़ें आ अन्दर घुसि के खूब जो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुकारताड़ें....'सुकन्या !' दरवाजा के बायाँ कोना में सुकुन्या निरभेद सूतल बाड़ी। उनकर एगो हाथ सुकांति के गरदन पर बा। रिसी के जइसे काठ मारि जाता। सुकन्या के अइसन रूप, अइसन कोमलता ऊ आजु तकले ना देखलें। जइसे कवनों अनबूझ बालक निरभेद सूतल होखे। भरल देंहि, मुदाइल पलक, ओठ मुसुकात आ लिलार पर केस के दू-चारि गो घुघुरिआइल लट। रिसी क मन सिहिरि जाता। ऊ निहुरि के अपना एगो अँगुरी से सुकन्या के लिलार पर के लट सोझ करताड़ें आ एकदम मद्धिम आवाज में नेह-भरल बोली में कहताड़ें—'सुकन्या ?' बाकी ओही घरी उनका आपन बुढ़ाइल—देंहि आ सुकन्या के जवानी मन परि जात बा। आजु से बारह बरिस पहिले सुकन्या कहले रहे—'सपना मन देखेला, देंहि ना देख।' रिसी उदास मन से अपना कुटिया में लवटि आवत बाड़ें। थकल, गते-गते आ चुपचाप।

ओह दिन पूजा में उनकर मन नइखे जमत आ एह घटना के बाद च्यवन रिसी हमेसा कुछ-न-कुछ उदास रहे लागताड़ें। अब ऊ सुकन्या के कवनों गलती पर डाँटत-फटकारत नइखन। विद्या-वुद्धि ओसही रहता लेकिन अब ऊ अपना के बड़ा हीन समुझे लागताड़े। सुकन्या के देखि के उनका मन में अनेरे एगो भय समा जाता जइसे चोरी कइले होखसु। सुकन्या के पति के सेवा में कवनों कमी नइखे आवे पावत सेवा—बे लोभ—लालच के—बेइच्छा अनिच्छा के।

कई महीना बीत जाता आ बे बोलवले तेरहवाँ बसंत आ धमकता। सुकन्या के मन में वसंत से अब कवनों प्रीति नइखे। सभ रितु अब उनका खातिर समान हो गइल बा। जइसे मसीन में तेल-पानी डालि दिया आ ऊ आपन काम करत रहे बिना कवनों फिकिर चिंता के। बाकी जब जब ऊ ताल में पानी ले आवे जासु आ कोइलरि के कूक सुना त उनकर करेज जइसे बाहर निकलि आवे। ऊ थोरे देरि किनारा बइठि के ईहे सोचत रहसु कि कोइलरि के बोली एक हाली अवरू सुनि लीं त पानी लेके जाईं। आजु फेरू सुकन्या ताल पर गइल बाड़ी। काफी देरी हो गइल आ सुकन्या ना लवटली। च्यवन जी के चिंता बढ़ति जाति बिया। ऊ आपन कमंडल उठावताड़ें आ ताल की ओरि चलि देत बाड़ें। ताल से कुछ दूरी पर रिसी का एगो मरदानी आवाज सुनाता—

'हमार नाँव अस्विनी कुमार रेवन्त ह। सुकन्या तहार सुन्नर रूप आ त्याग के आगि में तपल जवानी देखि के हम ईहाँ आइल बानी। हमरो मन में ओइसने पिआस बा जइसन पिआस से तूँ पिछला बारह बरिस से तड़फत बाड़ू।' रेवन्त दू-चारि डेग सुकन्या के ओरि बढ़ि आवताड़ें।

च्यवन रिसी झटके झाड़ी के अलता लुका जाताड़ें।

'रउरी बात में सच्चाई जरूर बा लेकिन, हम च्यवन-पत्नी सुकन्या हईं। पति से धोखा....माफ करीं। सुकन्या कहतारी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'हूँः जानतानी तू च्यवन जी के मेहरारू हऊ, लेकिन च्यवन····जीअत हड़खारि··· ऊ मेहरारू आ जवान मेहरारू राखे के अधिकारी नइखन लोक वेद से भी नइखन।'

रेवन्त के बात सुनि के सुकन्या के मन मिरगी अस नाचि जाता। ऊ अपना पीर के समेटि के कहतारी—'अगर हमार पति च्यवन आजु जवान रहितें त तहार अइसन कहे के हिम्मति ना परित। तू उनका के बूढ़ आ अब्बर जानि के हमरा से ई बात कहताड़।' सुकन्या के आँखि में लोर उतरा जाता।

रेवन्त कुछ मद्धिम परि जाताड़ें फेरु नरम आवाज में बोलताड़ें—"सुकन्या जी रोईं मति! एह बात के हम रावाँ से छिपाइबि ना कि हमरा रावाँ से प्रेम हो गइल बा। हम रावाँ के आपन बनावे के चाहत बानी आ रावाँ खातिर हम सब कुछ दाँव पर लगावे के तइआर बानीं।' रेवन्त आगे कहताड़ें—'रावाँ तकलीफ मति मानी त हम एगो बात कहीं। हम च्यवन रिसी के जवान बनावे के दवाई जानत बानीं आ हम उनका के फेरू से जवान बना देबि, लेकिन एगो करार करीं।'

सुकन्या के चेहरा अहगरि के चमकि जाता। ऊ जल्दी से कहतारी—'बताईं हमरा पति के जवानी कइसे लउटी। हम राउर बड़ा उपकार मानबि।'

रेवन्त के चेहरा पर कुछ कठोरता आ जाता, कहताड़ें—'हमार सर्त ईहे बा कि जब च्यवन रिसी जवान हो जइहें त रावाँ च्यवन चाहे रेवन्त दूनों आदिमी में से केहू एक के बने के परी। बोलीं रावाँ मंजूर बा?'

सुकन्या हुँकारी में गरदन हिला देतारी। झाड़ी के अलोता च्यवन रिसी के बुढ़ाइल आँखि में से दू ठोप लोर घुरचिआइल गाल आ लमहर लमहर सनई अस दाढ़ी के बार पर से टघरि के करील के पात पर टप-टप गिरि परता।

सुकन्या रेवन्त के संगे ले के आसरम में लवटि आवतारी। थोरहीं पीछे च्यवन रिसी भी चहुँपताड़ें। सुकन्या रेवन्त के रिसी से जान-पहिचान करावतारी। रेवन्त रिसी के ओह बन में के एगो पोखरा में नहाए के राइ देताड़ें जवना में नहइला से बुढ़ापा जवानी में बदलि जात रहे।

वेरा ढरि गइल बा। रेवन्त रिसी के लेके ओह पोखरा पर जाताड़ें। कुटिया के आँगन में कुस आसन पर बइठलि सुकन्या सोचतारी—आखिर दुख के अन्त भइल। अच्छा मोका बा रिसी के, एह आसरम के कठोरता से छुट्टी ले लवे के चाहीं। इहे जिनिगी के कुछ मोल नइखे। मोल बा ज्ञान के, तपस्या के, आतमा के सुखवला के, सरीर के साँसति देला के! रेवन्त कतना नेही बा, कतना दिलदार आ होसिला वाला। लेकिन····लेकिन····रिसी····बारह बरिस····साँझि-सवेरे····जेकरा हवन-कुंड के राख फेंकत फुल तूरत समाधि साफ करत हो गइल····ना····ना····रिसी के पथल के करेजा में भी एगो मूरति बिआ····जरूर बिआ····अनगढ़ मूरति—सरूपहीन। सुकन्या निर्णय नइखीं करि सकत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रेवन्त आ नवजवान च्यवन पोखरा से लवटि के आसरम के आँगन में खड़ा बा लोग। दूनों एक दोसर से बढ़ि के सुन्नर गठल देंहि आ चमकत रंग! जवानी कूटि-कूटि के भरल बा।

रेवन्त कहताड़ें—'सुकन्या! अब हमनी में से केहू एक आदमी के गरदन मे वरमाला डालि द।'

जवान तपस्वी च्यवन के कठोरता खतम हो गइल बा आ उनका सुकन्या के आतमा में टीसत बारह बरिस के पुरान घाव के अन्दाज लागि चुकल बा।' 'सुकन्या! बदला लेवे के मोका आ पहुँचल बा। चुकिह जनि'—रिसी दरद में डूबल आवाज में कहताड़े।

सुकन्या एक बेरि रेवन्त का ओरि आ फेरू छन भरि रिसी का ओरि देखतारी आ बे सोचले समझले वरमाला च्यवन रिसी के पहिरा के उनका छाती पर आपन गरदन ध देतारी।

चक्का डूबि रहल बा। सँउसे जंगल लाल हो गइल बा। आ चिरई चहकि रहल बाड़ी स।

× × ×

आसरम से पच्छिम, जेने अकास देवदार के पुलुई पर उतरि आवेला, रेवन्त धीरे-धीरे चलल जात बाड़ें आ उनका संगे संगे चललि जात बिआ उनकर परछाहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खैरा पीपर कबहूँ ना डोले

●

'विधुर'

●

'उहुँ ! घर के रहनि देखि के पेट में पकला हो जात बाटे। बैल खूँटा प
आखुर खाँचत बाड़े स आ दुआर पर केवनों के पते नइखे। अरे ! केवनों बाड़ स
रे ! सीसरना !' भीखू बाबू जोर से नटई फारि के चिचिअइले।

'लउकत नइखे जे बैल खूँटा पर आखुर खँचले बाड़ स। जे हो के विअइ
ओही के खाँड़ा बरी। ब्राह रे !'

'गाइन के लेहना परल ह किनारे सीसरना !' सूखू बाबू पूछले।

'अबहीं ना।'

'काहें ?'

'खिआले ना परल ह।'

'बाह रे ! खूब तहार खिआल बा। जल्दी निकाल।'

'ओकर दोस ना, अइसन जबने आइल बाटे। बिना मतलब केहू-केहू के पूछ
नइखे। उहे जब दूध देवे लगिहें स त दिनभर में तीनि हाला खरी आ भूसा के सा
गोताई आ आजु एको हाला के ठेकान नइखे।' भीखू बाबू गुड़गुड़ी मुँह में से निका
के धुआँ आकास का ओर फेंकि के कहले।

'ई काम नीमन नइखे नूँ भीखे भइया, खाले में दूध होला, थान में ना। देहि
में दमे ना रही त कहाँ से दूध देई। सुखू बाबू कुछ गम्भीर होके कहले।

'हँ, त एतना सभको बूझ नइखे नूँ। काम हो गइल सुधि बिसरि गइलि।
देखेल, जब चुनाव आवे ला गाँवन के गली खंचा जाली स आ दुइए दिन के
फेनु केहू के पता ना लागेला। सभ मतलवे के संगी बा।' भीखू बाबू कहले।

'अच्छा; अब उन्हनियों के बहरिआ दे। खाँचति होइहें स। सुनतारे !' सु
बाबू कहले।

'अच्छा।'

सीसरन गाइन के बहरा निकाले लगले। ओने कहाँ—रे ! एके बेर भागि
ले ले वा का ए भाई !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हो ! हो !! हो !!!

भीखू बाबू के दुआर पर एक त बहरवारा परेला दूसरे आ एतना पंचमीलित आदमी हवे कि हरि घरी दस-पाँच आदमी घेरले रहेला। भीखू बाबू जइसे पोथी बन कके उठले कि छेदी खटिया पर बइठि के कहले, 'हूँ, जहाँ गइली डाढ़ो रानी, तहाँ परल पत्थल पानी। हमनी का इहाँ किहें अइलीं जा आ इहाँ का का जानी कहाँ चललीं।'

'कहीं नइखीं जात, छेदी भइया, बइठ अवते बानीं।....सीसरना !'

'का मालिक ?'

'एक चिलमि तमाखू बोझिहें त।'

सीसरन तमाखू चढ़ा के दिहलस। छेदी बाबू एक दम खींचि के धुआँ आकास का ओर फेंकि के कहले—'सनिचरा के बांचे के केवनों भरोस नइखे। मुँह मेंहे खून फेंकत बा।'

'ऐं....? का भइल बा !' भीखू बाबू चकचिहा के पूछले।

'रउआ अबहीं नइखीं जानत !'

'ना, हमरा त कुछु नइखे मालूम।'

'काल्ह पहरन जमि के मारि भइलि हा। दूनो ओर ले चार-चार गो लास गिरलि बाड़ीस। सनिचरा का देहि मे त भाला लगला के ठंकाने नइखे। देह छेदा, के चलनी लेखा हो गइलि बा !'

'काहें खातिर झगड़ा भइल हा ?'

'काहे खातिर पूछले बानीं। जब बिनास के घरी आवेले त ईहे कुल्हि नू होला। जइसे जनात बा जे सभ केहू कुकुर के माँस खा लेले बा। सभकर सान सेंगरे पर चलत बा। जेने देखीं ओनिए, मारि, झगड़ा।' छेदी बाबू नाकि सिकुड़ा के कहले।

'मर-मोकदिमा भइलि बा ?' भीखू बाबू पूछले।

'मर-मोकदिमा के त अबहीं पता नइखे लागत।'

'मोकदिमा भइलि बा। दू-दू हजार दूनो गोल से थानादार साहब गना ले ले बाड़ें।' घसेटू बीचे ले बाति काटि के कहले।

'काल्हि मालगुजारी देबे खातिर त बीस गो रुपया घर में रहबे ना कइल, आ आजु दू हजार रुपया कहाँ से मिलि गइल ?' छेदी बाबू एतराज कइले।

'दू बिगहा खेत केवाला नूँ कइले हा। अउरी का घरे रुपया गाड़ल बा।' घसेटू जबाब दिहले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'हूँ; ई त हमहूँ सुनलीं हँ जे जमुनी तर वाला दू बिगहा खेत जमुना साहु ... हजार रूपये बिगहा लिआइल ह।' बेंचू घसेटू बाबू का बात के समरथन कइले।

'एह से का फायदा बा। ई सपूत ना, कपूत के काम ह। ईहे नूँ कहल जा... कि बाप लवले बारी, पूत कइलं खैकारी। केतना भीरि-कुभीरि सहि के बाप-दा... बँचा ले आइल आ ई लोग····छि···। चिरुआ भर पानी में डूबि मरे के चाहीं।' भीखू बाबू ओठ बिजुका के कहलें।

'उन्हनीं का केवनों गतरी लाज नइखे जी! ऊ त एही में इज्जति समुझ... बाड़े स। नइखीं सुनले 'वेहाया का देही रूख जामल, ओकरा लेखे छाँहें बा।' घ... कहले।

'हूँ, ऊहे हाल बा जे कुल्हि देहि खा गइलसि तवो मूड़ी के झाँटल ना छूटल।'

'का रवों, हेह दिन आइल आ अबहीं पनियो ना पिअलीं, एही से नूँ ... घरी सरदी खोंखी भइलि रहेले। जूनि पर नहा खा के दिनभर बतिआइल करतीं।' छूटन के माई बीचे में बाति काटि के कहली।

'······।' भीखू बाबू हूँ-ना कुछु ना कहले।

'तबियत ठीक नइखे का जी?'

'ठीक बा।'

'तब काहे कपारे हाथ देले बानीं?'

'का बताईं? गाँव के रहनि देखि के मन थोर हो जात बाटे। खाइल पि... कुछू नीक नइखे लागत। दिन रात लड़ाई, झगड़ा। बाप रे बाप! मन अउँ... जात बा।'

'ठीके कहत बानीं। मरद-मेहरारु केहू हारे हूँसे लायक नइखे। हम त ए... कुल्हि का मारे केहू का घरे-दुआरे ना जाइला। काल्हि फेंकू बो भउजी के कई... जोर आइल त गइलीं। दू-तीन गो मेहरारु छाती पीटि-पीटि के झगड़ा करत रह... स; आ गाँव भर के मरद-मेहरारु बिटोरा के तमासा देखत रहे। देखि क लाजन मू... गड़ा गइल। का गाँव बाड़े स? ई आदिमी बाड़ स कि जनावर?

'जेवन कुछु होखो जे जहाँ रहेला ओही के लीपि पोति के चिक्कन करे... चाहीं।' भीखू बाबू कहले।

'एकर का मतलब?'

'एकर मतलब कि गाँवन के सुधार करे के चाहीं। सभ के बटोरि के समु... बुझावे के चाहीं। गढ़ला से लकड़ियो चिक्कन हो जाला त आदमी काहें ना सुधरी।'

'आ दूर करीं! ओह बानरन से के देहि नोचवावे जाई।' छूटन के माई ... चमका के कहली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'हमार त ईहे बिचार बा कि गाँव भर के बटोरि के कहीं कि रउवा सभ आपन चाल बदलीं।'

'हँ भइया, ईहे हमहूँ चाहत बानीं।' सुखू भीखू बाबू का सुर में सुर मिला के कहले।

'ठीके बा हमहूँ ईहे राइ देत बानीं। सभके बटोरि के आपन पेट भरलीं।'

'सीसरना।'

'हँ मालिक ?'

'जो सभका के कहि आउ त।'

'केवना बेरा के कहि देबि बाबू जी !' सीसरना भीखू बाबू का ओर ताकि के पूछलसि।

'कहि दीहे कि सभ खा-पी के सेकराहे चलि आई।'

'नान्हें बड़ें सभे के कहि देब नूँ ?'

'हँ. हँ, देखि के। एको आदमी ना छूटे पावे।'

'अच्छा।'

दुपहर होत-होत सभ केहू मदरसा पर बिटोरा गइल। मीठू खंखरि के पूछले 'काहे खातिर बटोरली हँ भीखू बाबू।'

'भीखू बाबू दसो नहं जोरि के—कहले हमार ईहे साध बा कि हमनी का मिलि जुलि के रहीं जा। मारि झगड़ा से केवनो फायदा नइखे। खाली नोकसाने बा। ई त सुनलहीं होइबि सभे कि 'जहाँ सुमति तहाँ सम्पति नाना, जहाँ कुमति तहँ बिपत्ति निधाना।'

'ई कवन जबून कहत बानीं। दुनियाँ कहाँ से कहाँ गइलि आ ई गाँव····।' मीठू एगो लमहर साँस लेके कहले।

'काहो टहलू भइया भीखू बाबू जवन कहत बाड़नि; तवन सुनत बाड़ नूँ ?'

'हँ-हँ, हमरा मंजूर बा, जेवन कहीं सभे !'

'अच्छा, त आजु से अब रउवा सभ आपस मे मिलि-जुलि के रहीं। ई सभका मंजूर बा नूँ ?' भीखू बाबू जोर से चिचिअइले।

'हँ-हँ, हँ-हँ।' बहुत आदमी एके बेर चिचिआइल।

'अच्छा; अब चले के। हमार दुआर सूने बा। बैल ताकत होइहें स।' मीठू कहि के चलि दीहले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'अच्छा, चलीं सभे, बाकिर हमरा बाति पर धियान देइबि सभे ! भुलाइबि मति ।'

सभ अपना-अपना घरे चलि गइल । ओकरा तीन-चार दिन का बाद सुखू बाबू सरेहि में से लवटि के कहले, 'आजु त कई आदमी के खेत उखारल बाटे ।'

'हम ना कहत रहलीं जे ई बानर हवे स । इन्हनीं का ना बदलिहें स ।' छोटन के माई हंसि के कहली ।

'का कहति बाड़ू भउजी, सचहूं के ई खैरा पीपर बाड़न स ।' सुखू बाबू कहले ।

'एकर का मतलब ?; भीखू बाबू पूछले ।

'नइखीं सुनले जे 'वाक डोले चकबमक डोले; खैरा पीपर कबहूं ना डोले ।' गाँव ऊहे खैरा पीपर हवे स । चाहे केवनों हवा बहो, उन्हनीं का हिले-डुले के नइखे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झिरिहिरी

डा० विवेकी राय

झिरिहिरी खातिर लेंहड़ा भर बटुराइल नाव आगे बढ़ली स। बाढ़ि का राहत कार्य में सरकार से मिलल जवन बड़की पटहुआ नाव रहे ओह पर 'दुलहा' रहे ओह से सभका से आगे कर दीहल गइल। ओह पर दू जोड़ी पेट्रोमेक्स बरत रहे। खूब अंजोर भइल रहे जवना में बुढऊ राम बिलास बाबा साफे चिन्हात रहलन कि साफा बन्हले समधी बनल बाड़न। देखला पर केतना नीक लागे ?

अइसन हँसी-खुशी क ई दिन गाँव में आ गइल। केहू सोचलहूँ ना होई कि अइसन होई। अब त अइसन हो गइल कि सनातन से चलि आइल झिरिहिरी के जलसा लोगन का भिसभोर परि गइल। तब कइसे एह सत्यानाशी बाढ़ि में फेरु नया सिरे ई उपटि गइल ? कठिन कहानी बा। कइसे लोग बिलास बाबा के राजी कर लिहले ? कहाउति कहल जाले कि बे झगरु के झूमरि ना होई। तवन बाति ठीके बा। बिना बिलास बाबा के के भूप बा जे झिरिहिरी के ठाट ठटी ? के बा जे समधी बनित ? अइसना बेहाल में सिवनइत गाँव शिवपुर में के एह जोम से बरात ले जाइत ? आ के ओह गाँव का सीनियर किसान चउधुरी काली बाबू का दुअरा का सोझा नाव भिड़ा के फटही-फटही गारी देइत ? दूनों गाँव के लोग अलगा-अलगा कुलगोत्र के हवन आ रिश्तेदार परेलन एह से बोली-बानी आ हँसी-दिलग्गी चलेले बाकी एह रूप में हंगामा बान्हि के मुँह खोले के हिम्मति भला अउरी के करित ? लोग ठीके कहेलन कि झिरिहिरी के जलसा माने बिलास बाबा।

बाकी ई बाढ़ि त अस मरलसि कि चँपि के बिलास बाबा एकदम सन्न हो गइलन। अकेले गुममुम पीपर का फेड़तर बँसखट डालि के ढहल रहेलन। अइसन जनाला कि भीतर से हीर बुझा गइल बा। केहू कुछु कहेला त संक्षेप में उत्तर देलन कि 'अब का करीं ? कुल्हि काम खतम हो गइल।' फेरु चुप हो जालन। ओह चुप का गहिराई में कुल्हि बात बूड़ि जाली स। ओह चुप में खेत-खरिहान, लोग बाग, आसरा-निआसरा सभ किछु बूड़ि जाला। सचहूँ किसान के करेजा बहुत पोढ़ होला। सरबस गँवा के ऊ जीअत रहेला। अब ईहे देखल जाद ! अब त थारी आगे परोसा गइलि रहलि ह। अब धान छूटि गइल रहल ह। कुआरी गंध फूटि-फइलि रहलि ह। अगहनिया रेंड़ागइलि रहलि ह। दइब खूब देले रहलन ह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हूँ भाई; कहल जात रहल ह कि खूब देले बाड़न। जहान बसि गइल। परा-
परानी के भागि जागल। जागलि गाँव के सूतलि किस्मत। अब गनल-गनावल दि
बा। अंगुरी पर गनि ल। उत्तरा, हथिया फेरु चित्रा। उत्तरा का बाद बर
उत्तरायन, शरद ऋतु शुरू, अति सुन्दर, सुहासित। बोले बजरंग बली की जै! अ
जागलि रामलीला के परती। जागलि सीवान के अनजही बखरी........वाले
अफसोस। ऊ ना जागलि। उलटे पानी क कफन ओढ़ि के सूति गइलि। सरक
गारक हो गइल।...उत्तरा में बूँदाबाँदी सुरु भइलि त लोग सोचलि कि ई सां
बिहान के अंबर-डबर ह। बाकी जब गहिरा के पानी बजड़ गइल तब माथा ठनक
कहीं भट्ठा बइठि मति जाव! बाप रे बाप, नौ दिन—नौ राति ऊ बरखा, ऊ बर
कि ठेलि दीहलसि नाकि तलक ले। अब गाँव ऊभ-चूभ में परल। धान का ऊ
पोरसा-भर पानी। बौनी पद्मा-जया का कपार पर लाठी भर बढ़ियाइल पानी
रहरि, तिल आ पटुआ क पता कहाँ बा? जुआर का रेंड़ा में पानी पइठि गइल
पानी खेत-पात खाके गाँव में ढुकल। पहिले धक्का में ढर जना के पाटि दीहल
घर के, घोंसला के! मचलि त्राहि-त्राहि।

राम बिलास बाबा कुछ भागिगर बाड़न। उनकर हवेली बा त नदी
तीरे बाकी अरार बहुत ऊँच बा। उनकरा घर का पुश्ता पर नदी के फेंफा
धारि आ-आ के बजड़े ले। बाकी बेकार, लट्ठा भरि नीचे पोखता पुश्ता जुनुब
खाला। बाबा के ढहले वा ई फसली नागहानी। गांव का इतिहास मे इहो ए
नइये बाति बा कि बिलास बाबा के दुख बिआपि गइल बा। लोग त सोचेला
ई मनमउजी आ दुखरा-धन्धा से नियारे शुद्ध हुस्नीजीव हवन। जोतला खेत
कबो लात ना डललन। माघ में कबो घासि ले आवे के सउख जागल त वरिया
जोम में घर से बहरा भइलन। दामी अंगरेजी बूट, टटके पालिस कइल, सेनगुप्ता
मेंही धोती, कुल्हि अउअल लम्मर के। गदह पचीसी में एक बेर कलकत्ता भागि
गइल रहलन आ तब क सिअवावल एगो खूबसूरत करिया बास्केट बा। घासि
चललन त कोटि का नीचे ओढ़ू के डटि लीहलन। का सीधे खेत पर चोंहपि गइलन
ना, अड्-अड्डा दम लागत गइल, नंगा-निहगा लोगन के सुर्ती-बीड़ी ब
गइलि। तिजहरिया टरत में जब सायकिल का कॅरियर पर गलाबंद में चारि
गदरा बान्हि के धइले लवटल तले गाँव में चारू ओरि चर्चा लायक ई बाति
गइलि रहे।

तब गाँव में खाली बबवे का पास सायकिल रहे आ जवना के नाम 'पौं
ह ऊ कुल्हिये उनकरा पास रहे। कातिक आ चइत का भीरि वाला दिनन में
निस राति ले दुआर पर तबला ठनकत रहे। भजन, कीर्तन गायन, डोल, फगु
आ जन्माष्टिमी खातिर पागल! एक से एक सनकी आ अक्खड़ गवैया दुआर पर प
बाड़न। भाँग-बदाम आ नसा-पानी चलत बा, मजमा जमल बा, दुआर हँसत बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बस, केहू रोवत बा त चरन पर चुपचाप खड़ा दू जोड़ी बैल आ गाई महरानी ! अच्छा अच्छा दामी माल ले आके चरवाह पर छोड़ि दीहल जाई। ऐक पानी चालि के बैल बंगड़ हो जइहें स। चढ़ते असाढ़ मुसहुल खाली हो जाई। सावन-भादो में मची चिल्ल-फिल्ल। चरवाह गली-गली मँगनी भूसा के जोगाड़ में घूमे लागी। ओने मालिक झिरिहिरी के 'जोगाड़ा' नाधे लगिहें। आसपास का गाँवन में एगो कहाउति बहुत चलेले—

'रामपुर सनकी गावे भादो में फगुआ।
बाढ़ि का झिरिहिरी में बिलास बाबा अगुआ।'

जइसहीं रामपुर गाँव के बाढ़ि के पानी चारु ओरि से घरि लेला तइसहीं झिरिहिरी के नौका-बिहार गाँव वालन का भीतर कसमसा के झुरुके लागेला। अइसने लोगन के संस्कार हो गइल बा। बाढ़ि का बरबादी के झंखत कतहीं केहू लउकि गइल त बिलास बाबा दुलारझिड़की देवे लगिहें, 'धत्त् मरदवा की नाहीं, जिमदार जाति कतहीं मन थोर करेले ? फसिल गइलि त का भइल ? खेत बनल बा त फेरु फसिल आई, सूदि-मूर जोरि के आई, देखिह रेखा खींचि के कहत बानी ! चल गावल बजावल जाव नाव जुटायल जव, धन्नि भाग कि गंगिया दुआर पर आइलि !'

बाकी एह साल के बाढ़ि क बाति कुछ अउर बा। ई त धइके तूरि देले बा। असल में पछिला सात-आठ बरिस से बड़ बाढ़ि ना आइलि आ एह बीच गांव केतना-बदलि गइल। बबओ बहुत बदलल। केहू सोचियो ना सकेला कि सगरे जिनिगी मउज-मस्ती में काटि के जब लइका कमासुत भइले स त एह चौथापन मे एह तरे माया में फँसि जइहें। राति दिन हाय गेहूँ, हाय धान कइले रहत बाड़न। दुआर पर के रहाइसि छूटि गइलि। गाँव का बहरी अलग पंपिंग सेट बा आ ओही जगह उनकर चिसल-पिटल तेजंसी काया डोलति रहेले। अब खुरपा हाथ से कबो नइखे छूटति। हरमुनिया का रीड पर नाचे वाली, सरगम काढ़े वाली, तबला से टाँकी निकाले वाली अंगुरी खेत से घासि काढे में लागलि बा। अब नयकी खेती का संगीत पें डूबलि बा। भुलाइल-भटकल कबो सुधि आइलि त साज-बाज पर से गर्दा झारि-पोंछि दीहलन बस। अइसन भइल कि एह पट्टी से मनसायन बिला गइल। आ ई कहल जा सकेला कि सात पट्टी वाला गाँव रामपुर में कतहीं अब गावे-बजावे के उछाह ना-रहि गइल। पता ना का हो गइल ? पैसा बढ़ल बा आ अउँजाहटि बढ़लि बा। उदासी आके जमि गइलि बा। बहुत जोर पर बा आपसी तनाव आ मनमुटाव। साँझ के गवनई गाँव से बिदा हो गइलि। चौपाल में सुनहट छवले रहेला, लोग धीरे-धीरे भुला गइल कि बिलास बाबा जिअत बाड़न। अइसना हालि में आ गइलि असो फेरु ई महाबाढ़ि। जब एह बाढ़ि का पानी में बूड़ि के गाँव क चिन्हारी मेटा गइलि तब जरूर बिलास बाबा होस परलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त का हवे रामपुर गाँव के ऊ चिन्हारी ? आ चारू ओरि से बूड़ि के एह सागु का बीचे टापू का छत्ता नियर उतराइल एह गाँव के कवन चिन्हारी बाँचलि बा अब त बस एगही चिन्हारी बाकी बाँचलि बा कि कवनो दिन राति में झिरिहिरी जलूस लिहले चढ़ि चलल जाव शिवपुर गाँव में। नावन के जगरमगर जमघट लागे गाना गूँजे लागो आ चिहुँकि उठसु सिवनइत गाँवन के लोग, कहे लागसु, 'अरे देख जा भाई, फेरु एह साल रामपुरहवा सनकि गइलन स !' बाकी गाँव अलग परल बा। एह सनक के अगुआ ढहि गइल बा। ओके के उठाओ ? आठ बिगहा नयक खेती के धान कसि के लागल रहल ह। ई कम ना होला। चकबन्दी में उनका ई अठबिगहिया चक बनल त सगरे गाँव थू-थू करे लागल। गाँव के एगो चलनसार सज्जन बिलास बाबा के धकिया के एइ उसरा-टाँड़ पर बइठा दीहलन। एक गवैया, दूसरे गंजेड़ी आ तवनो पर किसान सरदार ! अपील का जगह सन्तोष क लीहलन। कहलन, पैदावार माटी पर ना होले लिलार पर होले। फेरू नयी खे आइलि आ लइका लायक निकललन स त सचहूँ जिमदार के लिलार चमके लागल खेत में हून बरिसे लागल। फेरू एह साल त गजब पैदावार उपटलि। अपना हू खाद-पानी देके भरपूर पसेवा भइलि। किसिम-किसिम के दवाई से ओकर जत कइल गइल। एक-एक कियारी के नाहीं, एक-एक गो पौधन के समाचार बिला बाबा से सुनि लेईं। बाकी कुल्हि अकारथ गइल। तब का कहि के अब उनके उकसावो ? उमिरि में सभका से जेठ बाड़न। 'धत्त मरदवा' का भाखा में उनका के केहू लेलकारे वाला नइखे। बाकी एक दिन राय बात कइ के कुछु लोग जु कि छेड़ल जाव।

बाढ़ि अब सम पर आ गइलि रहे। पानी न घटत रहे आ न बढ़त रहे बरखा बन्द हो गइलि रहे ! अब केहू का कच्चा घर के चरमरा के बइठे के खपरेल के खड़खड़ाये-भड़भड़ाये के आ दुखिया लोगन का छाति पीटि के रावे आवाज थम्हि गइलि रहे। दिन में माहुर घाम उगे लागल रहे। बाकी राति अँजोरिया बहुते भकसावन लागे। मामूली बाढ़ि रहिति त अँजोरिया राति के झुर पुरवइया में बिलास बाबा का दुआर के रौनक कुछु अउरे रहिति। बाकी अब एह फँफाइल पानी का झिलमिल सुघराई पर केहू के धियाने नइखे जात। लोग दुख अंगेजि लेले बा बाकी चेहरा बहुत मुरझाइल सुखाइल बा। पानी में कई-कई दि से बूड़ि-बूड़ि के चारे छाने के परल ह। एह बेढंगा घाम-पानी के खाके देहि झाँ हो गइलि बा। लोग हँसत-बोलत जरुर बा बाकी पानी में घँरइला के साँ अइसनि कड़ेर बाटे कि बोली थरथरा जाति बा। अइसना हालि में बिलास बा के छेड़ल कठिन रहे। लोग कुछऊ कहे, कवनो जबाव ना। बबवा गूंगी साधि गमछा ओढ़ले खटिया पर सुतले-सुतल सुर्ती-चूना के बटुआ लोगन के थम्हा देत बा छेड़े वाला लोगन के मन सई मुट्ठी के एक मुट्ठी हो गइल। अब का कहि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाति उठावल जाव ? उनकरा से बतकही के कवनो गँव-धान ना बइठल त लोग अपने में हारि के गाँव-घर के चरचा करे लगलन ।

एकजना सुनवलन कि कइसे दीहल आ उनका बेटा का बीचे ठेंगा चले लागल ह। दीहल के बेजाँइ बस एतने रहल ह कि गंगिया का दुआर पर आ गइला से खुशी मनावत रहल ह। दूसर जना सुनवलन कि कईसे धान बहि गइला से एने किरपलवा का करिहाइ के डोरा टूटि गइल बा आ ओने ओकर पट्टीदार अगरा के लमहर-लमहर बाति हाँकत बाड़न। तीसर जना सुनवलन कि खर्ची के तंगी में रामधारी पांडे बखारि खोलि के बोआ के अनाज त गाजर-मुरई का भावे बेचि दीहलन ह। चउथ जना कोनिला आम पर फों-फों करत सांप के हालि सुना के कहलन कि कइसे अब पतई-पतई पर साँप-बिच्छी देखि के रोवाँ गनगना जात बा। बाकी झिरिहिरी के बात केह ना उठावल। कुछ देर ले चुप्पी परल रहे। फेरु एक बेरि सुर्ती ठोंकइलि आ गत्ते-गत्ते लोग जइसे आइल रहे ओइसे टसकि गइल। बाबा ओइसहीं गुमसुम बसखट पर परल रहलन।

दूसरा दिने पता ना का बाति रहे कि शिपुवर गाँव में साँझि होते रेकार्डिंग शुरु हो गइलि। बाढ़ि आइल पानी का छाती पर लता मंगेशकर आ मुकेशर गूँजि के हलछलाये लगलन। रामपुर गाँव के कान खड़ा हो गइल। बिलास बाबा का दुआरा जमल बइठकी में बतकही बन्द हो गइलि। बहुत रोसिया के जगेसर कहलन, 'शिवपुर वाला लोग बहुत बदमाश हो गइल बाड़न। मन बढ़ि गइल बा। ओह साल बच्चू लोग बाजी मारि ले गइल। यादि बा न भइया, ऊ बुढ़वा गुरुबकसा आठ दिन ले पिअरी धोती आ लाल कुर्ता पहिरले, हाथ में कजरौटा लिहले सगरे गांव घूमि-घूमि के सलाम करत रहे कि अबहीं कक्कन नइखे छूटल ?'

तनी ऊहो किस्सा सुनीं। सात-आठ बरिस पहिले जवन बड़की बाढ़ि आइलि ओह में ओह साल झिरिहिरी के नसा पहिले शिवपुर वालन का कपार पर चढ़ल आ चुपे-चुपे तेयारी कइके एकदिन राति बेला मे बरिआति लेले चढ़ि अइलन स। एह बरिआति में गाँव के गरीब ऊधमत बूढ़ बनिया गुरू बकसा दुलहा बनावल रहे। पचास-साठि नाव के ई नाचत-गावत जमघट गाँव का चारु ओर चगोठे लागल। बोली बानी सुरु भइल। एगो नाव पर बिआह के गीति गवाइल, 'ओरी तर ओरी तर बइठे बरनेतिया काढ़ रामपुरहा बाबा अपनी पुतरिया' आ लोग देखल कि ओही नाव पर माथ पर मउरी धइले गुरुबकसा कुर्सी पर बइठावल बा। आँखि में भरपूर काजर चभोराइल बा। रहि-रहि के मटकी मारत बा, रंगल दाढ़ो हिलावत बा, पूरा तमासा बनल बा आ एतना अगरा गइल बा कि —— बाद में त रामपुरहन का हाथे ऊ पिटात-पिटात ले बाँचल। इहाँ के लोग ओह झिरिहिरी के जबाब देबे खातिर कसमसा के रहि गइलन। बाकी अचके में बाढ़ि के पानी उतरि गइल आ दूसरि बाति ई रहे कि बिलास बाबा बुखार से खजमजा गइल रहलन। ईहे बाति रहे कि जगेसर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रेकार्डिंग सुनि के छनछना गइल रहनन। अपना बाति पर एगो अउरी जबरदस्त लोगन धइ के ऊ कहलन, 'आ देखि भइया, ऊ बुढ़वा साला अबो अपना के अइसन लगावेला जइसे साँचो ऊ रामपुर के दमाद ह ! झिरिहिरी के जबाब ना नू दियाइल, ईहे बाति बा ! मन बढ़ि गइल बा।'

अनजाने में तीर काम कइ गइल। सुतले-सुतल बिलास बाबा फाटि परलन, 'त का बिलास मरि गइल बाड़न ? ऊहाँ गदहा के दुलहा बना के झिरिहिरी जाई।'

लोग केतना अगरा गइलन ? मन जुड़ा गइल।

'तब त बाबा बस हुकुम के देरी बा' जगेसर कहलन, 'रउआँ नाँव पर झिरिहिरी का नावन के जुटाव त साँझि बिहान में हो जाई।'

'गाँव त अपनहीं अफनाइल बा। बस सरकारे के मुँह जोहात रहल ह। फसिल गइलि त का भइल। उत्साह कम नइखे।' नारायण प्रसाद बोललन।

बाकी, राम बिलास बाबा चुप, एकदम चुप।

'घरे के सवांग गुजरि जात बा, जगेसर अब गंभीर होके कहे सुरु कइलन, 'त रोवल-धोवल जाला, किरिया-करम कइल जाला। ओइसहीं रामपुर में बाढ़ि के बरबादी आइलि। एह बाढ़ि का बरबादी के किरिया-करम परम्परा से झिरिहिरी का रूप में चलि आवत बा। त बाबा का जिअते-जीव एह साल काहे नाहीं झिरिहिरी होई ?'

'अरे हँ जगेसर भइया, ठीक कहत बाड़। अपना-अपना पहरा के लाज हाले। बस, बँसखटि पर परल एह पुरनकी ठटरी के जिनिगी मनाव कि ई जलसा हो जाला।' नारायण प्रसाद बाति के आगे बढ़वलन।

'अउर का ? जिमदार नक्षत्री ह। ना रही तहिया गाँव झिरिहिरी खातिर तरिस के रहि जाई।'

बाकी, बाबा चुप। लोग बोलि रहल बाड़न आ आँखि-कान ओनिये लागल बा। बाबा के चुप्पी टूटति नइखे। एक बाति बोलि के चुप्प ! एह के का समुझल जाव ?

'त हुकुम हो रहल बा न बाबा ?' आखिर में हिम्मति कइ के लोग पूछले बाड़न।

मगर, अबहियों बाबा चुप।

अचानक लोग देखत बाड़न कि चुपेचुपे बाबा उठत बाड़न। खड़ाऊँ चट चटावत कोठरी में जात बाड़न आ लवटत बाड़न त उनकरा हाथ में तबला के जोड़ी होति बा। आ ओसइहीं चुपेचाप चउकी पर बइठि के टिन्न-फिन्न शुरू कइ देत बाड़न धागे- धागे धिन, तागे तागे तिन······ओने तबला के बोल फूटत बा आ एने जगेसर हाथ माँजि के हल्ला सुरू करत बाड़न, 'बहुत फिलमी उड़ावत बा लोग। अब शिवपु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाला लोग बूझो कि रामोपुर जिअत बा।…मार तनी सधल सान तबला पर बबवा कि पानी पर छलछला के करेजा बेधि देउ !'

सुरताल ठीक कइ के बाबा एगो झपताल उठवलन—

'आनंदमयि आज गोकुल बिराजति,
प्रभु अवतरेउ आज कमलध्वनी रे !
धागे-धागे धिन तागे-तागे तिन्।'

हवा थरथरा उठलि ! मनका ऊपर काई नियर जमलि उदासि फाटि गइलि। अँजोरिया में झलमल-झलमल करहि पीपर के पतई-पतई नाचे लगली स। बूढ़ हाथ आ बूढ़ सुर के अइसन उठानि रहे कि उदास होके गिरल-ढहल समय जवान होके जइसे खड़ा हो गइल। ऊ पूरा गाँव के एगो अदेख भाव रहे जवन पानी से बूड़ल सीवन पर गूँजे लागल। एगो भुलाइल भटकल कीमती वक्त बड़ा मोका पर लवटल रहे। लोगन के जनाये लागल कि जिअल खाइल अकारथ नइखे। अगाड़ी के शंका चलि ना गइलि रहे बाकी तबला का ताल का धक्का से तनिक देर खातिर फेंका जरुर गइल।

अकेले-अकेले, कुछ ठडे ठंडा दू तीन गो गीति चलली स। लोग जबरदस्ती विस्वास करे कि ऊहे बिलास बाबा हवन, बाकी पता ना का बात रहे कि मन कसकि-कसकि के रहि जात रहे।

'अब का गायकी होई ?' तबला हटा के बिलास बाबा कहलन, 'सब कुछ खतम हो गइल। बाढ़ि में नाहीं, एह नवका जमाना में बूड़ि के सब कुछ बिला गइल।'

बइठकी बहुत उदासी में खतम भइलि आ झिरिहिरी वाली बाति ओह दिन फेरु उठत-उठल ले रहि गइलि।

दूसरा दिन सबेरे-सबेरे सगरे रामपुर गाँव में हल्ला हो गइल कि बिलास बाबा झिरिहिरी के ऐलान कइ देले बाड़न आ एह साल शिवपुर में दुलरुआ दुलहा बना के चली। फेरु तइयारी खातिर झुंड-झुंड में छीट-छाट लुंगी वाला नवहा बाबा का पास जुटलन। मामिला पेंचदार हो गइल। केतना चुप्पी साधसु ? केतना के का कहसु ? हाथ मारि के दिन चढ़त-चढ़त ले फाटि के कहि दीहलन, 'जो सारे, कर तइयारी। बाकी झिरिहिरी अइसन-तइसन ना होखे के चाहीं।'

चउथा दिन घरी भर राति जात-जात ले पूरा जोम का साथे झिरिहिरी के जलूस पानी पर रेंगत बढ़ल शिवपुर का ओर।

गाँव-गाँव से बेहिसाब नाव नेवता पर जुमल रहली स। ओह नावन पर गेस-बत्ती बरति रहे। झालदार चननी टाँगल रहे। झंडी आ रंगीन गुब्बारा सजावल रहे। नाव-नाव पर रंग-बिरंग के मनसायन रहे। चारि गो पटहुआ नाव पर चारि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गिरोह नाचि जमल रहे। एगो पर गोड़ नचवा, हुरुका बाजा वाला। गोपाल...
वाली नाव पर बढवन के पुरनकी 'बानी' वाला रामायन के पाटी। कई नाव नव...
रामायन के गवनई, छपरहिया से लेके फिल्मी धुनि पर बइठावल, एगो नाव प...
'सीनरयनी' वाली मीठ गवनई। ई नाव चमटोल से आइलि रहे आ सभका ले बढ़...
तमासा एही नाव पर रहे कि धड़िया-धड़ंग बिसना आगे दरी बिछावलि चउकी प...
पोति के शंकर जी बना के ठाढ़ कइल रहे। ऊहे डमरु, ऊहे तिरसूल, मृगछाला,
रामलीला वाली जटा, गरदन में साँप लपेटले, जै हो भोले शंकर! पट्ठा का शान...
मूरति नियर तानके खड़ा रहे, एगो हाथ ऊपर उठवले जइसे सभका के अभयदान दे...
होखे! सभ केहू चीन्हत कहाँ बा? लोग झुकि-झुकि के माथ नवावत बा। ऊ आशीर्वा...
देत बा। बगल से नाव कटा-कटा के लोग देखे आवत बा, जय-जयकार होति बा, हल्ला
होत बा, हँसी के हुरदंग मचल बा। बाकी भगवान शकर एकदम गुरु गंभीर बन...
ठाढ़ बाड़न। अगली नाव पर बिलास बाबा बाड़न। ओह नाव के एनाउन्सर कु...
कहे चलत बा तबले माइके छोरि के बिलास बाबा खुद बोलत बाड़न, 'शिवपुर ...
मेहरारु लोग सुनि ल जा। तोहन लोगन का शिवपुरी में आजु तलक ले शिवजी न...
रहलन हँ। आजु एह बराति का संगे अवढर दानी महाराज आइल बाड़न। अपन...
अपना के मनभावन बरदान माँगि ल जा!'

बाकी एह अगिली नाथ पर से सबसे महत्त्वपूर्ण घोषणा तब भइलि ज...
झिरिहिरी के जलुस गाँव का एकदम किनारे चोंहपि गइल। लाउडस्पीकर से आवा...
निकललि, 'काली बाबू कान खोलि के सुनि लीह हो!

अइसन जनाइल कि बिलास बाबा के बोली लरखरा गइलि बाकी फेरु खाँ...
खँखारि के ऊ अपना के सँभारि लीहलन। आगे कहल न, 'सुन ल काली बाबू, हम...
किरिपा से बरिआति चहुँपि आइलि। लगनि कम बा। जनवासा के इंतजाम क...
सुर्ती बीड़ी जल्दी से भेजवा द।'

ई घोषणा सुनि के नाव पर वाला लोग सजग होखे लागल। नाचि-गान बढ़...
जमि गइल। अगली नाव के पेट्रोमेक्स वाला हवा देके, पिन मारि के बत्ती तेज क...
दिहलसि। 'दुल्हा' के लोग चुचुकारे-सुहुरावे लगलन। अइसन न होखे कि ऐन मौ...
पर कूदि जाव! ओकर रंगीन झूल आ माथ क मउरी ठीक कइ दीहल गइल...
'छान' के चेक कइ लीहल गइल।

बेंडबाजा वाला द्वार पूजा पर चले वाली धुनि बजावे लगलन। धुधुका बा...
घुघुकार बन्हलसि——गढ़ जीति ल, गढ़ जीति ल। कुछ लोग छाता तानि के सचहूँ
बरियाती बनि गइलन। रामबिलास बाबा आपन पगरी ठीक करे लगलन।

ओही घरी कौआली वाली नाव पर चलत गाना बन्द हो गइल आ छन...
रुकि के द्वारपूजा के गीति शुरू हो गइलि—

'आपन खोरिया बहार हो काली बाबू

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आवेले 'दुलरुआ' दमाद ।
बइठे के माँगे 'दुलहा' लाल गलइचा
लड़ने के माँगे मैदान ।'

गीति सुनि के रोवाँ खड़ा हो जात रहे । अतना हँसी-खुशी के कोलाहल उठल कि बाढ़ि के दुख हेरा गइल । हारासाँकी लागल रहे कि के अगिली 'दुलहा आ समधी वाली नाव का बगल में काटि के आपन नाव भिड़ा देत बा ! जलसा आँखि आ कान में ना समात रहे । अलबत्त झिरिहिरी उठलि बा । टापि गइलि । अब फेरु का होई अइसन झिरिहिरी ? राम बिलास बाबा का चारु ओर दिन मतिन अँजोर भइल बा ।

बाकी रोशनी के ई इन्तजाम भारी गड़बड़ कइ दीहलसि । कुछऊ छिपल ना रहि गइल । कुल्हि चीज साफ-साफ लउकि जात रहे । फेरु ओके देखि के केहू कुछु कहे त ना बाकी भीतरे-भीतरे ना जाने कइसन लागे । लोग देखि के ई महसूस करत रहलन कि राम बिलास बाबा का चेहरा में ऊ खुद मौजूद नइखन । ऊ कतहीं हेरा गइल बाड़न । झिरिहिरी के त बरिआई से जोर मारि के जुटा दीहलन बाकी बेचारु ऊ पहिले वाला हुलास के कहाँ से ले आवसु ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तरक्की

पी० चन्द्रविनोद

साकिन शीतलपुर डाखाना बरेजा, थाना माँझी, परगना बाल जिला सारन के मोख्तार मुंशी किसुन लाल के दलान खुलल रहे। चउकी पर गद्दी, गद्दी पर डिगिस आ ओह पर रहें कलम दोआत आ कुछ कागज-पत्तर ! मुंशी जी अपना धोती के खूँट से चस्मा के सीसा पोंछ के नाक पर चढ़ा लेले आ चस्मा का फाँक से झांक के एक बेर सभकर चेहरा के त्रिचिरी तिकवत चेट के चौहद्दी तउल लेले ।

दलान में एगो दु इसन चुप्पी के सनसनाहट सनाक से सँसर गइल। सामने का खरहर चउकी पर बइठल बूढ़ आ अधबूढ़ लोग राहत का राह खातिर गाल पर हाथ धइले मुंशी जी का ओर टकटकी लगा लेहल ।

डिगिस पर राखल सगुन के रोपया गिनत मुंशीजी बोलले—तोहरे लोगिन खातिर हम पत सनीचर के गाँवे चल आइले कि कवना अफदरा में परल होखऽ लोगिन आ तू लोग बाड़ कि हइसन कड़ा मोकदमा के कागज देखे खातिर खाली चार गो रोपया धरा देहल । तोहरा लोग नीयर चतुर आ हमरा नीयर बुरबक के होई कि आपन बुद्धि खरच कके सेंतिहे में तोहरा लोगिन के मोकदमा सम्हारी आ ना त कहिए उजर गइल रहित लोगिन। घटले-बढ़ले हथफेरो हमहीं चलाइले आ हमरे फीस देवे में तू लोग किरपिनाही करेल लोग। बोल हो रामासरे ? कवनो गलत बात कहनी हँ !

रामासरे राउत बड़ा भगती से कहले—ईं हम कइसे कहीं कि सरकार गलत बात कहत बानीं ? सरकारे त माई-बाप बानीं जे हामासुमा के गुजारा हो जाता आ सुखे-दुखे रात से बिहान हो जाता। बाकिर सरकार एह घरी हाथ बड़ा सकेस्ता में परल बा ! अकिले नइखे चलत ! मोकदमा का पाछा त सरकार हमनी हू अल्ला हो गइनीं। ओहू पर हीत-नात बड़ले बा।

मुंशीजी मोका के फायदा उठावत चट दे बोलले—आरे रामासरे तू एकरा खातिर दुख काहे करत बाड़ हो ?—हम कहियो घटले-बढ़ले देबे से इनकार कइले हँ ? हमरा लगे धइल रहे आ तू लोग दिकदारी सह हो ? आरे भाया, का करे के बा ? साँझी खा आके जतना चाहऽ, एगो ठेपा लगा के ले जा। ना होखे त बाछा छव-कठवा पर थोरे ले ल। हम त आपन आदमी बानी। केहू जानी आ केहू जाने ना करी। खेतवा तूहीं बटइया पर जोतिह आ जब हाथ पर पइसा-कउड़ी होई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लइका कलकत्ता-बंगाल निकल जइहन स त फेर छोड़ा लीह। खैर, सोचलीह— मांझी खा त हम बड़ले बानी !

रामासरे राउत का बड़ा धरान बुझाइल। ऊ लमहर साँस खींचत बोलले— ना सरकार, अपने का अलम रहला से हमनी निहचिन्त रहीलें। ई कुल्ही आज से नइखे नू ! दादा-परदादा का राज से चलल आवता !

रामासरे राउत थथम के फेर बोलले— ए सरकार! चनिरका बोलत रहलन हँ कि मास्टर साहेब वाला मोकदमाँ कुछ दे ले के सुलह क लिआइत। गलती त आपने बा ! आ, का दो हारहीं के उमंद वेसी बा।

मुंशी जी एकबेर फेर चस्मा का फाँक से रामासरे का चेहरा का ओर झाँक लेले आ उड़त चिरईं पर एगो फेर तीर छोड़ले—हँ ! त, तू आपन सोच ल ! चन्दिरका तोहार बेटा हउवन ! हम ई कइसे कहब कि बेटा से बेफांट कर ! बाकिर एगो बात जरूर कहब कि एक बेर जो दबकल लोग त मास्टरवा घर चाँप के ध दी। फेर हमरा के कुछ मत कहिह लोग ! • • • • दुनियाँ कहाँ से कहाँ चल गइल, बाकिर तोहार बेटा एको ढेबुआ के ना भइल। मैट्रिक पास का क लेलस कि कानून छाँटे लागल। केकर केकर बेटा जज बलिस्टर हो गइले सन। कतना मिनिस्टर आ चीफ मिनिस्टर हो गइलें सन आ तोहार बेटा गोबरउरे रह गइल ! अब तहरा जे बुझाय से कर ! हमरा एह से का मतलब ? अपन बेटा पढ़ के पंडित हो गइल त हमनी के कवन जरूरत बा !

रामासरे राउत के बुझाइल कि चनिरकवा में लगावल सब पइसा पानिए में गइल। ऊ मोकदमा ना सुलह करे के तय क लेले।

ई खबर जब नर सिंह मास्टर के लागल त अइलें मुंशीजी का लगे आ कहले कि ए मोख्तार साहेब रामासरे जब कुछ ले दे के सुलह करे के चाहत बाड़न त काहे नइखीं करा देत ? ई त बतिया ठीके ह कि ऊ लोग का चढ़वला में पर के हमरा जमीन में दू हाथ बढ़ के आपन घर बना ले ले। हमरा त अपना जमीन के दामें स नू मतलब ! आ दोसर बात ई कि एगो झगरो ओरा जाइत ! काहें नइखी सुलह करा देत ?

मुंशीजी कहले कि ए मास्टर ! तू मास्टरे रह गइल ! आरे, ओकरा क लड़वला से कईगो फायदा बा ! एक त ओकरा, हमरा से करजा लेबे के परी। आ दोसरे मोकदमा चली त हमरा फीसो मिली। तीसरे लड़ी त ओकर घर टूट जाई आ तोहरा खर्चो मिली। चउथे हमनी से ओकरा दब के रहे के परीं।

हमनी ओकनी के जतने कपारे चढ़ाएब स, ओतने आफत मचइहें सन। ठोक पीट के हमनी पाड़ा से आदमी बनवनी सन। जग परोजन में कबो बेपानी ना होखे देनी सन। घटले-बढ़ले कबो उपास ना काटे देनी सन। ध बान्ह के अँखफोर बनवलीं सन—सेकरे ई फल हमनी के देत बाड़न स। जवन कँटिया में पानी लेके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैदान जात रहले सन आ सोझा कबो खटिया पर बइठे में लेहाज कर स से आज पढ़ा लिखा देला पर उल्टे हमनिए के मूड़ी पर हाथ फेरे के फेरा में बाड़न स। सुनत नू बाड़ कि अब ओकनिए के लइकवा नोकरी में बहाल होइहें सन ? पढ़े लिखे में ऊ चाहे गोबर गनेस काहे ना होखसन, बाकिर तोहरा पढ़ुआ लइका खातिर अब कवनो जगहा नइखे ! तूं हीं सोच कि ई कवन रीत ह कि तोहार योग्य बेटा बइठल रही बाकिर इम्तहान में तीन पाई पावे वाला लइका खातिर सीट रिजर्व ! आरे भाया, योग्य बनावे खातिर सब सुविधा दिआव, स्टाइपेंड दीहल जाव। खाना कपड़ा आ किताब कापी के सुविधा दिआव। फीस माँफ होखो। बाकिर देस डुबावल मत जाव। तूंही बताव कि ई कवन कानून ह ? अब कादो उहे डाक्टर, जज, कलक्टर आ इंजिनियर होखिहन सन। हुंह ! बाप के नांव साग पात—पूत के नाँव परोरा !

मास्टर साहेब कहलन—जायें दीं ए मोख्तार साहेब ! केहू केहू के भाग ना छीन ली ? लगे के बाड़न स। रोइहें सन त हाह लागी ! हम त खाली एही खातिर मोकदमा कइनी कि हमरा जमीन के दाम निकल जाव आ ओकनी के मन तनी नेवर हो जाव !

मुंशीजी कहले—'सेत ठीक बा। बाकिर तूंही बताव कि जवनन के हमनी एतना करत अइनी सन ओकनिए एह तरी आँख देखावसन ? हो मास्टर ! ओही चान्दर कवा के नू भइंस चरावल छोड़ा के ध—बान्ह के तू पढ़वल ? ओकरे फीस माफ करावे खातिर नू हमरा कतना जाना से मुंह खोले क परल। ओकनी के त हमनी के एहसान नू माने के चाहीं ? बाकिर जब ओट के समय आइल आ बाबू गंगादयाल सिंह खड़ा भइले त तोहरा हमरा कहलो पर चन्दिरकवा खोभारी गोप खातिर झंडा लक गांव गाँई दउरे लागल। खोभारी गोप अगर जो पढ़ल-लिखल रहितन त कवनो बात ना रहे। अब तूंही सोच कि कहाँ गंगा दयाल बाबू पुरनका जमाना क एम० ए० पास अ पुरान तेयागी आ कहवाँ खोभारी गोप घीच-घाँच के मिडिल पास आ नमरी चोट्टा अतने भर ना ! देखते-देखत कुल्ही एकवट गइले सन आ सियरन नियर हुंआँ-हुआँ क खोभारी के जीता देले सन। बोल, अइसन काहे भइल ? ओही घरी त हमरा आँख के पटर खुल गइल। हमरा बुझाला कि हमनी बड़ा गलती कइनी सन एकनी के अँखफोर बना के ! पहिलहीं के जमाना नीमन रहे कि लोग जाँत के रखले रह।

मास्टर साहेब कहले—ए मोख्तार साहेब, दुनियाँ के ईहे रीत नू ह। धन मिलला पर मन त धधाइए जाला !

मुंशीजी बीचे में कहले—आरे' हेंगनी होला हो ? लोकनायक जात-पाँत के सब एक करे के सपना देखत रहले। आदमी-आदमी के बरोबर करे के रहले। बड़ा नीमन बात रहे। अब तूंहीं बोल कि का जात-पांत टूटी ? मन त पहिले टूट गइल ! एकनी के अँगुरी धरावते रकसवा के हाल कइले सन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मास्टर बोलने—बतिया त ठीके कहत बानी मोखतार साहेब ! बाकिर थोरे तेयाग आ सबुर त करहीं के परि। ई त ठीके बा कि ई आग पावते दूध लेखा फफन गइल बाड़न सन। अब का करब ? बिरोध कइला से का होई ? हम मास्टर नू हँई ! हमनी बड़ा आसाबादी हो गइल बानी। धीरे धीरे सब थिरा नू जाई ! धीरज त धरहीं के परी ! बाछा खूँटा पर से खुल गइला पर चउकड़ी त भरबे करेला।

ईहे सब होत रहे कि चमरटोली में जोर से हल्ला भइल। बाद में पता चलल कि बसदेव मिसिर अपना बगइचा में आम के डाढ़ी काटत अलगू चमार के बेटा के धइले रहले, से पूरा चमर टोली उमड़ पड़ल रहे आ मिसिर के कपार फोर देहले रहे। मिसिरजी अस्तपाल में भरती भइले आ तले छपरा कचहरी में उनका पर चमरटोली से चमारन पर जादती कइला के मोकदमा ठोका गइल। कादो मिसिर के भाइयो बड़ बटकवाही कइले ह। अपना घर में खुदे सेन्ह फोर के थाना में एकजोराहे से सभन के नांव देत इतलाय लिखा देले बाड़े। सुने में आवत बा कि दरोगाजी ठीक बानी।

गाँवे खोभारी गोप बोलावल गइले। बड़का मिटिंग भइल। पिछड़ावर्ग पर जादती के बड़का खबर अखबार में छपा गइल। हरवाह लोग हरवाही छोड़ देहल। कुछ लोग ट्रैक्टर कीने के सोचे लागल। कतना घर में तबाही कटे लागल। बाकिर मुंशीजी पत सनीचर के मोकदमा सरिआवे गाँवें चल आवेले ! एह घरी मोकदमा के तांता लागल बा। गाँव बड़ा तरक्की पर बा। रोजे हैंडनोट लिखाता—

"हम·····वल्द····मतोफा, जात···' पेशा गृहस्थी सा: शीतलपुर टोले सरखेलापार परगना बाल थाना मांझी डाखाना बरेजा जिला सारन के हँई।

आगे हम मुंशी किसुनलाल वल्द रामाधीन लाल मतोफा जात कायस्थ पेशा गृहस्थी वो मोख्तारी वो महाजनी सा: शीतलपुर परगना बाल थाना मांझी डाखाना बरेजा जिला सारन से मोबलिग दू सौ रुपया २००) जेकर आधा एक सौ रुपया १००) भइल, वास्ते लड़ने मोकदमा वो खानेदारी के कर्ज लेहनीं आ वादा करत बानीं कि जब महाजन मंगिहे तब कुल रुपया अउर सूद ओकर बशरह डेढ़ रुपया सैकड़ा महीना एक मुश्त आदाय वो बेबाक कर देब। एह से ई हैंडनोट लिख देहनीं कि बखत पर काम आवे। ता:·····बाकलम···।''

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब ना

अनिल कुमार 'आंजनेय'

नीचे सराफा के सजल-धजल दोकानि। ऊपर कोठन पर कोठावाली-कसबिन पतुरिया-बाई जी लोग। नीचे दोकानि, ऊपर दोकानि, दोकाने-दोकानि। नीचे सोना के बेचा-कीनी; ऊपरे सोना निअर देहिं के मोल-भाव। जेवर आ जोरु (जनाना) के जोर। जनाना आ जेवर के फेर। सोना पर गड़लि आँखि, सोना का देहिं पर अंटकलि आँखि।

नीचे रूप, ऊपर रूप। दूनों ठवर रूपे के बेवहरिहा। दोकानि आ कोठा दुनों ठहीं रूपे के लोभाइल, रूपे पर लसिआइल लोग। सोना क गदरात, कसमसात जवानी। सोना के पानी। नसा में गोत देबे वाली आँखि। मुँह में पान आ गमकऊआ जरदा। लाल-लाल ओठन पर बिछिलात मुसुकी। लइ लगा देबे वाला रहे उनुका हाव-भाव।

साँझे, ना जाने केतना भँवरा रूप के पराग पीए कोठन पर चढ़लन आ भँवरे मतिन कमल का अँकवारी बन्हा जालन।

सोना क कोठा ! गीत गूँज रहल बा—

अब ना पिअबि राजा, हम दरुआ !
अपने से झपेला नयनवाँ
हो राजा !
एक बेर पिअलीं बलम तोर संगवाँ
सरकलि सरिआ, दरकि गइल अँगिया
उभ-चुभ करेला दनवाँ !
होय राजा !

अचके रंग में भंग भइल। परमेसर पाँड़े आ अब्बास मियाँ पीके बुत रहलन। 'बातहिं बात करख बढ़ि आवा'—दूनू बात बढ़त-बढ़त अस हउँजा भइल कि आव त आव। 'ए मियाँ टेंढ़ त हम तोसे डेढ़े।' फिरु त शराब के बोतलन के गदका भँजाए लागल। काट पर काट। घात पर घात। पैंतरा पर पैंतरा। अब्बास का बगलिया गइला से परमेसर के वार त चूकि गइल, बाकी अब्बास के बोतल परमेसर के मूड़ी पर जमि के बइठल आ चूर-चूर हो गइल। कईगो काँच के टुकड़ा परमेसर का माथ मे धसि गइल। ओकरा माथे से खून के पवनारा छूटि गइल आ ऊ घुमरी खा के धरती ध लिहलस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अचेत हालत में ओके अस्पताले पहुँचावल गइल। डॉक्टर खून रोके खातिर सूई लगवलस। आपरेशन कइके माथ से काँच के टुकड़ा काढ़ि के टाँका लगवलस। नर्स के जरूरी हिदायत दिहलस आ चलि गइल।

× × ×

बेर भइला परमेसर का होस भइल। बाथा से कहँरत-कूँथत बकार निकसल —'पाऽऽ···नी····।' नर्स बढ़ि के दवा पिआवे वाली एगो छोटहन काँच का गिलासिमें दू घोंट पानी निअर कुछ लेके ओकरा मुँह में घट-घट डालि दिहलसि। पूछलसि, 'जीव कइसन बा ?' 'बहुते नीक'—कहिके परमेसर पटा गइल। फिरु बोलल ना, गुम-सुम, एकटक खिरिकी का सीसा का पार देखत रहि गइल। बाहर बरसा नधि-आइल रहे, बादर गरजत रहे। बिजुरी के चमक खिरिकी का सीसा के पार कके कमरा में कउँधि जाईल करे। परमेसर कहँरत गोहरवलस—'बे····टाऽ····रा····मू····ऊ···ऊ···।' नर्स मुड़लि —'तोहरा बेटा के खबर देवे खातिर आदिमी भेजाइल बा, ऊ आवते होइहन।'

परमेसर एक टक लैंप पर आँखि गड़वले रहे, जवना पर फतिंगा लूझि-लूझि के आपन जान देत रहलन। हाँका-हाँकी मुए के ई बदानि देखि के ऊ एगो गहीर सुध में डूबि गइल। सुरता का सूत के सँझुरावत ओकरा भीतर बितला दिनन के चित्र सिनेमा का रील निअर उभरे लागल।

परमेसर पाँड़े दरोगा बाप के एकलौता बेटा रहलन। कमासुत बाप के दुलरूवा बेटा। दन-फिकिर इचिको ना रहे। दहचन घर में धन त रहबे कइल, समाज में जानो-मान खूब रहे। पाँड़ेजी जेकरा दुआरे चलि जासु, ऊ अपन भागि सराहे। जेकरा दुआरे जासु, ऊ अपना के दुअरहा माने आ आपन रुतबा बुझे। पहिले परमेसर जवने खोरि निकलसु, जेनिए दरस-परस होखे बचे-बूढ़े 'पा लागीं पाँड़ेजी-पा लागीं महराज जी' कहिके पवलगी-बन्दगी करत थाकसु ना।

आ···आजु त सभे उनुके लम्पट, लमेरा, अन्हेरिहा आ अनगराहित बुझता। ऊहे पाँड़े 'गहरेबाज', 'घाघ' आ 'पिअक्कड़ पाँड़े' का नाँव से इयादि कइल जाले दरोगाजी के गंगालाभ भइले अबे सातो साल ना पुरल कि परमेसर पाँड़े पाई-पाई के मोहताज हो गइलन। पहिले ऊ रम, विस्की आ बराण्डी पिअलन बाद में अनानास के नउवत आइल आ अब त महुआ का ठर्रे पर ठरके लागल। एतने ले ना, ठर्रो के ठाला परे लागल, ठर्रो मोहाल हो गइल। हाथो तर के गइल, लातो तर के गइल। मउज-मस्ती के जिनिगी जवाल हो गइल। कहाँ ऊ दिन····आ कहाँ····।

एह सोच में झवाँन परमेसर के गाँस गहिरा गइल। पोर-पोर के बाथा उभरल, 'राऽमू···ऊ····ऊ···।' आ फिरु ऊ आपनि आँखि बन कइ लिहलस। सिनेमा का रील निअर ओकर भूत ओकरा सुरता का परदा पर फेरु नाचे लागल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीस बरीस पहिले····

परमेसर के सोरहवाँ ह। अबहीं रेख उठते रहे कि शिवप्रसाद दूबे वकील के एकलौती बेटी राधा से ओकर बिआह बड़ा धूम-धाम आ उछाह से भइल। बेटहा-बेटिहा दूनों पक्ष आपन-आपन होसिला आ अरदास पूरा करत अपना-अपना छाती के काँट निकललस। राधा पढ़ल-लिखल आ गुनसील ले आगर त बटले बिया, छछात बिधते के सँवारल रूपो पवले रहे। चाँदनी के हँसत टहकार गोराई। फूल मतिन सुकुवार आल्हर आ अदनार। खिलिल कोंई मतिन आँखि लागे जोग आँखि। घर त एह रूप का पुतरी के पाके निहाल भइले बा, पासो-परोस में एह सुघराई के बखान हो रहल बा।

सोहाग रात के ऊ दिन····

परमेसर रम पीके अपना रमा के मान रखे गइल बा। राधा चिहुँकि के फूल सेज से उठि गइलि। बहुत मान मनावल भइल। राधा का अधखुलल कँवल कोरन से टप-टप आँसू बहि रहल बा। भीतर का दरद से ओकर गुलाबी गाल पीअर हो रहल बाड़न सँ। राधा का फूल निअर मनोहर मुँह के दूनों हाथ का अंजुरी में लेत परमेसर परन कइलस; "तोहार किरिए रानी, अब ना पिअब, अब ना····।"

× × ×

परमेसर पहिले त पनरह हजार रुपिआ आ बीस बिगहा खेत शराब के धधकत आगि में स्वाहा कइलस। फिर जोर-जबरन राधा के मार-पीटि के ओकर गहना बेंचि-बेंचि पीए लागल, पिअते गइल।

एक दिन राधा समुझवलसि, 'देखीं, ई नीक नइखीं करत। पुरुखा-पुरनिआ के पानी ए तरे उतारल जाला भला? बाप-दादा के मरजाद मत माटी करीं। धन त धन खइकार कइबे कइलीं, तनो-मन मइल कइले जातानीं। चेतीं। अबो ले त चेतीं।' ओकरा बड़-बड़ बरौनी पर लोर नाचत रहे।

'इरही-बिरही मत बोल। ढेर गभिआ बोलल्। दिन जब बिगरि जाला त मेहरारुओ मरद के सिखावे लागेले। तोहार दोष ना, ई हमरा दिन-दसा के फेर ह। बाबा तुलसी दास के कहनाम ठीके ह, 'धीरज धरम मित्र अरु नारी, आपतकाल परखिए चारी।'तोहरो परख होइए गइल। हाथी हाँचड़ में फँसि जाला त बेंगो चिओ चिकारी करेले। हमरा के अब तू काहे ना सिखइबू····?'

"रउरे जोग कहत रउरा के बाउर लागता, एमें राउर दोष ना, हमरा भाग के दोष बा, अपना करम-कमाई के भोग त हमरा भोगहीं के परी। हम जो नीक कमाई कइले रहितीं, भगमान रहितीं त राउर गोड़ काहे खाला परित। अपना गलती खातिर हम रउरा से माफी चाहब। रउरा गोड़े गिरतानी।" साँचहूँ गोड़ गिरत राधा जार-बेजार रोअत-गिलगिलात चेरउरी कइली, 'हमरा भूल-चूक के, हमरा कसूर के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जवन डंड होखे, हमके देईं कुल्हि सजाइ हमके देईं। बाकिर अपना जमला के मुँह देखीं। बाप-दादा का पगड़ी के मरजाद निबाहीं। कुल-कापड़ जोगवला के ह। अपना बारे में का कहीं। अन्हरा के गइया दइब रखवइया! रउरा खूदे सयान बानी, रउरा से का कहे के बा?"

'सोझ सोझ कह। बुझउअल मत बुझाव।' परमेसर सभ कुछ बूझलो पर अन गइयाँ बनल चहलन।

"दारु-सशराब रउरा ना पिए के चाहीं।"

"काहें? काहे ना पिए के चाहीं? हमनीं का वेद-शास्त्र में जवना सोमरस के अहगरि अहगरि के गुन गान कइल गइल बा, ऊ शराब ना ह? तब के सोमरस····एही शराब के महिमा बखानत हमन के ऋषि-मुनि अघइलन ना। एके पाके ऊ लोग परम-तत्व पावल। एके देखि के 'छि-छि' ना कइल जाला, एही-खातिर जुग जुग ले जोगी छिछिआत आइल बाड़न। साधक के साध सिद्ध करे वाला ई अमृत रस ह। एकरा खातिर देवतो लुलुआइल ललाइल रहेलन। जवना शिव के तूँ पूजेलू, ऊ महाजोगी महादेवो जी गाँजा, भाँग, धतूरा आ एक ले एक बढ़ि-चढ़ि के नासा लेलन। ऊ त अइसन अड़भंगी नसइल हउवन कि सोमरस, भाँग, धतूरा, कनइला कुल्ही के पानी उतार घललन। एहू से जब नसा ना जोते त ऊ एक ले एक बिखइला साँपन ले डँसवा के विखधर के अपना गरे लगा के बिखी ब्रह्मानन्द पावेलन। ऊ हलाहलो त हरहर माहुर एगो ठर्रे ह। ऊ अड़भंगी बमभोला त पीके अइसन बमकलन कि ठर्रा पर ठर्रा चढावत गइलन बाकी साँख ना भइल। अस बिखि बिन्हुत-भिनत गइल कि महायोगी शिव विषकंठ के सनदि लेइए लिहलन। शिव के धुनी रमावे वाला उनुकर पकिआ चेला गुरु गोरख नाथ, मच्छन्दर नाथ आ अवघड़ कीना राम ई कुल्ही जमात सनद सुदा पिअक्कड़न के ह। ई जोगी पिअक्कड़ हउवन। पिअक्कड़नों केनू कई गो दरजा बा—अउव्वल पिअक्कड़ जोगी पिअक्कड़ हउवन। दोयम भोगी हउवन। तेयम रोगी लोग के दरजा ह आ अधम चोर-चुहाड़-घटिहा लोग ह। सनद सुदा, सच्चा, डिठार पिअक्कड़ हलाहलपायी महायोगी महादेव के आपन ओस्ताद मानेला। एही ले पहिले 'जै-जै बम भोले' के जै-जै कार लगाइ के सिर परसाद पावेला।"

परमेसर का एह गलबजउवल से राधा का मार्मिक वेदना भइल। जबदा लागि गइल। कंठ जइसे रुन्हा गइल होखे...."जो हम राउर बाति मनिओ लेईं त एकर मतलब ई कहवाँ भइल कि रउरो अमल करीं। जोगी के जवन बिधान बा, तवन घर-बारी खातिर त नइखे। कूड़ा-कचरा आ कंडा जो आगि में परी त आगिए लागी, ऊहो छछात आगिए हो जाई, आगि ओसे गन्दा होई आ ना त ओकरा तेजे में कमी आई बाकी पानी त ओसे बसा उठी—पानी के पानी उतरि जाई।····हमरे किरिये रउरा शराब मत पिहीं। अपना जमलो के त मुहँ देखीं। बेटा-बेटी कवना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घाटे लगिहनस ?'' राधा का रोआई आ गइल रहे आ एतना कहत-कहत राधा भोक्का भोकार के रोए लागलि ।:...

खून से माथ के पट्टी तर होति रहे। माथे दहिन हाथ रखि के, 'अब ना पिअब रानी ! अब ना, अब ना ।'—बाथा से कहँरत परमेसर कर बदलि दिहलस।

× × ×

छोटका छवँड़ा सामू कई दिन से बेजार बा। राधा चिरउरी-मिनती क के अरज-गरज सुनाइ के एने-ओने से हथफेर लेके पाँच रुपया के जोगाड़ कइलसि। दवा बीरो ले आवे खातिर परमेसर का हाथ पर पाँच रुपया धरत डबडबाइल आँखि से बिनती कइलसि, 'देखीं, शराब पर मत खराब करब। बेटा पर त तरस खाईं, भगवान का नाँव पर त डेराईं। लगले दवा लेके लवटीं।' परमेसर अपना के आवेश में क के आगे बढ़ गइल। बाकी एगो भट्ठी पार कइला का बाद जब दूसरकी भट्ठी सोझा परल त मन के क़ाबू में कइल कठिन हो गइल। थइली टोअलस, हाथ डललस, रुपयन के थलितिए में बेर-बेर गिनलस-मललस आ फिरु एक झटके हाथ खिचलस जइसे बिजली छुआ गइल होखे ? राधा के भीखि माँगत डबडबाइल आँखि आ दवा के खोंढ़रिआइल पीअरी आँखि के टक एकलगहिएँ ओकरा करेजा में उतरि गइल। आँखि मूँदि के ऊ एकसुरिए अइसन बेतहास भागल कि आगे केहूँ से टकरा गइल। आँखि खोलि के देखता कि बनवारी ओके अंकवारी लिहले मुसुकिआ रहल बा—'का हो परमेसर ?'

—'नन्हका अनमनाह बा ओही खातिर दवाई लेवे जातानी। पनरहिआ पर जर आवता। जूड़ी (मलेरिआ) के लछन लउकता।'

बनवारी बोलल, 'गुम-सुम लगवले रहेल। कहब ना त जानी केहूँ का? का तूँ नइख जानत जे हम जड़ी जानीलाँ। दूर-दराज के लोग जूड़ी खातिर हमरा केहें से जड़ी जे जाला। पइसा पानी में मत फेंक। हमरा रहत फिकिर मत कर। चल पइसा सुआरथ होखे। एक बोतल ले लिआव, ठर्रे सही। ठर्रा पर ठर्रा लेवे क ह। फिरु त मरदवा ठरऽररर ठऽररर, जोगी जी ठऽररर ।'

—'ना, बनवारी ना, राधा ई रुपिआ करज काढ़ि के ले आइलि बिआ। रुपिआ ना राधा के करेजे ह। सामू क गर में आजु दसन दिन ले जड़ी बन्हाइल बा, काम ना कइलसि। राधा का जड़ी पर बिसवासो ना ह।। दवा ना ले गइले राधा का मरम पर ठेसो पहुँची। ना बनवारी ना। राधा के धोखा ! ई ना होई....।'

बनवारी कुछु हिनाई आ हिक़ारत लिहले कहलस—'जोरू के गुलाम! जोरू से डरे एतरे कँपसल बाड़ ? का मजाल कि हमार मेहरि कबो हमार बाँहि ध ले! मेहरि के खइला-पिअला के दुलार ह, मुँहे लगावल आ माथे चढ़ावल गान्ही हो जाला। मेहरि के आवँक में राखे के चाहीं। तुलसी बाबा अनेरे नडखीं कहले, 'ढोल-गवाँर सूद्र पसु नारी।'....लात के देवता बाते ना मानेलन। अबे काल्हुए त डाइन के जायल

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चुरइल हमरा हाथ के बोतल छीनि के बाहर फेंकि दिहलसि। बोतल फूटि गइल, शराब बहि गइल। बाकी हमहूँ खून ढकचा दिहलीं। अइसे चढ़वाँक भइल जाला भला? मन सरहँगई नीक ना ह। सहकल मउरइया भरसाई लगावे खोंता। हाल मउवति बूझे के होला। सहकल चुरुगल भुला जाला। जोरू के गुलाम केहू अउरी होई। हम मेहरा थोरे हईं, मरद हईं, पुरहर मरद। ओह चुरइल के पंटपोछनी के एतना धुनाई कइलीं; एतना धुनाई कि उहो होस राखी। एक पखवारा ले पहिले त खटिया से उठबे ना करी।'

"....' परमेसर चुप्प।

—'तोहरो त इयार अकिले हेरा गइल बा, हम एही में हएरान बानीं। कइसन गोइयाँ हउव, हमरा बुझात नइखे। मेहरि से डेरात होख त सीसी में पानी भरले जा, जो चाह त ओमें धंला अधंला के रग मेरइ द। जेकरा जबा ना से ही जनाता ह। जनाना का आँखि में जो धूरो झोंके के अकिल ना आइल त पिएल का खाक? चूरी पहिरि के घर मे काहे नइख बइठि रहत?'

एहू कंपा से परमेसर जब निफड़त बुझाइल त बनवारी एगो दूसर निसाना सधलस—"डाक्टर लोग रोग घटावे ना, बढ़ावेला। रोगे जो घटि जाई त ऊ लोग जिही-खाई केकरा कपारे? डाक्टर का लगे जइब, डाक्टर से सटब, ऊ समुझो, बंसी में नीक मछरी फँसलि बा। तोहके ऊ पानी देई आ अपने चानी काटी। एह पाँच रुपल्ली के का अवकात बा, पचास-साठ से कम का तबाही में त जइब ना। पचू पंसारी का दोकानि पर डेढ़ रुपइया के 'राम-बाण' के सीसी मिलता। दस दिन के खोराक बा, चारे-पाँच दिन पिअवला पर आराम हो जाई। हम त अपना जेठका समहुतवा के ईहे दवाई देले रहलीं। तीने दिन ऊ दवा पिअले होई कि चंगा हो गइल आ माके लागल। तूहूँ ऊहे दवाई ले ल। दवाई का दा, सचमुच रामेवाण ह।'

बनवारी के इ निसान अचूक रहे। परमेसर का बनवारी के ई सलाह भावल। ओकरा फेंफरी पड़ल मुरुझाइल मुँह पर खुशी खेलि गइल। दून् जाके पचू पंसारी का दोकानि से डेढ़ रुपिआ के सीसी कीनि ले अइलन आ फेरु दमरी कलवार का भट्टी में साढ़े तीनि रुपिआ के ठर्रा डटि के पिअलन, मउजि कइलन।

राह में परमेसर के गोड़ डगमगात रहे। ओकर आँखि झंपल जाति रहे। मुंदात-झंपत आँखि में लालनीला रोसनी के आँखिमुदउवलि चलति रहे। खने लाल, खने नीला, रंग पर रंग धावत रहे आ मन उड़ल जात रहे। सोझ गोड़ ना परे। सड़क जइसे फाले फाल पर कतरा-कतरा के भागल-पराइल जात होखे आ ओह मुड़की कटावत सड़क के छुवे खातिर पाछे लागल धावल जात होखसु परमेसर। सड़क बिया कि रहि-रहि के कन्नी कटा देतिया। परमेसर त धरती आकास एक कइले बा चलत ना; उड़त जा रहल बा, पोंकिअवले जा रहल बा। बाह पट्ठा, धइले-धइले, अब धइले! जवना मूरत के ऊ पकड़ल चाहता ऊ बड़ा मायावी बिया। कबो धरती पर डेगार बढ़तिया, कबो धावतिया, पकड़ाइल-पकड़ाइल कि फिरु उड़ल। ई परी ह, परीलोक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के राह धइलसि। परमेसरो के ई बिद्या मालूम बा। उड़हूँ आवेला। परी फिर धरती पर आके एगो पवदरि निर्झर ढलान पर ढिमिलात-ढिमिलात नीचे सरकि चहुलसि, एगो बहुत बड़ खड्ड में अलोता। परमेसरो ओही के देखा-देखी, पाछे लागत डगरत-डगरत एगो गन्दा नाली में जा गिरल। ओकर कपड़ा पाँक आ सनन्हा से सउना गइल। माँछी बवाइल मुँह में पइसि के भन-भनाए लगली सँ। साँझि के झुट-पुटा रहे। एगो कुकुर सड़क के नाली से होके जात रहे। घिनावन नाली का नरककुंड में मूत आ पाँक का सनन्हा में सउनाइल परमेसर के देखि के ऊ समुझलस कि ई अलकतरा के टूटहा टीप(बड़का कनस्तर) ह। ऊ आपन पिछिला बायाँ गोड़ उठवलस आ परमेसर का मुँह पर बेझिझक आ निहचिन्त होके पेसाब करे लागल। परमेसर का आँखि पर पेसाब के जब गरम धार परल त अपना अलसाइल-अन्हुआइल आँखि के खोलत कहलस—"अरे—रे, इयरवा ! तेंहूँ इहवाँ ? आव, आव ! ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा के साथ नइखे धइले। धर्मराज युधिष्ठिर के छाँह धइल अकारथ ना जाई। तोरो के सरगे ले चलब, तोरो के ले चलब। सरगे बचबू, सरगे। खेल ना ह। इन्द्र के बिमान हमनी के अगवानी में आइल बा····।' आ कुकुर ओके सूँघि के आगे बढ़ि गइल।

चेत भइला पर नरकबास के सनद लेले देले परमेसर घरे पहुँचल। बहुत अबेर भइल रहे। राधा बेकल रहे, ओकरा बैखरा लेले रहे। बेटा अब-तब लागल रहे। ऊ बेहोसी का हालत में बर-बरात रहे। महतारी जिअता में ना रहे। जल्दी जल्दी दवाई के दू ठोप धरती पर गिरवलसि आ शिवजी के दोहाई देत चमचा में लेके दवाई बेटा का बवाइल मुँह में डललसि। दवा मुँह में गइल आ बेटा एगो-दू हिचकी लेके एक दम सुन्न हो गइल, हमेसा खातिर आँखि मूँदि लिहलस। जइसे बेटा अबले बाप का 'रामबाणे' के राह देखत रहे। महतारी छाती धुनति रहे। बहिन भुइँसेज लिहले भाई से लपटि के बिलखति-कलपति रहे····।

····बादर गरजल-गड़-ड़ड़-गड़, गड़-ड़ड़-गड़। जइसे कते बिजली घहराइ गइल होखे। परमेसर दरद से छटपटात, करवट लेत कहरल—'अब····ना····पिअब····राधे····अब ना····।'

× × ×

सपना चल रहल बा।····शराब का नसा में परमेसर बुत्त बा। नसा के तरंग में चचेरा भाई बरमेसर के जवान बेटी माया से छेड़-छाड़ करे के कोसिस कइलस। राधा ई सभ सुनलसि, लाजन ओकर मुड़ी गड़ा गइल। चार-पाँच दिन तक ऊ खाइल-पिअल छोड़ि के खटिआ धइले रहे। अपना फूटल भागि के रोअना रोवत रहे। माया का बाबू का समुझवला-बुझवला का बादो ऊ मुँहे पानी ना ठेकवलस। माया के माई आपन किरिया धरवली आ माया हरनठि के मुँहें कवर लगवलसि, बड़की माई कई दिन पर मुँह जुठरलसि। एक दिन ऊ अपना बेटी के समुझावत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे—'बेटी ! अब तूँ सेआन-समरथ भइलू । तोहार बाप शराबी हउवन । शराबी-कबाबी आदमी के कवनो बिसवास ना करे के चाहीं । शराबी का न कवनो धरम-बिचार होला, न इज्जत, न आबरु, न आन, न ईमान । ऊ छछात राछछ होला, राछछ । ऊ बहेंगवा होला, बहुत बड़ बेहया—लोक-लाजि कुल्ही घोरि के पी जाला । तूँ अपना बाप का सोझा मत परल कर, हम त ओह भट्ठी में जरे खातिर लिखा के आइले बानीं । बाकी, तोहके ना जरे देइब ।'' परमेसर छिपि के राधा के ई सभ सिखावन सुनत रहे । राधा के चोटी पकड़ि के ओके खूब पीटलस । होनहारी रहे तबो ऊ राधा का अबर देहि पर एकलगवहिंए लात आ घूसा के बरखा करत रहि गइल । जब बेटी रोवे धोवे लागलि त परमेसर बेहोसी का हालत में राधा के बकसलस ।

बाकी बेटी फिरू कबो बाप का सोझा ना परलि । राम जानसु जे ऊ अपना शराबी बाप से भभरलि रहे कि घृणा करति रहे ।

तबे नर्स आके ओके सूई लगवलसि । परमेसर पीरा से कहँरत चोकरल—'रानी, बिसबास कर, ना पिअब, अब ना पिअब····।'

× × ×

आकास में बिजली चमकत रहे, बादर गरजत रहे । झाँटा का साथे मिलि के हवा साइँ-साइँ करति रहे । परमेसर के सुरता सरपट लिहलसि । अलवाँति राधा छटपरू भइलि बिया । ओकरा परसोत भइल बा । जनमतुआ जनमते चलि बसल । ऊ अपना स्वामी के लगे बोलवलसि । स्वामी जी का गोड़ पर मूड़ी पटकि के रोअत-रोअत कहलसि—'हम त अब जाइए रहल बानीं । बिदा होत रउरा से एगो आखिरी भीखि माँगत बानी । बात देईं कि कबो रउरा शराब केवर ताकबि ना । सोचीं त भला कि जवना घर के रउरा बड़-जेठ मालिक आ सरबे सरबा बानी, ओही घर में रउरा पर संका कइल जाला । केहूँ राउर बिसवास ना करे । जब ले रउरा घरे रहीलाँ, सभे बेगर आ बेछिपित हो जाला, जइसे आँखि मे खरह अमा गइल होखे । किरिआ खाईं, हमरा माथे हाथ ध के सबुर देईं कि अब रउरा शराब छूअब तक ना, शराब पिअल त दूर रहे ।' आ राधा परमेसर का गोड़े जे गिरली से फिरु उठली ना । परमेसर का जइसे कठया मार देले होखे । एकदम सुन्न । बेटी, बेटा, बहू सभे राधा का सव से लपटि के रो रहल बा ।····

बादर का गड़गड़ाहट का साथे बिजली के चमक कमरा में फइलि जाता । परमेसर के गाल भेंवत टप-टप आँसू बिछावना पर ढरकि गइल । परमेसर खून से तर पट्टी पर हाथ धरत कहलस, 'ना रानी, अब ना पिअब····'

× × ×

अबे ओह दिन परमेसर घर से बहू के मघटीका चोरा लिहलस । ओके बेंचि के पी लिहलस । ई चोरी छपल ना, बहू से महाभारत ठनि गइल । बेटो बहू का पछी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहाड़ हो गइल। परमेसर बहुत दुखाइल। खाए खातिर बोलवला पर ऊ बहाना क दिहलस कि भूखि नइखे। फिरु त, केहू काहें के पूछो। परमेसर का मन में राधा के मूरत खाड़ हो गइल। इयादि उभरल। राधा रहलि त ओके वे जेववले कल ना ले। गोड़तारी बइठि के गोड़ गिरि के भोजन करे के हठ करे। परमेसर ओके लतादि के बीचे ढकेलि दे। बाकी ऊ फिरू गोड़ ध ले, रोबे, गिलगिला, चिरउरी करे, किरिया धरावे, अपनहू निरजला रहे लागे आ आखिरी दाँवे परमेसर के नीक-नोहर पवाइ के त दम ले।....

राधा के इआदि से परमेसर बेकल हो गइल। एतने में चर्र-र-र-चों का साथे केंवाड़ खुलल। कमरा में रामू पठइल। परमेसर एक टक ओके देखत रहि गइल। ओकर आँखि भरि आइलि। रामू बाप का पँजरा गइल। माथ पर बहि के थकिआइल रकत के पोंछत पूछलस, 'बाबू, जीव कइसन बा?' परमेसर के बूड़त-बूड़त जइसे बल्ली के धरान भेंटा गइल होखे। रामू के हाथ पकड़ि के ऊ अपना छाती में दबोच लिहलस। बिसूरत कहलस—'बेटा! हम मान-मरजाद सभे कुछ पी गइलीं। जवानिए ना, शराब के बोतल में भरि के आपन जिनिगिओ पी गइलीं। बाप-दादा सभ के नसलीं। भूत पी गइलीं, वर्त्तमान पी गइलीं आ तोहन लोग के भविष्यो त डकार गइलीं। कुछुओ त बाकी ना छोड़लीं। बाकी...ना पिअब बेटा, अब ना पिअब....।'

× × ×

नर्स दवा देबे आइलि। सुर्ख गुलाबी रंग के दवा देखि के परमेसर चिहुँकि के पलंग से भागल आ आगे देवालि से टकराइ के गच पर गिर गइल।' रानी....अब.... ना पिअब, अब ना....'। के एगो हृदय विदारक गगन भेदी ध्वनि भइल आ फिरु सब कुछ शान्त हो गइल। बस दीवारन से टकरा के एगो प्रतिध्वनि आइल—'अब ना....'।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लीला : एक खंड

डॉ० जितराम पाठक

बाबूजी आफिस से लवटले त तेल के एगो बोतल लेले अइले। माई देखली त अहगरि के कहली, 'बड़ा नीक कइलीं हाँ। ठंढा तेल कहिए से घर में ना रहे। कपार बथला पर बी० डी० ओ० साहेब के मेहरारू किहाँ मांगे जाये के परत रहे।'

बाबूजी कुछुओ ना बोलले आ माई लफि के तेल के बोतल बाबूजी के हाथ से थाम्हि लिहली। बाबूजी खटिया पर ओठँघि गइले। तनी देर भइल त बाबूजी कहले, 'का हो ? चाहो पानी मिली कि ठंढे तेल बोथाई कपार पर ?'

माई तेल के बोतल आलमारी में सहेजि देले रहली आ रसोई घर में चलि गइली। तुरंते चाह के गरम-गरम गिलास बाबूजी के हाथ में पहुँचि गइल। ऊ नान्हे-नान्ह घोंट भरत चाह पिये लगले। माई खड़ा होके निरेखत रहली। उनुका बुझात रहे जे बाबूजी थाकल बाड़े।

माई कहली, 'बुझात बा कि रउआ हँरासी हो गइल बा। तनी सरकीं त तेलवा चानी पर रगरि दीं। मन कबजा में आ जाई।'

बाबूजी में कवनो उत्साह ना उभरल। ऊ ओइसहीं ओठंघले कहले—'रहे द। ऊ त खिजाब ह, बार करिआ करेवाला तेल।'

'एह उमरी खिजाब लगावल जाई ? बूढ़ घोड़ी के लाल लगाम।'—माई कहली। बाबूजी दबकि के चुपाइले रहले। माई रसोई घर में समा गइली।

× × ×

कड़कड़ात पैंट-शर्ट पहिनले आ करिआ बार पर हाथ फेरत बाबूजी बाहर निकलल जात रहले। बुझात रहे जे कवनो घाटि काम खातिर जात बाड़े। उनकरा तेलिआइल चेहरा पर माई के नजरि बिछिलाइ जात रहे। माई से ना ठटाइल त कहलसि, 'केने जाइबि एह बेरा ?'

'आवतानी।' बाबूजी लजाइले कहले आ आँखि नीचे कइके घर से बहरियाइ गइले।

माई बड़ी बिरति ले बाबूजी के अगवानी में बइठल रहे। कभी हेंने, कभी होने। कवनो उदबेग उनुका मन में ब्यापि गइल रहे। बाकी बुझात ना रहे कि माई के का भइल बा। परगट में कवनो बात ना उपटल। माई कवनो अफतरा में घेरइला नियन भइल रहली।

बाबूजी बड़ी राति खा अइले। उनकर गोड़ सोझ ना परत रहे। आँखि लाल भइल रहे। चेहरा उड़ल लेखा। जवना जुल्फी के करिया कइके बड़ा मोह आ ममता से ऊ साँझि खा गइल रहले, ऊ जुल्फी छितराइल रहे। जवन बाबूजी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साँझि खा गइल रहल ऊ बाबूजी ना लवटले। लवटल रहल एगो दोसर बाबूजी जेकर पहचान आजु ले माई के भा अवरु केहू के ना रहे। ऊ अचीन्हा रहले एही से माई डेरा गइलि।

'ई कवन हाल बना के आइल बानी जी ? अबले कहाँ रहलीं हाँ?' के बड़ा मद्धिम सुर रहे।

एह मद्धिम सुर के जबाब देवे के क्षमता बाबूजी में ना रहे। माई के तड़ाक भा हल्ला-हगामा के जबाब बाबूजी के पास रहे, बाकिर एह मद्धिम सुर जबाव उनुका से ना दिआइल। माई फेरु पूछली, 'मन ठीक बा नू ?'

बाबूजी कवनो जबाब ना दिहले। खाटी पर जाइ के पलरि-पसरि गइले कड़कड़ात पैंट आ शर्ट मिसा के चूर हो गइल रहे। ओकर फिकिरिओ बाबूजी ना रहे। तुरंते बाबूजी के आँखि लागि गइल। मुँह बवा गइल रहे। नथा आ स्थिति के सामना करे में बाबूजी सक्षम ना रहले। माई के चिन्ले खून ना छाती पर हाथ धइ के देखली, नाड़ी टोवली।

माई बाबूजी के जगावे लगली, बाकिर बाबूजी ना उठले। खाये के आ माई छोटे-छोटे कवर बाबूजी के खिलावे लगली। बाबूजी अनसाइले लगले। गुट-गुट खिलावे में माई के सुख आ दुखा दूनो उपजल। बाबूजी लिहले त मुँह कगरिआवे लगले। माई मुँह धोइ के जूठ थरिआ लेले रसोई अमइली आ एक दाना टुंगुआइ के चलि अइली।

× × ×

एह मेनका के आवते एगो हंगामा ब्लॉक में उपजि गइल। ऊ जहाँ जा अइसने तूफान लेले जाली। जवानी तूफान ह। जवानी आ तूफान प्रकृति ह एकरा के केंहू रोकि नइखे सकत। एह तूफान के अँजरा-पँजरा जे आई, धरा जाई तूफान झकझोरि दी। जरि हिला दी। कमजोर फंड़-रूख त उखरि के छितरा जाई। एह मेनका के तूफान में कुछु आपनो बनाव-सजाव रहे। एह से एकर आ तेज बड़ा औचक रहे। ई मेनका एह ब्लॉक के ग्रामसेविका होइ के आइ रहली। बुझाई जे कवनो सिनेमा के अभिनेत्री ब्लॉक में नेवता पुरावे आइल होखे जेने जासु चमचम। जे देखे ओकरे कठमुरुकी लागि जाई। आँखि के पलक उनका आ जवानी पर से हटबे ना करे। सब मुरुछाइ गइल रहे। ऊ एगो विजयी मुस्की काटत एह टेबुल से ओह टेबुल के बाबू लोग के लगे घूमल चलत रही।

बाबूजी नू कबो के चोर, नू घटिहा, बाकी मेनका के हवा में बाबूजी धरा गइल रहले। एगो बदलाव बाबूजी के पैंट, शर्ट आ सिंगार पर लउके लागल। जवन बाबूजी सातो दिन पर ढाढ़ी बनावत रहले, ऊ रोजे ढाढ़ी चिकनावे लगले। अत्तर आ फुलेल के घर में परवेश भइल। का मजाल जे कपड़ा कबो गंदा होखे। ओकर क्रीज कबो खराब होखे। कपार के धूपछाहीं बार में खिजाब के करिया रंग कभी फीका ना परे पावे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबूजी गोदाम में मैनेजर रहले। गोदाम के बोरा आ पइसा के झोरा से उनुका फुरसते ना रहे जे कवनो दोसरा ओर ताकसु। बाकिर ना जाने कवना सुदिन में एगो मेनका गोदाम में गइली। बाबूजी ध्यान ना दिहले। अनका मेहरारु के देखल ठीक ना ह। बाकि मेनका के ई ना सोहाइल। ऊ कतने विश्वामित्र के तपस्या भंग कइ देले रहली। बाबूजी के तपस्या भंग ना भइल त उनुका बड़ा तींत लागल। ऊ अपना मीठ रूप के जादू बाबूजी पर फेंकली आ बाबूजी ओकरा चपेट में आ गइले।

कलहल फुलुंगी देखि के गदहो के जीभि पर पानी आ जाला। मरद पूरा गदहा होला। ओकरा त चाही नरम-नरम घासि आ रस से बोराइल खरी-भूसा, जवना के खाइ के ऊ अफरि जाइ। एह मेनका के जवानी के कलहल फुलंगी आ रूप के रस देखि के बाबूजी के मन डोलि गइल होई, एह में कवनो संदेह नइखे। एकरा में केकर दोष बा, कहल मुश्किल बा। जेकर होखे, बाबूजी में नया तर्ज उभर आइल रहे।

एक दिन बाबूजी अइले त कहले 'आजु हमार खायक ना बनी। हमार भोज बा।' केकरा पूछे के रहे जे कहाँ भोज बा। सभ जानत रहे। जानिओ के का करी लोग? बाबूजी एह सब बात से अलग हो गइल रहले।

बाबूजी राति खा लवटले त उनकर मुँह सूजल रहे। ओकइला के कनछी उनका मुँह पर टँगाइल रहे। माई देखली, बाकिर देखि के का होई? उनकर हाथ-मुँह कपड़ा भिजा के पोंछाइल। एह भिन-भिन में नू माई के हियाव खिआवे के भइल, नू बाबूजी खाये के बारे में बोलले। माई रामोदइब कुछु ना बोललि। ऊ बाबूजी के सेवा में जुटि गइलि रहे। कवनो शिकायत ना, कवनो अनराजगी ना। कम से कम बाहर से।

भोज खाये गइले बाबूजी आ मारि खाके अइले। बाद में लोग कहल जे बी० डी० ओ० आ बाबूजी में राति खा मारि-पीटि हो गइल रहे। राति खा मारि पीटि काँहे भइल? कहल लोग जे नयकी ग्रामसेविका खातिर दूनो आदमी में लड़ाई हो गइल रहे। बी० डी० ओ० के हाथे पिटा के बाबूजी लवटल रहले। पता ना चलल जे बी० डी० ओ० के कतना मारि बाजल रहे।

बाबूजी के ई गति काँहें हो रहल बा? माई चहिती त ई सभ ना होइत। होइओ सकेला। बाबूजी माई के बात ना मनिहें तब? बाकिर माई बाबूजी के रोकत काँहें नइखे? रोकला पर बाबूजी ना मनिते त जवन गारी-फजिहत होइत-होइत। बाकिर माई चुप सधले बाड़ी। माई काँहें नइखी बोलत? कवन अइसन बात बा जवना से ऊ चुपचाप एह दर्द के अगेजत बाड़ी? बाबूजी के करनी के फल माई काँहें भोगतिया? माई के नइखे बुझात, जे गाड़ी कवना राह पर जात बिया? जरूरे बुझाता, तबे नू माई दिन-दिन छीजति जातिया। कवनो दर्द ओकरा पंजरी में रोज हिलकोरा मारेला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक दिन त गज़ब हो गइल।

बाबूजी रात के १२ बजे अइले आ अपना घर के चउकठ पर खड़ा हो लगले गरजे बी० डी० ओ० बाबूजी के अफसर हवे, बाकिर बाबूजी आजु ओ बी० डी० ओ० के भरि हीक गारी देत रहले। अपना अफसर के गरिअवला से होई, ई माई के मालूम रहे, बाकिर बाबूजी ओह चिन्ता-फिकिर के छोड़ि के गरजत रहले 'आजु ना छोड़बि, बी० डी० ओ० के खून पी जाइबि।'

ओजा नूँ बी० डी० ओ० रहले, नूँ अवरू केहू। बाकिर बाबूजी के गर सुनि के पड़ोस के लोग जागि गइल। सभे अपना दुआरी पर खड़ा होके ई तमा देखत रहे। बाकिर सभ दम सधले रहे।

माई के कठया मारि देलसि। एगो त ई तमाशा, दोसरे बी० डी० ओ० गारी। माई बड़ा अनेसा आ चिन्ता में चुराइल जात रहे। ऊ बाबजी के हाथ धइ भीतर ले जाये लागलि त बाबूजी ओकर हाथ झटकि देले। माई ईंटा पर गिरि गइ माई के बड़ी निठाह चोट लागल। मन के चोट त ऊ देखा ना सकति रहे, बाकिर के चोट उजागर हो गइल रहे आ ओकरा के सुहुरा-पोल्हा के दबावल जरूरी र माई देरी तक दरद के पधिलावति रहलि। बाबूजी बदस्तूर गारी देत जात र आ कहत जात रहले—'आजु हम बी० डी० ओ० के खून पी जाइबि।'

माई घाव सुहुरावति उठलि आ फेरू बाबूजी के हाथ धइ के घर में ले ज लागलि। बाबूजी पर कवनो बरम्ह-भूत सवार रहे। ऊ माई के फेरु ढकेले के च त माई फइलावाँ हटि गटल। माई ना माननि। बाबूजी के हाथ पकड़ि के भी ले जाये लागलि।

बाबूजी होश में ना बुझात रहले। होश में रहिते त माई के ढकेलि आ बा० डी० ओ० के हइसन हीन गारी मुँह से निकलिते ? माई के पकड़ अपना थकान से बाबूजी लहजि गइल रहले। एह से माई के अब धसोरे के हुव हियाव ना रहे। माई उनकर पाँखुर थम्हले रहे आ घर में खींचति रहे। बाबू बी० डी० ओ० के गारी देते रहले, अब माइओ के गारी देवे लगले। टोला-पर के सामने गारी के पहिला चोट ठेंकते माई के मन काँपल। बाकिर भाई गाह ब रहि गइल। ऊ कहलसि—'ठीक बा, गारी दीं। भीतर चलि के आराम से गारी एहिजा तमाशा काँहें नधले बानीं ?'

बाबूजी एह सोच-बिचार के काबिल ना रहि गइल रहले। फायदा सोचे उनुकर हालत रहि ना गइल रहे। माई बाबूजी के हाथ बहुते देर तक थम्हले रहे

माई बाबूजी के कमजोर क्षण जानति रहे। ओही कमजोर क्षण में माई सहारा पर बाबूजी घर में अइले। ऊ अबहियो फुफुकारत रहले। आँखि टेस भइल रहे। मुँह चढ़ल रहे। बुझाइ, जे गारी के रेला फेरु उनुका मुँह निकले लागी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पानी के गिलास माई के हाथ में देखले त बाबूजी पियसला काग लेखा पानी के गिलास गरदन में उलटि देले। गट-गट पानी पीके गिलास नीचे ढिमिलाइ देले। झन्न' के आवाज चारू ओर व्यापि गइल। एह निसबद राति में 'झन्न' के अनचाहल धुनि बड़ा भयावन लागलि। माई के मन में एगो अनकहल डर पसरल।

बाबूजी माई के हाथे आजुओ राति खा गुट-गुट खइले आ बिना मुँहे धोवले, जूठे मुँहें सुति गइले। माई के देर तक नीनि ना आइल। ओकरा मन के सोझा एगो भयानक आदमी के डंरावन चेहरा बारंबार उभर आवत रहे। डरे माई ओकरा से भागति रहे, बाकिर चेहरा टकसत ना रहे। हठआरी से लाल आँखि तड़ेरले माई के गुड़ेरत रहे। माई पहचाने के कोशिश कइलसि, बाकिर ई चेहरा बाबूजी के ना रहे। ओह में बाबूजी के कवनो छवि ना उभरत रहे। लाल-लाल आँखि देखि के माई डेरा गइलि। बड़ी देर ले ऊ अपना कि थम्हले रहें। बाकिर कवनो क्षण में चिहा के चिकार पारि के चिचिआए लागलि।

बाबूजी निरभेद सूतल रहले। ऊ तनिको ना सुगबगइलें। माई हाँफति रहे। ओकर देहि थर-थर काँपति रहे। बाबूजी सटले फोंइ-फोंइ सूतल रहले। ओह राति माई के नीनि ना लागल।

× × × ×

दोसरा दिन बाबूजी ऑफिस ना गइले। पता चलल, जे बी० डी० ओ० उनुका के खोजत रहलें ह। पता ना, काँहें खातिर खोजत रहले। हो सकेला कवनो अरब बाबूजी के नोकरी पर आवे। माई के सहारा तब त थउसि जाई। बाकिर बाबूजी के खनो चिन्ता ना रहे। ऊ त कवनो दोसरा रंग में गोताइल रहले। उनका ऊपर कवनो पिशाच के कोप रहें। तबे नू उनुका दीन-दुनिया के कवनो फिकिरि ना रहे।

कई दिन बाद पता चलल जे बी० डी० ओ० आ बाबूजी में सुलह-सपाटा हो गइल। ई पता ना चलल कि कवना बात पर बी० डी० ओ० आ बाबूजी में सुलह भइल हा। माई के मन बड़ा आनन्दित रहे।

एक दिन सुनाइल, जे ग्रामसेविका के बदली हो गइल। बाबूजी ओह दिन उचटल मन से घरे अइले। खाये के त खइले, बाकिर बुझाय जे ई अइसन मनियारा साँप हवे, जवना के मणि केहू छीनि लेले बा। एकदम निस्तेज, बुझाय जे जाने नइखे।

दोसरा दिन बाबूजी अइले। बुझात रहे जे ऊ बड़ा रोवल बाड़े। मन आ तन दूनो से ऊ थाकल रहले। थउसल बाबूजी के देहि के सरबस खून चुसा गइल रहे। एकदम झक्क सफेद चेहरा देखि के माई के मन थहरा गइल। कहलसि—'का जी, कइसन तबियत बा?' कपार टोवे लागलि जे बोखार त नइखे। बोखार ना रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबूजी थउसले रहले । माई फेरु पूछलसि—'काँहें अइसन मन कइले बानीं ? एह में हमरो आधा हिस्सा बा । आधा दे दीं जे कम हो जाय ।'

बाबूजी पुक्का धारि के रोवे लगले बड़ी देर के वाद कहले—'लीला गइली ।' माई पुछलसि—'कवन लीला ?'

'ग्राम सेविका ।'

बुझाइल जे माई गिरि जाई । बाकिर खने में ऊ बाबूजी के सिर गोदी में लेके सुहुरावे लागलि । बाबूजी फफकि—फफकि के रोवत रहले । माई रोवति ना रहे । बाबू जी के बार में ओकर अंगुरी घूमत रहे । बार में से बहुते सफेदी बाहर झांके लागलि । बुझात रहे जे बाबूजी के बार में एक हू बार करिया नइखे । सब झक्क सफेद हो गइल बा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवाल

सुधा वर्मा

आज बारहवाँ दिन ह, जब उ खटिया पर पड़ल बाड़न। खटिया प पड़ल, खटिया के ओरचन नीयर उनकर जाँगरो ढील हो गइल बा। खटिया के ओरचन त कसलो जा सकेला, बाकि उनकर जाँगर ? अब त उठहूँ के ताकत नइखे रह गइल। ना त ऊहे रहन जे एक दिन में ६ मील पैदल चलत रहन। हाथ में किताब के बंडल ले ले दूकाने दूकान घूमत ना थाकत रहन। तब के बाते कुछ आउर रहे। तब आम के बगइचा से आम आवत रहे; आ आम दूध में घोर के खात रहन। बाकि धीरे-धीरे करके सब बिकाये लागल, छोटकु के डागडरी पढ़ावे में बगइचो बिकाय लागल तइयो अपना देह पर आसरा कइले रहन। उ आपन देह जोरा से बहुते काम कर लेत रहन। कहियो जब मन थाकि जाय त कहस कि उनकरा से अब काम ना होई। तब मलकिनी उनकरा के ढाढ़स बँधावस। मेहरारु के उ मलकिनिये कहत रहन। मलकिनी कहस—"चले दीं जले चलता, अबहियें से काहे के बेटन····के मोहताज हो जाइल जाव।" आ फेर उ कइसहूँ काम करे लागस।

मलकिनी···मलकिनी का इयाद से उनका अँखियन से दू बूँद आंसू चू गइल। मलकिनी उनकरा के अकेले मझधार में छोड़ि के चल गइली। अब त एकदम बेसहारा हो गइल बाड़न, एकदम बेसहारा, केहू कतो ना। बुझाइल कि गरदन में कुछ अँटकल आवता। उ पुकरलन—"बुधना, ए बुधना!"

"का ह मालिक ?"

"बुधना!" उ खटिये पर से चिचियइलन। देह त भोथराइये गइल रहे, साँसो बुझाय जे ओढ़ल होखे—'बुधन, उ आपन आँखि क धीरे-धीरे हिलावत कहलन, काहे दो मन नीमन नइखे लागत रे, ई अन्हरिया काहे के कइले बाड़, तनी आजो त दिया जरा दे।" आ फेर तनी ठहर के कहलन—"आ सुन तनी चिलमिया भर के दे।"

बुधना पायताने बइठल उनकर झुर्रीदार चेहरा के देखत रहे।

"ना मालिक चीलम मत पींही, ना त खाँसी अउरु जोर पकड़ ली, आ फेर देह सम्हारे ना सम्हरी।"

उ उठ के बइठ गइलन आ कहलन, 'अरे अब देह में रहिये का गइल बा, जेकर मोह करीं। खँखरी बूट के केतनो रगड़बे त का सतुआ तिकली ? अरे, पीये दे बुधना, अब ईहे त सहारा बा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"हूँ मालिक !", बुधना निःसास छोड़ते कहलस आ उ उनकरा के चिलम सुलगा के उनकरा हाथ में धरा देलस। फेर पायताने जाके बइठ गइल। उ समझ गइल कि अब मालिक के अंदर नाव चल शुरु हो गइल। इ त नाव चले का पहिले दोसर नाववाला सब के मीठ चाल देवे के छोट-मोट हिलकोर रहे।'

उ चिलम का रोसनी में देखलस, मालिक का चेहरा पर केतना आड़ा-तिरछा रेखा पड़ गइल बा, जे केतना कहानी, केतना सवाल अपना में छिपवले बा, उ सवाल जेकर जबाब ना होखे, उ सवाल त हवा में टंगल रहेला। उ घबड़ा के आंख मल के देखे लागल। अन्हार जइसे भूत नीयर बढ़ल आवत रहे। बाहर हवा जोर जोर से बहत रहे। उ मालिक किओर निहारे लागल। उहो ओकरे ओरि देखत रहन। अपना ओरि देखत देखि के टोक देलन—

"का सोचतारे रे बुधना ?"

"ना कुछ मालिक।"

"ना; कुछ त सोचते बाड़े।"

"मालिक, रउआ बीमार बानी, आ कोई आपन जन पास नइखे।...."

"हूँ रे बुधना, बाकि आपन-आपन करम !" उ निःसास छोड़ते कहलन—"ना त जब कमात रहीं त सब केहू साथहीं रहत रहे, आ जब बजार से आईं त छोटकू ब केतना हुलास से पूछे 'बाबूजी, हई चीज ना ले अइनी ह' सांचो कहतानी बुधना, मन में बुझाय जे अगरबत्ती महँकता। आरे, घर अँगना त बाले-बच्चा से नू हँसेला। का से का हो गइल।"

फेर तनी ठहर के कहलन—"तोहरा से का कहे के बा—। तू त सब जानते बाड़े।'

बुधना बोललस कुछ ना बाकि ओकरा मुँह से जनात रहे कि ओकरा सब बात नीक ना लागत रहे।

बुधना कुछु ना बोललस त उ हाथ में के चीलम सिरहाने ताखा प राखि के फेरु लेट गइलन। बुधना उनकरा सूतल देखि के ओसारा में आके बइठ गइल आ बाहर अन्हार रेला मे कवनो चिन्हार परछाँई खोजे लागल।

का दिन रहे, बुधना के दिमाग में सब बात एक-एक करके सनीमा के फोटो खानी उभरे लागल। तब मलकिनी जीयते रही। ओह घड़ी उ साते-आठ साल के रहल होई। बड़कु, बड़कु ब आ छोटकु सब कोई रहत रहे। बप्पा घर के सभे काम करत रहन। उ खाली टहल-टिकोरा करे। बप्पा ओकरा हरमेसा समुझावत रहस—

"देख बुधना, हम त पाकल आम बानी, आज बानी कालह टपक जाइब बाकि तोहरा ला कहतानी। नीमक खाके नीमकहरामी मत करीहे ना त तो...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कबहूँ निस्तार ना होई। भगवान नीमकहराम के कबहूँ माफ ना करेलन। चाहे लाखों संकट आवे, मालिक मलकिनी के साथ कबहूँ नाहीं छोड़िहे।"

बुधना इ बात के गाँठि पार लिहले रहे। बाकि मलकिनिये पहिले साथ छोड़ गइली। छोटकु के अइला के थोड़हीं दिन बाद मलकिनी चल बसली आ ओकर बप्पा भी। फेर त माई से सून घर छोटकु के काटे दौड़े आ उ जोड़ तोड़ लगा के आ कुछ खेत-उत रेहन रख के बिदेश चल गइलन। बाँच गइलन बड़कु आ बड़कु ब। बड़कु ब भी भागहीं के रास्ता खोजत रही। उ त मलकिनीए से कै टक्कर लड़ चुकल रही बाकि ओह घड़ी छुट्टा सांढ़ ना भइल रही। बाकि अब त उहे सब कुछ रही। छोटकु के बिदेश गइला से आ।उरो लहरत रहत रही। आ फेर उहे भइल जेकर बुधना के डर रहे।

उ बजार गइल रहे नीमक लावे ला। लौट के अइलस त देखलस कि बड़कु आ बड़कु ब के साज-समान रक्सा पर चढ़त रहे।

ओकरा के आवत —देख के बड़कु ब गरजल—'हई लीं! आइये गइलन सपूत!' आ कमर से चाभी के गुच्छा निकाल के घूबाक ओकरा ओर फेंक देली—

"हई ले। सम्हार आपन घर-दुआर, हम चलनी।"

उ बात नाहियों समझ के समझ गइल। हाथ में के नीमक जमीन प रखि के हुबक के बड़कु ब के गार पकड़ लेलस—"रउए नू एह घर के मलकिनी बानी, मत जाईं मालिक के अकेले छाड़ के।"

बड़कु ब झपट के आपन गार खींच लिहली आ तमक के कहली—"हूँ-हूँ; रहे दे इ चोंचला। हम कहाँ के रानी आ कहाँ के राज-पाट। गुलछर्रा उड़ावे ला आउर लोगि आ मरे खपे ला हम। छोटकु के डागडरी पढ़ावे ला सब जर-जमीन बगइचा बेचा-खोचा गइल। जाये लगलन बिदेश त खेतवो मे से आधा बेंच गइलन। हमनी ला खाली उहे खेतवा रहे। हई मकनवा बुढ़वा नइखे देत। बुढ़वा मरी त करेजा प लाद के ले जाई।"

लोगन के आस-पास भीड़ बढ़ल जात रहे। बड़कु एक नजर घर के ओरि देखलन आ फेर रेक्सा प चढ़ि के चल गइलन, त उ रेक्सा के पहिया के निसान देखत रह गइल। बुधना का अन्दर जइसे आग जरत रहे। हइसन बोली। आपन लुगाई रहित त गँड़ासा से मुड़ि काट दित बाकि दोसर के जनाना के का करो। एतना दिन ले मालिक कमइलन आ खाइल लोग आ जब सहर मे नोंकरी लाग गइल त मालिक के बोझा कपाड़ प लोग कहाँले लेवे जाव, त बहाना बना-बना के घर छोड़ दिहल।"

लात से कुछु ठेकल त देखलस कि नीमकवा छितराइल पड़ल रहे। उ मुड़ी लटकवले घर में घुसल त देखलस कि मालिक अँगना में काई का पास बेहोस पड़ल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहस। आ, ना जाने तेही घड़ी से उनकरा कवन रोग पकड़लस कि उ आज
खटिये धइले बाड़न।

हवा अपना जवानी प रहे। बुधना अपना कान प चदरि लपेट लिहलस।
भीतर से उनकर आवाज रेंगत आइल, "अरे बुधना, सुत गइले का रे?"

उ चिहुंक के उठल, "ना मालिक, कहीं का बात ह।" आ उनकरा गोरथा
जाके खड़ा हो गइल।

"अरे, बड़ी जार लागता रे, तनी कथरिया ओढ़ा दे।" बुधना कथरिया ओढ़ा
देलस, कै जगह पेवन से सीयल।

उ थरथरात कहलन—"अरे, एकरा से जार नइखे जात रे, हड्डी में जा
समा गइल बा।"

बुधना के आंखि तनी गील हो गइल— "मालिक एही से नू कहत रहीं
रउआ छोटकु के पासे चल जाईं। उ त बेचारू कै बेरा बोलवलन। उ त खरचो भेजे
के कहले रहन बाकि रउए नू बेकार के एह जर—जमीन का मोहे ना गइनीं।
रहतीं ना जान के जँवाल होइत।"

उ गरदन के कथरी खींचत कहलन, "अब तोहरो ला जान के जँवाले
हो गइलीं रे।"

"ना मालिक!" उ अपना देहि प से चदर उठा के उनुकर देहि प डा
देलस, "रउरे नू हमर बाप-महतारी बानी?"

"हूँ...." फेर तनी ठहर के कहलन, 'बुधना छोटकु के चिट्ठी ना आइल ह रे'

"आइल रहे मालिक परसों।"

"तब तू हमरा से कहले ना," उ खुशी से काँपत स्वर में कहलन, '
लिखले बा, आवहू के बारे में लिखले बा? अब त हमार बेरा नजदीके
एही से लिखले रहीं कि आ जाइत त भर नजर देखियो लेतीं आ हइहे त ए
मकान बाँचल बा, बाप-दादा के निसानी, से ओकरा हवाले कर देतीं।
ले आई?'

"दू चार दिन में आवे के लिखले बाड़न।" बाहर हवा राच्छस नियर
फाड़त रहे। एके बेरा जोर से आवाज भइल, त दूनो आदमी चौंक गइल।

"बुधन, देख त देवाल गिरल का रे? हुनकर चेहरा बड़ा निरीह
गइल। अब त पइसो नइखे जे मरम्मत करा सकब। अभी परेसाल नू उत्तर
देवाल मरम्मत कइले रहीं।"

बुधना तले उठ के चल गइल रहे। उ अपने मने बड़बड़ाइत रहन, '
भगवान, छोटकु के का मुँह देखाइब। ईहो देवाल गिर जाई त फेर कहाँ से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओकरा ला हम कुछु ना रखनी। उ लोग त आपन हिस्सा बरोबर लेके अलगा होइये गइल।"

बुधना हाँफते आके कहलस, "खपरवा गिर गइल।"

"अइसे मत कह बुधना, अइसे मत कह" उ काँपत रहन कि उनकर आवाज बुधना ना समझ सकल।

फेर तनी ठहर के कहलन, "अच्छा खाली छपरवे नू गिरल ह, देवलवा ना नू, बुधना इयाद बा नू इहें देवाल तरे छोटकु हमेशा खेलत रहे, आ फेर पढ़ाइ के दिन में ओहिजे पढ़त रहे। हमरा सन्तोष बा कि हम अपना करेजा के खून सुखा के भी छोटकु के एतना बड़ा डागडर बना देनी। अरे, पढ़ावे त बड़कु के भी चहनी, उ ना पढ़लन त हम का करीं। "बुधना", फेर जइसे साँस लेत कहलन 'छोटकु त बहुत बड़ डागडर नू बा। सुननी हँ कि अखबारो में ओकर नाम छपेला।'

"हूँ, मालिक।"

"बुधना, छोटकु एतना बड़ा आदमी हो गइल, बाकि हमरा के भुलाइल बा। हमरा के देखे आवता। अबकी आई त हम कहबि कि आदमी का अपन घर-दुआर न छोड़ के, अब एहीजा आके डागडरी करो, एहीजा लोग जान जाई कि हम केतना बड़ा बेटा के बाप हईं। ओ घरी दुआर फेरू चमक जाई, ना रे।' उनकर आँखि चमकत रहे।

बुधना अंदरे-अंदर जइसे कुछ पीअत रहे। उ कतना दिन ले झूठ बोली कि छोटकु दू चार दिन में आ जइहें। साँच बात प कबले रंगीन परदा डालो। कबले छिपावो कि छोटकु लिखले बाड़न कि पासपोर्ट ना बने से अभी उ १-२ महीना का बाद आ सकीहें। उ सोचलस कि सब बात साफ-साफ कह दे। बाकी साँचो बात बोलल भट्ठी में चढ़हीं नीयर होला।

उ मालिक के मुँह देखि के चुपा गइल। खाली धीरे से ईहे कहलस कि "मालिक, सुति जाईं; कुछु सोंची मत।"

उ लड़िका अस चुपचाप कथरी ओढ़के पड़ गइलन। बुधना के अंदरो एगो नाव चलत रहे, बिना चाल के। उ बाहर दलान में खड़ा होके अन्दर निहारे लागल। ओकर मन बहुत उदास रहे। बाहर घटाटोप अन्हार रहे। बुधना सोचत रहे, अगर अन्हार फाट जाइत त आसमान के का जाइत ?

उ घुम के देखलक, मालिक सूत गइलन, एकदम शांति रहे, बाकी इ शांति मीठ ना रहे, रहे इ कैक्टस उगावे वाला। फेर जोर से आवाज भइल। बुधना जाके देखलस, पीछे वाला देवाल भी गिर गइल। उ एक छन देवाल के देखत रहल आ फेर दउड़ के आके मालिक के पायताने खड़ा हो गइल। एक बार फाटल कथरी में से झाँकत उनकर पथराइल देह के देखलस आ फेर खटिया के पौउआ ध के निढाल हो गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाल निशान

बिन्दु सिन्हा

किर्र....दरभंगा सकरी रोड पर सन्नाटा भइला से बस आउर ट्रक के चाल अइसहीं तेज हो जाला। झटका से ब्रेक लेला से खूब तेज चलत ट्रक एक बएर किरकिरा उठल। ट्रक का डाला पर बइठल खलासी बीरी पीअत कवनो फिल्मी धुन गुन गुनात रहे। ट्रक रुकल त बीड़ी फेंक के उ नीचे कूद गइल, भद्दा गारी बकत —'तोरी....'

सड़क पर चारों ओर खून फइलल रहे आउर एगो बकरी के बच्चा ट्रक के पहिया के बीच दबाइल रहे। खून देखते ओकरा मुँह से फेंर निकलल, 'हे राम—इ का भइल ?'

ड्राइवर भी आपन सीट छोड़ के नीचे उतर आइल आ पूछे लागल—'का भइल रे ?'

लक्खी एक ओर बइठल खजूर के पत्ता से चटाई बीनत रहे। ट्रक का ब्रेक के आवाज सुनलस आ बकरियन के भागत देखलस त घबरा के सड़क पर आइल। बकरी का बच्चा के पहिया का नीचे देख के ओकर त होस हवास गायब हो गइल। ड्राइवर ओकरा के देखलस त कड़क के पूछलस, —

'कारे छौंड़ी, इ बकरी के बच्चा तोरे ह ?'

लक्खी का समझ में ना आइल कि का कहो। सड़क पर चारों ओर खून फइलल रहे। ओकरा ओह खून के धार मे अपना काका के मुँह लउके लागल। ताड़ी के नशा में धुत्त, ओड़हुल का फूल जइसन लाल लाल आँख 'बाप रे' '' घबरा के उ आपन आँख बन्द क लेलस, ''अब का होई....काका सुनी त जाने मार दीहें मारे में ओकरा कवनो देर ना लागे।''

लक्खी जनम के टुअर ह। मतारी बाप केहू के नइखे देखले। जब काका काकी के मार गारी ना सहाय त चुपचाप गगरी उठा के बउली के ओर चल जाले का करी बेचारी, कइसहूँ दिन त काटहीं के बा। बउली का किनारे बइठ के घास फुस तूर के गहना बनावेले, अपने पहिनी, गगरिओ के पहिनाई। गगरी का गरदन में गलबहियाँ देके बइठल बइठल ओकर मन के दुख भुला जाला, गगरी जइसे ओकर सखी सहेली होखे, आपन सब दुख ओकरा से बतिआ जाले, 'जान ताड़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज सीतलवा चोरा के गुड़ के भेली खा गइल ह आ मार पड़ल ह हमरा···पीठ छिला गइल बा आ बचनुआ क देखलु ह, कइसन चोरा के बकरी दुह लेलस ह···।

ऊ निहुर के बकरी के बच्चा के उठावे लागल त खलासी हरभज ओकर हाथ झटक देलस आ अपने बचवा के टांग पकड़ के एक ओर क देलस। ड्राइवर चिचिया के कहलस, 'अरे हरभजवा जल्दी चल, देर होई त ठेकेदरवा लाल पीअर होवे लागी।' हरभज उचक के ट्रक पर चढ़ गइल।

भर्र···ट्रक खुल गइल तबो लक्खी उहाँ से हटल ना, चुपचाप ओइजे खड़ा रहे। ओकरा आँख में हरभज क सांवर चेहरा, हृष्ट पुष्ट देह आ लापरवाह नजर घूमत रहे। ओकरं सउँस देह अकड़त जात रहे। आउर बकरी कहाँ गइली स, उ एकदमे भुला गइल। घर के सब काम धाम करके रोजे दोपहरिया में बकरी चरावे निकलेले, अइसन कबहू ना भइल। ओकर काकी बकरी का बच्चा क मरल सुनलस त दउड़ल आइल आ लागल लाते मुक्के ओकर खबर लेवे, 'हरामजादी, एही खाती तोहरा के पालपोस के एता बड़ कइनी कि तू हमरे गला में छूरी लगाव, आज तोरा जीअत ना छोड़ब, चल घरे, त बतावतानी। सेंतिहा के खा-खा के दिमाग बउरा गइल बा।'

काकी के हाथ तनी ढील भइल कि लक्खी सीधे भागल उहाँ से बउली के ओर। दुनिया जहान में आउर ओकरा कहीं जगह ना रहे। बउली का किनारें बइठ के पानी में गोड़ लटका देलस। पानी मे काई जमल रहे, ओकरा गोड़ में लपटा गइल तबो उ हटल ना, ठण्ढा पानी बड़ा अच्छा लागत रहे; देह में लागल घाव के पीरा एकदमे भुला गइल।

सउँसे बउली मखाना के पत्ता से भरल रहे। ओकरा मन करत रहे कि गर्दन तक पानी में उतर जाईं खूब डुबकी लगाईं बाकि मखाना के काँटवाला पत्ता देख के डेरा गइल बाप रे···डुबकी लगवला पर त सउँसे देह छिला जाई, खून बहे-लागी। खून के इयाद परल से फर ओकरा सड़क पर के बात इयाद आ गइल, हरभज के साँवर चेहरा आंख का सामने घूम गइल।

डुबकी लगावे के इरादा छोड़ के उ पीछे मुड़ल त रधिया पर नजर पड़ गइल। रधिया मखाना के एगो बड़का डाढ़ तुरले भागल जात रहे। उ पुकरलस, 'अरे रधिया, सुन त, कहाँ भागल जा ताड़े।'

रधिया रूक के ओकरा के सन्देह से देखे लागल त उ फेर कहलस, 'अरे भाग मत। आव इहां बइठ के मखाना के फर खाइल जाव। दू चार गो आउर डाढ़ तुर ले आव।'

'ना बाबा, रधिया एने ओने देख के कहलस, 'सुन्दर काकी देखीहन त चाम खींच लीहन इहाँ ना बइठब।''

अरे मजाल बा चाम खींच लेबे के·····आव आज मन भर मखाना खाइल जाव।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अँधार भइला पर लक्खी लुकत छिपत घरे लौटल, उहँ····काकी देखवो करी, का करी, केतना डेराईं, 'जेतने डेराइला ओतने काकी आँख देखावेले । उ चुपचाप के एगो कोना में बइठ गइल । रात भइल । घर के सब लोग खा पी के सुत गइल ओकरा के केहू खाये के ना पुछल । सीतलवा के उ एतना मानत रहे, अपना मुँह कौर निकाल के दे दी बाकीं आज उहो ना पुछलख । लक्खी अईंठ के रह गइल खाली पेट भला नींद आवेला ? ओकरा रह-रह के इयाद पड़े, ड्राइवर कहत जल्दी कर हरभज, देर होई त ठीकदरवा के लाल पीअर आंख देखे के परी, त ट्रक इ राहे रोज जाला माटी ढांवे । ट्रक के हरियर डाला पर बइठल·····ओकरा खेयाल भटके लागल । हरभज रोज ओह रास्ते जात होई । कहीं फेर कोई दिन एगो बकरी के बच्चा ट्रक के नीचे आ जाई त ट्रक रुक जाई, उ हरभज के फेर देख सकी ड्राइवर गारी बकी त का, काका मारी पीटी त का, हरभज त फेर उतर के ओकरा सामने आ जाई, ओकर हाथ झटक दीही । ओकर सउँस देह सिहर उठल ।

बकरियन के चरे के छोड़ उ अपना खेयाल में डुब जाय । सड़क पर के वाला सब ट्रक ओकरा हरियरे रंग के लउके, बुझाय सब पर हरभज बइठल बा सांझ हो जाय, बकरी सन मिमियात घरे पहुँच जाय तबो ओकरा होस ना होखे । ओकरा केकरो से डर ना लगे । काकीयो से ना, उहँ का करीहें काकी ।

सड़क पर आवत ट्रक देख के ओकर करेजा धड़के लागे, हाथ गोड़ फूले लागे कहीं अइसन ना होखे कि ट्रक रुक जाय आ हरभज उतर के ओकरा सामने आवे । अइसन भेस में ओकरा के देख के उ का कही, फाटल साड़ी, लट्टा भइल केस, बेवाय फाटल गोड़ । रसोई में से तेल लेके चुपचाप माथा मे लगा लेवे, चोटी कर के अयना में आपन मुँह देखे त मन करे तनी टीका लगाली, लाल टीका लगवते मुँह भक-भक करे लागी अंजोरिया अइसन । फाटल साड़ी के सीयुन चिकन बना लेवे ।

काकी के नजर में कुछ छिपल ना रहे । लक्खी के बदलत रंगढंग देख ओकर माथा ठनकल, 'बाप रे, छऊँड़ी कहीं कुल मे दाग ना लगा दें, अब जल्दी बिआह सादी कर देवे के चाहीं ।'

काका कहले, हम बइठल नइखीं, बर खोज लेले बानी, हरिहर के त देखले बाड़, खेती बारी त बड़ले बा, दुआर पर दू तीन गो लगहर बा, लखिया का कवनो दुख ना होई ।' हरिहर के त बहुत उमिर बा, चार-चार गो लइका बाड़े स ।' काकी कहली त काका हँसे लगले, 'अरे का भइल बहुत उमिर बा त, कहाउत ह जब बूढ़ तब पाठा, कइसन हट्टा-कट्ठा देह बा, देख के मन जुड़ा जाला····आ सबसे बड़ बात बा कि बियाह में एको पइसा खरचो ना पड़ी कुल खरच हरिहर करीहें, ऊपर से पाँच सौ रुपयो देवे के कहलन ह ।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काकी सुन के फुला गइली। पाँच सौ रुपया मिली त अपनो दुआर पर एगो लगहर हो जाई। जे सुने से कहे, काका काकी होखे त अइसन, लक्खी घर में रानी बन के रही, ओकरा कवनो दुख ना होई।

लक्खी सब के बात सुने लेकिन बोले ना। ओकर एगो अलगे दुनियां रहे, जवना में हर घड़ी हंसी छितराइल रही। लाल लाल गुलाब····जब हरभज के इयाद आई चारों ओर गुलाबे गुलाब महक उठी, बुझाई कि गुलाब के फूलवारी में भुला गइल बा।

अपना खेयाल में मगन लक्खी के होस ना रहल कि उ का कर देंलस। बकरी के बच्चा सड़क पर दम तुड़त रहे। चारों ओर खून फइल गइल रहे। ट्रक रुकल त डाला पर से कूद के हरभज ओकरा सामने आ गइल, आ कस के एक चांटा मरलस ओकरा गाल पर, 'काहे रे डाइन, इ बचवा तोर दुसमन रहे का कि जान के एकरा के ट्रक के नीचे डाल देंले ? अब जे अइसन करबे त झोंटा पकड़ के तोरो के एही चक्का के नीचे पीस देब, बुझले ह का ?'

लक्खी के चेहरा लाल हो गइल। गाल पर अंगुठी के लाल निशान उग आइल। ड्राइवर ऊपरे से बोललस, 'अरे छोड़ हरभज, का बात के बतंगड़ बनवले बाड़ें', अबेर होता।'

'ना डरेबर साहेब, बात के बतंगड़ नइखीं करत, इ डाइन जान के बचवा सबके ट्रक के ओर हूरपेट देंले, आज हम अपना आंखि देखनी ह।'

हरभज फेंर चउक के डाला पर चढ़ गइल। लक्खी एकटक ओकरा क देखत रहे। ओकर सउसे देह अकड गइल। ट्रक आंख से ओझल हो गइल तबो ओकरा होस ना भइल, बुझाय गाल पर कुछ चिन्गारी अइसन बर रहल बा—। हरभज के चाटा के लाल निशान आउर लाल हो गइल, गाल जइसे सेनुरिया आम होखे।

आज लक्खी के बिआह ह। दुआर पर सहनाई बाजता। लाल चुनरी पहिरले लक्खी बइठल बा आ अंचरा के लाल छोर में खोज रहल बा लाल खन, लाल गुलाब, लाल निशान। हरभज के थप्पड़ के निशान जइसे गाल पर ना करेजा पर उग गइल होखे, अब कबहूं ना मिटी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के भेजल ?

हरिकिशोर पाण्डेय

करवट बदललस जमुना बहू त जँतसार के गीत कान मे रहल । हड़बड़ा ऊ उठ गइल । बड़ो रना के आधा देह चटाई से घसक के भुइयाँ में चल गइल रहे ओकरा के चटाई पर घींचलस त ऊ कोंकिया के गोड़मुड़िये सूत गइल । जमुना आपन पलानी बहारे लागल । बाँस के एगो कोंपड़ आसमान मे एगो तारा के ... मार देले रहे । एगो कउआ बोलत उड़ गइल त बुझाइल जे अन्हार छाता लेब भक दे गुटिया के गिर गइल । ऊ विहुकल—'के ह ?' बुझाइल जे इनार पर, कनइ... का गाछ तर केहू खडा बा ।

'हम हईं रे, जमुना भाई ब, उमाशंकर ।'

ऊ झाड़ फेंक के लपकल—'आरे, बबुआ ? गोड़ लाग तानी । बाप-रे-बा रउआ केने अलोपित हो गइल रहनी हँ ? जनमभुईं के मोहो ना लागल ?' जमुना उनकर गट्टा धके पुछलस त उनका बुझाइल जे जनमभुईं गहुआ लगा देलस ।

लोटा लेके केहू खोंखत खेत का ओर चल गइल ।

आपन डीह का ओर अँगुरी बतावत उमाशंकर हँस के कहलन—'केने हम जनमभुईं बा रे ? हई डीह ? कनइल के एगो गाछ त बाँच गइल बा, कह त ओ पर चढ़ के बइठीं ।'

'काहे रउआ कनइल पर....'कहके ऊ हाथ घींचत अपना पलानी का ओर चलल त उमाशंकर ना बुझलन कि ओकर कण्ठ रुन्हा गइल रहे ।

चटाई निकाल के बिछवलस आ उमाशंकर डोल लेके मुँह-हाथ धोए इ... पर चललें । झकझोर के बेटा के उठवलस जमुनाबहू —'रे बबुओ, उठ-उठ... ना रे मलेछवा....हऊ देख काकाजी आइल बानी....दउड़ के गगाबहू से दही ... ले आव....हई ले कचोरा....आ सुन, तनी मट्ठो ले लीहें, कहिहे जे एगो कुटुम आ... बा माई चिरउरी कइलस ह....धउड़ के आव ।'

चिउड़ा-दही के जलखई का बाद मुँह पोंछत कहलन उमाशंकर—'जमुना... ब, हम एगो काम से आइल बानी । हमार त सब मरिये-बिला गइल, बाबाजी के ... ना हरे जोते दी लोग, ना चउके-बरतन करे दी । जनेव बाँट के कै दिन भीख माँग... अइनी हँ जे डीहवो से गर्दन छूटो । करीब पनरह धुर पड़ी, बेंच-बांच के ओही ... चल जाईं ।'

मुँह वाके ताकत रहे जमुनाबहू; एक बेर डीह का ओर तिकव के ... लस—'ई....ई....बाप-दादा के धरती बेंच के ओही जा चल जायब ?....कहवाँ ...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आयव बबुआ ?' उमाशंकर बोलनन—'आरे, जहँवा रहीले, हम पटना नू रहीले रे। पटना सिटी सुनले बाड़े ? गंगा का किनार पर एगो मंदिल बा हनुमान जी के, ओही बानी। जगहा नीमन बा, लोग-बाग आवते रहेला, रोज कुछ ना कुछ मिलिये जाला; एने-ओने कथो-कथो बाँच दीहीले, कुछ बरत-उरत में छअल-छावल हो जाला। अकेलुआ देह में ढेर हो जाला, कवनो हरजा नइखे।....तोरा से ढेर दिन पर भेंट होता।'

जमुनाबहू उनका ओर एकटक देखत रहे बाकिर असल में ऊ पटना सिटी में गंगा का किनार पर हनुमानजी का मंदिल में पहुँच गइल रहे। घड़ी-घण्ट से ओकर कान फाटल जात रहे....खानी-बिखानी के लूगा-फाटा गहना-गुरिया पेन्हले मेहरारुअन, लइकन आ मरद-मानुस के मेला लागल रहे....लड्डू-बतासा के खरिहान भइल रहे हनुमानजी का गोड़तर। तबले उमाशंकर टोकलें—'का सोच ताड़े रे ?' ऊ चिहुक के कहलस—'कुछऊ सोचत नइखीं ए बबुआ....हम का सोचेब ? कनुइन के बेटी नइहर घोनसार, ससुरार घोनसार। जनमे से आपन करम खपरी में भूँज रहल बानी; मरेब तबले भूँजेब। जबले ऊ रहलन हँ त मांग चमका लेत रहीं, अब त ओकरो के भूँजिए देले बानीं। आरे, ईहे कहीं कि एगो बहोरना बा जे कोख के सिगार क ले तानी, ओकरे से तनी आँख में अँजोर हो जाता। ओकरे खातिर जाँगर ठेंठाव तानी....ए बबुआ, एगो बात कहीं ?'

'कह ना, का ह ?'—पंडित कहलन।

ऊ बोलल—'रउआ खिसिअइतीं ना त कहितीं जे....बहरनो के अपना साथे ले ले जइतीं। घर के लड़िका बा, एक लोटा पानी दीही, राउर सेवा-टहल करी, पड़ल रही...भूखे ना मुई।'

उमाशंकर कहलन—'आरे, हमार सेवा-टहल काथी करे के बा ? चूल्हा-चाकी रखबे ना करीं, एनहीं-ओनहीं से काम चल जाला...बाकिर ठीक बा, तोर मन बा त साथे लगा दीहे, ना हमरा लगे रही त, लमहर जगह बा, कतहीं कुछ धराइये देब, गुजर हो जाई।'

जमुनाबहू का आँख में नेह के चमक बढ़ गइल—'हँ ए बबुआ, राउर छोह रही नू त ओकर रोजी लाग जाई, हम निचिन्त हो जायेब। हमार कवन, दुखड़ा-धंधा कके काट लेब।'

पाँच दिन का बाद उमाशंकर पंडित का साथे बहोरना पटना चल गइल।

× × ×

हर महीना दस, कबहीं पनरह गो रुपया मनीआडर से आ जाय जमुनाबहू का नावें आ ओमें लिखल रहे—'जमुना भाई ब के उमाशंकर का तरफ से शुभ-आसीर्वाद। बहोरना नीके बा, काम करत बा। पनरह गो रुपया भेजत बा।'

निहाल होके जमुना बहू अँचरा का खूँट में रुपया आ अधकट्टी बान्ह लेबे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिन बीतत गइल। एक बेर मनीआडर लेके चलल जमुनाबहू त झनके लागल—'मार मुँह धके! अइसन बाड़न, उमाशंकर बबुआ जे एक हाथ के कागज रहेला. आ इतनी सा बात लिखेलन, बुझाला जे समोवार लिखे में खरच लागेला उनका। आज एक बरिस हो गइल। लोग से कइ गो चिट्ठी लगववलीं कि तनीं देखे के मन करता ओकरा के, त मनीआडरे में एक टुम लिख देवेलन जे छुट्टी होई त जाई। दसहरा बीतल—दियरी बीतल···आ आज छठो बीत गइल।

अब कवनो कउआ रूढ़ बोलके ओकरा पलानी पर से उड़ जाय त ओकर छाती बड़ा धकधकाए लागे। रात के अँगना में चटाई पर चिते पटाइल रहे आ कवनो तारा टूटे त आँख बन करके सब देवी-देवता गोहरावे लागे। सूतला में बिलाई कूद के हँड़िया फोड़ देवे त ऊ चिहुक के उठ जाय, फेरू रात भर नींद ना पड़े।

एक दिन मँगरू महतो मकई भुँजावे अइलन त, बतकही चले लागल—'आरे हो-हो, ई कलजुग ह। आजकाल सभे अपने सवारथ देखत बा, दोसरो का माया-मोह बा ई केहू नइखे देखत। तोहरा अकिल पर पर्दा पड़ जाय त लोग का करी?' माथ पर से जौ के दउरा उतारत महँगूबहू भनभनाए लगली—'ए भाई जी, आँख का अलोता के केकरा के पूछत बा? आपन पूछते नइखे, बीरान त बीराने ह। ऊँहू इनका ओकरा कमाई के हहूती लागल रहे। पेटवा आखिर भरत रहे कि ना हूँ के ईहे साग-सतुअवा से, कहीं त?' जमुनाबहू लवना चलावत जाय आ मकई उड़े बुझाय जे महँगूबहू के बोली लावा लेखा उड़-उड़ के दाग देता।

जमुनाबहू के धीरज अरार लेखा भहरा-भहरा के गिरत गइल आ ओकर मन डर का चकोह में गिरल पतई लेखा नाचे लागल।

× × ×

कांखतर सतुआ के मोटरी दबवले जमुनाबहू लालचनराय का साथे पहुँच गइल पटना सिटी। दिन मंगर रहे। मंदिल में आरती होत रहे—'आरती कीजै हनुमान लला की।' लोग ताली बजा-बजा के गावत रहे। भक्तिभाव से उमाशंकर पंडित थरिया नचा-नचा के आरती देखावत रहस। एक ब एक उनकर गोड़ डगमगाए लागल, हाथ थथम गइल, कण्ठ सूख गइल, उनकर नजर जमुनाबहू आ लालचन पर पड़ गइल रहे। परसादो ले-लेके लोग घसकत गइल। तब जमुनाबहू लगे आके हाथ जोड़ देलस—'गोड़ लागतानी, बबुआ।',

'पाव लागी ले बाबा—'लालचन कहलन।

बोले के पड़ल पंडित का—'खुश रह, का हालचाल बा हो लालचन भाई?'

बाकिर जबाब देलस जमुनाबहू—'ठीके बा ए बबुआ। बहुत दिन हो गइल रहे बहोरना के देखला, रउआ के कतना चिट्ठी लिख के निहोरा कइनी कि तनी परब त्योहार के एकाधो दिन खातिर आवे दीं त रउआ छुटिये ना देनी। मन उदास गइल त चल अइनी ह लालचन बबुआ के लेके।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लालचन चुटकी लेलन—'ए बाबा, इहाँ त बड़ा मउज बा रउआ ! खाली लड्डूए-पेड़ा बरखता। बहोरना त खूब नाक भलभला के चाभत होई।'

पंडित चुप, उनका बुझाइल जे कपार में झिनझिनी शुरू हो गइल बा। तबले एने-ओने तिकवत जमुनाबहू पुछलस - 'आ हमार छौंरा केने बा ए बबुआ ? केनहूँ गइल बा का ?'

पंडित चुप। ऊ गर्दन घुमा के हनुमानजी का ओर टकटकी लगा के देखे लागलन। लालचन के भँउ सिकुड़ लागल—'का बात ह, पंडिज्जी ?'

बड़ा मोस्किल से थूक घोंटत पँडित बोललन—'आयँ, ऊ···ऊ···त···'आ मूँड़ी निहुरा लेलन। एक छन लालचन जमुनाबहू का ओर देखलन। सतुआ के मोटरी तेले ओकर हाथ जोर से काँपे लागल रहे, मुँह बवाइल रहे।

एक बएक छड़क के लालचन गट्टा ध लेलन पंडित के – 'ए, पंडित, एकरा के मेहरारू जान के छहत्तर मत बतिआव। भला मने बता द एकर लड़िका कहाँ बा।'

पंडित चुप।

हल्ला-गुल्ला बढ़ गइल। राही-बटोही बटोराये लागल। रोष बढ़त गइल। कुछ लोग बोलल —'बाप रे बाप, देखे में ई बड़ा सूधा लागल रहल ह ए दादा, बाकिर ई त हत्यार बा।' एक ओर से कुछ लोग के आवाज आइल—'ए पंडितवा, बोल, ओकर लड़िका दे ताड़े कि ना ?' पंडित चुप, मुँह सूखल, झांवर, गर्दन लटक गइल रहे जइसे मनिका टूट गइल होखे। लालचन गरजलन—'आरे का बोलो, ई सार बेंच देले बा ओकरा के····बोलबे कि ना रे चण्डाल बाभन ? उठाईं लाठी ?'

पंडित के ओठ सुगबुगाइल—'ऊ····छव महीना भइल कि···ऊ····ऊ' चुप हो गइलें उमाशंकर। लालचन उनकर चुरकी धके निहुरा देलन – 'झूठ बोलल, कि भुभुन कूँच देब अबहिंये।

बोलहिं के पड़ल पंडित का—'ऊ····गंगा नहाये गइल···ले गइली गगाजी।'

'बबुओ'—चिकरल जमुनाबहू, आ धड़ाम से गिर पड़ल, बेहोस हो गइल, दांत लागगइल। लालचन के मुक्का बजरल पंडित का मुँह पर, पिछुकुरिये उलिट गइलन, नाक से खून के पवांरा चले लागल। साल भर के मनीआडर के अधकट्टी आ चिट्ठी के पुलिंदा घींच के मरलन लालचन पडित का मुँह पर 'हमरे से उड़ताड़ ससुरू···· छव महीना पहिले, मर गइल बहोरना त हई सब का ह रे ? ई कवन कमा के भेजलस रे, बोल ?'

लोग ठहाका लगावल—'बड़ा घाइँक बा !'

लालचन चिचिअइलन—'बोल ना रे····कवन भेजलस ई सब ?'

पंडित खून पोंछत मूँड़ी उठा के कहलन—'लालचन भाई, ई सब हम भेजत रहीं।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोर ना भइल

●

अरूणमोहन भारवि

●

विन्ध्याचल के मन बड़ा उदासल रहे। आपन संघतिया से भेंट करे खाति जेहल के फाटक पर बइठला ओकरा पहर भर से बेसी होत रहे। ऊ एगो जम्हाई लेलस आ अपना चारु ओर नजर फेंकलस। बर के पेड़ तर ओकरा अगल-बगल आउर मुलाकाती आके, अपना लोगन से भेंट करे के इन्तजार में बइठल रहन। कुआर के महीना रहे। ओइसे बरखा-बुनी के दिन बितत रहे बाकिर काल्ह खूब मजगर बरखा भइल रहे, आ आज ओसहीं बीख अस चटक घाम उगल रहे। हवा थथमल रहे। उमसले रहे। पुरवइया खरात रहे। पसेना अइस चुअत रहे जइसे बरखा भइला पर चुअहा पलानी। सूरूज अब माथ पर आ गइल रहे। "हद हो गइल!" ऊ मने-मन बुदबुदइलस। सिपाही बारह के घण्टा बजवलस—टन…टन… टन…। ऊ उठि के टहरे लागल। मुलाकाती अपना लोगन से मिले खातिर गेटो पर भीड़ लगवले रहन। एगो गरीब आपन खोंचा लगवले चीनाबेदाम बेंचत रहे। छाँहा में दूगो रेक्सा खाड़ रह स आ ओकरा सीट पर रेक्सावाला बइठल ऊँघात रहे सन। जेहल के फाटक भकसावन लागत रहे। अच्छा, त जेहलो एगो जगहे ह। एहिजा केहू के केतनो आराम दे द, तबो एहिजा आवे से सभे कगरियाला। जेहल आखिर जेहले ह। सब सुविधा के बादो एगो दिमागी चिंता बनले रहेला। मन अपना के गुलाम बुझेला। हमेसा ओकरा बुझाला कि ऊ अपना मन से कुछो नइखे क सकत। ऊ सोंचे लागल कि भीतर ई जेहलवा कइसन होई? ई त अब आजाद भारत के तीरथ हो गइल बा। केहू कवनो जांयज मांग एह सरकार से मांगी बाकिर ओकरा खातिर एकरा सरन में आवहीं के पड़ी। ई त कृष्ण भगवान के जन्मभूईं ह। एहिजा आवे से कवनो मनई का घबड़ाए के ना चाही। जतना महापुरुष भा साहित्यकार भइल बाड़न—चाहे महात्मा गाँधी, नेहरू, तिलक, वीर सावरकर, रामप्रसाद बिस्मिल, डॉ० लोहिया, जयप्रकाश, रामवृक्ष बेनीपुरी सभे आपन किताब एकरे काल कोठरी में बइठि के लिखले बाड़न। जेहल ऊ भट्ठी ह जवन नेता-कार्यकर्ता रूपी सोना के तपा के ओकरा के आउर खरा क देला।…

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ एहिजा अरुण से मिले आइल बा। देर भइला से उठि के ऊ टहले लागल। एगो जम्हाई लेलस त ओकरा हाथ में लागल लाठी के पुरान चोट चिलिहक गइल। ओकरा मुँह से एगो सिसकारी निकल गइल। ऊ आपन हाथ के आँखिन का सोझा कइलस आ ओके बुशशट क बाँहि से बाहर निकललस। हाथ के चाट हरदी चूना महीनो छपला का बाद़ो ठीक ना भइल रहे। ई चोट पन्द्रह अगस्त ७४ के ओकरा लागल रहे। ईहो एगो अचरजे बा। दुनिया के आठवाँ अचरज। ई देश पन्द्रहे अगस्त क आजाद भइल। आजादी के दिने सभका ई आजादी बा कि ऊ देश के राष्ट्रीय-झण्डा आदर का संगे फहरा सकेला। बिहार में जयप्रकाश के आंदोलन चलत रहे। ऊपर मे एलान भइल कि सब लोग सरकारी झण्डा कार्यक्रम के बायकाट करी आ जनता का ओर से झण्डा फहरावल जाव। बस, अतने बात रहे। जनता का ओर से, शहर में, पोस्ट आफिस का मैदान में गनेसिया मेहतरानी से झण्डा फहरावल गइल। ई बात शहर के अधिकारियन का बरदास्त के बाहर हो गइल। ऊ जरि के अंगार हो गइले सन। जमि के लाठी से पिटापट भइल। घर में, दोकान मे, जे-जे सोझा पड़ल सभकर दुखहरन छुटल। छट्ठी के दूध इयाद पड़ गइल। केतने के कपार फूटल, केतने लूल्ह भइलन, केतने लंगड़। पचासन जना पकड़ के जेहल में ठूस दिहल गइलन। एक जाना त टेंय बोल देलन। एही पिटापट में ओकरो बाँही पर दूगो लाठी बजरल, जवना के दरद र'हि-रहि के आज तक उपटत रहता।

पुलिस से ऊ कवनो एके हाली ना पिटाइल रहे। एक हाली जब ओकर इन्टर के इम्तहान सुरू होखे वाला रहे, सभ लइका जे० पी० का गोहार पर इम्तहान के बायकाट कइलनस। कॉलेज का फाटक पर जम के लइकन पर धुँआधार लाठी चलल। ताड़िका आ मारीच के लर-जर विश्वामित्र के चेलन के मजगर खोमारी छोड़वलन। ओहू घड़ी ऊ एक डन्टा खइले रहे। ऊ इम्तहान छोड़ देले रहे। केहू कवनो समझावल ओकरा ना देवे के रहे, ना देलस। पुरइन के पतई पर जइसे पानी ना ठहरे, ओसही ओकरा पर केहू का बात के कवनो असर ना भइल। ओहू घड़ी ई अरुण धराइल रहन, जेकरा से ऊ मिले आइल बा। ऊ छवे दिन में दउड़ धूप के उनकर जमानत करा लेलस। बाकिर, जब ऊ छूटि के घरे चललन तले दुआरो पर जाते-जात फेनु गिरफ्तार होके जेहल में। जस के तस। फेनु बैतलवा डाँढ़ि पर। नया-नया दफा, झूठहूँ के नया-नया केस। जमानत के चरखा फेनु सुरू। जय प्रकाश नारायण बक्सर अइनी। तीस हजार रुपया के कूपन आइल। चंदा असुले खातिर। एहिजा के सभ पंच आ नेता मिलि के क गइले चंदा चट, हिसाब गायब, कूपन नदारद। जे-जे जेहल में पकड़ाइल ओकर जमानतो के पइसा छात्र संघर्ष समिति वाला लोग ना दिहल। आपस में खाली मंत्री आ अध्यक्ष बने खातिर --कुरसी के लड़ाई सुरू हो गइल। कूपन संघर्ष जोर पकड़लस। जे पकड़ा जाय ओकरा से केहू भेंटो करे ना जाय। ओकर त दुखो दरद सुने वाला केहू ना रहे। 'रहा ना कुल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोउ रोवनिहारा....।" अतने ना, त ऊ आपन संघतियन के जमानत अपना घरे के पइसा से करववलस आ ओकर बील समिति के देलस, लोग वादा कइले रहे देवे के तवनो ना मिलल। समिति सब आपन काम सरकारी अधिकारियन से पूछ के लागल। नेता कहाए वाला लोग कोटा-परमीट लेसु आ ब्लेक में बेचाय। सिमेंट ट्रक पकड़ाय आ पइसा लेके छोड़ाय। दोकानदार के डेरवा के चंदा लियाय। भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन चलावे वाला लोग खुद गरदन तक भ्रष्टाचार के पाँक में डूब गइल। आदमी के ऊपर उठे में देरी लागेला — गिरे में ना। जब ऊ मना करे त ओकरा के सोझबक आ मुहदुब्बर जानि के ओकर बात टरा जाय। ओकर बात लोगन के बाउरो लागे काहे कि जेकरा मुँहे लालच के खून लाग जाला ओकरा के दोसर कुछ ना नीक लागे — कुकुर के पोंछ भला सोझ होला मड़ला से ? अफसरन के चमचागिरी, शराबखोरी आ सब कुकरम, आपन साथियन संगे गद्दारी, दुख में साथ छोड़ि के भागे के नियत ईहे रोजगार रहे - ईहे व्यवहार। चंदा के नकली रसीद काट के लोग आंदोलन के महका देलन। ओकर मन घीना गइल। ओकरे काहे - सभ जनता नकिया गइल। उबिया गइल। ऊ आपन छात्र संघर्ष' जवन निकालत रहे बंद क देलस। धीरे-धीरे सब नीक आदमी आंदोलन मे किनारा कसे लगलन आपन हाथ सिकोरे लगलन। रह गइलन बस सब तीन पतवा, तीन तसवा। किराया नवहा, पोढ़ चलफर, पकठाइल नेता—सेवा जेकर धरम ना रोजी-रोटी के साधन रहे। जयप्रकाश अस देवता आदमी के अइसने लोग नू बदनाम करत बाड़न बिजली के अँजोरिया के कवनो रंग ना होला। जइसन रंग के बवल होला ओइसन अँजोर निकलेला। जइसन कार्यकर्त्ता होलन—ओही के देखि के जनता सिद्धांत के झेले। महात्मा गाँधी से नीक के रहल ह ? कांग्रेस के सिद्धान्तो केकरा से बाउर बा बाकिर नेतन के चउपट भइला से सब गड़बड़ घोटाला हो गइल। ऊहे हाल एह आंदोलनो के भइल। धीरे-धीरे ईहो आपन दम तूड़त गइल। ऊबड़ा जोश-खरोश आ लमहर बिश्वास लेके एह आंदोलन मे आइल रहे : भ्रष्टाचार मिटावे खातिर एगो नया बिहार बनावे खातिर। तिलक-दहेज, जाति-पाँत, घूसखोरी खतम करे खातिर। शिक्षा में जरी-सोरी से बदलाव ले आवे खातिर। बाकिर ओकर इच्छा पूरा ना भइल।

देश में इन्दिरा जी इमरजेंसी लागू कइली। सगरो मशान के चुप्पी पसर गइल। नामी-नामी नेता पकड़ के जेहल में ठुसा गइलन। जे० पी० के नाम पर चंदा लूटेवाला नेता रातो-रात संजय गाँधी के चेला बन गइलन। फेनु ऊहे लूटपाट चालू। जनता सँकाइल रहे। घुटन बढ़त रहे। आखिर एह दमघोटू हालत के खतम करे खातिर लोग कमर कसलस। एगो रक्तहीनक्रांति भइल। सम्पूर्ण क्रांति के पहिला चरण परा भइल। जनता सरकार बनल। दिल्ली के गद्दी पर इन्दिराजी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बदला मोरारजी भाई बइठलन। जे० पी० आंदोलन के पीठ् पर बइठ के कतने लोग एम० पी, एम० एल० ए० बन गइलन। नशबंदी से नशाबंदी के नारा उछलल। बाकिर अफसरशाही के मदइल हाथी पर अंकुश ना लागल। घूसखोरी ना खतम भइल। बेरोजगारी ओसहीं रहि गइल। शिक्षा के हालत त पहिलहूँ से बाउर बा। आरक्षण के नाम पर जातियता फइलल बा। पूरा बिहार जर रहल बा। ओही आंदोलन में अरूण गिरफ्तार भइल बा, जे से मिले ऊ आइल बा। सरकार बदल गइल बाकिर व्यवहार ना बदलल। चलन ऊहे रहि गइल। लूटपाट बढ़ल बा। सभकर जानमाल असुरक्षित बा। जनता के हाल ओह सुग्गा अस बा जवन लाल टहकर फूल देखि के, फेरु सुघर फर देखि के, बड़ा आशा से फर के सेवलस, बाकिर जब चोंच मरलस त खाली रुआ—हाय रे करम! अन्हरिया ना बितल। उरुआ बोलते रहि गइल। ना बेकारी मिटल, ना गरीबी खतम भइल। ह, आशा निराशा में जरूरे बदल गइल।

—"विन्ध्याचल केकर नाम ह जी? चलीं भेंट क लीं।" ओकरा कान में आवाज पड़ल। ऊ डेगरगरे फाटक ओर बढ़ि गइल, ई सोंचत कि देखीं कब ले आफत के दिन ओराला? अबलें कालरात बितल नइखे। पह नइखे फाटल—भोर नइखे भइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिलसिला

कन्हैया सिंह 'सदय'

दूरे से देखनी-बुढ़िया हलखोरिन हाथ में बाल्टी आ झाड़ू लिहले चलल आवत रहे। बाकी, आज ऊ अकेले ना रहे, कवनो जवान लड़की ओकरा साथे बतियावत आवति रहे। मन कइलस-एने आई त पूछब....ओइसे ओकरा से कुछ पूछे के हियाव ना करे, बोले लागी त बोलते रह जाई। मन अइसन पटुआ जाला, जइसे हरवाह में कवनो बएल थउस गइल होखे आ हरवाह मार पैनन ठेंठावत होखे, भरसक ओकरा से आदमी दूर भागेला! जे होखे, मगर, ओकरा धीधिरिक के बलिहारी....लगभग बीस बरिस से एह मोहल्ला के कमाऊ पैखनन के साफ करत अपना जिनिगी के सं... खे लियाइल।

केहू जो छोह से कह दी—'बुढ़ियो, ई कहिया ले गंदा ढोवबू, कवनो के ... ना घाल, तोहरा एह उमिरी आराम करे के चाहीं....।' ओकरा बड़ा दुख लागे ... खिसिया जाले—'भला बानी रवों, हमरा रोजी-रोटी के गंदा कहत बानी, आ... करेब त केहू एको जून के भोजन दे दी...सबसे गंदा त ई चीकन-चाकन ... बा....।' ओकरा तर्क के आगे अकिल हेरा जाले।

ऊ कहेले—ई मोहल्ला ओकरा सास-ससुर के हिस्सा में मिलल ... तब इहाँ एतना लोग ना बसल रहे, धीरे-धीरे जब शहर के लोग एने आके बसे लाग... त बसगीत घन होत चल गइल। आ घरी बड़ी मसकिल से घर-खरचा चलत ... ऊपरी मजूरी करेके परे, परिवार बड़ रहे, आ अब त...। ओकर मरद शहर ... सरकारी अस्पताल में सफाई मजूरन के मेंठ रहन। ससुर मोहल्ला के काम देख... ऊ बेटा के हरमेस समुझावस—'हमरा मुअला प मोहल्ला के काम मत छोड़ि... अस्पताल के नोकरी में खाली बिछिलहर बा...बाबू लोग के मरजी, आज बाड़, ... निकाल दी लो। पुरइन के पतइन प पानी के बूनी अइसन एह नोकरी के ... प भरोसा जन करिह, ना त....धोबी के गदहा ना घर के ना घाट के....खइला ... मू जइब लो...सुख से जीये खातिर अपना खान्दानी नेव प बिसवास करे के चाहीं....।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ससुर के मुअला प सास काम उठा लेहली। बाकी, थोरहीं दिन में बाप के कहल बेटा पर गइल। अस्पताल के नोकरी छूटि गइल। मजूरी बढ़ावे के मांग लेके अस्पताल के सफाई मजूर हड़ताल कइले सन। मजूरी त जेही-सेही बढ़लि, बाकी कुछेक दिन बाद जवन छंटनी भइल ओमें केतना लोग के लोटिया गोल हो गइल। तब, बाप के कहला के मतलब बुझाइल। बाप-महतारी केकर जीयत रहेला। एक दिन महतारियो बेटा से नाता तूरि देहली। ऊहो मुअत समे धिरवले रही—'बेटा अपना मोहल्ला के बेंचिह जन, ना त आगे-पंछे सगरो अन्हार हो जाई। पइया अइसन उधिया जइब लो, बनले के सभे संघाती ह····।' मोहल्ला के काम त ऊ ना करे चाहत रहले, बाकी पेट के आग त बिना काम कइले सान्त ना होखे के रहे, आवे लगले काम पर, बाकी, बेमन····अनचाहे। उनकर असालतन नोकरी करेके साध रहे। बाकी, साधो कबो पूरा होखेले, आ ऊहो गरीब के साध····।

बुढ़िया अब दुआर से बहुत दूर ना रह गइल रहे। छँउड़ी, गुमनुम, मुड़ी नीचा कइले आवत बुझात रहे जइसे एह रास्ता का माटी में ओकरा गिनिगी के अनमोल मोती भुलाइल होखे। मइल-कुचइल ककरेजा रंग के साड़ी में धरियाइल गहुँवा रंग जाड़ा के फजीर अस लउकल। निगिचे गभियाइल धान के खेत हवा के झोंका से लहरात रह सन। हमरा सक भइल-कहीं इ नन्हकी त ना हीय····।

हमरा इयाद परलि—बुढ़िया एक दिन कहत रहे—"बबुआजी, रउरा त इहाँ हाँ देखा अइनी हाँ, ई बस्ती कवन कवन कवलेस सहल बिया रउरा मालूम नइखे, एक बेर इहाँ बड़ा जोर के कलरा फइलल रहे, केतना घर सोआहा हो गइल। हमरो सवांग ओही महामारी में हमनी के साथ छोड़ देहलें, हमनी के भरल पुरल दुनियाँ उजड़ि गइल। बिपति में केहू पूछवइया ना होखे। अभी ऊ घाव भरलो ना रहे कि मोहल्ला से खबर-प-खबर आवे लागलि। लोग दोसर मेस्तर राख लेवे के धमकी देवे लागल। अब का करीं हे दइब,····कुछ समुझ में ना आवत रहे। हारपाछ के के सोचनी जबले जिनगी रही, पेट अधम त ना मानी। नन्हकी ओ घरी दू बरिस के रहे, ओकर मुँह देखीं, त आउर रोवाई छूटे। हम काम उठा लेहनी, तब से ईहे करत आज बीस बरिस हो गइल। केतना लोग मोहल्ला के बेंच देवे के राय देहल। बाकी हम केहूके ना सुननी। ओ लोग के जो मानल रहितीं त हमनियों अबले परलोक सिधार गइल रहितीं····।"

अतने में बुढ़िया आवाज देहलस—"मलिकाइन····ए मलिकाइन····बानी रवों····।" जब कबो सबेरे ऊ मलिकाइन के बोलावे ले हम समुझ जानी आज घर से पनपियाव क के नइखे आइल।

"बोला देत बानी····रसोइया घर में बाड़ी····बइठ लोगिन।" कहके हम भीतर चल गइनी। ऊ दाल बइठावत रहली। हम जाते कहनी—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"जा, बुढ़िया खोजत बिया···देख····पता ना ओकरा साथे कवनो लड़की आइल बिया।" ऊ च:र गो बसिया रोटी आ तरकारी कागज में लपेट के सिढ़ी जइसही बरामदा में अइली, बुढ़िया ओ छोंउड़ी कियोर इसारा करत कहलस--"प्रनाम कर, मलिकाइन के····इहाँ का हमार लछिमी हईं।" ऊ लजाते मुड़ी उठाके हाथ जोरलस। बुढ़िया रोटी लेके जब खोंइछा में बान्हे लागलि त हमरा घरे पूछली–

"ई लड़की कवन हीय, हम चिन्हत नइखी···।"

"ईहे नू हमार नन्हकी हीय, मलिकाइन।"

"ईहे नन्हकी हीय, ई त सेयान हो गइल बिया, कहीं सादी-बियाह के बात-चीत नइखू चलावत।"

"अब एकर जरूरत नइखीं समुझत मलिकाइन···सभ साध बुता गइलि बा;··· अबले बियाह होखे से बाकी नइखे। बाकी, दुरभाग पीछा छोड़े तब नू ससुरा में रहस।"

"काहें ! राखत नइखन सन। देखे में त सुधा लागत बिया, झगरा-बोगर करेले का ! का रे नन्हकी, ससुरा नीक ना लागे।" ऊ कुछ जवाब ना देहलस, साइत हमरा वोजे से लजाति रहे, हम कमरा में जाके पलंग प ओठंध गइनी। बाकी कान ओनिये रहे।

"····कहवां बियहले रहलू हा, हमनी के बतवलू ले ना।" हमरा घरे पूछली।"

"का बताईं, मलिकाइन। बियाह अईसन बियाह होखेला तब नू बतावे नीक लागेला।"

"अइसन का भ गइल··तू अचरज में डाल देलू।"

"अचरजे समुझी। एकरा बपसी के इच्छा रहे जे एकर बियाह, चाहे जे होखे, कवनो निमना घर में कइल जाई, जवना से 'ई काम' एकरा ससुरा में जाके ना करे परो। हमरो मन रहे····कइबो कइनी ओइसने जानि के। बाकी का कहीं, ईसर के विधान। एक दिन कुछ खद्दरधारी लोग चमर टोली में आइल, ई चार साल पहिले के बात ह। ऊ लोग अपना के अछूत-उद्धार समाज के सदस्य बतावत रहे बड़-बड़ भासन देत रहं लो। नन्हकियो देखे गइल रहे। कुछ दिन बाद ओही लोग में से एगो जाना हमरा भिरी आके कहले—'हम रउरा बिरादरी के त नइखी, एह से कहे में संकोच होता, का जाने हमरा विचार से सहमत होखब कि ना····। बाकी, जुग बदल गइल बा, आदमी के अब आपन सोचान्तो बदले के चाहीं। समाज में एगो आदर्श खड़ा करे वास्ते हम रउवा से नन्हकी के हाथ मांगत बानी। बिसवास करीं उनका कवनो दुख ना होखी। बाप-दादा के सम्पत्ति के अलावा हम खुद इहाँ कम्पनी में नोकरी करत अपना पैर प खड़ा बानी, समाज से लड़के ताकतो हमरा में बा···

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम त सकपका गइनी, अइसन बेसिर पैर के बात प हमरा बड़ा अचरज भइल। बेर ओह दिन त कसहूं आपन मजबूरी बता के बात टार देहनी। रात भ कसमकस में परल रहनी।

दोसरा दिने जब ऊ फेर अइले त एकरा बपसी के कहल हमरा बेर-बेर इयाद परे लागलि। ऊ एकरा जोड़-जुगुत के रहन। हमरो आपन सपना साँच होखत बुझाइल। हम संकार लेहनी। ऊ कहले 'हमनी के बियाह कोर्ट में हाई, एमे कुछ समे लागी। तले हम चाहत बानी, इहवें देवता के सामने एक-दोसरा के माला पहिराके बियाह के रसम पूरा क दियाव। हमरा ई सभ अच्छा ना बुझाइल। बाकी सोचनीं-सुभ के काम में बाधा ना देबे के चाहीं। हम ऊहो संकार लेहनी।····ओकरा दोसरे रात बिरादरी के चुपे-चुपे ईहो काम हो गइल, आ ऊ ऐकरा के साथे लिया के चल गइले। एने बिहान भइला हल्ला भइल····नन्हकी भाग गइल····नन्हकी····। हम मनेमन खुश रहनी। हमरा का मालूम रहे जे ऊ अइसन धोखा करिहें···।" बुढ़िया गाले हाथ ध लिहलस।

"का भइल बताव, चुप काहे हो गइलू····। ऊ फेर का कोर्ट में बियाह ना कइलस···।" हमरा घरे चाव से पूछली।

"ईहे त रोवना बा। बियाह त दूर के बात बा, ऊ त दू महीना में अपनो घरे साइते रखले रहन। कहियो हे ईयार का घरे पार्टी बा, त कहियो हो साहेब का घरे बोलाहट बा··ई बियाह के लालच आ सुखी जिनिगी के सपना देखत सभ सहत गइली। एक रात ऊ एकरा के साथे लियाके हमरा लगे अइलें 'हम ओफिस का काम से कुछ दिन खातिर कलकत्ता जा रहल बानी, सोचनी हाँ ई अकेले कहाँ रहिहें, घबराइब जन, हो सकी त हम पहिलहीं आ जायेब····।' ईहे कहके ऊ गइले····से गइले रह गइले····जोहत-जोहत दू बरिस बीत गइल। बड़ी मसकील से पता लगवनी जे ऊ ओही घरीं इहाँ से कवनो ऑफिसर बनके पूना चल गइलें। तब हमरा बात समुझ में आइल। अब हमरा कहाँ जाँगर रहे जे इनका के खोजत फिरीं। आ ान हारल केकरा से सुनाईं, करेज में डाल घलनी····।" कहत ऊ डबडबा गइल।

"बड़ अभागा बदमास रहे, कइसे केहू केहू प बिसवास करी····।"

"बिरादरी क लोग बहुत समुझावल बुझावल, त एकर दोसर बियाह कइनी कउड़िया के सल्लुआ से····।"

"ऐ···एकर दोसरो बियाह भइल बा।" हमरा घरे अचरज कइली।

"हँ मलिकाइन हमनी मे होला। उ लवड़ाकापूत कुछ दिन त नीमन से रखलस। बाद में ओकरो प सरसाती चढ़ गइल··लागल एकरा प सक करे, कहे-तें भल्लुआ से काहें हँसे बोलेलिस। भल्लुआ ओकरे छोट भाई ह। एके साथे दूनू रहेले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन। अब रउवे बताईं मलिकाइन, एके घर के सवांग, ओहू में देवर, कइसे ई मुँह जवले रहीत। दू दुम बतिया लेहला से का ई बदचलन हो गइल। तवना बाजि खा-पीके आवे त लागे मारे, कहे-'मोहल्ला के काम देख, इहां रानी बनला के का नइखे, दिन भर ससुरो बइठल-बइठल चउल करत बाड़ी...।' कयबेर त अइसन मरले बा जे बाछी बेहोस हो गइल बाड़ी। भल्लुआ आके छोड़ावे...पानी ओनी मुँह छिरिके त होस आवे। एक त अछरंग कुफुत, दोसरे खाये पीये के कवनो इन्तजाम ना...अपने भर ढीढ़ चांड़के कहीं बाहरे से चल आवे...आ ई बेचारी रात भर केल्हुआ काटस...भल्लुओ के ऊहे हाल रहे। बाछी दुबरा के पिउनी हो गइली। जब ना बरदास्त भइल त एक दिन मन गुमे उठके चल अइली। इनकर दसा देखके हमरा रोवाई आ गइल। हम सोच लेहनी फेर ओह कसाई का घरे ना जाये देब। इहें इनका देह से एगो लइकी भइल। बड़ी इन्तजाम कइनी त देह हाथे लागल। पता चलल हा कि ऊ आपन दोसर बियाह क लिहलस। पाई भर आसो रहे, तवनो खतम हो गइल...।

...ई कहत बाड़ी-'अब आउर बियाह ना करेब, इहवें रहके मोहल्ला के काम देखब आ तोहार सेवा करब।' हमहूँ सोचत बानी, 'एगो बेटी बिया, जो अंकरा कवनो का घरे लेके जइहें त कवन मोल राखी हरदम खारत रहिहें सन। कमवां त कहीं करहीं के परी। इहवों लुर-ढग से रहिहें त जिनिगी पार लाग जाई। छउड़ियो पोसा जाई। हमहू थाक जात बानी, पाकल आम के कवन ठेकाना, कब चू जाई जवले जीयब, इनकर, बेटी खेलायब, दू रोटी दिहें, खाके परल रहब।...ईहे सोचके त चलनी हां जे आज सबका से परिचे करा दीं, काल्ह से ईहे अइहें...।" बुढ़िया चुप गइल।

"ई त ठीक सोचलु हा, जब अइसन हालत बा तब त..." कहत हमरा पर रोक गइली।

"...मगर, ई सिलसिला कबले चली...लोग अब सेप्टीक पैखाना बनवा रहल बा...सरकारो के तरफ से...।" हमरा से ना रहल गइल। बुझाइल, कमरा से उठाके केहू बरामदा में फेंक देहल। बुढ़िया मुस्कियाइल।

"बबुआ जी, ई संसार एगो बुझउवल ह, खाली बुझे के फेर बा...काम कबो खतम ना होई, एह से हमनियों के खतम ना कइल जाई, ई सभ असहीं चलत आइल बा... चलत रही...अच्छा, अब हमनी चलीं...बड़ी देर हो गइल, मोहल्ला भर घूमे के बा...। कहके ऊ मुड़ी उठाके एकबेर आकास कियोर देखलस।...ओ दूनू चले लगलि सन। तसली में दाल मंहकत रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चिखुरा

अशोक द्विवेदी

जोखुआ अपना लइका के मारत-झहियावत, घिसियवले जात रहे। बाप-बेटा दूनू के चिचियाइल सुनि के हम बहरा निकलि अइनीं। बड़ा देरि ले बाप-पूत सुर में सुर मिलावत रहलन स। चिखुरा बिलखि-बिलखि के जेतने चिचियाव; जोखुवा ओतने मारे आ झहियावे। एगो के खींसि आ गारी, दुसरका के चोकरल। जेकरा ना आवे के, सेहू चलि आइल। एगो मेहरारू से ना रहाइल त बोललि—"आय हाय! बेचारा के काहें मुवाव तार। छोड़ि ना द। अइसन निरदई ना बने के। बेटो संगे कसाई बनल ठीक ना ह।"

ओ मेहरारू के टोकलन जोखुआ के बड़ा जबून लागल। बाकिर दबि के बोलल--"मलकिन! रउवां एकर से पूछीं। एह स्सार के का घटल बा? हम एकर बाप हईं। खियावे-पहिरावे मे कवनो कसर उठा ना राखीं; तब्बो ई घूमि-घूमि के हमार सिकायत कर ता।" पुजारी जी बड़ा देरी ले दम्मो सधले रहलन। आखिर बोलिये दिहलन—"च्····च्····च्! ना बेटा!! ई तोहार बाप ह। एकर कहल माने के चाहीं। अइसे ना करे के चाहीं।" अभी पुजारी जी कुछु अउर कहितन कि पँड़ाइन बोलि दिहली—"अरे, अइसहीं सिकायत थोरे करी। ओकरा कुकुर कटले बा। खियावल-पहिरावल त सोझहीं लउकत बा। कसाई त ना रे····!" जोखुआ तिलमिलाइ के बोलल —"ए सरकार। जेवन जूरी-आंटी तवने नू! ए जँगर चोर स्सार के कहाँ ले छत्तीस किसिम खियाईं? पहिले ई अपना नानी के संघे भीख मांगि के खात रहे। हम एकरा के समझा-बुझा के काम दियवनीं। बाकिर ई अपना आदत से लाचार बा। जहिया एकर पेट भरल रही; ई मटरगस्ती करे निकलि जाई; नाही त भागि के नानी किहाँ चलि जाई आ ओही जाँ जाके सूती।"

अभी जोखुआ सफाई देते रहे तले प्राइमरी स्कूल के मास्टर सुकुल जी पहुँचलनि। ऊ आव ना देखलन ताव, सइहारि के पाँच गारी दिहलन आ फेरु ओकरा के झँपिलावे शुरू कइलन—"मेहरारू मरि गइल त लइका के, के पूछेला। मयभाउत महतारी कहिया के छोहगर होली सन? सरऊ मेहरारु के सिखवला में परि के एके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वेदीन कर तार । कहाँ ले एकर खेयाल करब त उलुटे ससुरू मुवाव तार ।" चिखुरा सुकुल जी का ओरी कृतज्ञ भाव से तकलस । बाकिर ओकर कृतज्ञता ओकर हीनता में दबि के रहि गइल । ओकरा आँखि में छिपल तड़पन आ पीड़ा के बहुत कम आदमी समुझलन । जोखुआ सुकुल जी का बात पर इचिको गौर ना कइलस । फेरू चिखुआ के गरियावे आ झहियावे लागल । जइसे सबकर खीसि ओही नदान पर निकालि लेई । अभी केहू फेरू कुछु कहित, एकरा पहिलहीं ओकर बाँहि ठिठियावत चले लागल । ओकर फेंतुरत पसारल यादव जी का बड़ा जबून बुझाइल । ऊ सनद्द मरद रहले । डाँटि के बोलले—"सरनत ! ढेर सनइल भइल बाड़ । एतना आदमी कहि रहल बाड़न आ ई सरवा हाथ छोड़ले चलल जाता । एकरा जरिको लाज बा ? ए हरकत से साफे बुझाता कि तें एकरा के अइसहीं सतावत होखबे ।" चिखुरा के डबडबाइल आँखि में रोशनी के चमक उभरलि आ बिलीन हो गइल । जोखुवा रोवाइन मुँह कं के बोलल—"ए साहेब रउवाँ एकर हाल ना जानब । एकर ननिया एकरा के बिगाड़ि देले बिया । एकरा के समुझा-समुझा के हमहूँ आजिज हो गइल बानीं । ई बेगर पिटइले मानि ना सके ! लात क भूत बात से ना मानसु । रउवाँ अनेरिहे हमरा बीच में पर तानी । हम मारी, चाहे गरियाईं, हमार लइका ह एकर चाल ना सुधारब त रउवाँ हमरा के सँभारबि ।"

जोखुआ के भाषन सुनि के लोग सिटपिटा गइल आ धीरे-धीरे घसके शुरू कइल । कुछु आदिमी चिखुरो के समझावल । ऊ बेचारा अनबोलता नियर आँसू गिरावत चुपचाप सुनत रहे । ओकर मुँह बवाइल रहे आ रहि-रहि के हिचकी आवत रहे । ऊ जानत रहे कि अगर ऊ एइजा कुछुउ कहलस त जोखुआ घरे जाके ओकरा के मुवा घाली । एही से ऊ चुपाइल रहे । जोखुआ थोरकी देर ले खाड़ा रहे फेरु ओकर बाँहि ठिठियावत एकोरी चलि दिहलस ।

× × ×

चिखुरा दुबरे-पातर रहे । साँवर रग, बढ़ल आ बेतरतीब लटियाइल बार । कोई हत्तल रहे, जइसे आगाँ के चाम पीठि में सट गइल होखो । उघारे-निघारे एगो अंडरबियर पेन्हले खाड़ रहे । हाथ-गोड़ सिरिकी लेखा आ छाती के एक-एक बाती वे मेहनत के गिना सकत रहे । चिखुरा का अगल-बगल कई गो लइका खाड़ रहलन स । एगो जुआवाला खूब बड़ रंगीन कागज फइला के डिब्बा झुनझुनावत रहे । ऊ देखहीं में चोर-बदमास लागत रहे । कूल्हि लइका दस, बीस, पचास कागज पर बनावल खाना में डाल सन आ ऊ डिब्बा झुनझुनावे लागे । कुछ लइका जीत सन, कुछु हार सन । कुछ देरी से चिखुरा ओही खेल के देखत रहे । जुआवाला एखाली ओके घूइरि के तकलस आ बोलल—"अरे स्सारें, तूँ का खाड़ा बाड़े ! एकर दाव चले के होखे त चल ना त भाक् इहाँ से ।" चिखुरा के पास रहे का जे देत ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ खाली निरीह मतिन तकलस आ ओठ चाटि के रहि गइल। ओघरी त तिक्खर घाम में ओकर कोई जरत रहे। पता ना ऊ खेलि देखत रहे कि अपना भूखि के महटियावत रहे। ओकरा का पता कि एही तरें ओकर बाप ओकरा संघे जुआ खेलले बा। ओकर जिनिगी दाँव पर बिया। ऊ नल आ युधिष्ठिर ना ह कि फेरु ओकर भागि जागी। ऊ त सुख खातिर अचके में पैदा हो गइल एगो अइसन चीझु ह जेवना के ए हाथ से ओ हाथ में देहल जा सकेला, जेवना के बेचल-कीनल जा सकेला। ऊ हारल जुआड़ी लेखा अपना करम पर झंखत जुआवाला के हाथ के सफाई देखत रहे। जुआवाला थोरी देर का बाद बड़ा आराम से उठल आ एक ब-एक अइसन हुमचि के मुक्का मरलस कि बेचारा चिखुरा नारी में बिगा गइल। जुआवाला बड़ा रोब से हाथ झरलस आ फेरु बइठि के खेलाव लागल। बाकिर कुछ लड़का ए हरकत से आंतकित हो गइलन स आ कुछु चिखुरा के देखे लगलन स। चिखुरा सउना गइल रहे, ओकरा ओठ में से खून बहत रहे। लइकन के दया आ भय दुनू बुझाव। ऊ खाली नारी में अउन्हल, चिखुरा के देखत रहलन स। जुआवाला के खेल में कुछु रूकावट परे लागल त ओनिये ताकि के चोकरल—"सरउ उठि के भाग ना नाहीं त टाँग चीरि देब!"

लइका त लइके, ऊ ओकर रौद्र रूप देखि के अउरी डरा गइलन स। चिखुरा अपना केहुनी से खून पोछत धीरे-धीरे उठल। ओकर खीसि, ओकर बेबसी बनि गइल रहे। जइसे ए धरती पर ओकरा खातिर खाली लाते-घूँसा रहे। आँख में से झर-झर लोर गिरावत एकोरी चल देहलस। भूख आ दरद से ओकर डेग ना परत रहे। बाकिर अनमनाइले ऊ चुपचाप ना जान कहाँ चलल जात रहे। साइत अपना नानी का लग्गे। ऊहे बेचारी त एगो ओकर आपन बिया। ओकरा कोरा में मुँही घई के चिखुरा दुनिया के कूल्हि रजो-गम भुला जाला। बूढ़ि के खुरदर हाथ जब ओकरा लिलार पर घूमे लागेला त ओकरा के सगरो सुख मिल जाला।

चिखुरा सोचत रहे आ चलल जात रहे। आजु नानी से बताइब कि 'ए नानी हमरा के कहीं लुकवा दे, नाहीं त बाबू मारत-मारत मुवा घाली। माई खाये के ना देले। परसों साँझि के एगो इसकुली लइका दू मुठी भूजा देले रहे। ऊहे खा के आजु ले बानी। ना....पहिले नानी से खायेक म गब। आजु भर पेट खाइब। पाछे कूल्हि बात कहब।'....बाकिर फेरु बाबू ओइजा पहुँचि जाई आ मारि के घिसिआ लियाई। नानी बेचारी रोवत चिचियात रहि जाई। बाप के इयाद परते, ओकरा लात-घूँसा के बौछार मन परे लागल। अनासो ओकर हाथ पीठि पर चलि गइल। ओकरा कातर आँखि में भय आ आतंक के बादर भरि गइल। चारू ओर अन्हार। खाली मुक्का आ लात आ गारी: जोखुआ के लाल खून लेसाइल आँखि....।" ना, ना, अब ना जाइब, मोर बाबू नू, मति मार आहि रे ऽ ऽ ई...।" चिखुरा थर सें काँपि गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भनासे ओकर गोड़ रूकि गइल। नानी किहाँ ना जाइब…। ओकरा आपन बड़ भाई इयाद परल। उ सोचलस ओही जा चलीं। एगो रोटी मिलि जाई। फेरू ओनिये से घरे चलि जाइब। चिखुरा क ओठ दुखाइल। ओकर हाथ तुरन्ते पहुँचल। अंगुरी से कारिया आ गाढ़ लाल खून। आक्थू…थू…थू!

बाप के खूँखार कसाई-चेहरा का मन परते, चिखुरा सन्तुआ के घर के राह धइलस। संतुआ ओकर बड़ भाई। मेहरारू के लेके बाप से अलगा रहत रहे। सन्तुआ के घर साफे लउकत रहे। दुआरी पर खटिया डालि के सतुआ के मेहरारू चम्पवा बइठल रहे। चिखुरा के देखते मातर ओकरा बाई लेसि दिहलस। ऊ अइंठि के बुदबुदाइल, "करिखा गोतना! चलि आइल हूरे खातिर…हुँह!!…जनाता कि बाप कमा के हमरे घरे गंजले बा।" चिखुरा धीरे-धीरे डेग डालत ओकरा नियरा जाके खाड़ हो गइल, आ चम्पवा क रोंखियाइल चेहरा देखे लागल। चम्पवा नीचे से मूड़ी उठवलसि आ लाल भभूक भइल चिकरल—"चल अइले तें हूरे। बुझाता कि इहाँ भंडारा साजल बा। अरे मरकिनौना! तूँ आपन मनहूस सूरत लेके इहवाँ मत आवल कर। तोर बाप…" चिखुरा डेराते-डेरात हाथ उठा के बोलल—" भउजी, अनेरिहे काहें खिसिया तारे। हम त संतू भइया के खोजत चलि अइनी हाँ।" फेरू अपना सूखल-घवाहिल ओठ पर जीभि फेरि के कहे सुरू कइलस—"भउजी रे! हम कहितीं ना, बाकिर का करीं। बरदास के बहराँ हो गइल बा। पेटवे अँउड़ेरत बा। खाली एके गो रोटी…मोर भउजी नू, तोर गोड़ ले पर ऽ तानी। बड़ा कस के भूखि लागल बा।" चम्पवा झमकि के बिचहीं मे आकर बात लोकि लिहलस आ हाथ चमका के बोलल—"मुँह झउँसु तु नाहिन, कमा के दिहन अपना बाप के आ बोरसी भरे खातिर, ए भउजी…हुँह…।" फेर का जाने का मन में आइल कि घर में जाके दूगो रोटी लियाइल आ चिखुरा हाली से ले लेहलस। ओकर आँखि कृतज्ञ भाव से डबडबा गइल। उ कभी रोटी के देखे, कभी भउजी के।

साँझि होखे लागल। सुरूज के किरिन अपना आँच के सहोरि के लवटे लागल सन। चिखुरा अपना भउजी के रोटी खा के पारक में चलि गइल रहे। ओही जा भर दुपहरिया फेड़ तर परल रहे। ओकर देंहि टटात रहे। चम्पवा के रोटी ओकरा पोर-पोर मे भीनि गइल। किरिन डुबते ओकरा फेरू भूख जोर मारे लागल। दूइदिन के भुखाइल जरत-छछात पेट के दूइ गो पातर-पातर टिकरी कबले जुड़वाइत? ऊ उठल आ बेमन से अपना घर के राह धइलस।

काली माई के चउतरा पर सुति के, दुआरी ताकल चिखुरा के बड़ा जबून बुझात रहे। बाकिर करो त का? साँझिये से जोन्ही देखत-देखत ओकर आँखि दुखा गइल रहे। जोखुआ अभिन आइल ना रहे। केंवाड़ी ओठँघावल रहे साइत। चिखुरा कइ बेर सोचलस कि उठ के अपना नवकी माई से खायक माँगो बाकिर ओकर खिसियाइल आ चुरइल नियर झपटल इयाद पर जात रहे। जब ढेर देरी हो गइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ ओकर आँखि पर पराये लागल त चिखुरा ओने ताकल छोड़ि के करवट बदलि लेहलस।

अभी किकुरी मारि के सुतहीं चाहत रहे कि केवाड़ी चरचराइल। ऊ मूड़ी घुमवलस। जोखुआ खटिया पर बइठि के कुरुता काढ़त रहे। घुरली दुआरी पर खाड़ा होके ओनिये ताकत रहे। जोखुआ बगली में से कुछ मिमीराइल रुपया कढ़-लसि आ गिने लागल। चिखुरा अनचाहे उठल आ धीरे-धीरे आके दुआरीं पर खाड़ा हो गइल। भूखि आ डर से ओकर साँस तर-ऊपर होत रहे। घुरली साँस के आवाज सुनलसि त नजरि घुमवलसि। चिखुरा के देखते उ सन्न से गइल आ जोखुआ के हाथ से रुपया झपटि के अपना फुफुती में खोंसि लिहलस। फेरू मुँह पितराइ के बोललि— "एकरा मारे त रोवाइन परान भइल रहता। दुइयो घरी जे हँसे-बोले दिहित।" जोखुआ अनासो दुआरी का ओरी ताकि दिहलस। चिखुरा के देखते ओकर एँड़ी से कपार ले जरि गइल। ओप्पर मेहरारू के ताना। चिचिया के बोलल—"का रे सारे। इहाँ का रे? सबेरे काम पर नइखे जाए के का रे?—कामचोर सरउ, जाके सुत ऽ नाहीं त जेवन पटकान देब कि परान निकलि जाई।" चिखुरा से ना अड़ाइल त बल-बल रोये लागल जोखुआ ओकर रोवल देखि के कुछ नरम परल। बाकिर ओइसही उपटि के घुड़कल—"का ह ऽ रे? काहें बुलुकत बाड़े? खइले पियले कि ना?" अभी चिखुरा कुछ कहित आ ना, तले घुरली बोल दिसलस—"अब का तोहार-हमार हाड़-मास खाई। साँझिये खां त भर नाद कसलस हा। तोहके देखि के एकर दिमाग चढ़ि जाला। अगर एके नाही सँभरब त ई हमार जान ले लि ही।" घुरली के जहर घोरल बात सुनि के जोखुआ अगिया उठल। ओकर लाल आँखि देखि के चिखुरा भितरे-भितर काँपि गइल। चिखुरा नदान नइखे। उ खुब बूझ ऽ ता कि ओकर बाप पी के आइल बा। उ एघरी ओकर केवनो बाति ना सुनी। ओकरा अगर कुछु नीक लागी त घुरली आ ओकर नखरा। तब्बो करेजा कड़ेर क के बोलल—"ना ए बाबू। हम परसों से कुछु नइखीं खइले। माई खेदि देतिया। बड़ा जोर से भूखि चँपले बा। खाली एक ठे रोटी दिया द हम चलि जाइब। मोर बाबू नु, बस एक से…।" जोखुआ ओकं बात ना पूरा करे दिहलस। कसाई लेखा उठल आ अइसन लात मरलस कि चिखुरा बहरां बिगा गइल। दर्द से बिलखत चिखुरा के खालीं अतने सुनाइल "भड़ाक्!" चिखुरा दर्द से उलटि के दोहरा हो गइल।

केंवाड़ी बन्न क के जोखुआ जब पाछा घूमल त मुसकियात घुरली के चम-कत आँखि ओकर स्वागत कइलस। घुरली अइंठि के चललि। जइसे सगरो दुनिया ओकरा मुट्ठी में होखे। जोखुआ के नस-नस चटके लागल। घुरली के एही अंदाज पर त ओकर नसा अउरी तेज हो जाला। अतना तेज कि ओकर भूखि पियास बिला जाले। घुरली अभी दुइए डेग चलल होई कि जोखुआ ओके चाँपि लिहलस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चिखुरा। सबेर के सूरज के चंचल किरिन से बेपरवाह निधड़क सूतल बा। जइसे केवनो बुताइल लुआठी भीति से भिनल परल होखे। वे जान-परान के फिरे लेखा-फिकुरल, चिखुरा सूरूज के गरमाहट में उँघाइल बा। बेचारा रात भर रो रोई के सोचलस आ भोर होते ओकर आँखि लागि गईल। सूरूज के मद्धिम रोश में ओकर झावर देंहि अइसन लाग तिया जइसे खून ना होखे। केवाड़ी खो जोखुआ के नजरि सबस पहिले ओकरे पर परल। चिखुरा के देखते ओकरा खो चढ़ि गइल। उ ओही जा से गरियावत झपटल। बाकिर चिखुरा जे काहें के सुनो, जब बाप के ठोकर ओकरा पीठ में लागल त उ हड़बड़ाई के उठल। आँखि मि मिलावत देखलस त ओकरा साक्षाते काल लउकल।…" कारे स्सारे ? अभी तो नीन ना पूरा भइल। काम पर जाए के कब टेम होई रे ? तोरी…।" चिखुरा आ कान छोड़ाई के भागल आ कोना से झाड़ू उठाई के चल देहलस। ओकर भूखि पीर ना जाने काहाँ गायब हो गइल आ बेराँ। जब कुछु दूर चलि आइल त ओक होस आइल। पहिले बाई का झोंक में ना बुझात रहे। बाकिर अब…दरद आ भूखि भूखि आ दरद…। ओ दिन ओकर बाप ओतना आदमिन में कहत रहो"—हे जेवन कमात हईं, एही स्सारे के कामें आई…।"ओकरा फेफरियाइल ओठ पर ए छोट मुसकान उभरल आ कोना का करिया, खून जामल गुजुटा में समा गइल भितरे-भितर एगो अगियाइल हूक उठल आ ओकर परान कंठ में चलि आइल आज ओकर माई जीयत रहित ? चिखुरा का आँखी अन्हार हो गइल। चारु ओर करिया-करिया बादर। फेरू भूवर पहाड़। चिखुरा उलटि के गिरि परल। ओ झाड़ू फरका बिगा गइल। रस्ता चलत आदिमी दउरलन। बाकिर निगिचा ले क के कतरिया गइलन। साइत भंगी जान के। जईसे मानवता केवनो जाति विशेष बन्हाइल होखे। छोह में मुँह से बोल फूटल त अतने…"बेचारा"…।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बैंजुआ

प्रियरंजन

शनिचरी आपन करम के कोसत-कोसत थक जाले। कबो-कबो जब चारो बगल से निराश हो जाले त अपना बाप-मतारी के गारी बके शुरू कर देले जौन कि ओकर नाम शनिचरी रखले रहन लोग। ओकर बिचार रहे कि सब ई नामे के गुण ह। ओकर नाम शनिचरी रखल गइल एही से शनिचरा ग्रह ओकरा पर छा गइल।

खड़ा भइले-भइले जब चक्कर आवे लागल त शनिचरी माथा पकड के भुइयां बइठ गइल। बुझाइल कि सगरो झोली में खूने-खून पसरल बा ओकरे में बैंजुआ छटपटात बा। आ चीख मार के बेहोश हो गइल।

जब होश आइल त सामने मुखीराम चौधरी थाना के दरोगा का साथ कपार पर सवार रहन आउर उनकर लड़का सुखीराम चौधरी कान्हा पर बन्दूक लेके तइयार रहन। शनिचरी के प्राण सुख गइल। कहीं बैंजुआ धरा त ना गइल ?

"अरे, बोल बैंजुआ कहाँ बा ?" दरोगा जब गरज के पूछलस त ओकर जान में जान आइल। ओकरा बिश्वास हो गइल कि बैंजुआ अभी पकड़ाइल नइखे।

ओकर चुपी सधले देख मुखीराम चौधरी बोललन—"दरोगा जी, ई जान के महटिअवल बीया। बैंजुआ के कहीं छिपा के नाटक रचले बिया।"

"ई अइसे ना बताई बाबूजी"—सुखीराम कहलन आ आपन बन्दूक के नली ओकरा छाती पर रख देलन—"बतलाव ना त तुरतले ठाँय से कर देब।"

दरोगा बाबू सुखीराम के ढकेल के एक जोरदार डपट पिलबलन—"कानून के अपना हाथ में लेबे के रवाँ कोई हक नइखे सुखी बाबू, ई पुलिस के काम ह। बैंजुआ आज ना त कांल्ह बाचीं ना। अइजा से अब चले के काम बा।"

"आज आ काल्ह का चक्कर में बैंजुआ भागत रही आउर कोई ना कोई शरीफ के जान जात रही। हम कहत बानीं कि एकरे के पकड़ के थाना में रखीं बैंजुआ अपने-आप जाल में फँस जाई दरोगा बाबू।"

"इन्सपेक्टर हम हईं सुखी बाबू ! हमरा मालूम बा कि बैंजुआ कइसे पकड़ाई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रवाँ सिखावे के जरूरत नइखे। अच्छा होइत कि सीख रवें सभे सिखितीं ताकि समाज में नया बैजुआ ना जनम ले सकित।"

दरोगा का बात से सुखीराम आ मुखीराम दूनो बाप-बेटा जलभुन गइलन लेकिन कर का सकत रहन लोग। चुप-चाप दरोगा का पीछे-पीछे चल गइलन। जात-जात खा जाये वाला नजर से शनिचरी के देखत गइलन ।

शनिचरी का अइसन मालूम भइल कि दरोगा बाबू ओकरा दुःख के समझत बाड़न ना त ऊ सुखीराम के काहे डपटतन—"अच्छा बा कि ई सीख रवें सब सीखीं जौना से समाज मे नया बैजुआ जनम मत लेवे।"

दरोगा बाबू ठीके त कहत रहन। हर गाँव में मुखीराम, सुखीराम जइसनका आदमी बाड़न। जे आदमी कम भेंड़िया जादा हवन। शनिचरी के आपन पुरान जिनगी इयाद आवे लागल। बहुत पुरान दिन जब ऊ आपन बाप-महतारी के घर रहत रहे।

ओकर बाप महतारी ठाकुर के खरिहान में पसीना बहावत रहन स आ ठाकुर के चौदह साल के लड़िका ओकरा के जेने-तेने चिकोटी काट देत रहे। ओघड़ी ऊ एकदम छोट रहे लेकिन छोटका ठाकुर के भी त मोंछ पनीआते रहे। एक दिन शनिचरी के बाप छोट ठाकुर के हरकत देख लेलन अउर बड़का ठाकुर पास गइलन। बड़का ठाकुर छोटकु के शिकायत सुन के उल्टे शनिचरी का बाप-महतारी के ही डपटे लगलन—"एकर मतलब कि शनिचरी हमरा बेटा के खराब कर दी। अब छोटा ठाकुर त जवान होइये चललन। तोहनी एक काम कर स। शनिचरी हमरा सामने रही त छोटा ठाकुर के कुछ करे के हिम्मत ना पड़ी।"

शनिचरी के बाप-महतारी त आपन मुँह लेके लौट-अइलन बाकी एगो नया बखेड़ा खड़ा हो गइल। बड़ ठाकुर जौन बात राय से कहले रहन ऊ एक माने से हुकुम होत रहे। छोट ठाकुर त शनिचरी के छेड़त-छाड़त रहन बाकी बड़ ठाकुर त एको करम बाकी ना रहे दीहन। अब का कइल जाय ?

एने छोट ठाकुर के सब बात मालूम हो गइल। ऊ मारे गुस्सा के फुफकारत रहन आ शनिचरी के ओकरा बाप-महतारी के सामने ही जेने-तेने दाँत गड़ा देस। ऊ समय शनिचरी के कइसे-कइसे कटल कभी भुलाये वाला नइखे। शनिच्चरी के बाप-माई का भी आँख रहते अंधा बन जाये के पड़त रहे। एक त पहिले ही गल्ती कइले रहन लोग कि छोट ठाकुर के कारनामा बड़ ठाकुर का पास पहुचवले रहन! ऊ लोग के त कुछ ना भइल बाकी शनिचरी का बाप और बेटा दूनो के बीच बराबर के दूरी-नापे के पड़त रहे।

फिर शनिचरी के शादी हो गइल। बेचारी सोचलस कि पुरान जिन्दगी से पाला छुटल लेकिन ओकरा का मालूम रहे, गरीब के जिन्दगी ना बदल जाय।

रोज रात में चौधरी मालिक शनिचरी का मरद के डंटा धरा देस आ ऊ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेचारा चुप-चाप रात भर चौधरी का खरिहान में पहरा देत रहे। शनिचरी चौधरी का कोठी में रात बितावे लागल। शनिचरी के मरद ई कहलस कि चौधरीआइन के तबियत ठीक नइखे तू कोठी में रहल कर।'

सचमुच चौधरीआइन के तबियत गड़बड़ रहे। ऊ बेचारी साँझहीं खटवास ले लेत रहे। बाकी चौधरी जी का रात भर नींदे ना आवत रहे।

बेचारी शनिचरी आपन दुःख कहाँ तक इआद करे। शनिचरी के मरद का जब कानाफुसी से चौधरी का चाल के पता लागल त ऊ चौधरी के ललकार बइठल। चौधरी भला ई कब बरदास्त करेवाला रहन। ओ घड़ी त समझा-बुझा के सब दबा देलन बाकी पूरा पन्द्रहवाँ भी ना लागल रहे कि शनिचरी का हाथ के चूड़ी आ माँग के सिन्दूर मिट गइल। शनिचरी का मरद के छूरा मार के जान ले लिहल गइल अउर चौधरी के चारो जाना दुश्मन एकरा में धरा गइल लोग। चौधरी कचहरी में जाके बयान देले रहन कि मरवाला हमार खास आपन आदमी रहे अउर ई चारो हमार दुश्मन ह लोग। हमार हाथ कमजोर करे खातिर ई चारो मिल-जुल के हमरा आदमी के जान ले लेहल ह लोग।

चौधरी पानी खानी पइसा बहवलन। ओह चारो का जिनगी भर के सजा भइल। चौधरी के सब रास्ता एके हाली में साफ हो गइल। चौधरी के ललकारेवाला उनकर नौकर मरा गइल अउर सब दुश्मन एके हाली में जेहल चल गइलन। अब चौधरी खातिर एकदम रास्ता साफ हो गइल।

एक दिन चौधरी कहलन—"देख रे शनिचरी, तोर एगो लइका बा। एकरा जिनगी का बारे में सोच। तोर मरद तोरा खातिर ना एको पइसा छोड़ले बा और ना एको बिता जगह। अभी तोर आपन भी पूरा जवानी पड़ले बा। तू कोठी में ही रहल कर। हम तोरा के सब खर्चा देब। तू कोठी के ही सब काम करल करीहे। तोर लइका के नामे चार बिघा जमीन लिख देब।"

शनिचरी सोचलस कि जिनगी कतही सुरक्षित नइखे। चार बीघा धरती मिल जाई त जमला के किस्मत बन जाई। ऊ बेचारी कोठी में ही रहे लागल। आपन लइका के जिनगी खातिर ऊ सबकुछ आँख मूँद के बरदास्त करत गइल। इहाँ तक कि चौधरी के बेटा सुखीराम भी धीरे-धीरे अपना बाप का जूता मे पैर डाल लगलन। बाकी शनिचरी के पूरा जिनगी एही सब देखत बीतल रह। ऊ चुपचाप सबकुछ बरदास्त करत गइल।

जब दस बरस गुजर गइल त एक दिन शनिचरी सुखीराम चौधरी से कहलस—"मालिक, अब बैजुआ भी सेयान हो गइल बा। रवाँ जौन जमीन देबे के कहल रहीं ऊ दे दीं, आपन कामकाज करे। हम त सब जिनगी सेवा-तलब में गुजार देब।"

सुखीराम चौधरी धूर्त अइसन हँसे लगलन—"कइसन जमीन रे, बैजुआ से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कह कि जाके खेत में हर चलावे। हमरे अनाज खा-खा के सेयान भइल बा" चौधरी बड़बड़ात दलान में चल गइलन।—"दस बरस से खर्चा चलावत बानीं अब हिनका जमीन चाहीं, ससुरा बैजुआ हराम के धन खात-खात मोटाइल बा।"

शनिचरी सन्न। खड़ा रह गइल, चौधरी के बात पिघलल शीशा अइसन ओकरा कान में पड़त रहे, ऊ आपन दूनों हाथ से कान मूँद के धम्म से भूइयाँ बइठ गइल।

ई बात आइल गइल हो गइल, बाकी चौधरी का दिमाग में बइठ गइल कि ससुरी शनिचरीं दस बरिस पहिले का बात के अभी तक मन में रखले बिया। का विश्वास जे कि अब शुला जाय। दूसर तरफ शनिचरी का मन में आग लागल रहे। दस बरिस तक चौधरी ओकरा के अइसन जाल में फँसवले रहन, ओकर तन-मन से खेलत रहलन, आपन लड़का के ओर से आँख मूँदले रहलन आ अब चाहत बाड़न कि बैजुओ गुलाम बन के जिनगी काट देवे। शनिचरी के सुनल-सुनाइल ऊ बात भी अब सच्च लागे लागल जौन कि ओकर मरद के मरला के ढेर दिन बाद खुसुर-फुसुर भइल रहे—"चौधरी ही शनिचरी के सुहाग उजड़ले बाड़न। एक लाठी से दूनो शिकार पिटले बाड़न आ शनिचरी के रखैल बना लेलन से अलगे।"

एतना ढेर चिन्ता त शनिचरी के सालते रहे, अब ओकरा ई हो डर बन गइल कि कहीं चौधरी बैजुओ के जान से मत मरवा देस, का विश्वास? जब चार पाँच गो खून करवा के समाज का आँख में धूर झोंक सकेलन त बैजुआ कुछो नइखे। ओकरा लागल कि चौधरी आदमी ना आदमी के भेस में राक्षस हवन। ऊ सब कुछ ठढा दिमाग से सोचलस त ई नतीजा पर पहुँचलस कि बहुत होशियारी से अउर मीठ बनके काम निकाले के पड़ी। ना त आपन जान के कोई फिकिर नइखे लेकिन बैजुआ के हाड़-मांस के पत्ता ना चली। विधवा त बेचारी भरले जवानी में हो गइल रहे बुढ़ापा में निरतानियो हो जाए के पड़ी।

आपन छोट बुद्धि के शनिचरी भरपूर इस्तेमाल कइलस। अउर पूरा कोशिश कइलस कि ऊ चौधरी के हिमायती बनल रहे। बाकी चौधरी के धूर्तपना के आगे अकिल कुछो काम ना कइलस। चौधरी का दिमाग पर चढ़ गइल रहे कि बैजुआ के जादे छूट दिहल जाई त ऊ काल्ह अपना के जमींदारे समझे लागी।

चौधरी ओकरा हाथ में लाठी धरा के भर रात असमसान के पास वाली जमीन के रखवाली पर भेज देस अउर दिन में ओकरा नाजुक कान्हा पर हर टेक देस चाहे बाजु में कोदारी।

बैजुआ अभी बहुत लइका रहे, ओकरा तकलीफ महसूस होखे लागल। धीरे-धीरे ऊ मेहनत के आदी होत गइल अउर लगातार असमसान में अइसन होखे कि गाँव के लोग मुर्दा के जलावे लावत रहन लोग अउर अभी पूरा मुर्दा जलत भी ना रहे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त छोड़ के चल जात रहन, अइसन देखत-देखत बैंजुआ ढोंठ हो गइल, डर भय नामो भर के ओकरा पास ना रह गइल।

जब बैंजुआ कुछ अउर सेयान भइल त शनिचरी ओकरा के देखत रह जाय, कारण कि जब माथा पर धोती के पगड़ी बांध के मोंछ पर ताव फेरे लागे त ओकरा बोली में चौधरी जइसन कड़क रहत रहे। आपन बाप के एको लक्षण ओकरा से ना मिलत रहे। ओकर बाप त "जी हुजुर" में मर-खप गइलन। बाकी बैंजुआ छोट चौधरी से भी तू-तू कर बइठे। शनिचरी देखत रह जाय अउर वोह घड़ी ओकरा याद आवे कि जादे समय त ऊ कोठी में गुजारत रहे। मरद अभागा रात भर खरिहान के रखवारी करत रहे। ओकरा का मालूम रहे कि जेकरा धन के ऊ रखवारी करत बा ऊहे आदमी ओकरा धन के कइसे-कइसे बरबाद करत बा।

बैंजू जब छोट चौधरी के कुछो ना समझे लागल त बड़का चौधरी का मन में डर समा गइल अउर ऊ एकर खोराकी कम करवा देलन। कभी त चार-चार दिन तक ओकरा के खेत पर रख देस अउर खाना ना भेजवावस। बैंजुआ भी कम ना रहे। आदमी चार-चार दिन तक भूखे कइसे रह सकेला? ऊ रात में गेहूँ के बाली तुड़ लेवे अउर गते से कांख तरे दबा के असमसान पर चल जाय। जब आधा मुर्दा छोड़के अदमी आपन-आपन घरे चल जास त चिता में बाली झोरे आ ओइजे बइठ के फांक जाय, जेसे चौधरी के ओकर राखो ना मिले। कभी कोड़ाड़ से आलू कबाड़ लेवे अउर धोती में बांध के असमसान चल जाय। मुर्दा का साथे-साथे आलू भी झोरे, जब तक आलू ना सिझे तब तक मुर्दा के खोर-खोर के जलावे। जब आलू तइयार हो जाय त फिर धोती में बाँध के खेत पर चल आवे।

अब ऊ सेयान हो गइल रहे। अपना प्रति चौधरी के नियत पहचाने लागल रहे। आपन महतारी से चौधरी के सब कुकर्म सुन चुकल रहे। शनिचरी ईहो ना छिपवलस कि चार बिघा जमीन अउर तोर जिनगी के लालच देके चौधरी दस बरस तक ओकरा के रखैल बना के रखलन। छोट चौधरी के कुकर्म सुन के बैंजुआ के देह में आग लाग गइल। ओकर खून भीतरे-भीतरे खउले लागल। एही गुस्सा में एक रोज कवनो बात पर सुखीराम चौधरी के ऊ उठा के धड़ाम से पटक देलस।

बड़का चौधरी ई कब बरदास्त करस। चार गो लठइत से पकड़वा के पेड़ में बांध देलन। जाड़ा के दिन रहे, छोट चौधरी का चाबुक के मार ओकरा देह पर करेंट अइसन लागत रहे। शनिचरी बड़का चौधरी के गोड़ पकड़ के रोअत रह गइल, बाकी छोटका चौधरी के चाबुक ना रुकल, बैंजुआ बेहोश हो गइल। दूनो चौधरी घरे चल गइलन बाकी बैंजुआ के रस्सी ना खोलल गइल। चारो लठइत ओइजे पहरा देवे खातिर जमल रहलन स। शनिचरी बैंजुआ के पास जाके रस्सी खोले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लागल। लठइत ओकरो के दू चार डंटा धरा देलन स। शनिचरी बेहोश होके जमीन पर पसर गइल। लठइत भी अपना घरे चल गइलन।

जब बैजू का होश आइल त ओकर महतारी ओकरा सामने बेहोश पड़ल रहे। अधमरा हालत में भी ओकरा देह में गरमी दौड़ गइल, बाकी लचार ऊ सब देखत रहल। फिर शनिचरी धीरे-धीरे होस में आइल और उठके चुपचाप बैजुआ के रस्सी खोल देलस, बैजुआ के शरीर में ना जाने कहाँ से शक्ति आ गइल रहे, ऊ शनिचरी के उठा के कान्हा पर रखलस अउर आपन पुरान खोली में गइल। ओकरा टाट पर सूता के खरिहान तरफ चल गइल। कुछ देर में खरिहान भक-भक क के लहके लागल। सभे दउड़ के खरिहान तरफ गइल त एने फिर हल्ला होखे लागल। चौधरी कें घर भी लहके शुरू भइल रहे।

चारो तरफ बैजुआ के खोजल गइल बाकी बैजुआ के कहीं पता ना रहे। चौधरी शनिचरी कें झोंटा पेरत-पेरत अधमरा कर देलन बाकी बैजुआ के पता ना लागल। जब सब कुछ शान्त भइल त बैजुआ अपना घरे आइल अउर शनिचरी ओकरा के रोकत रह गइल, बाकी बैजुआ भाग गइल।

बहुत दिन तक बैजुआ का बारे में कोई का पता ना चलल। शनिचरी के भी ना, बाकी एक रात छोट चौधरी जरल खलिहान के पास रात में एगो लड़की के साथ मुँह काला करत रहन त बैजुआ ना जाने केने से पहुँच गइल। अउर मोटहन डटा से दूनो के कपार थूर देलस। लड़की के त ओइजे छोड़ देलस, लेकिन आपन धोती खोल क ओकरे में से टुकड़ा फाड़ के बेहोश छोटका चौधरी के मुँह अउर हाथ दूनो बांध देलस। फिर बाकी धोती से पैर बाँध के बरगद पर लटका देलस। ना जाने छोटका चौधरी के कब होश आइल बाकी उल्टा झूलत रह गइलन। मुँह में कपड़ा ठूँस के बांधल रहे हल्ला भी ना कर सकलन। लड़की के जब होश आइल त चूपचाप घरे जा के सूत रहल, ऊ आपन इज्जत बचावे खातिर कोई से कुछ जाके कहलस भी ना।

बिहान भइला सुखीराम चौधरी के पेड़ पर उतारल गइल आ थाना में जाके बैजुआ के खिलाफ रिपोर्ट करावल गइल। गाँव में बहुत जोर से हल्ला भइल कि बैजुआ नक्सलाइट हो गइल बा। शनिचरी के प्रान धक से रह गइल।

मुखीराम चौधरी, सुखीराम चौधरी आ दरोगाजी जब दूर निकल गइल लोग त शनिचरी सोचे लागल कि बैजुआ कब तक भागत रही ? ऊ सुनले रहे कि नक्सलाइट जब पकड़ालन स त गोली मार दिआला। ओकरा लागल कि बैजुआ खून में लथपथ जमीन पर लोटत बा।

शनिचरी भोंकार पार के रोवे लागल आ रोअते बेहोश हो गइल।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बन्द केवाड़ी

रामेश्वर प्रसाद सिनहा

हमरा डेरा का बगल में एगो कवनो साहब रहत रहले। हमरा साफ ई ना मालूम हो सकल कि ऊ कवना विभाग के रहले, काहें कि ऊ केहू से कबो कुछ बोलत-चालत ना रहले। केहू का पूछला पर साफ-साफ ना बतावत रहे। उमर हमरा से अधिका ना रहे, एह से हमहूं कबो लउकि जासु त कुछ बोलीं ना। अहंकारी आ मुंहचोथा लोग से बोलि के के अपना के हीन करो? ऊ घर में घुससु त बहरी ना निकलसु। हँ, ऊ जब आफिस चलि जासु त कबो-कबो हम उनका मेहरारू के केंवाड़ तर खाढ़ झांकत देखीं। देखीं आ फेर नजर मुभावतन घुमा लीं। एह देश में माहटर खातिर केहू से नजर मिलावल कड़ेर अपराध समझल जाला। तुरंते काला-पानी के सजा हो जाले।

एक दिन हम अनासे घर-बइठकी में अपना पत्नी जी से एकर चरचा कइलीं। पूछलीं—'-आहो, ई कइसन मरद-मेहरारू हवन स कि तनी अगल-बगल बेर-बागर अइबो-जइबो ना कर स! केवाड़ी हमेसा बने रहेले। मउगी त अच्छा सुभाव के बुझाले। नीक मेहरारू बिया --पातर-छरहर, गोरगार, पढ़ल-लिखल। बुला बी० ए० पास ह।"

"का जाने जी"—ऊ कहली 'हमरो थाह ना लागे। एकाध बेर हम कहलीं —इहां का पढ़ावे चलि जाईंला त तनी आवेलू काहें ना। मन बदलत रहेला। हमरो तनी मन लागित। देखते बाड़ कि हमरा कतो जाए के बेंवत ना लागे। पांच-छव गो लइका मुअवले रहेले स भरि दिन। सँपरते साँझि हो जाला। तहरा त एकही नू बा ' त ऊ कहलसि कि का करीं जी? हमहूं त पिंजरे में बन रहीला। एको मिनिट खातिर कतों जाईंला त भिनिके लागेले। आ तनकियो हूं हां बोललीं त मारि बइठेले। ओह दिन रउवा दुआरी पर खाढ़ होके रउवा से हम बतियावत रहलीं कि आ गइले। ओह घरी त ना बोलले, बाकिर घर में घुसते बुझाय कि कांचे खा जइहें। दू-चार थप्पर लगाइयो दिहले। हम सुसुकिए के रहि गइलीं। केकरा से आपन दुख कहीं। जानबि जे बड़ा सकी हवे। हम का करीं?' त हम कहि दिहलीं कि करबू का? नइखन चाहत त कतो मत आव-जा। आखिर उनके से न तहरा निवाहे के बा। अउर लोग का करी। अइसन हाल बा त दादा बलुक तू जा। जदी आ जइहें त बेकारे तहरा गाइ के मार खाए के परी। जइसे ऊ कहसु ओसहीं चल। एक जाना हमार ई बाड़े कि हमेसा बोलेले कि तू दिनवां में तनी एने-ओने अपना सहमीलू से मिलजुल के मन काहे ना बदल लेलू। बाकिर फुरसते कहां मिलेला? ऊ कहेलन एकरे के हम ढेर समुझि के उनुका इयाद में समय काटि लींला। दिन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुझाला ना। ओह दिन का बाद ऊ हमरा इहाँ ना आइलि ह। बुचिया बहुत दि बुला काल्हो के जाने काहें दो मरदा मरले बा। ई मरद ह कि चंडाल ह। साहब ह कि कसाई ह !"

"हम त कसाई ना न हईं" हम मुस्किया के चुटुकी लिहलीं आ दूनो बेकत ठठा के हँस परलीं जा। ऊ फेर खाएक बनावे में बाझि गइली आ हम 'धर्मयुग' के पन्ना पलटे लगलीं।

× × ×

आदतन हम रात खा दूध-रोटी ढेर पसन करींला। एक दिन ऊ रोटी-तरकारी सोझा धइली त हम पूछलीं—"दूध नइखे का ?"

"एक किलो लियाला, बाकिर जरि के साफ हो जाता। लइकनो के नइखे अंटत। एह घरी ढेर पातर दूध देता। दू-तीन बेर टोकलीं त किरिया खा के रहि जाला। एके भाव के दूध ओह साहेब (बगल में) के ठीक देता आ हमरा इहाँ पानी में दूध फेटि के देता। एह घरी ओकर चाल-चलन हमरा ठीक नइखे बुझात। रउवाँ दोसरा के ठीक करीं। ई एके जगह दू किसिम काहे करी ? एह घरी ऊ दू-तीन हाली आवता उनका घरे। लइका खेलावता··· बिस्कुट कीनि के धरावता"

हम बीचे में काटि के बोललीं—"त तहरा जलन काहें होता। अच्छे न बा। बेचारा मदद क देता।"

"मदद करता कि····कहल मसकिल बा। हमरा त कुछ सुबहा बुझाता।"

"बे, एमें सुबहा के का सवाल बा। हम ना मानबि।" हम कहि के उनका के रोकलीं। कुछ बिसवास भी होखे ई सुनि-देखि के आ कबो सोचीं—बेचारा भल आदमी ह। उनका से ढेर सम्बन्ध होई एह से लइकवा के ढेर दुलारत-पुचकारत होई, आवत-जात होई। बाकिर एगो बात हमरा हरमेस खटकति रहे कि आखिर ऊ साहेब ना रहसु तबे काहे आवेला ? उनका रहला पर काहे ना ?

दिन बीतत गइल। हमहूँ एह बातन के ध्यानं से हटा दिहलीं। केकरा फुरसत बा कि दिमाग में ईहे कुल्हि आँउज-माँउज भरले रहो।

× × ×

मंगर ! देश के एगो नेता का मुअला से जल्दी छुट्टी हो गइल। डेरा तक अइलीं त ताला बन्द। हम डेराइ गइलीं कि कवनो के कुछ भइल त ना ? सोचलीं कि बगल से पूछीं। साइत कुछ कहि के गइल होखसु। हम सकुचाते बगल के केवाड़ी खटखटावे सुरू कइलीं—एक बेर, दू बेर, तीन बेर। हम फेर में परल रहीं कि आखिर भीतर त केहू होइबे करी। साहब भले आफिस होखसु। हम सोचलीं—सहबाइन सूतल होइहें। तनी कड़ेर पिटलीं। कुछ देरी में अचके केवाड़ी खुलल बाकिर हमार होश गुम हो गइल। पसेना में भींजल, झँवराइल चोथाइल बिधुनाइल मुँह लेले हतेया मरला लेखा दूधवाला निकसल आ 'ऊ लोग महबीर जी तर गइल बा' कहि के नजर चोरवले सरकि गइल। एक मिनट ले हम ओकरे ओर जात ताकत रहि गइलीं आ फेर अपना के सहेजि के महाबीर जी कि ओर सरपट भगलीं।

केवाड़ी फेरु बन्द हो गइल रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एगो आउर अभिमन्यु

ब्रजकिशोर

गम्हीरा के चाल-चलन बड़ लोका तनिको सोहाइल ना। पहिले लोग ओकरा के समुझावल, पोल्हावल, ऊँच-खाल के बात बतावल। जब ऊ एतनो पर मानल ना त सभे धमकावल, टांग तूड़ के लोथ क देवे के, जिनगी खराब क देवे के, घर में आग लगा देवे के बात उड़ल। गम्हीरो सुनत गइल, बूझत गइल। रोज-रोज चारूओर ऊ लोग के टूटल टांग देखते बा जे अपना सपना का लाश के अपने हाथे नोंच-नोंच के गिद्ध के खिला रहल बा, अपना साध में अपने हाथे आग लहका रहल बा।

गम्हीरा केहू के गारी बात ना कहे, हरुस-पातर ना बोले। केहू का बहू-बेटी पर गलत निगाह ना फेरे, केहू के सिकाइत ना बोले। लाम-छरहर साँवर देह, लम्बा मुँह, घन बरौनी, घुँघराला केश, बड़-बड़ आँख, ऊपर का ओठ पर जतन से छाँटल छोट-छोट मोंछ, ओठ से झरे वाली मिसरी मतिन मीठ बोली। ओकर व्यक्तित्व कुल्ह मिला के मन के बाँधे वाला रहे। तेहू पर लोग ओकरा से अनराज रहत रहे काहे कि ऊ केहू से डेराय ना। जवन बात के साँच बूझे, ओकरा के कतहीं केहू का मुँह पर बोल देवे में ओकरा असक ना लागे। गलती करेवाला बड़ बा कि छोट, सैकड़न-हजारन बिगहा के जोत बा कि रहे के पलानियो नइखे-एकर बरावा ऊ ना करे। ऊ जब कवनो गरीब के बेबात मालिक से पिटात-लसरात देखे, दिनभर जांगर चल-वला का बादो साँझ के गृहस्थ किहाँ से कवनो ओजे बिना मजूरी लेले घरे लवट के बिना खइले-पियले भूखले पेटे बाल-बच्चा का सँगे सुत रहला के बेबसी देखे, पेट के आग बुतावे खातिर केहू के मजबूरी में अस्मत लुटावत देखे त ओकरा देह में आग लाग जाव। ओकरा बुझाव ना कि ऊ का करो कि ई सभ मेंट जाव!

पढ़े में बड़ा तेज रहे गम्हीरा। कबहूँ अपना क्लास में सेकेंड ना कइलस। मैट्रिक तक ले त केहुँग पढ़िए गइल बाकी आगा कवलेज जाए के सावंग नाहियें बइठल। बहुत मन रहे पढ़े के, खूब ज्ञान हासिल करे के बाकी ऊ सब मन-के-मने में रह गइल। बाप-मतारी का लगे रहे का जे जोगाड़ लगइते। ओहू में नउवें क्लास में जब रहे गम्हीरा त बपसी एगो अचके भइल बिमारी से ना बच सकलन! बाँच गइल एगो अधेड़ मतारी आ हाले के आइल ओकर कनिया—बसन्ती! एह तीन परानी का मधे एगो पुस्तैनी छोट घर रहे आ दू बिगहा ले जमीन। एसे का होइत। पढ़ाई के काम बन्द हो गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पढ़ाई खतम करे के पड़ल मजबूरी में, गरीबी का ओजे। गम्हीरा के मन कहीं बहुत भीतर ले कचोट गइल। साल भर ले ऊ बहुत उदास रहल—कवनो काम में जीव ना लागे। जहाँ रहे फिकिरे मातल बूझीं। ओठ झुराइल रहे, कपड़ा लसराइल रहे, माथ पर लकीरे लकीर खींचाइल रहे। बपसी रहस ना। अपना अलावा दू परानी के जरूरत पूरा करे के धरम गम्हीरे के रहे। एसे कवनो नोकरी पा जाए खातिर ऊ मोतिहारी से मुजफ्फरपुर, आ पटना ले एको उठा ना धइलस। कहाँ ना गइल, केकर-केकर चिरौरी ना कइलस, केकरा दुआर के माटी ना खोन देलस! बाकी, नोकरी ना मिलल। ऊ एगो गरीब रहे, मैट्रिक तक पढ़ला से का! कवनो दमगर पैरबी रहित त कुछ तिरइबो करित!

ईहे सब करत दू बरिस आउर बीत गइल। एह बीचे ओकरा ढेर देखे-सुने पढ़े के मिलल। जेने नजर जाय ओनहीं तबाही, जेकरा के देखे ऊहे उघार! केहू के पेट खाली बा, देह उघार बा त केहू के पेट भरलो पर मन उघार बा। ई सब ओकरा लँगटे लउकत रहे— भीतरे-भीतरे खखार भइल! एह सब से ओकरा मन पर बड़ी चोट पड़ल। जाने-अनजाने ऊ एगो राह ध लेलस। सँगमिलुआ मीठ सुभाव का ओजे ओकर असर लोग पर पड़ल। ऊ घरे-घरे, मंड़ई-पलानी का भीतर-बाहर आपन बात कहे-सुने लागल। लोग का मदद म आपन समय देवे लागल।

गम्हीरा का ई देख के बड़ा अचरज भइल कि मालिक लोका खेत में अंडे-बच्चे भिनुसहरा से लेके एक पहर रात ले काम कइलो पर मजूरन का कर पर सुबहित बसतर नइखे चढ़त आ ना पेट भर एको जून अन्न जुड़ता। गरीब का मिहनते के लोग सोख लेता। ठीक से ना खइला-पियला से मेहनत करे के ओकर तागद घटत जाता आ जब जवानी के जोम होखे के चाहीं तबे बुढ़ापा के झटका लागे लागेला! गरीब के देहो मालिक के, ओकर मेहरो-धीया मालिक के। पेट के भनसार जे करावो।

गम्हीरा के मन रह-रह के काँप जाव। एही बीच घटना-पर-घटना होत गइल। गम्हीरा गाँवा-गाईं घूमे लागल। लोग से बतिआवे लागल। ऊ दस-बीस गाँव का गरीब-मजूरा लोगन के बिटोर के एगो संगठन खड़ा करे के चाहत रहे जे ना खाली आपन मजूरी बढ़ावे खातिर एकजुट होखो बलुक एक दोसरा के मददो करे खातिर होखो। जे गरीब बा ऊ ई चीन्हो कि ओकरा बाजू के का मोल बा, ओकरा श्रम के का कीमत बा! गम्हीरा के अथक परिश्रम आ दिन-रात लगल-भीड़ल रहला से ई काम एक तरे से हो गइल। पूरा जिला में ई संगठन बन गइल जबना में सयान भा जवाने ना रहस— बूढ़ो रहस, कनियो रहस, लइकियो रहस। सभे सजग हो गइल रहे। तीन बरिस के मेहनत सफल हो गइल आ पूरा जवार मे कतहीं कवनो अन्याय होखे, अत्याचार होखे, बलात्कार होखे— माने कतहीं खहीं खरके त गम्हीरा ओजा हाजिर हो जास आ ओह टोला के गरीब एकजुट होके बिरोध करस!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काम बन्द, मदद बन्द ! मालिक लोग बाबू लोग के कुल्ह फुटानी त मजूरने पर होला। बहुत जगे अब जमीन वाला धनी-मानी लोग झुकल तब आस-पास सभतर के बबुआन तड़ना गइल—ओ लोके कान खड़ा हो गइल ! ईहे बात रहे कि गम्हीरा का चाल- चलन के बड़ लोग नापसन्द करे लागल आ तरे-तरे का जाल में ओकरा के फंसावे के कोशिश में जुट गइल।

जगे-जगे से गम्हीरा पर दरखास्त पड़े लागल—ऊ चोर ह, डकइत ह, सेन्ह मारेला, त लागल फसल कटवा लेला, त गरीब का लइकिन क फुसुला-फुसला के बेचेला त····का दो-का दो लिख-लिख के फेंकाये लागल। खरचो ब्रच भइल आ पुलिस का फाइल में गम्हीरा एगो नक्सलाइट बन गइल जे चोरी, डकइती, लूट-पाट, रहजनी; अ गगी आ हत्या सभ करे खातिर तेयार रहेला। बाकी गम्हीरा बिदुकल ना, डेराइल ना। ऊ त अपना भय के घोर के पी गइल रहे।

एही बीचे ऊ जेलो गइल कुछ दिन खातिर। जवार भर ओकर मोकदमा लड़ल। जब छूट के आइल त अपना संगठन का नेह से ओकर मन भींजल-भींजल रहे लागल।

बटाईदारी के कांनून पास भइल आ सधान-पटान के एलान सरकार कइलस त पूरा जवार में संघर्ष के धार अचानके तेज हो गइल। बाबू-भइया के जमोन अगर कवनो नान्ह-जात पइसा-पइसा जोड़ के लिखवले रह तवन त लाठी का बले धरा गइल बाकी गरीबवन के जमीन जवन बन्हक धराइल रहे बड़ लोग किहाँ सेकरा पंजरा जाए के हियाव मोसकिल रहे। गम्हीरा आगा बढ़ल आ अइसन ममिला मे खेत जोताए लागल, फसल कटाए लागल ! गाँव के गाँव मिल के दखली करे। समूचा गाँव एक ओर आ मुट्ठी भर जिमदार एक ओर। एक ओरी जन बल रहे त दोसर ओरी धन के बल ! कै जगे गोली चलल, कुछ लोग दवरे पर साफ हो गइल बाकी झंझट रूकल ना। सवाल जिअका के हो गइल रहे, जीए के हो गइल रहे ! एसे दूनू दल मरे-मारे में हिचकत ना रहे। बड़ लोग का छल-बल रहे, धन रहे, पुलिस रहे, हाकिम लोग रहे। समय का पलटा खइला से अतने अन्तर पड़ल रहे कि हाकिम-हुकाम आ पुलिस-दारोगा लोग मालिक लोग से माल त टाने बाकी खुल्लम-खुल्ला मदद ना करे। तबहूँ ओ लोका मदद के हजार रास्ता होला।

एह जवार में सबसे ढेर ज़मीन मठ के बा। मठ का महन्थ के एगो राजा बूझल जाला। दूर-दूर ले फइलल खेत-पथार आ ओमें उनुका चेला-चाटी के गेड़ुआ कपड़ा-बसन। बड़ा अजीब लागेला। मन्दिर में घड़ी-घंट बाजेला, पूजा होला, भोग चढ़ेला बाकी ओहिजा माया के खेलो रचाला। दर्जन भर से ढेर प्रमुख चेला लोग तोन फेंकले-चेहरा लाल लेले पड़ल रहेला। ओमें से केहू घाट नइखे। महन्थ जी अपने बड़ रसिया हवन। कवन रात होई जे ऊ अपना इलाका का कवनो गरीब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जवान लइकी का जवरे मस्तो ना मारत होखस। उनुकर आपन लठैत लोग बा। ऊ लोग एह काम में उनुकर मदद करेला। जहाँ जवन चिड़ई देखल, पोल्हावल, फंसावल आ उड़ा लेहल। भगवान का नाँव पर, मठ का कोठरिन में शायदे कवनो कुकरम होई जे ना होत होखे। इनका पइसा का आगू पुलिस, हाकिम, आ नेता लोग कुक्कुर खानीं पोंछ डोलावत रहेला। कवनो एलेक्शन होला त इनकर मुँह जोहाला; ई जीप में चढ़ के घूमेले। पटना से शायदे कवनो मन्त्री आ नेता आवेले जे इनका दरबार में ना हाजिरी देस, मठ के निमक ना ब्रास आ उनुका से महन्थ निमक के सरिअत ना असूलत होखस!

ऊपर ले पहुँच भइला के बड़ा लाभ होला। जेकरा इहाँ मन्त्री के जूठन गिरे लागेला ओकरा घर के कुत्तो के हाकिम लोग मुँह जोहे लागेला। एसे महन्थ का खिलाफ जाए के केहू का हूब ना रहे। उनुकर मारल मेंमिआव ना।

बाकी, गम्हीरवा त कवनो हाकिम रहे ना, कवनो नोकर रहे ना। दू टका के आदमी आ महन्थे का मुँह पर थप्पर मारे लागल। महन्थ दाँत पीस-पीस के रह जास। का समय हो गइल। जवना का घर के कवनो बेटी-पतोह का मठ में रहके महन्थ के सेवा करे के मोका मिलत रहल ह, ऊ निहाल हो जात रहे आ। अब तनिको सा महन्थ के एगो लठैत ओह टोला का एगो लइकी के गाल छू के दूगो बोल बोल देला त ओकरा के घेर के पंचलत्ती बोल देले स। जब ऊ अपना सँघतियन का जवरे आह लइकिए के उठा लेवे गइल त सउँसे गाँव के नवहा ओकनी के ग्रस गत कइले स कि केहुङ जान बाँचल!....ई महन्थ का रोब-दाब के ललकारल रहे, उनुका धन-जन के चुनौती देहल रहे। जेकरा बल पर महन्थ के महल खड़ा बा, ई राज-पाट बा, ओकरे पर आघात कइल कवनो कम हिम्मत के बात ना रहे। एसे महन्थ बड़ फिकिर में पड़ल रहले।

गाँव-ज्वार में सनसनी रहे। हवो-बयार के साँस टँगाइल रहे। विरइयो चुरुंग अम्पात रह स। भीतरे-भीतरे दाँव-पेंच सोचात-चलात रहे। सभकर बरौनी तनाइल रहे। आँखे-आंख रस के बतकही ना होखे साँप के थुथुन थूर देवे के इसारा होखे। सभे सहमल रहे, चौकस रहे। ऊपरे-ऊपर बोली के बाजार गरम रहे। गाभी-चउल त गाँव-गिरान का पानिए मे फंटा गइल रहे। केहू दाँत पिजावत रहे, केहू दाँत पीसत रहे। केहू का दाँत लागत रहे त केहू निहाल होके दाँत झमकावत रहे। गजब ह'ल हो गइल रहे।

महन्थ का लगभग ढेर खेतन पर लोग बटाई के दावा क देले रहले। जवार भर में छिटाइल उनुका अपना खेत के ठीक चिन्हासियो ना मालूम रहे। लोगे जोते-बोए। जवन मन करे तवन दे देस आ गरीब-गुरबा का जाए के अलम भेंट जाए। बाकी, अब त खेतवे हड़प लेवे के चाहतारे सन....। सरकारो ससुरी एकनिए के हो गइल बिआ। वोट में बड़ लोग के निहोरा होई, ऊ लोग दउड़ी-धूपी, धूर फाँकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओगस गिरवाई आ जीत गइला पर ई एमेले-मंत्री सब गीत गइहन स ओही ढोंढ़ाई-मंगरू के।....बटाईदारी आ सधान-पटान के कानून पास कके त सरकार महन्थ का मठ के दीवारे ढाहे पर लागल बिआ। अइसनको भला कहीं होला ? कतना जतन आ अकिल से धूरे-धूर कके त ई जैजाद बटुराइल आ अब सरकार एकरा के अइसही बाँट के जस लूटे के चाहतिया।....

महन्थ एक तरे से जवार का बड़ लोगन के मेंठ रहले त गम्हीरा गरीबन के अगुआ रहे। एसे दूनू आदमी एक-दोसरा पर नजर रखले रहे। महन्थ का नाँव पर गम्हीरा गारी त ना दे बाकी ओकर चेहरा खीसे लाल हो जाय आ मुट्ठी कसा जाय—'महन्थवा पक्का घाघ ह, कसाई ह। साधू का चोला में एक हजार रावन समा गइल बा।'....केहू गम्हीरा के नाँव ले लेव त बस महन्थ का खीस-पीत के ठेकाना ना रह जाय। लागस एक साँस में ओकरा के तारे, ओकरा बाप-मतारी-मेहर के गरिआवे।

दूनू ओर से ममिला तनात गइल आ महन्थ का कतनो छटपटइला पर जब गरीब आपन बटाई के दखल छोड़े के तेयार ना भइले सन त महन्थ ढेर चिन्ता में पड़ले। उनुका सोझा दुइएगो रस्ते रह गइल-गम्हीरा के अपना में मिला लिहल आ ना त ओकरा के राह से हटा दिहल। ऊ पहिलका राह अपनवले। कोशिश कइले। प्रलोभन दिहले, रुपया, पइसा आ जमीन-जायदाद देवे के। बाकी, गम्हीरवा डोलल ना।

एक दिन दुपहर में गम्हीरा कुछ नवहा लोका जवरे अपना गाँव से दू मील थाना का भीरि बजार में बइठ के चाय पियत रहे कि थाना के एगो सिपाही आइल—'गम्हीरा जी, अपने के दारोगा जी बोलवली हँ ?'

—'काहे के हो ?'

— ना मालूम। कुछ जरूरी बात करे के बा।

गम्हीरा सोच में पड़ गइल। का काम हो सकता ? कहीं ओकरा के बन्न करे के त नइखन सोचत। थाना मे गइल ठीक होई ? छव-पाँच मे पड़ल देख के सिपाही बोलल—'दस मिनट बात क लीहल जाव त नीक होई।'

—'हमरा चाय पियते भागे के बा। हम काल्ह आके बात क लेब। रौरा कह देव दारोगा जी से। आज सिरसाँ गइल जरूरी बा। ना जाए से झझट हो जाई।'

सिपाही चल गइल। बाकी, गम्हीरा का बुझाइल कि ई भीतरे ताव खात गइल ह। थाना के बोलाहट आवे आ एगो दरिदर अदना आदमी ना जाय—ई ओकरा ना सहाइल। कइसन जबाना आ गइल। ओकरा मुँह से सरकार खातिर एगो मोट गारी निकलते रहे कि दारोगा जी अपने झटकल चलल आवत लउकले।

—'सरकार, ऊ सुरवा त धरीछन का दोकान में बइठ के चाय पियता। कहलीं हँ कि सरकार बोलावतानीं त कहलस ह कि काल्ह मिलब !'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—'का करब। ईहे टैमे बा जवना का भगई पेन्हे के लूर नइखे तवनो बाँहि देखावता ···। कुछ क द त नोंकरी से हाथ धोअ आ ना त भीतरे कुँधुरत रह। चौना कुफुत में पड़ गइल बा।'

—'पुलिस त ना घर के रह गइल बा आ ना घाटे के!' सिपाही हुँकारी भरलस।

—'नोकरी करे के बा त सभ सारन के तरवा सुघरावे के पड़ी हो पाँड़! हमहीं ओकरा से बतिया लेतानीं। अकेले बा?' दारोगा जी पूछलन।

—'जी ना हुजुर, चार-पाँच गो लौंडा बाड़न स। छंटले-छंटल!····' सिपाही जी का ई प्रस्ताव शायद नीक ना लागल रहे कि दारोगा जी खूदे गम्हीरवा से दोकान में जाके बतिआस। बाकी, कुछ बोलले ना। हाकिम के बात रहे। तवनो अइसने बाते होखे।

दारोगा जी दोकान में ढुकले त गम्हीरा खाढ़ होके प्रनाम कइलस—'हम त सिपाही जी से कहलीं हँ कि काल्हु अपने से भेंट क लेब। आज सिरसा से ई खबर ले आइल बाड़े कि जल्दी ना पहुँचला पर झंझट बढ़ जाई?····'

दारोगा जी बइठत कहले—'ईहे सभ त बतिआवे के बा। ई कब ले चली? पुलिस त अउरो फजीहत में पड़ल बिआ। ना एनहीं के आ ना ओनहीं के।····'

—'काहे? पुलिस त झंझट चाहेले दारोगा जी। जतने रार-झगड़ा बढ़ी ओतने न गोटगर माल भेंटाई।····'' कह के गम्हीरा हँसे लागल।

—'का माल मिली गम्हीरा जी! जीव पयमाल हो गइल बा। जेकरा मन करता ऊँट खानी गरदन उठवले थाना में ढुकल चल आवता।····अइसन कुछ उपाय होइत कि मिल-जुल के ममिला फरिआ जाइत त तनी हमनियो का सांस-में-सांस आइत!' दारोगा जी गम्हीरा का हँसी पर पलभर भीतरे तिलमिना गइलन बाकी ऊपर से मुसकियात बात बढ़वले।

—'गरीब कै घड़ी लड़ी? केकरा से लड़ी? ई त जीऐ मरे के नौबत बा गइल बा। सरकार चाहतिया कि गरीब के भलाई होखे, ओकरा लिलार में सुख सटाव बाकी महन्थ जी अइसन चीकन लोग अतना घाघ बा कि मनसा पूरने नइखे होखे देत। महन्थ जी ममिला फरिआवे के चाहते नइखन··?'

—'अब महन्थ ऊ नइखन रह गइल। उनुकर मनिका ढह गइल बा। सब ताव झर गइल बा। ऊ अपने आके कह गइले ह कि गम्हीरा के कहीं कि सब ममिला फरिया जाव···!'

—लेकिन हमरा त कुछ चाहीं ना। ऊ हमरे के देवे के चाहत बाड़े। अइसना में का बात होई?' गम्हीरा सन्देह से कहले।

—'ना-न। जेकर जवन दावा बा ओह सभ पर बिचार क लिहल जाव बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हर गरीब के कुछ हिसाब-किताब हो जाव । कुछ दावा बटाईदार छोड़ देस आ कुछ जमीन महन्थ छोड़स । सभ सलट जाव ?' दारोगा जी प्रस्तावे रखने ।

—से त ठीक बा । बतकहिए मे कवनो रास्ता निकलेला । बाकी, बतकही होई कहवाँ ? हम त मठ पर जाएब ना !....' गम्हीरा कहलन ।

—'काहे, मठ पर का कोका बइठल बा ? हम खुद चलब । पुलिस संगे रही । बात साफ-साफ क के, जवन तय हो जाय दूनू पार्टी ओही अनुसार करो ।' दारोगा जी सुझाव दिहले ।

—'हमहूँ सोचत बानीं कि ममिला तय हो जाव । सभे अपना काम-धाम में लागो । महन्थो के ढेर नोकसान बा । कुछ उनुका कल्याण करे के चाहीं ।... जब तय करीं, हम बतिआवे खातिर तेयार बानीं । कुछ आउर लोके बोलावल जाई ।....'गम्हीरा कहलन ।

—'शुभ काम में देर का । तहरा पर सभका बिसवास बा । जे तूँ तय कर देब, ऊ सभे मान जाई । हमनी तुरन्ते चल चलीं त साँझ का पहिलहीं सब झंझट ओरा जाई । सिरसाँ चलहीं के बा । ओजाँ से होत मठ पर आध घंटा में पहुँचल जा सकेला !' दारोगा जी खड़ा होत कहलन ।

गम्हीरा सकपकाइल । बिना कुछ सोचले-बिचरले का बात होई ? ममिला फरिया लिहल नीमने बा । मठ में हम अकेला रहब आ महन्थ अपना आदमी-जन का जवरे ।...खैर, पुलिस का सँगे दरोगो जी रहिहें ।...."

गम्हीरा के आग-पाछ में पड़ल देखके दारोगा जी बाँह धके कहलन— 'च ल, च ल, काम जनता जल्दी हो जाव ओतने नीमन !'

अन्त में सभे चल दिहल । गम्हीरा का जवरे भी एगो सँघतिया लाग गइल । एक घंटा का पहिलहीं सभे मठ पर पहुँच गइल । महन्थ सभकर स्वागत कइले— गम्हीरो के बड़ा आदर से बइठवले । जल-जलखई का बाद बात चले लागल ।

बात संसरे के त रहे ना । कवनो बात पर महन्थ अड़ गइले —'ई कइसे होई ! हम बिका जाएब बाकिर....!'

—'त जाए दीं । हम गरीबन के सौदा करे रउआ से नइखीं आइल ।'

—'बात त तहरा फरिया के जाए के बा गम्हीरा । तूँही सभ झंझट के जड़ बाड़ ।...'

—का करब रउरा अतना कुल्हि राख के । के बा रउरा ? काहे माया में फँसल बानीं ? रामो जी त कोल-भील-बानर के हित मे काम कइलें । राउर जस गवाये लागी अगर....।'

—'काल्ह के छँवर हमरा के उपदेश देवे लग ल । तहरे बुझाए लागल कि माया आ महामाया का ह, पाप-पुन्न का ह ! बाप के नाँव साग-पात बेटा के नाँव परोरा !....'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

गम्हीरा कं गात बीचे में काट के महन्थ जी इत्था से उखड़ गइले आ लगले जोर-जोर से चिल्लाए, गरजे। उनकर गरजन-तरजन सुनके एने-ओने बइठल-लुकाइल गन लोग हड़हड़ा के चहुँप गइल। देखते-देखते गम्हीरा चारू ओर से घेरा गइल। गम्हीरा का ई बूझत देर ना लागल कि बतकही से सुलहा करे के ई नाटक एगो प्रपच रहन ह, एगो जाल रहल ह जवना में गम्हीरा के जीव अब फँस गइल बा। ओकरा बिसवास हो गइल कि अब ओकर बाँचल मुश्किल बा। ऊ निहत्थे बा, अकसरूआ बा आ एजवाँ महन्थ के पचीसन आदमी लाठी-भाला लेले तइनात बा ! गम्हीरा का संगे जे आइल रहे उहो पान ले आवे फेरु सड़क का मोड़ पर चल गइल रहे।

—'ईहे सरवा सभ झंझट के जड़ बा। एकरे के साफ क द स। मार द ससार के। ना रही, ना जहर उगिली। साँप के दांत तुड़ला से नीमन साँप के मारिए दिहल होला।....' महन्थ जी गरजले।

महन्थ का आदमियन के लाठी हुमचल। आज एगो आउर अभिमन्यु चक्रव्यूह का बँवड़ेरा में फँस गइल रहस।

गम्हीरा एक हाली दारोगा जी कावर तकलस। ओकरा आँख में ओरहन आ नफरत रहे—'दारोगा जी, ई प्रपंच रहल ह हमरा के मारे के !'

दारोगा जी एकोरी चुपचाप खड़ा रहले। गम्हीरा से नजर मिलते ऊ सोझा से हट गइले। कुछ देर लाठी चलल। एगो पड़ल डंटा उठा के गम्हीरो कुछ देर अड़लस बाकी उहे भइल जवन....। गम्हीरा चोट खाके गिर गइल। कपार फाट गइल रहे। महन्थ आपन बन्दूक ले आके 'ठाँय !' से गोली दाग दिहले। गोली छाती में लागल आ...गम्हीरा दवरे पर शान्त हो गइल।

एगो चिनगारी जागल रहे ऊ सुत गइल। जयद्रथ के गोली अभिमन्यु के त मार देलस बाकी व्यवस्था के रक्षक पुलिस अर्जुन लेखा कवनो जयद्रथ बध के प्रण ना ठनलस।

गम्हीरा मरा गइल। सउँसे जवार में महामारी लेखा ई खबर भोर होत-होत चारुओर फइल गइल।....गम्हीरा मार देहल गइल। जे गरीब गुरबा रहे ओ लोग का आँख से झर-झर लोर ढरे लागल। जे जहाँ रहे सन्न हो गइल। सभे भागल थाना कावर। पहिले त लाशो ना भेंटात रहे बाकी दस बजते-बजते उहाँ दस हजार से ढेर लोग बटुरा गइल त झख मार के लाश देवे के पड़ल।

गम्हीरा एगो डकइत रहे बड़का लोग का नजर में। गम्हीरा एगो नक्सलाइट रहे पुलिस का रेकार्ड में आ गम्हीरा एगो जरत-बरत चिनगारी रहे एगो देवता रहे पूरा जवार के गरीब तबका का नजर में !

जब गम्हीरा के लाश ओकरा दुआरी पर पहुँचल त ओकर बसन्ती पछार खाके गिर गइल। ओकरा लगे दू बरिस के नन्हका टुकुर टुकुर अपना बाप का लाश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ताकत रह गइल । महतारी के लोर झरत रहे। ऊ चिल्ला के गाय खानी डकरत रहे।

बसन्ती आ गम्हीरा का मतारी का जवरे हजारन लोग के भीड़ अपना आँख मे लोर लेले ठाढ़ रहे । देखते देखत रंथी सजाइल आ फूल माला से तोपा गइल । उघारे देहे खाली पैर अतना लोग जुटल कि बसन्ती के गम हलुका गइल । जेही सुने से काम धाम बन्न कके तुरते धावे लागे ।

बसन्ती के दाँत दूनू ओठ के रह-रह के जाँत देवे । ऊ अपना नन्हका के मूड़ी पर हाथ धके सभ का सोझा किरिया खईलस कि "हम मेहरारू होके भी ओह काम के करत रहब जवन हमार मरद पूरा ना कर सकलन !'

सउँसे भीड़ हुँकार उठल—'गम्हीरा जिन्दाबाद ! बसन्ती जिन्दाबाद !!....'

मसान घाट जात में गम्हीरा का रथी का सँगे दस-बारे हजार लोग चलल । अइसन मउअत बड़ा भगमान के होला। बसन्ती सोचलस कि गम्हीर ओकरा आ ओकरा नन्हका खातिर ढेर कुछ छोड़ गइल बाड़न । ओकर लोर सूख गइल !

चार-पाँच दिन बादे जब कलक्टर साहेब सरकार का ओर से पाँच हजार रुपया देवे बसन्ती किहाँ पहुँचले त बसन्ती बाघिन खानी बिफर गइल—चेक लेके टुकी-टुकी कके उनुका सोझे फेंक देलस—"....हमरा आदमी के मरवा के सरकार उनका लोहू के मोल देतिया ।....हमरा दया ना चाहीं, भीख ना चाहीं !!....''

कलक्टर चिहा गइलन । उनुकर अकबक बन्न हो गइल ।

—'....हम गरीब बानीं ! गरीब का दया ना चाहीं, मरउवत ना चाहीं ।.... ओकरा आपन हक चाहीं । ऊ हक खातिर लड़त मार दिहल गइलें....त हम हक लेब, लड़ के लेब....हमार बेटा लड़ के ली....ई हजारन-लाखन गरीब लोग आपन हक ली !....आ लड़ के ली ! ....'

बसन्ती का आँख में जइसे आग धनकत होखे । ऊ अपना नन्हका के गोदी में लेके झमक के भीतर चल गइल। कलक्टर साहेब चुपचाप कुछ देर ले ठाढ़ रहले आ मूड़ी नीचा कइलें अपना जीप पर बइठ के चल दिहलें ।

दुआर पर इकट्ठा भीड़ अपने से चीख उठल—'गम्हीरा जिन्दाबाद ! लड़के लेंगे....अपना हक ....!!'

भीतर से बसन्ती आइल आ आके ऊहो हाथ ऊपर उठा-उठा के नारा लगावे लागल ।

कलक्टर के जीप गाँव का सड़क पर धूरा उड़ावत चलल जात रहे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

पहिल पाठ

□ मधुकर सिंह

रामरतन बैलगाड़ी से बनगांव प्राइमरी स्कूल का सामने उतरलन। गांव में हलचल मच गइल कि स्कूल में छव महीना का बाद नया पंडीजी अइलनह। जब से स्कूल के मंजूरी मिलल तब से रामरतन इहाँ के तीसरका मास्टर हँवन। गांव में दूगो आउर मास्टर के जगह बा बाकी अबहीं तकले एके मास्टर इहाँ रहल ह। दूगो मास्टर कागजे पर बाड़न। एकरा पहिल जवन मास्टर आपन बदली कराके इहां से चल गइल रहस उनका बाद से केहू ना आइल रहे। छव महीना गुजर गइल रहे। सुपरिंटेडेंट कन एह गांव के कुछ उत्साही नवजवान बहुते दउर-बरहा लगवले रहस बाकी ओ लोग का बराबर एके गो जबाब मिले—अपने सबस जादे फिकिर सरकार का बा। शिक्षक के नयकी बहाली होते तीन गो शिक्षक उहां जरूर भेज देल जाई। रामरतन का तीन-चार दिन पहिले चिट्ठी मिलल रहे। उनका पांच दिन के भीतर योगदान कर लेवे के हुकुम रह। रामरतन का साथे उनकर मेहर आ बेटियो रहस। गांववालन के देखके अचंभा होय बाकी रामरतन के सामने लाचारी रहे। दू-तीन साल से ट्रेनिंग कइला का बाद शहर मे पड़ल रहत रहस। बारह साल के बेटी भइली तबहीं ऊ नसबदी करा लेले रहस। पता ना, बेराजगारी जिनगी भर खातिर रह गइल त सूअरन के बच्चा जइसन गहेट के गुजर कहाँ स करिहन। ट्यूशन कके बेटी औरत के परवरिश करत रहस। ई त सयोगे कही कि ट्रेनिंग कइला के तीने साल का भीतर उनकर बहाली हो गइल रहे आ बनगाँव प्राइमरी स्कूल उनका खातिर पहिला जगह रहे। उनका पाले सामान एतना कम रहे कि लागते ना रहे कि इनकरो कवनो अपन दुनिया बा। बस छोट-छोट बक्शा रह, एगो बिस्तरा बा तीन गो मोटरी में आउर-आउर समूचा सामान। कतना लोग क त हंसिया छूटत रहे कि पंडी जी नोकरी करे आइल बारन कि बेटा-बेटी लेके तीरीथ कर। अबहीं ले त अइसन पडी जी इहाँ रहल बारन जे शनिचर के घरे भागस त सोमार क सांझ तकले लवटस। कभी कभार त आवे मे हप्ता लगा दस। स्कूल के सोझा जब बैलगाड़ी खड़ा भइल त एक दू गो लोग पूछवो कइलक — अपने एतवारो के घरे ना जाइब का? रामरतन बड़ा सीधापन से हँस के मूँड़ी हिला दले रहस —'ना, जी! हम इहाँ से कबहूँ ना जाइब।'

रामरतन, उनकर औरत आ बेटी बैलगाड़ी से सामान उतार के बहुत देरी ले भउचंक खड़ा रहस। स्कूल के कोठरी में ताला लागल रहें आ बरामदा पुआरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ घास-भूसा से भरल रहे। रामरतन देरी ले अकबकायेल रहलन। कुछो समुझ में ना आवत रहे— ईहें स्कूल बा कि ऊ केहू के दुअरा पर भटक आइल बारन। तबे एगो आदमी उनका के टोकलक— 'शुभ स्थान कहाँ पड़ी पंडी जी ?'

'गनपत टोला।'

'अपन नाम का बा ?'

'रामरतन।'

उँ। आदमी चउँकल।

'आगे पीछे कुछुओ ना ?'

'जी, खाली रामरतन····।'

'अच्छा, रामरतन जी। अबहीं त अपने अइबे कइलीहं, आराम करीं।' ऊ आदमी चल गइल।

रामरतन का हँसी आ गइल। कइसन बनइला गाँव ह-जइसन नाम, ओइसने गुण। गजब चलन बा। जे स्कूल में आइल, ऊ लइका से लेके बुढ़वा तक ला पंडी जी हो जाले। रामरतन के एही चलते कुछ लोग पंडी जी कहेला। ओह आदमी के मुँह से अपन नाम रामरतन सुन के उनका थोड़का अचरजो भइल रहे। बाकी बहुत देरी ले अपना भविष्य के अन्हार में खड़ा देख के ऊ स्कूल कावर ताकत रहलन। फेर ऊ बेटी आ मेहर साथ पुअरा आ खर-पात के एक बगल समेट के बइठ गइलन।

आस्ते-आस्ते साँझ हो गइल आ साँझ के बाद रातो होखे लागल। तब ओह लोग का बुझाइल कि भूख जोर से लागल बिया। ऊ लोग बक्शा खोलके घर के चना निकललक। स्कूल का इनार पर बाल्टी पड़ल रहे। चना खाके भर पेट पानी पीलक लोग आ पुअरा में घूस के ओह रात चुपचाप सूत गइल।

भोरे कमी-वेस एक दर्जन लइकन इनका भीरी जमा होके उनका के खेल-तमाशा अइसन देखत रहस। रामरतन अन्दाज कइलन— ई सबके सब स्कूले के लइका होइहन स। छव महीना से पढ़ाई-लिखाई छूट गइला से उन्हन के भीतर हलचल रहे। जब ऊ ओकनी कावर बढ़लन त लइकन धीर-धीरे भागे लगलन स। रामरतन का हँसी आ गइल, 'भइया रामरतन, कवना टापू में ससुरा डिप्टी तोहर बदली करा देले बा।'

एगो लइका के छोड़के सब भाग गइल रहे।

'तोहनी भागत काहे बार ?' ऊ पूछलन।

'मुखिया जी मारेलन।'

'कौन मुखिया जी ?'

'बनवारी मिसिर।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

'काहे मारलन बनवारी मिसिर ?'

'कहेलन उनकर धुअरा नोकसान होले। कवनो सार के स्कूल पर देख लेब त टांग काट देब।'

'अइसन बात बा ?' रामरतन घबड़ा के आँख बड़-बड़ क लेलन।

'हँ जी, एही से त हमनी ओने तकबो ना करीं।'

'तोहनी हमरा देख के भागत काहे बार ?'

'पहिले वालू बड़ा मारत रहस।'

'हम ना मारब।' रामरतन हँस देलन।

'अपने हमनी के नया पंड़िड जी बानी नूँ ?'

'पंड़िड जी ना, हम तोहरा लोग के नया शिक्षक बानी ?'

'शिक्षक का होले ? — मास्साहब जी नूँ ?'

'हँ, जे शिक्षा देला, जे तोहरा लोग के नया रोशनी देला। हमरा के आज से पंडी जी मत कहीह लोग।' लइका उनका के ताके लगलन स। ई नयका पंडी जी पहिलका नियर ना खिसिआह लागत बारन ना बुढ़ुए।

'अपने हमनी के कहाँ पढ़ायेब मास्साहेब जी ?' लइकन नगीच आके पूछलन स।

'स्कूल में आउर कहाँ ?'

'स्कूल में त मुखिया जी के भूसा रखल बा। ऊ केहू के भीतर घूसे ना देस। आ हमनी उहाँ बगइचा में पढ़ीले स। पिछिलका पंडी जी उनका भूसा राखेला स्कूल हरमेसा खातिर दे देले बारन।

'ऊ कहाँ रहत रहस ?'

'मुखिया जी के दुअरा पर आ कबहूँ-कबहूँ बगइचा में।'

'बगइचा में !' रामरतन मने-मने फुस-फुसइलन। बुझाता बनवारी मिसिर गाँव के सबसे बड़ आ इज्जतदार आदमी हवन। एही से लइकन तक पर उनकर दबदबा बा। त अपना गाँवें नियर इहँहूँ आतंक बा का ?

'आउर कुछ इहाँ का बारे में बताव बेटा !' रामरतन पूछलन।

'गर्मी में इहाँ ढेर लोग रात में सूतेला। रात-भर ताश खेलेला आ गाँजा पीएला।'

'बिजुली रात भर जरेले ?'

'हँ !' लइका बोलल, 'केहू जरावे से मना ना करे।'

'तब इहाँ शिक्षक के रहेला घरो नइखे ?'

'बा काहे ना ? उहाँ इनार के पिछुत्ती, सामने वाला। बाकी ओमें सुदामा सिंह के भँइस आ नोकर रहेले। अपने कहाँ रहब ?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामरतन एकर कवनो जवाब ना देलन आ माथा ध के बहुत देरी ले सोचत रह गइलन ।

कै दिन तक उनकर माथा काम ना करत रहे कि का करे के चाहीं । घरे-घरे घूम के लइकन के स्कूल आवे के निहोरा करत चललन । धीरे-धीरे लइकन जमा होय लगलन स । बनवारी मिसिर के दुआर पर सब कुर्सी पड़ल रह स । बाकी ऊ अकेले रहस, दू गो आउर शिक्षक के बनगांव में योगदान करे के आदेश भइल रहे बाकी ऊ लोग अबही पहुँचल ना रहे । रामरतन का पता रहे कि ऊ लोग अपना गाँव के आस-पास बदली खातिर पैरबी करत रहे लोग । रामरतन खातिर त इहाँ चाहे उहाँ—कहँहीं कवनो फरक पड़ेवाला ना रहे ।

ऊ भोरे-भोरे बनवारी मिसिर का दुआर पर पहुँचलन । मिसिर जी अनराज रहस—दसो दिन से ऊपर हो गइल एह मास्टर का गाँव मे अइला आ अइसन घमंडी बा कि दुआर पर झाँके तकले ना आइल । जवना-तवना से मिसिर जी बोलियो आइल रहस कि ई राम रतन महतो नक्सलाइट ह । परम्परा, धरम के एकरा कवनो खेयाल नइखे । सबसे बराबरी के बात करेला । एह मास्टर से तनी होशियार रहे के जरूरत बा । सुदामा सिंह रामरतन के देखते नाक-भौं सिकोड़े लगलन । दोसरा तरफ सभे का हैरानी रहे कि ई नयका मास्टर दुआरे-दुआरे घूम घूम के लइका बिटोरत चलता । एकरा पहिले तक कवनो अइसन मास्टर ना रल ख जे दोसरा के लइकन खातिर चिन्ता फिकिर करो । स्कूल में अइसनो लइका-लइकी आवे लागल रह स जेकरा बाप-मतारी के स्कूल नाम से कवनो मतलब ना रहे । कुँआ के पिछुत्ती आम का पेड़ के नीचे गाँव-भर के लइका भर जा सऽ । कुछ खासे लोग अबहीं तकले अपना लइकन के ना भेजत रहे । राम रतन के गाँव अइला के दोसर के दिन से आम के के पेड़ का नीचे पढ़ाई शुरू हो गइल रहे । स्कूल ठीक टैम से साढ़े दस बजे लाग जात रहे आ छुट्टी ४ बजे साँझ खानी होय । गाँव-घर खातिर इहो एगो नए बात रहे । दू-चार गो बुद्धिमान लोग त आपुस में मजाको करस कि एह तरह जो पढ़ाई चलत रहल तब त गांव के सब लौंडा विद्वान हो जइहन स । सब कुत्ता काशीए जाई त हांड़ी के ढूँढ़ी ! ई सब खबर रामरतन का मिलत रहे । बाकी ऊ अबहीं तकले इहाँ के लोग के समुझ ना पवले रहस एह से कवनो जबाब ना देत रहस । एगो आउर खबर सुनके उनका अचरज होत रहे, सुदामा सिंह कहत रहस—ई नयका स्कूल मास्टर बेइज्जता आदमी ह । बेटी-बहू के लेके चले के का जरूरत रलख ? ओकर टेढ़ मांग वाली औरत के देखते हम पहिलहीं समुझ गइल रहीं कि ई औरत खानदानी नइखे । खानगी ह—खानगी । रामरतन के मुड़ी सुनते गरम हो गएल रहे, बाकी परस्थिति के ना समझला का वजह से परहेज करत रहस । कइसन सुदामा सिंहवा बेशर्मी आदमी बा । ओकरा अपना बहू-बेटी बा कि ना !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

'कहीं मास्साहेब, कइसे आइल गइल ?'' बनवारी मिसिर टोकलन।

'एगो निवेदन रहे मुखिया जी !' रामरतन दुनो कर जोड़ लेलन, जइसे भीख मांगत होखस।

'सोमार के डिप्टी साहेब आवेवाला बारन'

'तब हमरा का हुकुम बा ?'

'स्कूल खाली करवा देतीं।'

बनवारी मिसिर मुँह फारके हँस पड़लन।

'काल्ह सफाई हो जाई। बस ईहे नू ? कि आउर कुछ ?'

'हम कहाँ रहेब ? ओह में त सुदामा सिंह जी के भँइस बान्हल बा।'

'उनको से कहत बानीं।'

बनवारी मिसिर अतने कइलन कि बरामदा में से घास-पुआर निकलवा लेलन बाकी कोठरियन में ताला जस के तस लागले रहल। सुदामा सिंह त दउड़ावत-दउड़ावते मुँआ देलन। बड़ी मुसकिल से कोठरी खाली कइलन। रामरतन, मेहर, बेटी मिलजुल के बरामदा आ अपना रहे के कोठरी साफ कइलक लोग। गाँव के कुल लोग खड़ा-खड़ा तमाशा देखत रहे—ई नयका मास्टर पता ना कवना जगह से आएल बा। दुनियादारी में एकदम अबोध बा निराबुद्धू। गाँव के आदमी अतना मूरुख अब नइखे रह गइल। मिसिर जी एकरा नक्सलाइट कह के गाँव का गरीब नं... मजाक काहे उड़ावत बारन ? अच्छा तमाशा बा। जवना आदमी स बदला लेवे के होय भा सतावे के नियत होय, बस पुलिस में ओकर नाम नक्सलाइट बता दी आ लूट-खसोट करे खातिर निश्चिन्त हो जाईं। रामरतन के गाँव गनपत टोली में थोड़का बड़ा आ बाबू किसिम के लोग रोज निर्दोष आदमियन के अइसहीं पुलिस का मेल-जोल से जेल भेजत रहल बारन। कहीं मिसिरो जी के रामरतन का खिलाफ कवनो साजिश त नइखे चलत ? अबोध आ सिधुआ रामरतन पर गाँव के अधिकतर लोग के दया आवे लागल। मिसिर आ सुदामा सिंह एकदिन रामरतन के नोकर चिवा के रहीहन। उन्हन के बरामदा आ कोठरी से निकलवा देल हँसी-ठट्ठा ह का ? अब त आउर जोर-जोर से इनका के नक्सलाइट कहीहन स – नक्सलाइट रामरतन मास्टर।

मने-मन लोग रामरतन का पछ में होखे लागल। रामरतन के ध्यान लइकन का पढ़ाई कावर जादे रहे, अपना ओर चाहे बनगाँव के राजनीति का ओर बेलकुले ना। लइकन पर कवनो के दबाव ना रहे, ऊ त टैम से पहिलहीं स्कूल कावर भागत रह स। पहिला बेर उनका सबके भरोसा भइल रहे कि उनका लइको कुछ अधिकार से पढ़ाई-लिखाई कर सकेले आ रामरतनो पहिलका स्कूल मास्टर हवन जे उनका लइका के 'लइका' बूझ रहल बाड़न। कहीं अइसन आदमी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का खिलाफ मिसिर जी साचहूँ आन्ही तूफान खड़ा कके तबादला मत करा देस। फेर त ए बच्चन पर धेयान देवेवाला पता ना कब आई।....हमनियो के लइका स आदमी बने लागल बाड़न स, त मिसिर जी, सुदामा सिंह अतना चिढ़त काहे बाड़न ? इ लोग मास्टर के नक्सलाइट कह के कहीं हमनिए ओर त इशारा नइखे करत।

जेह दिन डिप्टी साहब आवेवाला रहस ओह दिन रामरतन सुदामा सिंह आ बनवारी मिसिर का अलावे दोसरो-दोसरो लोग के स्कूल पर बोलवा लेले रहस जइसे बनगांव प्राइमरी स्कूल के कवनो सालाना जलसा होय। ठीक घंटी लागते लइकन बरामदा का नीचे कतार में खड़ा हो गइल रह स। रामरतन आगे-आगे लाइन दोहरावत जात रहस आ लइकन मगन होके गावत रह स—

"जागो रे मजदूर किसान
रात गयी अब हुआ बिहान
किरणों की आहट पाकर कमलों ने आँखें खोलीं
ताकत नयी हवा से पाकर गूंगी लहरें बोलीं
भौंरा बन सब ओर गूँजता परिवर्तन का गान।
खोने को हथकडियाँ पाने को है दुनिया सारी
गूँज रही हैं दसों दिशाएँ होंगी विजय तुम्हारी
चलो साथियों चल जल रहा सारा हिन्दुस्तान।
जागो रे....।"

बनवारी मिसिर आ सुदामा सिंह आपुस में बुदबुदाये लगलन। ऊ लोग ताव मे आके रामरतन के हर निष्ठा के गारी देत रहे लोग—ई मास्टर लइकन के हड़ताल के गीत सिखावत बा।....बनगांव में बलवा कराई। डिप्टीयो साहब से ऊ लोग रामरतन के भरपेट सिकाइत कइलक। डिप्टी साहब तोख देके चल गइलन कि ऊ रामरतन के बदली के सिफारिश जरूर करींहन। गाँव में बनवारी मिसिर अब से खुल्लम-खुल्ला प्रचार करे लगलन कि मास्टर नक्सलाइट ह आ बनगाँव में बलवा करावे के चाहता। ओकरा मेहरो-बेटी के चाल ढाल ठीक नइखे। सब मरद से हँस-हँस के बतियावे लीस: आ चमरटोली से लेके बाबूटोली तकले दिनभर घूमते रहेली-सन।....लइका लइकिन के गाना आ नारा सिखावल जाला। लइकन बिगड़ के माटी हो जइहन स।...

बाकी गाँव के सबलोग बुद्धू ना रहे। पिआर राउत त साफ-साफ कह देलन कि मास्टर साहेबजी बनवारी मिसिर आ सुदामा सिंह से स्कूल खाली करवइलनह एही से ई नाराजगी बा। स्कूल के कोठरी में उनकर भँइस बन्हाई त राउत के कांहे ना ? स्कूल बिद्या के मन्दिर बा कि भँइस के बथान....? हम त अपना लइकन के स्कूल भेजब। अइसहूँ मिसिर जी आ सुदामा सिंह अपना लइकन के स्कूल कहाँ भेजेलन। उनका त बिश्वास बा कि हमनी के लइकन साथे उठला-बइठला से उन्नह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

के लइका खराब हो जाई। हमनी गंदा आदमी बानीं जा! गंदा लोग के किरो
अबही उनका मालूम नइखे....।

एक दिन त एको लइका स्कूल ना आइल। बाकी रामरतन के घरे-घ
घुमला के असर होत रहे। दोसरका दिने दस-पन्द्रह लइकन अइलन स। एकरा बा
त आस्ते-आस्ते सब आवे लागल। रामरतन के जे उदासी अचानक बढ़ल रहे
गायब होखे लागल रहे। पिआर राउत उनका के बड़ा ढ़ाढ़स देले रहस। पि
मौला मस्त जीव रहस। उनको स्कूल के प्रार्थना बहुत बढ़िया लागत रहे, ऊ अप
लइकन से पूछ पूछ के सीख गइल रहस। ऊ रामरतन से कहलन—मास्साहेब जी
राउर गाना बड़ा जोशीला रहे। 'जीव करत बा कि अपना लइकन से बरा
गवावते रहीं।'

रामरतन हँस देलन।

'अपने हमर बात अच्छा लागेले?'

'सपना जरूर आवे लागल बा मास्साहब जी। बाकी अपनहूं का नइखे माल
कि मजुर-राज कब आई? हमर बेटा त कहेला, मास्साहेब जी बतावेलीं कि बहु
जल्दीए आई। साँचो?'

रामरतन सहमती में सिर हिला देले रहस।

एक दिन लइकन गर्मी में स्कूल अइलन स त देखलन स—मास्साहेब जी
के कपार पर पट्टी बान्हल बिया आ ऊ बरामदा का नीचे कुर्सी लगाके उदास बइठ
बारन। बात ई भइल रहे कि रात रामरतन पिआर कन से लवट के इनरा के भीं
अन्हार में खड़ा रहस आ अपना बेटी के पुकारत बाल्टी मांगत रहस, तवे तीन-चार
गोरे अइलन स आ रामरतन पर लाठी छोड़े लगलनस। रामरतन गिर पड़लन।
औरत आ बेटी रोये-चिचिआय लागल लोग। आस-पास के आदमी जमा हो गइल
रहे। पिआर राउत होशियारी कइलन, जे बगल के डाक्टर के बोला के मलहम-
पट्टी करा देलन।

लइकन हैरत में डबडबाइल आँख से बहुत देरी ले रामरतन के ताकत रह
स। एह हालत में लइकन नियर ऊ रो पड़लन। मास्साहेब के रोअत देख के
अधिकांश लइको सिसके लगलन स। रामरतन से जे ओकनी का अपनापन मिलत
रहे, ऊ का सभे से मिलेला?....

'तू लोग रोअतार हमार बच्चा!' रामरतन उठ के अपन आ उन्हन के
लोर-पोंछत जात रहस।

'तोहरा लोग के का बताईं कि हमर ए बनगांव में के दुश्मन बा। असल में
जे दुश्मन बा, ऊ एह रामरतन के ना, हमरा-तोहरा खुशी के बा। ऊ जान गइल
बा कि तू लोग आ तोहरा बाप-माई के नासमझी अब मेटाये लागल बा।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'ओह दुश्मन के नाम हमनी के बता दीं ना मास्साहेब जी ?' जोर से हिटकी लेत सुखराम कहलक।

रामरतन मुस्काये के कोशिश कइलन।

'एकर मतलब ई भइल कि तू लोग हमरा के नइखे चाहत। हमरा से दुश्मनी के आखिर का माने हो सकेला ? हम तोहन के गाँव छोड़ के जा रहल बानी बउआ !'

लइकन अइसन घेरा बना के खड़ा हो गइलन स, जइसे रामरतन अबहींये जा रहल होखस। ऊ सब चारों ओर से चिचिआय लगलन स—'हमनी अपने के ना जाये देब, ना त हमनियो साथे चलब....!'

ई बात मामुली जरूर बा कि चोर-गुण्डा मास्साहेब जी कन बुरा नीयत आ चोरी खातिर आइल रहे। गाँवन में अइसन घटना होते रहेला। एह वजह से मास्साहेब जी के गाँव छोड़ के गइल एकदम बुजदिली बा। बाकी पिआर राउत एके माहमुली बात कहके टारे ला वेलकुले तइयार ना रहस। मास्साहेब जी के पढ़ाइये नया तरह के बा, एह वजह से कुछ लोग का बुरा लागत बा। गाँव के अधिकांश लोग रामरतन के समझवलक, गाँव छोड़े के जरूरत नइखे। हमनी के लइकन के जे पाठ अपने पढ़वले बानीं, ओके अपने के जाते ऊ भुला जइहन स। हमनी कवनो हालत में अपने के जाये ना दे सकीं स। डिप्टी साहेब अपने के बदली कर देस तबहूँ ना। हमनी के लइकनो के ईहे भरोसा बा कि अपने ई गाँव छोड़ के कहीं ना जाएब।

रामरतन के तबादला के फिकिर ना रहे। ऊ त कतहीं नोकरी कर सकेलन। बाकी दू-चार आदमी गांव में बलवा के कल्पना से डेरायल बा, उनका जबाब खातिर उनकर इहां रहल जरूरी बा।

एह घटना के एक हप्ता बाद मिसिर जी के एगो आदमी आइल आ बोलल, 'मास्साहेब जी ! मुखिया जी के कहनाम बा कि अबहीं गर्मी के दिन बा, लइकन के बगइचे में पढ़ाईं। खरिहान से भुसा उठवा के बरामदा में रखवावे के बा।'

रामरतन एकर कुछओ जबाब ना देलन। बात दू-चार दिन तक टरत रहल। बाकी दोबारा मिसिर जी के भाई सुदामा सिंह के लेके आइल आ उनका पर गरमाये लागल।

'ई स्कूल बा मिसिर जी ! गउशाला ना।' रामरतन जवाब दे देलन।

स्कूल के टैम हो गइल रहे। लइका धीरे-धीरे आवे लागल रहस स। ऊ आवते कतारे में खड़ा हो जात रह स। जब मिसिर जी के भाई रामरतन पर हाथ छोड़ देलन, त लइकन मास्साहेब जी के बेइज्जती बर्दाश्त ना कर सकलन स आ अपना जान के परवाह ना कके ओह दुश्मन पर बाज नियर टूट पड़लन स। सुदामा सिंह घरे से बनूक ले आवे दउड़लन। एकरा पहिलहीं लइकन के घरवालन सौ-डेढ़ सौ के करीब लाठी, भाला, बर्छी का साथे स्कूल पर आ गइल रहस। निश्चिन्त आ निडर रामरतन मुस्कात पहिला पाठ शुरू कर देलन आ लइकन कतार में खड़ा होके पीछे-पीछे दोहरिआवे लगलन स—

'जागो रे मजदूर किसान
रात गयी अब हुआ बिहान....

सीना तान के खड़ा ऊ सब अब सुदामा सिंह का बनूक के पैरा हेरत रहस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

ऊ एगो भीड़ आ बेवस्था

□ तैयब हुसैन पीड़ित

अबही भोरे-भोरे एह धमक के पहिचाने के कोसिस करते रहीं कि उ केंवाड़ी में बिना कवनों 'ठक् ठक्' कइले पर्दा उठाके रूम में समा आइल आ हमरा कुछ कहला के पैंरा हेरले बिना कुर्सी पर धम्म से बइंठ गएल।

ऊ एहीतरे ना आवे। पिछलको दफे जब बहुत दिन ले बेमार पड़ल-पड़ल अच्छा होके ऊ आइल रहे त बतवले रहे कि ऊ अपना बाप के धन में से कानियो कउड़ी ना लेवे के कसम खाके खुद अपना भरोसे अलग किराया के कोठरी लेके नया जिनगी शुरू कइल चहले रहे बाकी एह बेमारी के दोरान ना खाली अपन पुरखा-पुरनिया के दौलत हीक-भर देह लगवलक बलुक सेवा टहल खातिर पूरा परिवार के कर्जदारो बनल आ अब रूढ़ि परम्परा का खिलाफ जेहाद छेड़वाला आकर ऊ गण्डा दबीज से लैस होके मनता के जोग-टोटका स घेरायेल मंदिर मादर कपार पटकत चलेला।

अइसहीं बीच में ऊ बिआह के अपना चूक पर कान धइले रहे आ बदलत चेहरा अलग अलग बिंहिया के देखावत अपना खातिर कवनो रास्ता खोजे मे मदद मंगले रहे।

हम त पढ़ल-लिखल आधुनिक विचारवाली लइकी पसन्द करेवाला ओह अप्-टू-डेट आदमी के गाँव के मिडिल पास मेहर साथे भाँवर फेरत देखले रहीं आ पंडीजी के हर इध-बीघ पर हुक्मी बन्दा नियर डेग बढ़ावतो।

अइसन कवनो बात ला बिना केहू के असरइया करेवाला ओके बेकारी के मार से तिलमिला के ट्यूशन के नाम लइकन के गारजियन के गुलामियो करत हम देखले बानीं आ कार्पोरेशन के माहमूली किरानीगिरी खातिर अपना दुराहुत हित-नाता के मिनिस्टर चाचा कन पैरवी में एड़ी रगड़तो। आ अतना के बादो जबऊ तेली के बएल नियन बहुत दूर चलियो के कुछुओ-दूर ना जा सकल त अपना अपना गोड़ पर खड़ा होखे के एगो मोका ओकरा हाथ लाग गएल... बाकी आज...?

अबहीं हम ओकरा आवे के कवनो ओर-छोर खोजते रहीं कि ऊ बिना कवनो हीला-हवाला के कहे लागल—

—एह महीना में हमार बुकिंग बन्द कर दियाइल ह। हम डाईरेक्टर से सब बात बता देली हं, ऊ देखे के कहलनहें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

— हूँऽ !
— शर्मा से मिलल रनीहँ ।
— शर्मा कवन ?
— चीफ प्रोग्राम एक्जीक्यूटिव ।
— ओ···हूँऽ ।

— उ सब सुनला का बाद कहलक — आखिर कुर्मियो के अपन इज्जत होल। इसाला हमरे के सीख देवे चलऽ ह । फेर सफाई देलक — बाकी तोरा हेड एनाउन्सर में मिले के चाहत रहे । बुक त उहे करेलन । हमनी त खाली एप्रूवल दिहिले जा बस !

—तब ?

—उहहूँ से हो अइलीं ।

—हमरा के देखते कहे लागल — तू कं हव ? हम नाम बतइलीं । इहो जोड़ देलीं कि अपनहीं के मातहत काम करेवाला एगो कैजुअल एनाउन्सर हईं । ऊ अनचिन्हार बनत कहलक हम त तोहरा के पहिले बेर देखत बानीं । हम कहलीं- असल में एकरा पहिले कवनो जरूरते ना पड़ल रलख, एह से ड्यूटी कइल हम आपन ड्यूटी समझलीं । बाकी आजकाल हमरा साथे नाइन्साफी···, ऊ बात काटत कहलक — एही से आदमी के मिलत जुलत रहे के चाहीं । हम निरुत्तर होके अपन सब खिस्सा कह सुनवलीं । ऊ बड़ा चालाकी से अपन मजबूरी देखावत कहलक — तब हम करिये का सकीले ? बुक करे के सजेशन त हमरा ऊपरेवाला लोग से भिलेला ।

ऊ अपना नियर मुँह लेके लवट आइल रहे । ऊ ईहो बतवले रहे कि ओकर मन उल्टे पैर शर्मा का आफिस कावर जायेला भइल रहे जे में पूछीत कि — अबगेत तूं खाली एप्रूवल देत रल ह आ अब ई सजेशन ? बाकी लाठी खाइल गेंहुअन अइसन फुफकारत ऊ घरे लवट आइल रहे ।

उ अपना बातन के फेरू एगो नया मोड़ दे देले रहे आ हम देखत रहीं — दुब्बर-पातर, लमछर कद के एह जवान के जे बड़ा बिसवास का साथे कान्ह उनका-उचका के अपन बात हाव भाव का जरिये हमरा के समुझावे के कोसिस करत रहे । आ फेर ईहो कि पातर-पातर ओकरा बाँह में खून के साथे बदला लेवे के जोशी रेंगत रहे आ छोटी-छोटी कुइसाह आँख में एह गलत बेवस्था का प्रति खीस पंवरत रह ।

हम ए लइका के पहिला बेर एगो थियेटर में देखले रहीं । जान पहिचान भइला पर ऊ तपाक सेन हमरा से हाथ मिलवले रहे आ हमनी दोस्त बन गएल रहीं स । गम्भीराह रोल के ऊ माहिर रहे शो डाइरेक्शन पर अपन अधिकार बूझत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रह, हालांकि एह फन में बहुत कुछ कच्चापन ओकरा में बाकी रहे तबहूँ साफ उच्चारण, शुद्ध बोली आ कवनो बात पर अपन स्पष्ट मत दे देल ओकरा कावर झुकाव पैदा हो जायेला काफी रहे। हमरा से मिलके ऊ एगो समझौता कइले रहे। एह समझौता का मोताबिक हमनी जब बात करीं—भोजपुरी में। हमरा ई समझत देरी ना लागल रहे कि एह समझौता के पीछे ओकर भाषा-प्रेम कम रहे, दोसरा भाषा-भाषी लोगन के हमेशे अपना भाषा में बतिअवला के जवाब देल जादे। फेर ऊ अपन दोस्त बताके हमरा से एगो अइसन आदमी से मिलवइले रहे जे ओह थियेटर के करीब आधा मकान मुफुत में अपन ईंटा लगाके देले रहे आ बाकियो पूरा कर के नियत स थियेटर कम्पाउण्ड मे अपना आदमी-जन साथे झोंपड़ी बनाके रहत रहे। ई अमीर आदमी ईंटा के बेपारी रहे, कएगो ट्रक के मालिक। साफ रहे कि नाटक-प्रेम के ओकर कमजोरिये ओकरा के एतना गँवावे भा तकलीफ उठावेला मजबूर करत रहे ना त ओह लखपति के (जइसन कि हम देखलीं) एगो चाबदार के छोटहन रोल ओतना रम के करत ना देखतीं।

फेर एक दिन एह दोस्त खातिर हम ओकरा के थियेटर का मालिक से अझुरात देखलीं। ऊ बड़ा जोर-जोर स थियेटर के एक-एक ईटा म लागल अपन मेहनत आ अपना दोस्त के तेयाग के इतिहास दोहरिया-दोहरिया के एह आदमी के वकालत करत रहे। उहाँ के सब लोगन के पोसुआ कुत्ता बनाके रखे वाला और मालिक नाम 'बाघ' के ऊ पइसा नियर उलिट-पलिट के खोट साबित करे के कोसिस कइलक आ बड़ा इतमिनान से उनका अपसवारथी के नकाब हटा-हटा के लगटे कके उनका गिरगिटी रंग पर थूकत थियेटर का गेट से बाहर चल गइल।

ओकरा दोस्त के पत्ता काट देल गएल रहे थियेटर से। मकान में लागल पइसो मोकदमा के शतरंजी मात देके हड़प लेल गएल रहे आ तब दुनों मिलके एगो नया नाटक के क्लब खोलके एह बड़का थियेटर के जवाब देवे के नाकाम कोसिस कइले रहस।

एह बीच हम ओ कमजोर लागत आदमी के थियेटर मे बलजोरी घुसके नाटक देखे के हियाव, ओह मोट मालिक का सामने सिगरेट धूकत बिना हाथ उठवले निकल जाये के शान से ओके नीचे देखावे काम हिमाकत देखले रहीं बाकी ओकर ई ओह टिटहीरी लेखा हास्यास्पद होके रह गएल रहे जे सुतत खानी अपन टांग एह से ऊपर उठवले रहेले कि आसमान गिरी त रोक लेब।

हम ओकरा से कहले रहीं – कवनो लकीर के छोट करे के एगो उपाय ओकरा भीरिये लमहर लकीर खींच देहल भी होला बाकी ऊ काटिये छाँट के छोट करेवाली अपना हिकमत पर डटल रहल।

—ऊ स्साला बिनयिआ। जवन काल्ह ले हमरा बिना नॉ लगइले एक लाइन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भा लिखे पावत रहे आज तिकड़म मे हमर बौस का बन गएल, चाहे ला कि हम ओकर चिड़ौरी करत रहीं। देखल छँउड़ी समधिन। का जानेला ऊ?

हम कहलीं—तिकड़म।

ओकर ओठ फड़फड़ाये लागल। मुस्काइल ऊ ताकी फेर अपन टांग हमरा बिछवना पर पसारत बकत गएल—हम ओकरा के दोस्त समुझ क बराबरी के दर्जा में ओकर मन से इज्जत करत रलीह। ओह दिन ईहे अधिकार मे जब ऊ अपने नियर एगो अफसर मे बात करत रहे, त हम इयाराना अंदाज में ओकरा कान्ह पर हाथ रख देलीं। चिढ़ के ऊ हमर हाथ झटक देलक आ सिनेमा के खलनायक नियर बरबराइल—अपना हद में रहल सीख।

एगो घटना आउर घटल रहे ओकरा साथे जब ओकरे ड्यूटी में हमगा बहुते बोखार चढ़ आइल आ एनाउन्समेंट करत खानी हमर बोलती बइठे लागल। हम ओके ५-१० मिनट के काम सँउप के घरे आ गइलीं। हमर ड्यूटी करत खानी टेप टूट गइला पर उ खाली समय के कवनो बिधी भर ना सकल आ तब रेडियो से ओकर बेवकफी झलक गइल। लजायेल बिलइया खम्भा नोचे। अपन गलती छिपावेला ऊ बिहान भइला हमरा खिलाफ डाइरेक्टर कन रिपोर्ट ठोक देलक—कि हम बिना कुछ कहले उठके घरे चल गएल रहीं आ मजबूरी में ओकरा ड्यूटी करेला पड़ल—कि हम बराबरे अइसन करत रहीला आ—कि बेमारी से हमर दिमाग खराब रहे लागल बा।

दोसरका दिने हम एह सफेद झूठ खातिर ओकरा से जबाब तलब कइलीं। ऊ उल्टे डांट बतइलक आ नोकरी से निकलवा देवे के धमकियो देले रहे। एतने ना जइसे मास्टर लइका के गलती कइला पर डाँट के क्लास से निकाल देवेला, कुछ ओइसहीं मूड में दफ्तर से निकल जाये के ऊ कहले रहे। हमरा त देह में आग लाग गइल। ओकर कालर धइ लए एक तरफ धसोर देलीं। ऊ कुर्सी से गिरते-गिरते बचल।

—अच्छा?

—तबे से हमरा खिलाफ एगो गुट बनाके ई खुर-खार शुरू कइले बा।

—हूँ…हूँ। हम फेर सुने लगलीं।

—हमरा दफ्तर में ई रेवाज चल आवता कि कैजुअल एनाउन्सर जे प्रोग्राम प्रसारित करेला ओकर लिखल ब्योरा चलत खा ड्यूटी अफसर के थमा देला आ ओह देहचोरन के उहे उतार-भर लेला से ड्यूटी हो जाला, जबकि ई सब ओकरा अपने देख-सुन के तइयार करे के चाहीं।

—हूँ: हूँ।

—त ओह दिन जब हम ड्यूटी कके स्टुडियो से बाहर निकललीं आ सीधे घरे के राह लेलीं तब ड्यूटी अफसर रोक के पूछलन—आज तू रिपोर्ट ना देल! हम कहलीं—कइसन रिपोर्ट? बौस बोललन—उहे जे तू रोज देवेल! हम कहलीं—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ त अपना मने दे देत रही जवन आज नइखीं देत । बौस अपना कुर्सी के निश्चे बेहोस रहन । डपट कें कहलन- तोहरा देवेला होई ! हम चलत-चलते गुडबाई कहलीं आ कहत भइलीं—ऊ हमरा ड्यूटी में सामिल नइखे ।

—ओस !

ऊ चुपा गएल रहे ।

हम पूछलीं - अब ?

ऊ अबकी कुछ रुआँसी होके बोलल—यूनियन के सेक्रेटरी त कहलन हैं कि यूनियन मरल नइखे । हमरा साथे इन्साफ होई । फाइल ओही शर्मा के टेबुल पर बा रोज आज के बिहान में डाल के एक दिन सरका देवेला ।

—तब ?

—अब त आखरी बेरा एह लोग से मिलके कहेला बा—हम आदमी बने के चहलीं बाकी तू लोग ओइसन ना होय देल । तोहरे अइसन लोग 'चम्बल घाटी' में डकइत पैदा करेला । अब हमहूँ कहीं बाहरे भेंट करव, बाकी तब हमार ई रूप ना रही साइत····। कुछ ओइसन रही जवना पर तू लोग आसानी से बिश्वास ना करब।

हम ओकरा में चढ़त खीस का चलते साँस के चढ़ाव-उतार नापत कहलीं—आखिर इरादा का बा ?

—रंगदारी से रहब । स्साले के स्कूटर एक्सीडेंट करवा देब । जेल में भइया से मिलल रलीहं । ऊ अपना कै गो साथी कन ई सब देखेला पुर्जी लिख देलेहं ।

हम दाँते अंगुरी काटे लागल बानीं । सोचत बानीं-नोकरी से त ऊ आज न काल्ह निकाल बाहर कइले जाई । (हालांकि ओकरा कहला के मोताबिक इ सब जान के रेडियों स्टेशन के बौस नाम क एगो भेड़िया स ओकरा से माफी मांग के ओके फेर कुछ दिन डायलोमा में रखे में कामयाब हो गइल बारन) भा जो,कवनो नाजायज उपाय से एह नाजायज के हटाइयो देवे त फेर ओह नाजायज से निबटे खातिर फेर कवनो ओइसने नाजायज के सहारा लेवेला पड़ी आ अइसहीं छूटत-छूटत ऊ एक दिन चाहें त बेतरह टूट जाई या ए लड़ाई से उबिया के अपना स्थिति से कवनो ना कवनो रूप मे समझौता क ली ।

हम केतना अइसन लोग के जानत बानी जे अकेले अथाह समुन्दर का किनारे पर कंकड़ मार-मार के लहर पैदा कइलक बाकी फेर थाक के ओही शान्त पानी के असरा में देरी ले बइठल रहल । एगो कहानी में त अइसे पैदा भइल लहर का असर से किनारा के लमहर अड़ार ढहें के बात भी पढ़ले बानीं आ इतिहास अइसन लाखन लोगन के लाश बानर के मरल बच्चा नियर आजो अपना कोरा मे चिपकवले फिरत बा जे सही रास्ता चलेला जसहीं डेग बढ़वलन-जमाना के आन्ही उनका हौसला के उड़ा ले गइल····। जादे से जादे शहीदी के नाम पर उनका के कवनो मंदिरनुमा कोठरी में पत्थर से जकड़ के जयन्ती का बहाने साल में एक बेर खोलल गइल ; ना त कवनो के चौराहा पर टाँग के अपना समझ से उनका के कई बेर गड्ड-मड्ड कइल गएल ।

हम एगो अनजान डर से आँख ऊपर नइखीं उठा पावत, बाकी ओकर सवालिया चुप्पी हमर कोना-कोना चाल रहल बा । आखिर हमरा पास ई छोड़ के आउर का जवाब बा कि 'ऊ' सही होइयो के एगो भीड़ बा आ 'ई सब' गलत होइयो के एगो बेवस्था····।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टूटल आदमी

□ डॉ॰ लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी

"कांगरेसी बाबू ! एह साल सूखा का बाद बरखा आ बाढ़ि दाबि दिहलसि। ई ह भगवान के लीला। कहीं धूप कहीं छाया आ जानि ना जाइ राम की माया। आदमी अपना के चाहे चान पर उड़ा ले, चाहे सूरुज पर आ चाहे लोहा क नाव चला ले, चाहे कागद के, बाकी एक जगह त सभकर माथ झुकिये जाला। आ जब बेबस होला त ओही जा सरन मिलेला। बाकी जब ले सकती बा काम दनादन बिजुली का करंट नीयर फरियाइल जात बा, तबले ओकर हाथ मोछ पर रहत बा। बनले मल्ल, बिगड़ले कुर्मी। काम बनला पर ऊ अपना के राम, किसुन आ बृहस्पति से कम नइखन समझत। त आजु काल्हि त सभे "टें" बोलि देले बा। सोचल, बिचारल सभ एक ओर धइल के धइल रहि जात बा। आसाढ़ सावन सूखा में गइल, भादों भरि दिहलस। एक त चढ़लीं तरकुल आ दूसरे मरलस बीछी। रब्बी के फसल मर गइल रहल ह। भदईं के आसरा पर किसान जीयत रहल ह। ऊहो (भदईं) बिला गइल।

"हँ ए मगरू, बड़ा गजब भइल। हमरा जिनिगी मे अइसन ना भइल रहल ह। तेरह कातिक, तीनि असाढ़ जे चुकल से गइल बाजार। ई सूखा आ दहार दूनो किसान के बधिया बइठा दिहलसि। कह तोहार कइसे चलत बा।"

'का पूछले बानी ! गरीब के धरम आ किरिपन क करम एके ह। आजु तीन दिन से चूल्हा ना जरल ह। घर में चूहिया दण्ड करत बिया। चेंघना फेंकरत रहल ह त ओकर माई बखारी में स किछु ले जाके ओके चुप्प करवलस ह। बाकी अब हमरो लाज लागत बा। काम ना मिलला से देहि फाटत बा। हाथ गोड़ पिरात बा। बेकार मन सैतान होला। गरीबी पाप के घर ह। केवन काम ना करे के उहो करे के मन करेला आ बेबस होके करे के परेला। गरीब के रिनियो करज ना मिल। सभे कन्नी कटावेला। अबही त 'रतनी' के बिआह के 'दिन' कपार धइले बा आ 'मंगरी' सेयान हो चलल। लरिकी नदी के बाढ़ ह। ओकरा बढ़त आ फफात देर ना लागे।"

एतना कहि के मंगरू चुप हो गइले आ आकास का ओर तिकवे लगले, एगो लमहर साँसि भी लिहले।

'देख, घबड़ाइल ना जाला। सबै दिन होत न एक समाना। मरदे पर न दुख परेला। दुख-सुख गाड़ी के दूगो चक्का हउवनस। कबो ऊपर आ कबो नीचे आवे-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नेस। टड्डो पर दुख परेला। रामो का बन जाये के परल आ किसुन जी का गोर छोड़े के परल। हमार सरकार तोहर लोगन खातिर बहुत-बहुत जोजना बनवले बा। अब तोहने लोग बड बाड जा आ हमनीं का छोट।"

"ना बाबू। बड छोट भगवान का दरबार से बना के आइल बाड़न। टिटिहिरी केतनो टांग उठाई त का ऊ आकास छू ली। चउवे गइले छब्बे होवे आ दुबे बनि के भइले।"

'मंगरू! देख, अब समाजवाद आइल बा। हमरा राज मे केहू छोट आ बड़ा नइखे। बाभन चमार के नाँव नइखे। सभे एक बा। सरकार कानून बना देले बा आ बाघ-बकरी के एक घाट पर पानी पियावत बा।"

'बाबू। सूखा में त 'सड़क' पर माटी फेंकाइल त केहू तरे गुजर हो गइल बाकी एह घरी त केवनो काम मिलते नइखे। धरम गइल, करम फूटल। रउवीं जोगाड़ कीं।"

'हमरा दिल्ली गइला के देर बा मंगरू, एह क्षेत्र के हम सरग बना देइबि। तू घवड़ा मत।"

"मंगरू के हिम्मत ना परल कि अउरी कुछु कहसु। उनुकर बाबू मुंए के बेर सिखवले रहलन कि बड़ बड़का से फइलवें रहल जाला। मन मरले घरे चोहपलन। अबहीं रानी के माई किछु पूछहीं के बा कि दुआर पर पियादा चिकरल। आकास पाताल भेंटे नाहीं, दइब-दइब चिल्लाइ।"

'मंगरू तोहरे नाँव ह?'

'हँ, सरकार हमरे नाँव ह। का हुकुम बा।' हाथ जोरि के आ दाँत चियारि के मंगरू कहले।

'तोहरा ऊपर सोसाइटी के पाँचि सइ रुपया नगद आ दू सइ सूदि बाकी बा। आजु ना देब त तोहरा जेहल चले के परी।'

मंगरू के कठेया मारि दिहलस। ना साँस ऊपर जाये आ ना नीचे आवे। देहि काँपे लागल। बड़ा हिम्मत कइके लड़खड़ाते बोललन—'आरे सरकार। हम त अबहीं ले पाँचि सइ रुपया देखलहीं नइखीं। ई पाँचि सइ आ दू सइ कहाँ से आ गइल। हम त पाँचि गो दस टकिया लोट लेवें गइल रहलीं, उहो कांगरेसी बाबू बतवले कि सहायता मिलत बा आ ओही में से दस गो सुपरवाइजर बाबू ले लिहलन। ए सरकार। ई पहाड़ कहाँ से गिरा दिहलीं। एक त गाइ अपने दूबर आ दूसरे घसत पाँकि में।'

'रिन लेवे बेर त अगहीं धउरल, तोहार गोड़ भुइयां ना परत रहे आ देवे के बेरि दस कम पचास हो गइल। तोहर लोगन के दिमाग बिगड़ गइल बा। जल्दी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रुपया ले आव, नाहीं त हई 'पाड़ी' खोलि के मुसखाना (मवेशीखाना) में ढुकावल जाई आ तोहरा जेहल काटे के परी।'

'मंगरू का आकास-पाताल लउके लागल। कपार घूमि गइल। जनाइल जे गिरले, ऊ भुइयाँ बइठि गइले उनकर कंठ रूधि गइल।

'पइसा ले आव नाटक जनि फइलाव। तोहन लोग के मुफुत के माल चाभे के आदत हो गइल बा। हरे लागे ना फिटिकरी। हरिया तू देखु त एकरा घर में बउरी का-का बा।'

'अरे सरकार। घर-दुआर रउवाँ कुल्हि ले ली, बाकी ई झूठ तोहमत मत लगाईं। हम एतना रुपया कबों ना लिहलीं। लउर कपार भेंट ना, बाप-बाप गोहराव। हम करे गइली हाथ जरि गइल।'

'अच्छा, दुइगो दस टकिया ले आव त किछु दिन ले तोह के हम छेम कइ देइबि, नाहीं त आजु जेहल के दुआर जरूर देखब।'

रतनी के माई ई कुल्हि सुनलस त ओकर पारा चढ़ि गइल। ऊ दनदनात घर में से निकलास। ''आ मार मुँह झौंसा के, एकर मजाल हमरा चीझ वस्तु, माल-मवेशी के छुवे के। अरी हई देखीं सभे, छछात हमनी पर कलंक लगावल।'

''हरिया। जो दूगो सिपाही बोला ले आउ। ई मेहरारू ना ह, करकसा ह। रुपया खाये के बेरि त साँसि ढेकार ना लिहल लोग। आ अब देबे के बेर ई कुल्हि पहड़क।''

मंगरू सोचले कि अब त ई बड़ बेइज्जत भइल आ कहीं पुलिस आइल त बउरी बनि जाई। उ घर में गइले आ पाँच-पाँच रुपया के दूगो नोट लेके अमीन साहब का गोड़ पर धइके माथ पटक दीहले। मरता का न करता।

"रतनी के माई देखलसि त कपार पीटि के रहि गइलि। दू महीना का जोगाड़ कइला पर ई दस रुपया बचवले रहल कि असो का जाड़ि में एगो गान्ही आसरम के चादर लिया जाई त उनकर आ चेंघना के जाड़ि कटि जाई।"

'आजु मंगरू झलफलाहे से हरी बाबू कींहा लम्मर लगवले बाड़न। कालिह साँझे पता चलल कि लेखपाल साहब अइहें आ आटा बटिहें। दुपहर ले देखत-देखत आँखि से लुत्ती निकले लागल, बाकी अबही ले केहू के पता ठेकान ना रहे। जवारभर के लोगन के भीड़ लागल रहे। अपना-अपना आदमिन के लिहिट बनत रहे। मंगरू के नांव तीनू लिहिट में लिखा गइल। तहसीलदार आ डिप्टी साहब के चमचमात नवकी गाड़ी आ गइल। सुवाती का बदरी नीयर उनुके देखि के लोग सधा के खड़ा हो गइलन। लेखपाल साहब के हुकुम भइल कि सभ केहू बइठि जाउ। पार-पारी नांव बोलाइ आ ओके सामान मिली। किरिन डूबे लागल बाकीं मंगरू

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के नांव ना बोलाइल। जहाँ जासु खेहो रानी, उहाँ परे पत्थर पानी। साहब कांग्रेसी बाबू कीहाँ चाह पानी करे गइले। आ लेखपाल साहब के हुकुम भइल कि अब राशन खतम हो गइल। मंगरू टुकुर टुकुर ताकत रहि गइले। घर अइले त रतनी के माई उनकर झुराइल मुँह देखि के सन्न हो गइलि।''

''कालिह अनन्त ह। अबहीं ले केवनो उपाइ ना भइल। हमनी का त अइसहूं रहि जाइबि जा बाकी लरिकन के का होई?' रतनी के माई कहलसि। मंगरू जेवन चुप्पि सधल कि उनुकर बकार ना फूटत रहे।''

रतनी इनकर चुप्पी देखि के बच्चा बाबू कीहाँ गइल। मलिकाइन गाहे बेगाहे एकरा के कुछु ना कुछु देत रहेली। ईहो इनुका खातिर आपन परान सोंपेले। दूनों जानी के नइहर भी त एके गांवे ह। बाकी जबसे मलिकाइन के रेहन घराए लागल तबसे उनकरो हाल ठीक नइखे। बड़-बड़हुआ हउवन। एगो बियाह एतना धूम-धाम से भइल कि अवार-जवार बरात देखे जुटल रहे बाकी तब रगरेज साहब के जमाना रहे आ अब सुराज भइल बा। तबो अबहीं खरच-बरच में कटौती कइला पर पुरनका बानि नइखे छूटत। हींग के बरतन केतनो धोवाला ओकर सुगन्ध ना जाला।

रतनी के माई अबहीं दालान में चोंहपल रहे तबले बच्चा बाबू आ मलिकाइन के बाति ओकरा कान में परल।

'कालिह खातिर केवनो बेवस्था ना भइल। रासन का दुकान पर तीनि बेर गइलीं। एतना भीड़ रहल ह कि भीतर घुसल मुस्किल हो गइल खतम होखे के लोटिस टंगा गइल ह। बकिया लोगन के अगिला महीना मिली।'

'आंनिये से गंजेसर साहु कीहाँ गइलीं हँ। देखते आदर-सतकार कइले ह बाकी जब कहलीं ह कि हमरा के अनन्त के समान दे द, पइसा पास में नइखे, तब त ऊ मुँह बिदोर दिहले ह। आ कहले ह कि रउवा जनते बानी अब हमनी के बस नइखे चलत। लरिका—फरिका मालिक बाड़न स। उन्हने से कहला पर फरिआई।'

एने इस्कूल से मुँह लटकवले गोबिन बबुआ अइले।

'अरे बबुआ! तू आजु उदास काहे बाड़। तोहार आँखि लोरा गइल बा।'

'आजु कुल्हि लरिका फीस दे दिहलन ह स, हमरे बाकी रहि गइल बा। मास्टर साहब कहलन ह कि कालिह फीस ना आई त तोहार फारम ना भराई। आ तू पढ़े मति अइह। असो फिसियो बढ़ि गइल बा। कुल्हि पचपन रुपया लगी। बाबू से कई तोर कहली, त ऊ चुप्प लगा गइले।'

रतनी के माई के काठ मारि दिहलस। एगुड़ा का एके गाइ ना लावे से छूछे खाइ। 'एगो आसरा रहल ह उहो टूटल।' ऊ उलुटे पाँव लवटि चलल।

'कहाँ आइल बाड़े रतनी के माई आ लौटलों जात बाड़े।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तनी गाँव में गइल रहलीं ह त एनिये से राउर हालि चालि लेवे चलि अइली ह कि मलिकाइन का करत बाड़ी। तबले बबुओ भी आ गइलन ह। हमरो देरी होत बा, रतनी के बाबू जोहत होइहें।'

'चेंघना आजु तीन दिन से जर से बूत भइल बा। सिरफल आ हरसिंगार के पतई अँवटि—अँवटि पियावल गइल। तुलसी के काढ़ा दियाइल बाकी ओकर जर उतरते नइखे।'

'रतनी के बाबू ! तनी सरमाजी बैदराज कीहा ना जा, उनकर त तू रोज टहल-धन्धा बेगारीं में करत रहेल। तनी आ के चेंघना के देख लेते आ केवनो बरिया दे देते, त एकर जर कम हो जाइत। हरो घरी आहि-आहि करत बा, बड़ा पीर बा। बड़ा पीरा बा। आल्हर लरिका ह। जर त बड़े-बड़े के तूरि देला।'

'काहो मंगरू, केने से आवत बाड़। हाल-चाल ठीक बान ?'

'अरे सरमाजी' आजु त विपत्ति परल बा, त रउवाँ कीहाँ आवत बानी। चेंघना के जर चढ़ले आजु चउथा दिन ह, तनि को ओनइस नइखे होत। रतनी के माई के तीन रात जागल हो गइल। ऊ सिरहाना बइठ के चेंघना के कबो माथ आ कबो गोड़ सुहरावत बिया। तनी चल के देखलीं आ केवनो बीरया दे दीं।'

'एह धरी हमरा फुरसत नइखे। कइगो रोगिन कीहा जाए के बा। आ दवा के दाम भी बढ़ि गइल बा। आजु कालिह दाई महंगा हो गइल बाड़ी स। केवनो दवाई पाँच रुपया से कम में ना मिली।'

मंगरू बहुत चिरौरी-मिनती कइले बाकी सरमा जी तनिको नां पसीजले। आ जेवन सरमा जी हंस-हँस के मंगरू से बतियावत रहले ह, उहे आजु अपन खूब बाझल देखावसु।

मंगरू घरे अइले आ एने रोवन-पिटल परल रहे। हमरा बाहर से अइले एक हफ्ता हो गइल रहे। कई दिन से मन करत रहे कि तनी मंगरू का ओर घुमि आई। काहें जे लरिकपन में मंगरू हमरा के खूब खेलवले हउवन। हमरा बाबू जीसे उनुका बहुत बनत रहे।

जब हम ओने गइलीं, त उनका दुआर का एनिये से रोवला के आवाज सुनाइल। हरिचरन से कुल्हि बात मालूम हो गइल। जब हम मंगरू के देखलीं त हक्का बक्का हो गइलीं। जेवन मंगरू के देहि लउर नीयर सोझ, खूब गठल, बाँहि अइंठल आ रान मजल रहे, उनके जे देखे से देखते रहि जाय। देहि पर माँछी ना बइठे, आँखि बिछलाये लागे, गुल्ली-डण्डा में जे जवारके हरा दे। उहे मंगरू अब चिन्हाते ना रहले। उनकर चाम लटकि गइल रहे। हाड़-हाड़ लउकत रहे, अब खाली ठटरी रहि गइल रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खोंता से बिछुड़ल

●

रूपश्री

●

पहिले त हमरा ऊ चिन्हइबे ना कइलीं। नाट कद के मेहरारू लक-दक पेन्हले जब अचानके आके गोड छुवली त हम चिहा गइलीं कि ई के ह! गौर से मुँह देखलीं त हँसी आ गइल!

—'चिन्हत नइखीं?'

—'ना, ना! चिन्ह गइलीं। तू त अतना ना बन-सँवर के आइल बाड़ू कि साँचो हम अचक्के में चकरा गइली हँ।....आव, आव, बइठ।' कहत हम पलंग का ओर इशारा कइलीं। ऊ बइठ गइली। ऊ पलंग पर बइठे में बड़ा सकोचत रहली बाकि जब हम जबरदस्ती बइठवलीं त सिमटल-सकुचल बइठ गइली।

—'का हाल बा? नेपाल से कब अइलू ह?'

'नीके बा। रउरा कृपा से अब सब ठीक बा। तीन-चार दिन होता नेपाल से अइला। आवते सोचलीं कि मलकिनी के पवलगी क आईं। नेह छोह के इयाद दिला आईं।'

फेरु अवरू हाल-चाल होखे लागल। ऊ हमरा बाल-बच्चा का बारे में पूछे लगली। ऊ सब स्कूल गइल रहले सन। दुपहरिया के बेरा हो चलल रहे। एसे आ आवते होइहें स।

—'तब त भेंटे क के जाएब। का कहीं ए मलकिनी! बबुआ के बड़ी इयाद आवत रहे। छोटकी बबुनी नइखी लउकत? ऊहो स्कूल जाए लगली का?'

—'ना हो। ऊ त अबहीं तीनो बरिस के ना भइल। अबहीं पढ़े का जाई। ऊपर गइल होई। बोलावतानीं।'

ऊ आपन झोरा जे दुआरी पर छोड़ देले रहली झपट के ले अइली अ ओमें धइल मिठाई के एगो पैकेट निकाल के देहली—'बचवन खातिर ले लिहलीं ह।'

राजकुमारी साँचो राजकुमारी खानी लागत रहे। गाढ़ रंग के साड़ी-ब्लाउज गोड़ पर नीमन चप्पल, सजल-सँवरल बाल! देह पर सात-आठ थान सोना के गहना नेपाल में कादू सोना सस्ता नू मिलेला। एह बेरा केहू देखी त का ई पतिआई कि ईहे राजकुमारी डेढ़ बरिस पहिले हमरा इहाँ दाई के काम करत रहे!

सब समय के बात ह। दाई सभके पटना में त अनेते ना सहाव। काम चल लिहें स-आ लगिहें स पेरे। कबहीं नागा कके, त कबहीं अबेर से आके! हार-था

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जब बरतन-चउका क लेव त हाथ दुमावत महरानी जी हाजिर ! बहाना त ओठे पर रहेला। कवहीं मिजाजे बाउर हो गइल रहल ह, तो कवहीं नन्हका का जर फूँक देलस, त कवहीं मँझली के गोड़े मुचकल ह, त कवो रात उन्हई से झगड़ा हो गइल...। बहाना के कवनो ओर ना होला। कुढ़-कुढ़ के मन तींत हो जाला बाकी कहल का जा सकता। भोरे-भोरे रात के बाँचल-खुचल अलग से चाहीं-नास्ता के तीन-चार गो रोटी त तँ रहेला। हम पीं जाहे ना, दाई का चाय जरूर चाहीं। अवेरे हो गइला पर ई चयवे दाई लोके वोला ले आवेला ना त बीस-तीस रुपयां त ऊ लोग अइसहीं झटक लेला।

बीच में कै गो दाई वदल चुकल रहीं। कवनो कामे ना ठीक से करे। जवान दाई त नखरे-तिल्ला में गुजार देनीस। दस-गो ऊँच-नीच बात होला। घर में काँच कुँआर लड़िको बाड़न स। लुकल-छिपल ओकनियो से फुरमाइस होखे लागेला। कहवाँ-कहवाँ नजर राखल जाई ? बूढ़-ठूँढ़ से जाड़ा में कामे ना सँपरे। अधेड़ दाई से झोंश करे के बउसाव ना पड़े। झाड़ू-बुहारू करी त बुझाई जइसे फर्श चितकाबर हो गइल। कवनो कोना में ठीक से सफाई ना होई। घर पोंछी त चप-पच पानी हो जाई आ तनिकिए देर में लतमर्दन से कीच-कीच लागे लगी। वर्त्तन त साफ करत में झंन-झनाक अतना होई कि कान फाट जाई। तेहू पर जूठ ठीक से छूटी ना। सरफ आ भीम के खरचा डेढ़ा। छोट-छोट सामान त घटले रहेला। पाँच गो चमच चार गो हो जाई; कवो कटोरी कम पड़ जाई। तनिकी-सा पलखत पड़ल कि चीझ-वतुस गाएब। दाई का रखाले ओकरा पर पहरा देवे के पड़ेला। वाद में पूछला पर गालहीं ना लागे द स। दाइन का मारे वाया वोल जाला। अस मन करेला कि कान अईंठल जाव वाकी का करीं—छोट-छोट वाल-वुतरू, सवका ठीक समय पर सभ चीझ चाहीं, केहू का स्कूल जाए के वा, केहू का धन्धा में त उनका कालेज! अकेला दम चक्करघिन्नी वन के रह जाइले। दाई रहला से अतना संतोष मन का होला कि चल एगो दाइयो त बीआ ! मरे-खपे में कुछुओ मदद त करी।

तवकी दाई के हटावे के पड़ल त बड़ा कुफुत भइल। ओकर घर डेरा का नियराहे रहे। ऊ कव अनाज-वतुस ढोके हाथ मार लेवें पते ना चले। पता चलल त डँटला पर नाक धुने लागल। गाल अतना वजवलस कि का कहीं। ओकर हिसाब क दिहलीं आ सोचलीं कि अब किरिया खा लिहल ठीक होई। दाई राखल बड़ा महंगा पड़ता। अपने पर रही त ठीक समय पर सभ कमवो हो जाई !

पुरनकी दाई का हटला पाँचे-छव दिन भइल रहे कि पड़ोस में रहे वाली एगो नेपालिन रजकुमरिया के लेके आइल। ऊ अपना बहादुर का जवरे मजे में रहेले—वकरी पोसेले आ चार-पाँच गो रिक्शा भाड़ा पर चलेला। एह सभ से नीमन आमदनी हो जाला। मांगे-चागे के ना पड़े आ ना चउका-बासन करे के पड़ेला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहिले कबहीं चउका-बासन कुछ घर में कइले रहे बाकी जब अपने काम जम गइल आ दू बेकत के दूनू जून पेट भरे लागल त ऊ दाई के काम छोड़ दिहलस। पड़ोस के रहला से जान-पहिचान रहल रहे।

"....ई एगो हमरा देस के बहिन लागी। घर के नीमने बिआ। सालभर भइल बिआह भइला। मरद से कुछ खटपट बा एही से खीसिया के भाग आइल बिआ। सुनलीं ह कि रउरा दाई के जरूरत बा। काम मन से करी। एकरा राखलीं। खाई-पी आ जवन मन करी लुगा-कपड़ा खातिर दे देब।...." ऊ एके साँस में कह गइल। अपना जाने ऊ सब बात साफ-साफ बता देवे चहलस।

सोचले त रहीं कि दाई ना राखब बाकी मन फेर लुसफुसाए लागल। नेपाली मरद-मेहरारु बड़ा ईमानदार होलन ई सुनले रहीं। पड़ोसिन का पाछा ठाढ़ मइल साड़ी आ ब्लाउज में मरूआइल मुँह देखलीं त दया आ गइल। बेचारी का साले भर बिहआ के अइला भइल आ मरद से खटपट हो गइल। जब हम ओकरा के देखलीं त ऊ पलक झुका लेलस आ—गोड़ का अंगूठा से माटी उटकेरे लागल।' त रीन बड़हिस !

—'का नाँव ह ?'

—'राजकुमारी। देस में हमरा गाँव का बगले में एकर घर बा। हमरा जिम्मा। सब काम मन से करी मलकिनी !.... खाली रोटी पकावे ना आवे, ऊहो धीरे-धीरे गवें सीख ली।"

—मरद से खटपट कके आइल बिआ त कवन टीक कि मरद कब मनावे आ जाई !

—अबहीं उम्मेद नइखे। दू-तीन महीना त नाहिंये आई। ईहो जिद्दी हिअ!

—ना, ना। जब आई मनावे आ मान जाई त चल जाई।....ठीके बा। कह द काम करो।

आ राजकुमारी हमरा इहाँ काम करे लगली। उनुकर खाना-पीना सब होखे। घर के सब कमवो करे लगली। खाली रात के सुते खतिर अपना गँवई बहिन किहाँ चल जाय। फेर भिनसहरे हमनी सुतले रहीं तले आ जाव। कबो-कबो त गेट में ताला रहे त छरदिवारी छड़प के आ जाव। काम करे के ओकर ढंग आ लगन हमरा पसन्द पड़ल। ढेर दिन पर हमरा ई दाई मिलल जवना से शिकायत ना भइल।

राजकुमारी का कवनो लड़िका-फरिका ना रहे। एसे ऊ बचवन में खूब रमे। दिनभर ओकरा से लागल रहस। ओकरा बहुत बात बुझाय ना एसे कवनो बात त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होखे ठठा के हँसे ! पूरा घर चकचक करत रहे ! हमरा देही वड़ा आराम हो गइल रहे। 'वहिनी-वहिनी' करत रहे। साँझे हम।र बड़-बिछावन, झाड़-सरिहार के बिछा देवे। उनुकरो टेबुल-कुर्सी मन से पोंछ के करीना से लगा देवे। ऊहो हमनी का संगे रम गइल रहे।

जब ओकरा से वहादुर के वात करीं त ऊ उदास हो जाय आ आँख से लोर ढरका के गाल भींजा लेवे। ओकरा वहादुर से कवनो बात के लेके उठा-पटक ना भइल रहे। झंझट रहे खाली एकरा एगो गोतिनी के लेके। वहादुर के एगो भउजाइयो सँगहीं रहत रहें। ऊ तनी चलबिधर रहे बन-सँवर के रहे वाली। सादी का बाद वहादुर दू-तीन हाली देस गइल बाकी जब छव महीना बीत गइल त राजकुमारी देसे का एगो अ.दमी का जवरे पटना आ गइलि। जब ऊ डेरा पर पहुँचल त बहादुर गोस्सा से काँप उठल। ओही डेरा में रहत बहादुर के भउजाई ओठ बिजुकावे लागल। बाकी, अब त ईहो आ गइल रहे—त रखहीं के रहे, रहहीं के रहे।

दूर रहला पर आग के धाह ना लागे बाकी, आँख सोझे जब ऊ अपना वहादुर के आँख उलटल देखे त कहीं भीतर ले हूक उठ ज।य। ई सीधा सुभाव के, गाँव के निश्छल निर्मल पानी अस रहे त एकर गोतिनी शहर का हवा-पानी में रसल-बसल रसगर। ई भाव वाली रहे, त ऊ छाव वाली! कुछ दिन ले त ई आँख पर पट्टी वान्ह के सब देखसल वाकी जब सहाउर ना रहल त ईहो झझके लागल।

ओही घर में ई रहे; आपन बिअहल मेहर आ तबो एकरे बहादुर अपना भउजाई के लेके कीली टोक लेवे। ओकरा भक-भक रोवाई आवे। अपना करम के आ भाग के कोसे। बाकी खाली लोर चुअवला मे का होखे के रहे। जब ई कुछ बोले त बह।दुर के एके कहनाम रहे तोरा रहे--के बा त घर के सब काम कर, खो, पी, आ सुत रह।...हमरा भउजाई के परतर मत कर!

—'ऊ तोर बिअही हिअ, ओकरा के लेके रात भर सुतवे आ हम टहल करेब! देह ठेंठाएब!!....'

—हें-हें ....ना त देस चल जो। एजवाँ हे के बा त जे-जे भउजाई कहिहें ऊहे करे के पड़ी। बूझ, जे तें उनुकर लउँड़ी बाड़े, दाई बाड़े....!' वहादुर कहे।

—'दाइए बन के रहब त केहू बाबू-भइया किहाँ ना जे तोरा रखैल के टहल करब। एकरा देह पर हम आग ना ध देब।...' रजकुमरिया झमके!

कहा-सुनी बढ़त गइल। कै हाली ई गोतिनियो से लड़ गइल। नतीजा भइल कि एकरा खाहूँ पर आफत पड़े लागल। ऊ दूनू मउज-मस्ती में डूबल रह स आ ई बेचारी मुँह ताके। बहादुर ओकर खातिर सिङ्गार-पटार के सामान कीन के ले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आवे आ एकरा अपना एक गो लुगा पर भर जाड़ा ठिठुरे के पड़े। आखिर कतना सहो। देस चल जाइत बाकी ओ खातिर पइसा ना रहे।

बाता-बाती में बहादुर दू-चार हाली जब हाथो छोड़ देलस त रजकुमरिया के असरा टूट गइल। ओकरा गाँव इयाद पड़े, माई-बाप इयाद पड़स आ इहाँ परदेस में अपना मरद का हाथे होत सासत ओकरा करेजा के खँखोर देवे। एक हाली दू-तीन दिन जब खइला हो गइल आ कवनो पूछले स ना त उठ के ऊ अपना गाँव का बहिन भीरि चल आइल।

हम ओकरा के तिहा बन्हाईं। बाकी, ओकर दुख-कलेश का खाली हमरा बात से मेंटे मान के रहे? दिल का घाव के मलहम का सहजे मिलेला? करेजा का बथला पर लोरे कुछ दरद घटावे ना। रजकुमरिया अकेले ना रहे के चाहे। ऊ लइकन में भूलाइल रहे, घर का काम में अझुराइल रहे आ हमरा टहल में लागल —बाझल रहे। हमरा के कवनो काम ना करे देव। हमरा बड़ी आराम हो गइल रहे।

अब ऊ रोटियो पकावे के सीख गइल रहे बाकी टेढ़-बाँकुर। ठीक से फुलवो ना करे। एक दिन हम बजार से लवट के अइलीं त ऊ खइले ना रहे। आँगन में एकोरी बइठ के रोवत रहे। हमरा माया लागल त पूछ बइठलीं —'काहे रोवत बाड़ू? केहू, कहल ह का कुछ कि दुलहा इयाद आवताड़े?'

ऊ तनी हँसल हमरा मजाक पर—"मलकिनी, हम अपना बहादुर खातिर नइखीं रोवत। ऊ कलमुँहा त मउज में बड़ले बा। हम अपना लूर पर रोवतानीं। कतनो कोशिश करतानीं रोटिए नइखे फूलत।...आज मालिक दूइए गो रोटी खाके कवलेज चल गइलीं हँ!"

हमरा ओकरा सोझई पर हँसी आ गइल। मन में दुलार उमड़ आइल। बेचारी दुखिया बिआ बाकी एह घर से कतना अपनापन हो गइल बा, सभकर कतना चिन्ता हो गइल बा एकरा!

छव महीना ले ऊ रह गइल। ओकरा कवनो तकलीफ मत होखे, ओकरा मन पर चोट ना लागे—एकर हम ख्याल राखीं। उहों का अब एकर बनावल रोटी हँस के खा लीं—'ले आव, ना त रजकुमरिया रोवे लागी।'

ओकरा जे ऊपरवार दू-चार गो रुपया मिले ओकर टौफी कीन के हमरे लड़िकन के खिला देवे। हम ओकरा के बराबर दिलासा देत रहीं कि आज ना काल्हि तोरा बहादुर का बात बुझाई आ ऊ लवटिहें।

—'फेर सियार ताड़ तर जइहें!'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—'ताड़ तर गूलर नू मिलेला रे !'

आ ऊ हँसे लागे। एक दिन हम ओकरा वहिन से कहलीं कि तूहूँ काहे नइखू बीच-बचाव करत ! कहे ऊ लाजो ना आवत होई ! वात ठीके रहे। वहादुर के भउजाई कवनो दोसरा का सँगे भाग गइल रहे। चसकल मन कवले एगो चपरासी का कावू में रहो ? ऊ एगो किरानी के पाछ ध लिहलस आ...।

जव वहादुर आइल त राजकुमारी के मान आदर जाग गइल। ऊ तेयारे ना होखे। कहे कि 'मलकिनी, हमरा के मत खेदीं। हम रउरे टहल में जिनगी काट देव। ई कसाई ह कसाई !'

'अनेरे, वुरवक वनल वाड़ू। भोर के भुलाइल जो साँझ के घरे लवट आवे त ओकरा के भुलाइल ना माने के। मन के सभ मइल धो द। अव त ऊ नइखे नू ?'

—'आ फेर आ जाई तव ?'

राजकुमारी के सवाल अपना जगे ठीक रहे। वहादुर ओही महीना में दू-तीन हाली अइले। समुझावत-वुझावत राजकुमारी मान गइली आ ऊ जाए के तेयार भइली। हमरो एगो लगाव हो गइल रहे। जाए का वेरा जे हो सकल कके हम विदाई क दिहलीं। उजड़ल घर वसत रहे, एकर हमरा वड़ा खुशी रहे।

राजकुमारी का गइलो पर ओकर इयाद जव-तव आवत रहेला। लड़िको कहे लेसन--'माई फेरू नेपालिने के दाई राख ना। ऊ कतना नीमन रहे !....'

जव-जव दाई से झंझट होला, हमरा राजकुमरी के इयाद पड़ जाला !

वाकी ऊ त दाई रहे ना—खोंता से बिछुड़ल एगो चिड़ई रहे जवन फेर अपना खोंता में चल गइल !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करेज के घाव

●

विश्वनाथ श्रीकृष्ण

●

गाँव के गड़हा-गड़ही पानी से भरल लउकत रहन स। असाढ़ के पहिलका पानी बरीस गइल रहे। धरती के हरिअर अँचरा खेतन में आ बागन में सगरे पसरल रहे जे बड़ सोहावन लागत रहे। हम अपना बगिया में एगो पेड़ के नीचे मचान प बइठल रहीं। सँझिया के बेरा रहे। हर दुइए-तीन मिनट प इमरित के रस में बोरा-इल पाकल-पाकल आम बगिया में टपकत रहे। कबो सेनुरिया टपके त कबो गोपिया; कबो खजुलिया त कबो लंगड़ा। लंगड़ा आ सेनुरिया भर ढींढ़ खा के अबहीं मचान प आके बइठले रहलीं, कि हाथ में लोटा-डोरी लेले थोरिके दूर प मथुरा बाबा लउकले। दूरे से पूछलन—"मचान प नवल बाड़ हो ?'

"पाँव लागीला बाबा ! बानी त।" मथुरा बाबा जब गते-गते हमरा ओर सरके लगलन हम मचान प से उतर के खाढ़ होई गइलीं—"आईं बाबा, पाकल-पाकल आम खाईं।" झोरी में राखल सात-आठगो निमन-निमन किसिम के आम निकाल के हम मथुरा बाबा का सोझा राख दिहलीं।

"आम ना खाइब हो नवल ! आज तीन चार दिन से झाड़ी खुल गइल बा। हरमेस पेट अँइठत रहत बा।"

"एने लउकत ना रहलीं बाबा ! कतो गइल का रहलीं ?"

हमरा अतना कहते मथुरा बाबा के आँख से टपटप लोर के फूल टपके लागल। हमरा त कठेया मार दिहलस—"काहे बाबा ?" हम बाबा का ओर अकचका के ताके लगलीं। गमछा से लोर पोंछत मथुरा बाबा कहे लगलन—"बलवंत जे कइलन ऊ केहुए ना कइल। बलवंत हमरा करेज में छुरा भोंक दिहलन। बाँचत गइलीं, बाकी घाव बड़ गम्हीराह बा।"

बलवंत मथुरा बाबा के दुलरुआ पूत हवन। आ जंगल विभाग में एगो ऊँचा ओहदा पवले बाड़न। मोट दरमाहा, सजल सजावल बंगला आ आपन कार। बलवंत राँची में बड़का हाकिम बाड़न। ऊ अपन मेहरी आ लइकन के संगे राँची में चानी काटत बाड़न। गाँव प मथुरा बाबा अकेले बाड़न। मेहरारु त जवानिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में साथ छोड़ देले रहली। मथुरा बाबा बुढ़ापा के झिरकुट देह लेले एह लमहर दुनियां में अपना के अकसरुआ समझत रहन। देह जाँघ त थाक गइल रहले रहे अँखियो से कमे लउकत रहे।

पलक मारते सभ बात हमरा आँख का सोझा नाचे लागल। मथुरा बाबा कहे लगलन—"का कहीं हो नवल, सुन के लोग बाग हँसवे नू करी ? बाकी, तोहरा से हम आपन बात ना छिपाईं। तोहरा से कह के मन के भार हलुक होखेला"—बाबा आगा बढ़लन—"गाड़ी से उतर के बबुआ के कोठी प सँझिया पाँच बजे पहुँचलीं। कोठी के सजावट, नोकर-दाई आ चपरासी। अगवासा किसिम-किसिम के फूलन से भरल एगो सुन्नर फुलवारी। ई सभ देख के बाप के करेज पोरसा भर ऊपर उछिले लागल। मुँह से अनायासे निकल गइल—'हे भगवान् हमरा बलवंत के कबो एगो रोंओं जनि टेढ़ करिह।"

बबुआ बलवंत के चपरासी हमरा पूछलस—"रउवा के हईं। कहँवा से आवतानी ?"

"हम बलवंत बाबू के बाबूजी नू हईं।" अतना सुनते चपरासी सलाम बजावत कहलस—"हम साहेब से अपने के आवे के खुशखबरी सुना आईं।"

चपरासी पँजरे सटल एगो कमरा में हेल गइल। हम बहरा से परदा हटा के भीतर झँकलीं त देखलीं कि एगो गोल टेबुल के चारुँ ओर से घेर के हमरा बबुआ के संगे बइठ के कुछ साहेब लोग बतकही करत बा। चपरासी जइसहीं जाके कहलस कि 'साहेब, घरे से राउर बाबूजी आइल बानी।' हम परदा हटा के भीतर हेल गइलीं। हमरा प नजर पड़ते बबुआ के चेहरा झँवा गइल। बलवंत कहलन—"अरे इहां के त हमार देवान जी हईं। लेजा के बइठका में बइठाव आ पानी पिए के बजार से कुछ कीन के पानी पिआव।"

बलवंत के बात हमरा करेजा में तीर अइसन लागल "हम बलवंत के बाप ना हईं ? देवान हईं ! हमार सभ नेकी तू बिसार दिहल, बलवंत। तू भुला गइल कि तोहार बाप शिवगोंविन्द राय के हर जोत के तोहरे नबाब का नाती लेखा रखलस—आ अपना हाड़ के कमाई प तोहरे एम० ए० कराके एह लमहर पद प पहुँचवलस। आ अब हमरा के आपन बाप मानत तू लजात बाड़ ? हम तोहार देवान नोकर नू हईं।"

हमहूँ रोसिआ गइलीं आ तमक के साहेब लोगन से कहलीं—"हम अपने सभे के बलवंत बाबू के देवान ना हईं। हम साँच बात कहत बानी। रउआ सभे पतिआईं—हम इनका माई के भतार हईं।" सभे अकचका के हमार मुँह ताके लागल आ हम परदा उठा के बाहर अइलीं आ टीसन के राहता धइलीं।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मथुरा बाबा के आँख से हर-हर लोर चुए लागल। बाबा के मन के पीड़ा कुछ कम भइल त हम कहलीं—"ई सभ नवका जुग के देन ह बाबा! रउआ जवना अगिन में आज झोंका रहल बानी देह जाँगर थकला प सभे के एक दिन ऊहे अगिन में झोंकाए के बा। केकर-केकर धरीं नांव, कमरी ओढ़ले सँउसे गांव! घरे-घरे आज ईहे बाजा बाजत बा।"

मथुरा बाबा के दुख से हमार करेज कुहुर-कुहुर करे लागल। बाबा जब चले लगलन, आठ दस गो पाकल-पाकल आम अपना गमछी में बाँध के उनका हाथ में थमा दिहलीं—"बाबा एके काल्ह खाइब।" आम लेके मथुरा बाबा टिघुरट-टिघुरत अपना घरे के राहता धइलन।

राति खा घरे अइलीं। खा पी के खटिया प लेटलीं। बाकी नीन्द काहे के आवो? हमरा आँखि का सोझा मथुरा बाबा, उनकर थाकल देह जाँगर, बा बलवंत के बेवहार सिनेमा का तसबीर लेखा आवे-जाये लागल। एह बुढ़ारी में मथुरा बाबा कहाँ जइहें? का करीहें? केहु पानियों देवे वाला त नइखे लउकत। करवट बदलत रात बीत गइल। बिहान हो गइल। कौआ बोले लागल। लोटा उठवलीं आ फराकित होखे हम बधार का ओर निकल गइलीं। अबहीं थोरिके दूर गइल रहलीं कि पीछे से अलगू के आवाज आइल "मलिकार, तनि सुनले जाईं।" हम ठहर गइलीं। अलगू आके कहलन, —"मथुरा बाबा राते मर गइलन।" हमरा विश्वास ना भइल त अलगू कहलन—"हम साँच कहत बानी। हम वोहिजे से आवत बानीं आ कफन के कपड़ा ले आवे जात बानी।"

अलगू चल गइलन त हमरा मुँह से निकल गइल —"करेज के घाव मथुरा बाबा के ले लिहलस।"

लोटा लेले हम मथुरा बाबा का घर का ओर चल दिहलीं। जाइ के देखलीं—मथुरा बाबा अँइठाइल पड़ल बाड़न। आ सिरहाना हमार देहल आम गमछी में बाँधल धइल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पसेवा के पइसा

घनश्याम मिश्र

बैजू बहुत बुझवलन बाकी केसो कुछ कान ना कइलन। पूँजी रहे ठिकेदारी ठेठवला के तवन खाए-पीए आ केसो का पढ़हीं-गुने में पानी हो गइल रहे। बैजू अपना बेटा बवन के बियाह गँव गोचर से सम्हारे चाहत रहन आ केसो सवार रहन चल्हकू चाचा का चावस वाला घोड़ा पर। चाचा रहबो कइलन गाँव जवार का मामला मुकदमा के मेठ, दलबंदिन के दलाल आ बिभो अवरु बड़वारगी के बीहड़ बिथुवा। उनुकर चिटुकी बैजू आ केसो का प्रेम के करेज कसि के कँकोरि चुकल रहे।

धन उधिअइला पर परिवार के लोग जब जबदि के घुड़मुड़ाला त कलह मगुराइल मेघ मतिन गुरगुराए लागेला। सादी बाद बैजू आ केसो में मोटहन दरार पड़ गइल। बेचारू बैजू बाज ना आइल रहन एह उतजोग से, जे दूनो भाइन के साथ भर जिनिगी निवहि जाउ बाकी उनुकर सब गुनल मथल माटी हो गइल। चल्हकू चाचा पंच बन के ओह लोगन के करिखाहि हाँड़ी तक हिगराइए के दम लिहलन। दूनो भाइन के बपवती खेत-बारी पहिलहीं बन्धक धराइ गइल रहे अलगई होते चल्हकू चाचा केसो के हिस्सा चटपट कबाला करा लिहलन। बैजू का बाल बच्चा के पेट पोतऊ बटइया का बल पर पोसाए लागल आ बड़ा उतजोग कइला पर एगो कालेज में केसो का किरानी के नोकरी भेंटाइलि।

बाल गोपाल का साथ बैजू के देहात में रहि के कसहूँ नून रोटी निमुकि जात रहे आ खास भाई केसो सहरी कोठा पर मसहरी ताने लगलन। ओइसे उनुका जिमा काम त रहे किरानी के बाकी आमदनी रहे अफसरो ले अधिका। केसो के कमाई का घमंड के घटा अइसन गरजल जे समाज का साथ-साथ सरकार के भी कान कनकनाइ उठल। उनुका करनी पर सबकर नजर नाच उठलि। ओत फटला पर अन्त होइबे करेला। केसो कठिन केस में कारागार गइलन। कुछ दिन बाद नोट के बंडल का बल पर बेरिया के बान्ह त कटल बाकी फुटहा दुलम्ह हो गइल। जवना चउका में एक बेरि दस रुपया रोज से कम ना चुसात रहें— ओही चउका में हाँड़ी उपास परे लागलि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पइसा कउड़ी का कम बेंवत से बैजू के बेटा बवन के पढ़ाई छोड़ि के पलटन में बहाल हो जाए के पड़ल। गाँव का चना चबेनी में सहर का सेव सन्तरा के रस पावे वाला परिवार का कमाई से एगो दुधगर दोहानी आ एक जोड़ा बैल दुआर पर बन्हाइ गइल। केसो का बारे में ढेर दिन तक कवनो खबर ना मिलला से बैजू चिन्तित रहन जरूर बाकी चल्हकू चाचा का दूनो भाइन के राई-रत्ती तक के हाल चाल बराबर मालूम होत रहे। चाचा का सलाह से बिपतल केसो ससुरारी में पेट पोसत पोसत एक दिन ओहि -जो से बैपारी का बेटा अस कमरा आ लोटा लेइ के बाहर हो गइलन।

केसो कवनो कोदो देइ के त पढ़ल ना रहन। ऊ जुगुति, उकुति आ अकिल में पुरहर पाकठ रहन जवना बल पर कानपुर से कलकत्ता जाइ के कोटा आ कन्ट्रोल का बल पर कंचन चरे लगलन। चल्हकू चाचा आपन चिलम आ चुनवटी फेंकि के बराबर खातिर कासीवास खातिर उतारू रहन बाकी केसो का कहाव पर कासी से कगरिआइ के कलकत्ता पहुँचलनि आ ओहिजा के बिभो देखि के गद्‌गद् हो गइलन। उनुकर चिलम चुनवटी आ चाहदानी त कबो खाली होत ना रहे। एकरा बाद ओहिजा देखलन जे गेंहू आ चाउर में अँकड़ी आ चउरी, सरसो में भगरभांड़ आ आटा में मकई के खुखुड़ी आ मुलायम लकड़ी के धूरि फेंटात वा। अतने ना, वजन करे वाला लोहा के कांटा का नीचे लोह चुम्बक के चदरा भी लगावल वा जवन हर पसेरी पर पउवा गपकले जात बा। एह दोसन्ह के अनेक बेर जाँच भइल बाकी कुछ पता ना लागत रहे। एक-बेरि चाचा का सुभाव से, जनता का भाग से आ केसो का अभाग से भंडा फूटल। केसो का हाथे हथकड़ी लागलि आ" आ चल्हकू चाचा का हाथे तिजोरी के पोढ़ पूँजी। चकमा देइ के केसो के बाल बच्चा का संगे चाचा कलकत्ता से कानपुर का ओरि कगरिअइलनि। केसो के संगी साथी जेल से निकाले में इचिको भरि खोटा ना कइलन, उनुकर वकील भी अकिल लगावे से बाज ना अइलन बाकी बरिस दिन तक जेल के हवा खाहीं के पड़ल।

जवना दिन केसो जेल के जिनिगी बिताइ के घरे पहुँचलन, चल्हकू चाचा का घरे घोड़ा पइठे भरि के सेंध फूटलि। केसो अपना कलकत्ता वाली पूँजी का बारे में कुछ पूछ-ताछ चाचा से करसु एकरा पहिले चाचा का दुआर पर थाना पुलिस ओरमि गइल। चोरी गइल सामान के बेवरा चाचा चटपट बताइ दिहलन आ जब नगद रुपया के बात चलल त चाचा साफ कहलन जे 'ऊ पसेवा के पइसा त रहे ना जे ओकर हिसाब होखो।' केसो कनखी पर चाचा का ओर तकलनि आ चाचा चुप लगा गइलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोढ़

भगवती प्रसाद द्विवेदी

दुलहिन-अस सजावल-सवाँरल कार के देखि के परमेसर के अइसन लागल, जइसे ऊ सेठ करोड़ीमल के अरथी ना होखे, उनुकरा वियाह के बरियात होखे। खुलल कार में सेठजी के ऊजर धप्-धप् चमचमात चादर से ढाँपल लाश राखल रहे। लाउडस्पीकर में 'राम नाम सत् है' के मीठ बोली बतास के संगलेहर होके नाचत रहे। बाजा-गाजा के मिठास रोंआ-रोंआ के धीमे-धीमे गुदगुदावत रहे। आगा-पाछा दउरत-धूपत लोगन के चंचल सुभाव देखते बनत रहे। आद-भगत में सभे दोकान बन्न होखे लगली सं। भला अतहत बड़हन सेठ करोड़ीमल के मएजल निकले आ दोकान खुलले रहि जा सं! भला अइसन कइसे हो सकत रहे ?

सेठजी के कार का पाछा एगो लाल कार रहे सूरजमल के, करोड़ीमल के आँखिन के जो्हीं अस एकलउता सपूत के। उनुकरा सूरत पर उदासी भा गमी के भाव मांछी के मूड़िओ भरि ना रहे। सेठजी उनुकरा खातिर अनगिनत आलतू-फालतू रुपया, जगह-जमीन, कई गो फारम, मकान-दोकान-दउरी··· ना जाने का-का छोड़ि के आजु जा रहल बाड़न।

परमेसर के आजु पहिलकी बेरि अइसन शानदार मएजल देखे के मोका मिलल रहे। देखि के उनुकरा बड़ा खुशहाली भइल रहे। ऊ मने-मन बुदबुदात रहन "ई भइल एगो कबहीं ना भुलाए वाली शव-जातरा! अउरी जगहा त जहाँ केहू मूअल कि घर परिवार के लोग लगलन अनबूझ लरिकन-अस पुक्का फारि के रोवे। भला ईहो कवनो बात भइल ? रोवला-धोवला से ऊ अदिमी फेरु लवटि के त आई ना। त काहे ना हंसी-खुशी मनाईं, नाचीं गाईं-गुनगुनाईं !"

परमेसर से केहू अचरज से लबालब भरि के बतावल कि पूरा एक सइ तीन साल के लमहर उमिरि गुजारला का बाद आजु सेठजी सरग सिधरले बाड़न। बाकिर परमेसर के महतारिओ त सवा सई बरिस के बाद जाके मुअल रहली। उनुकरो दिल से होसला रहे कि बाजा-गाजा के संगे माई के मएजल निकलो, बाकिर हिरदया के होसला हिरदए में मरि गइल रहे। कफन के पइसा त रहबे ना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कइल, तले एह तरी अरथी के के कहो ! उनुकरा अपना मन के बेवकूफी पर ओह दिन अपने हंसी बरल रहे, आजुओ हंसी बरत रहे।

अचक्के में परमेसर का दिमाग में एगो भुलाइल-बिसरल बात बिजुली के करेन्ट-अस लागल आ ऊ अलचार होके बेरि-बेरि ऊहे बात सोचे लगलन। ऊ करोड़ीमल के ओह दिन रेकसा पर बइठा के उनुकरा हवेली का आगा उतारत रहले। दुआर के लगहीं सूरुजमल ठाढ़ रहन। अपना बाबूजी के देखते सूरुजमल के माथा पर इहाँ से उहाँ ले टेढ-मेढ़ लकीर अस खिंचा गइल।

"फेरु इहाँ कइसे आ गइलऽ ?" बेटा के खीसि सातवां आसमान पर रहे।

"का करीं सुरूज बबुआ ! तहन लोग के बिना देखले मन बेचैन हो जात बा।" करोड़ीमल का आँखि से पानी उमड़े लागल।

! चएन बएन के अइसन तइसन।" बेटा बाप के ओरि आँखि तरेरि के बोल-लन, "एक बेरि ना, सइबेरी कहलीं कि अब इहवाँ मति आइल कर। हमरो त बाल-बच्चा बाड़न सं। उन्हनी के सादी-बियाह करे के बा हमरा। तहरा रहत भरि में का केहू पागल-ओगल बा जे अपना बेटी के बांह पकड़ा दी? पलानी लगवाइए देले बानी, खाए-पीए के टाइम पर चोंहपिए जाता, तबो चलि आवताड़े धउरल....हुंह !" ऊ खखारि के थूकि दिहलन आ फेरु परमेसर के ओरि पलटलन; "ऐ रेकसावाला !"

परमेसर अचकचा के रेकसा से उतरि गइलन।

"इन्हिकरा के लेले जा ••बाँसघाट उतारि दिह !" परमेसर के बुझाइल जे सूरजमल के बोली बड़ा रुखर रहे।

'जी मालिक ! " ऊ हां मे हां मिलवलन।

करोड़ीमल आंखि पोंछि के फेरु रेकसा पर बइठि गइलन। परमेसर गौर से देखलन। सेठजी का गोड़-हाथ के बीसो अंगुरी गलि गइल रहली सं। उन्हनी से पच्-पच् मवाद बीगत रहे। दूनो आंखि फूलि गइल रहली सं। उन्हुकरा अचरज भइल—त का करोड़ीमल सचहू कोढ़ी हो गइल बाड़न....राम-राम....!

"हम पपिस्टी हईं ...सबसे बड़हन पापी ! हमरा पर ब्रहमहतया के पाप बा... हमरा पर........"बीच राहता में सेठजी सुसुके लागल रहन। परमेसर के त जइसे कठेया मार देलस।

"ई रउआँ का कहत बानीं मालिक ?" उनुकरा से बिना पूछलें ना रहाइल।

"हम ठीक कहत बानीं।" सेठजी बुझिला भाव-बिभोर हो गइल रहन, नाहीं त एगो रेकसावाला से भला केहू अइसन बात कहित ! उनुकर जबान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लड़खड़ात रहे, "एही लोग-लरिकन खातिर एगो बाभन के संगे विसवासघात कइलीं.......ओकर धन-दउलत हड़पे खातिर ओकर घांटी टिपलीं.......ऊहे पूंजी लगा के आजु पूंजीपति बनि गइलीं ....। आ आजु हमरा ओह पूंजी पर के कहो, केहुए पर कवनो हक नइखे....घर में रहे के हक नइखे....सनेह जतावे के-परेम करे के हक नइखे....। ऊ ब्रह्महतया के पाप...ऊ पाप हमरा के हमेशा तड़पाई...हमेशा ...!"

परमेसर के दम घुटे लागल रहे, हुटहुटी-अइसन बरे लागल रहे। सेठजी के बाँस घाट उतारि के ऊ बेगर किराया लेलहीं घोड़ा-नियर सरपट भगलन रेकसा ले के। ओने सेठजी बेरि-बेरि बोलावते रहि गइलन, बाकिर परमेसर के ओने दोबारा ताके के हिम्मत ना भइल। दोसरका दिने हल्ला भइल रहे – सेठ करोड़ीमल पगला गइलन ! आ ई खबरि जंगल में लागल आगि नियर सउँसे शहर में पाटि गइल रहे।

× × ×

बाजा में कवनो भजन के धुन बाजत रहे। भीड़ खूब टकचल रहे। सूरुजमल पइसा लुटावत रहन। छोट-छोट लंगटे-उघारे लरिका ओह पइसन पर बाज-अस झपटत रहन सं। परमेसर के मन पड़ल, ऊहो लरिकाई में कबहीं एही तरे बरिआत-ओरिआत में पइसा लूटत रहन आ ओह पइसन के चेट में गटिया के झुनझुना नियर बजावत फिरत रहन।

कुछ लरिका अपना मुँह पर लांगट अलचारी टंगले टुकुर-टुकुर सूरुजमल के ओरि ताकत रहन सं। तलहीं सूरुजमल के दहिना हाथ कार से बहरी निकलल आ अगिली कार के चारु ओरि ढेर-खानी पइसा छितरा गइल। लरिका ओने किओर लपकलन सं।

रोवल-धोवल आ चिचिअहट गूंजल आ लाल कार चरमरा के ठाढ़ हो गइल। एगो लरिका ललकी कार से नीके तरी घाही हो गइल रहे। ओकर सउँसे देहि लोहूलोहान हो गइलि रहे। बहरी झांकि के सूरुजमल कर्कश आवाज में गरजलन, "हरामजादा......चलि आवताड़े सं सड़क पर......मादर......!'

भीड़ के चीरत परमेसर 'एक्सीडेन्ट' वाली जगहा पर कतूहलवश चहुँपि गइलन। लरिका के हालति देखि के उनुकर आँखि छलछला अइलीं सं। "अरे, ई त हमरे बेटा ह—कतवरुआ ! हे भगवान !" परमेसर के सउँसे देहि कांपे लागलि। एकाएक उनुकरा आँखिन में खून उतरि आइल आ ऊ पलखत पावते सूरुजमल के कालर पकड़ि लिहलन, "साला......का समुझत बाड़िस अपना के? एगो कोढ़ी करोड़ीमल के मउअत के खुशहाली में सउँसे दुनिया के मुआवे पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उतारू हो गइल बाड़े का ? का संउसे दुनिया कोढ़ी बिआ……बोलु ? तोरी में त कोढ़ बड़ले बा—लूट-खसोट के कोढ़……दू नंबर के दवलत के कोढ़…अहंकार के कोढ……!"

ततहीं अधेड़ उमिरि के तीन-चार गो मुस्टंड आदिमी परमेसर पर अन्हरा भइंसा-नियर झपटलन सं आ उनुकरा गाल पर एके संगे तड़ाक-से ना जाने कई गो भरपूर चटकन पड़ल। फेरु थप्पड़, लात आ जूता से उनुकर जोरदार ठोकाई भइल। मन भरि ठोकला-ठेठवला का बाद भीम-अस दू गो जवान उनुकरा के घसटेरत गली में पटकि अइलन सं।

परमेसर लरिका-अस सिसकारी भरि के रोवे-बिलपे लगलन। सड़क के कगरी पड़ल लोहूलोहान कतवरुआ चिकरत रहे। लंगड़ात-लंगड़ात परमेसर आखिरकार कतवरुआ के लगे चोंहपि गइलन आ ओकरा के अंकवारी में बान्हि के फफके लगलन।

लाउडस्पीकर से 'राम नाम सत् है', अबहुंओं गूंजत रहे। सेठजी के मएजत सड़क का छाती के चीरत बांसघाट किओर बढ़ल चलि जात रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिरिआ जनम जनि दीह बिधाला

मिथिलेश्वर

दिदिआ के मरला आजु तीनि दिन हो गइल। एह तीनिए दिन में सभ कुछ सहज हो गइल। नइखे लागत जइसे घर के कवनो बेकति के मउअति भइल होखे। छोट बहिन दीपिती दिदिआ के जिम्मेवारी सँभारि लेलसि। भइआ का चेहरा प दुख के कवनो चिन्ह नइखे। माई आ बाबूजी त भीतरे-भीतर खुस बुझात बाड़न जा। बाकी ई सभ हमरा अजबे लागत बा। एकइस साल के होके दिदिआ के मरि गइल एह लोग के काहे नइखे अखड़त ! चाचा के मरला के हमरा ठीक से इआद बा। उन्हुका मरला के सोक में घर के लोगन के चेहरा तीनि-चारि महीना तक उदास आ उतरल रहे। आजुओ जब कबो चाचा के बात चलेला, त, बाबूजी आह भरि देलन। चाचा उन्हुकर दाहिना हाथ रहन। ऊ जिनिगी भर कुँआर रहलन आ हमरा परिवार के सुखी-संपन्न बनावे खातिर खेत में काम करत-करत चलि गइलन। एही से दिदिआ के साथे उन्हुकर कवनो पटतर नइखे। दिदिआ कबो बाबूजी के दहिना हाथ ना बनि सकली, बाकी एह से का भइल ? आखिर दिदिओ त एही परिवार के एगो बेकति रही। खून के रिस्ता से हमनीं का एक-दोसरा से जुटल रहलीं हाँ जा। आपन एकइस साल तक के उमिर दिदिआ एही घर में पूरा कइले रहली हा। केहू के आवाज पर हाजिर हो जइहें। हाली-हाली घर के सभ काम सँपरा दीहें आ अपना जाने भर केकरो के कबो अनराज ना होखे दीहें। ई सभ का दिदिआ के कम खूबी रहे ? साँचो के दिदिआ एह परिवार के जान-परान रहली हा। एह परिवार खातिर ऊ का ना करत रहली ? कतना दुख, अपमान आ अतेयाचार सहिहें, बाकी कबो मुँह से बकार ना निकलिहें। अइसन दिदिआ के अभाव के झुठावल, सचहूँ दिदिआ के साथे अनेआय कइल बा।

दिदिआ के बचपन हमरा इआद नइखे, काहे कि ऊ हमरा से बड़ रहली हा बाकी दीपिती के बचपन हमरा इआद बा। बचपने काहे, दीपिती के जनम-दिन के इआद आजुओ हमरा के कँपा देला। ओने दीपिती के जनम भइल रहे आ एने सँउसे घर में मउमति-अइसन उदासी उतरि आइल रहे। भइआ आ बाबूजी आँगन में मुँह लटकवले सोच में डूबल रहन जा। ओह घरी चचो जिअते रहन। साँझि खा खेत से लवटला प दीपिती के जनमला के खबर उन्हुका मिलल। हम सोचत रहीं, ऊ खबर सुनि के खुस होइहें। हम उन्हुका के जीवट के मरद समुझत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहीं। ऊ हर मोका प खुसे रहत रहन। बाकी ई का ? दीपिती के जनमला के खबर सुनते मातर ऊ हाय कइके बइठि गइले। उन्हुका मुँह के निकलल ई बात हमरा साफ सुनाइल 'दस हजार के घाटा।' आ हमरा लागल कि दिदिओ के जनमला प ईहें सभ हालत गुजरल होई।

अपना जनमला से लेके पाँच-सात साल तक दिदिआ कइसे पोसाइलि, ईहो हमरा मालूम नइखे। बाकी दीपिती के पोसाइल देखि के ओकरो अंदाज लगा लेले बानीं। एकदम लावारिस-अइसन फेंकल रहत रहे दीपिती। केहू ओकरा के गोदी में ले के चूमत-चाटत ना रहें। ऊ घंटन रोअत चली, बाकी ओकरा खातिर केहू के ममता ना जागी। माइओ ओकरा खातिर कवनो चिन्ता ना करत रहीं। सरदी, बोखार आ खाँसी भइला प ओकरा के कवनो दवाई ना करावल जाई। ऊ अपना भाग के बल प जिअत रहे, जबकि ओकरा से दू साल छोट विनोद के जनमला के खुसी आ उनुका लालन-पालन में बरतल जा रहल सावधानी देखते वनत रहे। हर समे केहू-ना-केहू विनोद के गोदी में टँगले रही। मामुलिओ सरदी भइला प डाक्टर के पास भाग-दउर सुरू हो जाई। बाकी बेचारी दीपिती बोखार में जरत, खाँसी में खोंखत आ बासी आउर जूठ भात खात कवनो तरे जिअत रहे। विनोद आ दीपिती के बीच के फरक हमरा बहुत सालत रहे आ हमरा लागत रहे कि दिदिओ के बचपन एही तरे बीतल होई।

जब दिदिआ दस साल के रही, तब हम आठ साल के रहीं। ओही घरी से दिदिआ के हम ठीक से जानत बानीं, काहे कि हम दिदिए के साथे खेलत आ रहत रहीं। बाकी ओह घरी दिदिआ बहुत समझदार ना रही। ऊ अपना आ हमरा में कवनो बहुत बड़ फरक ना समुझत रही। बाबूजी जब कबो बाजार से मिठाई लेके अइहें आ हमरा के बेसी दे दीहें त दिदिआ तुनुकि जइहें। ऊ रोवे-पीटे लगिहें। तब ओही घरी माई दिदिआ प खिसिआत निकलिहें आ हमरा आ दिदिआ के बीच के फरक के हिगरावत-छिनिगावत कहिहें—'तें बेटी हइसि। ई बेटा ह। ई भीखो माँगि के एही घर में ले आई, बाकी तोरा त पराया घरे जाये के बा। तोर हाथ-बाँहि केहू पकड़ि ली त एह घर के इज्जत चलि जाई, बाकी ई त दोसरा के हाथ-बाँहि पकड़ी !'—आ अंत में माई जवना बात के जोर देके कहिहें ऊ ई कि तें त दस हजार लेवे, आ एकरा दस हजार मिली।

ओह घरी माई के बात के अरथ हमरा ना बुझात रहे। साइत दिदिओ सुरू-सुरू में माई के बात ना समुझत रही, बाकी जलदिए ऊ सभ कुछ समुझि गइली। बारह-तेरह लाँघत-लाँघत त दिदिआ हमरा से अपना के एकदमे अलगा क लेली। फेरू ऊ भुलाइओ के हमार बरोबरी ना करसु। हमरा खातिर महँगा कपड़ा सिआवल जाय आ उनुका खातिर सहता कपड़ा के सलवार-फराक सिआवल जाय।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा खातिर फरकें तरकारी वने आ ऊ अँचारी के साथे खा लेसु। कवो-कवो त मिरचाई में निमक भरि के आ कड़आ तेल डालि के आगि प पका लेसु अउर ओही साथे पानी डालल भात खा लेसु।

दिदिआ के चउदहवाँ पूरत-पूरत घर के सभ भार माई उनुका ऊपर थोप दिहली। भोरे उठि के आँगन आ घर वहारे के काम! फेरू साँझि के जूठ बरतन माँजे के काम! एकरा बाद रसोई बना के सभ परिवार के खिलावे-पिआवे के काम!

आजु हम दिदिआ के बारे में सोचत वानीं, त हमरा ई बात समुझ में नइखे आवत कि अपना कोख से दिदिआ के जनमा के माई उनुका खातिर अतना निठुर काहे हो गइल रही। हाड़ कँपावेवाला जड़कालो में माई दिदिआ खातिर सुईटर भा चादर ना खरीदत रही। कसहूँ एगो सलवार-फराक पहिरि के दाँत कटकटावत दिदिआ सँउसे जड़काल बिता देत रही। गरमिओ के दिन में ऊ कम दुख ना सहत रही। हमनीं के सभ आदिमी खातिर मुसेहरी के इंतजाम हो जात रहे, वाकी उनुका असहीं सूते के पड़त रहे। हमरा इआद बा, राति भर दिदिआ करवट वदलत; मच्छड़न के कटला से देंहि ककुलावत सँउसे राति कवनो तरह गुजारत रही। बरसात में त उनुकर हालत अउर रद्दी हो जात रहे। उनुकर कपार आ सलवार-फराक वरावर भिजले रहे। आँगन में एने से ओने दउरि-दउरि के उनुका सभ काम सँपरावे के पड़त रहे। ऊ बरोबरे सरदी आ बोखार के चपेट में आ जात रही। बाकी तवो उनुका देंहि के फुरसत ना मिले। बेमारिओ में माई उनुकर जान ना छोड़त रही। हमरा नीके तरे इआद बा, हम दिदिआ के खाटी प सूति के आराम करत कवो ना देखले रहीं।

माई, बाबूजी आ भइआ रोज-रोज दिदिआ के बढ़त उमिरि देखि के छाती पीटे लागत रहन जा—'बाप रे बाप! दस हजार कहाँ से आई···· ·अपना जाति-बिरादरी में एह से कम प लइका ना मिली······दादा, ई बेटी हमनीं के रसातल में भेजे खातिर आइल बाड़ी सँ।' फेरू माई दिदिआ के सुना-सुना के हजारन बार कहसु—'दस हजार लेबे······दस हजार लेवहीं खातिर आइल बाड़िसि ······तोरा के सउरिए में निमक चटा के मारि देल चाहत रहे······अब हमनीं के कँगाले बना के तें एहिजा से जइबे।'

आ दिदिआ सभ कुछ चुपचाप सुनत रहिहें। आजु हम सोचत वानीं त हमरा लागत बा कि माई दिदिआ खातिर एही से निरदई बनि गइल रही कि दिदिआ के सादी में जवन दस हजार खरच होखेवाला रहे, ओकरा में से कुछुओ त ओकरा से वसूल कइ लिआउ।

परसवें दिदिआ मरली आ काल्हुए दीपिती उनुकर बक्सा हथिआ लेलसि। उनुकर वक्सा बहुत छोट आ पुरान रहे। माई के बिआह में मामा इहाँ से ऊ बक्सा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिलल रहे, अइसन माई बतावत रही। ढेर दिन ओह बक्सा के माई अपना भीरी रखले रही, बाकी जब ऊ बहुत पुरान आ टूटे-टूटे हो गइल, तब माई दिदिआ के दे देली। एक बे आपन कलम खोजत-खोजत हम दिदिआ के बक्सा खोललीं कि कहीं एही में त नइखे धरा गइल; बाकी ओह में हमार कलम ना मिलल। हम देखलीं, दिदिआ के बक्सा में सूई-डोरा, सिवराति के मेला से खरीदल रीबन, माथा के बार में खोंसेवाला किलिप आ बाबूजी के फाटल धोतिन के फारि के बनावल दूगो चोली। साइत दिदिआ के ईहे संपति रहे।

अइसे त दिदिआ के सतरहवाँ चढ़ते-चढ़ते उनुका खातिर बर खोजाये लागल रहे, बाकी जब ओनइस लागतो-लागत कवनो लइका ना छेंकाइल, त बाबूजी आ भइआ परेसान हो गइले। तब ऊ दूनों बाप-बेटा एके साथे निकले लगलन जा। ऊ लोग नोकरिहा लइकन के पासे ना जा सकत रहन जा, काहे कि ओहनी के ओर से ग्रेजुएट ना त कम से कम मैट्रिको पास लड़की के खोजाहट रहे, बाकी हमार दिदिआ त खाली चिट्ठी-पतरी लिखे आ बाँचे भर जानत रही। एही से भइआ आ बाबूजी साधारने लइकन के खोज में रहत रहन जा।

पता लगावत-लगावत बाबूजी आ भइआ एक जगे गइने। लइका तीनि भाई रहे। भाइओ में लइकवा सबसे बड़ रहे आ आई० ए० में पढ़त रहे। ओकर बाबूजी गाँव प खेती करत रहन। ओकरा दस बिगहा धरती रहे। ऊ गरजि के बोलल—'एगारह हजार मिलत बा, पनरह हजार के माँग बा। चेट में तरी होखे त बात करीं, ना त कवनो दोसर दुआर देखीं। हम गरजु नइखीं। हमरा दुआर प रोज दू जाना आवत बाड़े।'

बाबूजी आ भइआ ओहिजा से मन मारि के चलि अइल। फेरु दोसरा ठहर गइले। ओहिजा लइका अपना मुसमात मतारी के साथे अकेले रहत रहे। ऊ मैट्रिक में पढ़त रहे। कुंवारी के फँफरा से ओकर मतारी बोललि—"एह एक लइका प पनरह बिगहा खेत बा। ना बिसवास होखे त खतिआन लेके देखि लीं। चउदह हजार से कम तिलक ना लेबि।"

फेरु तिसरका ठहर ऊ लोग गइले। ओहिजा लइका दोआह रहे। ओकर पहिलकी मेहरारू तीन गो लइकन के छोड़ि के मरि गइल रहे। ओकरा सात बिगहा खेत रहे। ऊ खुद मालिक रहे। बाबूजी से कहलस कि हम चार हजार में कइ लेब; बाकी ओकर उमिरि बाबूजी के उमिरि के बरोबर रहे। तबनो प बाबूजी राजी हो गइलन। भइओ तइआर रहन। बाकी ओह लोग के लागल कि गाँव हँसे आ थूके लागी, एही, डरे ऊ लोग ओहिजो से लवटि अइले।

अकसर ऊ लोग जब लवटि के आवसु त आँगन में मुँह लटका के घंटन बइठल रहसु आ एक-एक बात माई से कहसु। रसोई में बइठल दिदिओ सभ कुछ सुनसु। हम गौर करत रहीं, बाबूजी आ भइआ के बात सुनि के दिदिआ के चेहरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उदास आ बेबस हो जात रहे। हम ना चाहत रहीं कि दिदिआ के सोझा ई सभ बात होखो; बाकी बाबूजी आ भइआ त उनुका के सुनाइ—सुनाइ के कवनो बात बतिआवसु जा। बाबूजी आ भइआ के बात अउर हरानी-परसानी सुनिके हमार माई दिदिआ के गरिआवे लागे —'मरि जाइल चाहत रहे एह कुलच्छनी का····एकर भतार एह दुनिआँ में कतहीं नइखे· ·बाप-भाई एकरे चलते गाँवे-गाँवे छिछिआइल चलत बाड़े सँ····एकरा जहर खा जाये के चाहीं····जी के का करी ई हरामजादी····हे भगवान एकरा के उठा ल········तीनू कुल तरि जाई।'

आ माई खाली गरिआइए के दिदिआ के ना छोड़ि दीहें, बलुक उनुका के जादा दुख तकलीफ देबे लगिहें। दिन भर उनुका के लउँड़ी-दाई अस खटइहें। छोटो गलती हो गइला प एक हाथे झोंटा धइके चटकनन पीटि दीहें। बाबूजी आ भइआ से रोज उनुकर सिकाइत करिहें। अब हमरा एकदम साफ बुझाता कि ओह घरीं माई दिदिआ के दुख-तकलीफ देके, मारपीट आ अपमान कइके उनुका के फाँसी लगा जाय खातिर चाहे जहर खाके मरि जाये खातिर सतावत रही। दिदिआ अचानक कइसे मरि गइली, ई बात गाँव-घर में केहू नइखे जानत। बाबूजी आ भइआ त सँउसे गाँव में हाला मचा देले बाड़न जा कि राति में ओकरा पेट में एकाएक जोर के सूल उठल आ भोर होत-होत ऊ मरि गइलि। साइत दीपितो आ बिनोदो ईहे जानत बाड़न सँ, बाकी असल बात हम जानत बानीं। दिदिआ माहुर खा के मरल बाड़ी।

असल में बात ई भइल रहे कि बहुत दउरला-धुपला प दिदिआ के सादी एक जगे तय हो गइल रहे। लइका मैट्रिक पास रहे आ टिचर्स ट्रेनिंग करत रहे। ओइसे त लइका पाँच भाई रहे बाकी धरतिओ बीस बिगहा रहहिस। सात हजार नगद में लइका के बाप राजी हो गइल रहे। लइका के भउजाई आके दिदिआ के देखि गइल रही। दिदिआ उनुका पसंद आ गइली। ऊ दिदिआ के सोना के अँगुठी आ साड़ी दे के चलि गइली। ओह दिन दिदिआ के खुशी के कवनो ठेकाना ना रहे। हम जिनिगी में पहिलका बेरि दिदिआ के खुस होखत देखले रहीं। माई भइआ आ बाबूओजी खुस रहन। बाकी ई खुसी खाली एके दिन ले रहल। दोसरके दिन से बाबुजी आ भइआ सादी के हिसाब बइठावे लगलन जा। सात हजार नगद के अलावे एह महँगी में बरियाति के खिआवे-पिआवे आ लइकी के दान-दहेज देबे में तीनि हजार से कम के हिसाब ना बइठत रहे। एकर मतलब कि सात आ तीन—दस हजार के गोड़ रहे। अब एह पइसा के इंतजाम जलदिए करे के रहे।

एहिजा ई बात हम साफ कइ दिहल चाहत बानीं कि हमरा परिवार के नाँव प कुल्हि नौ बिगहा धरती बा। आठ बिगहा त ऊसर टाँड़ ह, जवना में खाली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धाने के फसल होखेला, बाकी पुलिआ के भीरी एक बिगहा मटिगर ह। बाबूजी के कहनाम रहे कि पुलिएवाला जमीन बेंचि देल जाय। दस हजार में बिका जाई। बाकी भइआ के कहनाम रहे कि पुलिआवाला जमीन ना बिकाई। टँड़िए में से पाँच बिगहा रेहन कइ देल जाय। एमें बाबूजी के कहनाम रहे कि आखिर रेहन के छोड़ाई ? कवनो बाहरी आमदनी त बा ना। एही से ऊ पुलिआवाला जमीन बेंचे प उतारू हो गइले। हमरो बाबूजी के बात नीक लागल; बाकी भइआ काहे के मानसु। ऊ बीच में अड़ंगा डालि दिहले।

आ माई ! ऊ त पहिलहूँ से हजार गुना अधिका दिदिआ के दुख-तकलीफ देवे लागलि। हमरा नीकेतरे इआद बा, ओह समे पुलिआ आ टाँड़आवाला खेत के लेके खूब तोर-मोर होखे आ एने माई खीसी दिदिआ के खूब गरिआवे। जहाँ बिआह के नाँव प दिदिआ के चेहरा से खुशी टपकल चाहत रहे. उहाँ उनुकर मुखड़ा पीअर उदास आ लटकल रहत रहे। रोज राति में उनुका रोअला आ सुबुकला के आवाज सुनाई पड़त रहे।

एक दिन बाबूजी पुलिआवाला खेत के बातो एक आदिमी से पाका कइ देले। बाकी ओही दिन से भइआ खटवास ले लेले। खाइल-पिअल छोड़ि के उपास रहे लगलन आ माई मे कहि देलन कि पुलिअवाला जमीन बिकाते घर छोड़ि देबि।

भइआ का एह बात से सँउसे घर में तहलका मचि गइल। ओह घरी दिदिआ के हालत अजबे लागत रहे। एकदम डेराइल, सहमल आ काँपत ! केहू से आँखि मिलावे के हिम्मत उनुका अन्दर ना रहि गइल रहे। ऊ सभ बात समुझत रही। जानत रही कि ई सभ हमरे कारन होता।

आ एकरा ठीक तीनिये दिन के बाद माई के लाख झकझोरला प दिदिआ ना जगली। ऊ मरि गइल रही। बिछवना पर उनुकर लास पड़ल रहे। उनुकर देंहि आ आँखि के रंग कुछ झांवर हो गइल रहे। हमरा से ढेर देरी तक उनुका के देखल ना गइल। हम ओहिजा से हटि गइलीं आ दउरि के अँगना के दिअरखा के पास गइलीं, जहवाँ एलड्रीन के सीसी धरात रहे। ई देखि के हमरा कठेया मारि देलसि कि एलड्रीन के सीसी खाली हो गइल रहे। हम चिचिआते बोललीं—'दिदिआ एलड्रीन पी गइल बाड़ी !'

बाकी बाबूजी आ भइआ हमार मुँह बन कइ देले जा। भइआ कहले कि एलड्रीन त काल्हुए हम खेत में छिरिकि आइल रहीं। बाबुओजी भइआ के बात में हुँकारी भरले। हम कुछ ना बोललीं। बाकी हमी जानत रहीं, भइआ त काल्हु दिन भर खँड़ी में सूतल रहन। खैर''' जवन भइल, तवन भइल। दिदिआ त अब लवटि के अइहें ना। बाकी अब हमरा चुप ना रहे के चाहीं, काहे कि दिदिआ के रास्ता से जाये खातिर दीपिती अबहीं बड़ले बिआ। समे रहते हमरा दीपिती के बचा लेवे के होई।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सारँगा

पाण्डेय सुरेन्द्र

पिरीत राम के गला में बड़ा लोच रहे। जब सारंगा सदाविरिज के गीत गावस त मेहरारुअन के आंख से लोर के पवनार बह चले। मेहरारू बड़ा मानसन पिरीत राम के। दिन भर के मजदूरी के बाद पिरीत राम सारंगा सदाविरिज गावस त सबकर थकान उतर जाय जइसे। खेतो में सोहनी करत में मेहरारू उनका से निहोरा करसन आ पिरीत राम सारंगा सदाबिरिज के कथा के कवनो छोर ध लेस। एही गीत का चलते लोचनी से पिरीत राम के पिरीत हो गइल। बाकिर लोचनी के लइकाइयें में बिआह हो गइल रहे आ अब जब ऊ जवान हो गइल त ओकर गवना के दिन धरा गइल रहे। लोचनी पिरीत राम से बोलल जे—"तू हमरा ससुरा अइह पिरीत।" आ पिरीत राम करेजा पर पत्थर ध के लोचनी के डोला के के देखत रह गइले। उनकर करेजा खँखोरत रह गइल। लोचनी के ससुरा गइला के बाद उनका से गांव में ना रहल गइल त ऊ कलकत्ता चल देहले।

कलकत्ता में पिरीत राम बहुत भटकले। कबहीं कवनों मिल में मजदूरी मिलल, कबहीं ठेला खिचले, कबहीं सतुआ-भूंजा के दोकान कइले बाकिर कतहीं जम ना पवले। बरिसन बीत गइल बाकिर जइसे सदाविरिज के चित्त से सारंगा ना उतरल रहली ओसही पिरीत राम के चित्त से लोचनी ना उतरल। लोचनी के इयाद जस के तस बनल रहल। जब मन बड़ा छपिटाय त ऊ सारंगा के गीत गावे के शुरू क देस। उनका कल्पना में लोचनी सूख के ओसहीं काँट हो गइल रहे जइसे सदाविरिज के इयाद में सारंगा हो गइल रहली। बाकिर पिरीत राम कलकत्ता से लोचनी के ससुरा जाके लोचनी से मिल सके के साहस ना बिटोर सकले। सोचते रह गइले।

पिरीत राम जवना बाड़ी में रहत रहले ओह में एगो नाच के गिरोह आके ठहरल। नाच रामपुर के ह ई जान के पिरीत राम के बड़ा बेचैनी बुझाइल। रामेपुर त लोचनी के ससुरा के गाँव ह। ऊ सोच-विचार क के नाच वालन के पास गइले जे लोचनी के समाचार पूछीं बाकिर कुछुओ पूछे के हिम्मत ना पड़ल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ बिना पुछले लौट अइले। जब मन बड़ा बेचैन भइल त अपना कोठरी में बइठ के सारंगा सदाबिरिज के गीत गावे लगले। नाच के गिरोहिया उनकर गावल सुनलस त ओकरा बड़ा अच्छा लागल। ऊ पिरीत राम के लगे जाके बइठल आ फेर उनका के गिरोह में आ जाये के नेवता देहलस। पिरीत राम सोच-विचार के ओह गिरोह में शामिल हो गइले। उनका बुझाइल जइसे एही नाच के गिरोह का साथे ऊ रामपुर पहुँच जइहें आ सारंगा अइसन उनका इन्तजारी में बइठल लोचनी उनका मिल जाई।

नाच गिरोह कलकत्ता में बहुत जगह नचलस आ खूब पइसा बिटोर के गाँवें लौटे लागल त पिरीतो राम मन में आसा बन्हले रामपुर चलले। उनका रास्ता में बुझाय जइसे जब ऊ रामपुर पहुंचिहें त लोचनी सारंगा अइसन आपन कनगुरिया अँगुरी मरल साँप के मुँह में देके मरला के बहाना कइले रही। आ जब ओकर अर्थी चली त एही बीचे कवनो उतजोग से ऊ ओकरा के पा जइहें।

बाकिर पिरीत राम जब रामपुर पहुँचले त उनका लोचनी कतहीं ना भेंटाइल। लोचनी भेंटाइत कहाँ से ऊ त ओही घर के भीतर रहे जवना दुआरी पर पिरीत राम के डेरा जमल रहे। जवना नाच के गिरोह में पिरीत राम रहले ओकर गिरोहिया लोचनी के मरद रहे! कत बेर पिरीत राम लोचनी के बारे में पूछे के सोचले बाकिर पूछ ना सकले। उनका हिम्मत ना पड़ल। नाच में रहला से पिरीत राम सारंगी बजावे लागल रहल। एक दिन जब बहुते मन अकुलाइल त सारंगी उठा के सारंगा गावे लगले। गीत खतम भइल त देखले कि घर के दुआरी से बाहर एगो मोट मेहरारू निकल के खड़ा बिआ आ ओकरा गोदी में एगो लइका बा। ऊ मेहरारू चिहाइल बोलल—"तूँ बनकटवा के पिरीत राम हउअ का हो?" पिरीत राम के देह झनझना गइल। ऊ मेहरारू अपना नाच के गिरोहिया मरद के पुकार के बोलल—"अरे! सुनतार! ई त हमरा नइहर के नू हउअन···पिरीत राम।"

पिरीत राम के बुझाइल जइसे सारंगा सदाबिरिज वाला मरलका साँप जिन्दा होके पिरीत राम के देह पर रेंग रहल बा। जब उनकर मन कुछ स्थिर भइल त ऊ अपना के एकदम अकेले पवले। खाली ओसारा में ऊ बइठल रहले गोदी में सारंगी पड़ल सिसिकत रहे आ हाथ के गज धीरे-धीरे घूमत रहे। उनका बुझाइल जइसे एह जनम में उनका अइसन सदाबिरिज के लोचनी अइसन सारंगा ना मिल सकली, मिलल खाली सारंगी। मन में बड़ा हूक उठल। पिरीत राम सारंगी लेले राजा भरथरी अइसन निकल पड़ले।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सपना टूट गइल

डा० बच्चन पाठक 'सलिल'

नागा लैन्ड के पहाड़ी प्रदेश। रोड ट्रान्सपोर्ट के कंट्रोलर होके अमर आइल रहले। दिन में सड़क बने। सैकड़न मजदूर डाइनामाइट से पहाड़ उड़ावे, कंकड़ बिछावे, रोलर घुमावे, आ तारकोल आदि फैलावे में लागत रहले। दर्जनन अफसर सगे-संगे देखभाल करसु। जीप या ट्रक के हड़बड़। साँझि खा सब कुछ शांत। एगो तार से घेरल बाड़ा के भीतर सब मजदूर आ अफसर लोग अपना-अपना खेमा के भीतर। गेट पर गन लेले सिपाहिन के पहरा। तबो हल्ला होखे कि हथियार लेके नागा अइलेस आ हतना अफसर आ हतना मजदूर के उठा ले गइलेसऽ आ हतना सामान में आगि लगा देलेस। कोहिमा एह जगे से तीस मिल दूर रहे।

दिसम्बर के महीना। आसमान में बदरी छपले रहे। जंगल से हवा आवे त बुझाय कि जाड़ हाड़ में समा गइल। अपना खेमा में अमर बइठल रहले। दिन भर के काम से ऊ परेशान रहसु। सात बजत रहे। ऊ एक कप कॉफी चाहत रहले बाकिर कैन्टीन जाए के हिम्मत ना रहे। सोचले अब एके हाला ९ बजे 'सपर' खाए जाइबि। ऊ आपन गोड़ बूटे पहिरले टेबुल प ध दिहले।

"हाकिम, तबियत ठीक बा नू ?" उनुकर आपन चपरासी नथुनी आके पूछले। नथुनी उनुके जवार के रहले। अमर उनुकर बहाली मजदूर से चपरासी में अपने कइले रहले। नथुनी संगे उनुका घरऊ रिश्ता हो गइल रहे। एह दूर देश में अमर के बुझाय कि नथुनी अपना घरे के सवांग होखसु।

"आव नथुनी, आव। कैन्टीन जाए के मन नइखे करत।" अमर जबाब दिहले।

"त एमें का मुश्किल बा। हम एहिजे बना दे तानी।" नथुनी उठले। स्टोव में तेल ना रहे। लालटेन से तेल उझिलि दिहले आ लगले स्टोब जरा के कॉफी बनावे।

एने एक महीना से कवनों चीट्ठी ना आइल हा। अमर चिन्तित रहले। दिन भर काम काज के मारे उनुको चिट्ठी लिखे के फुरसत ना मिले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

"नथुनी, कुछ सुनाव। मन नइखे लागत।"

"का सुनाईं हाकिम ?हमरा त फिलिम के कुछ अइवे ना करे। हम त खाली देहाती चीज जानीले।"

'आरे भाई, देहातिए सुनाव। हमरा फिलिम के चीज ना नीक लागे।"

आ वेसुरा ढंग से नथुनी लगले कूदि-कूदि के गावे—

"कइसन बनल कचनारी हो सामलाल, कइसन बनल कचनारी।
चिउराकहे हम सबसे बड़कवा, बभनन से जीव हारी।
सानि-सूनि जब पेट में धइले, ऊपरसेमांगे सोहारी।
हो सामलाल-कइसन बनल कचनारी।"

अमर सुनत-सुनत हँसे लगले आ हँसी थम्हइवे ना करे। उनुकर कुल्हि थकइनी बुझाइल कि उतरि गइल।

"मे आइ कम इन सर ?" कहत आ विना कवनो जवाब के इन्तजार कके शिप्रा भीतरी आ गइली। उनुका अइला से नथुनी भी चुप हो गइले। ऊ अब कॉफी बना छानत रहले। शिप्रा लेडी डाक्टर रहली। अमर के अतना हंसत देखत चिहा गइली। अब शिप्रा नथुनी के जाए के इशारा कइली आ लगली कॉफी छाने।

शिप्रा के पूरा नाम रहे शिप्रा बाग्ची। कलकत्ता से एम० बी० बी० एस कके केन्द्रीय सरकार के सेवा में ऊ आइल रहली। एह घरी ऊ नागालैन्ड के एही कंप में काम करत रहली।

"कॉफी पियत पियत अमर कहले मिस बाग्ची, तूं सोचत होइबू कि ई आदमी पागल बा, जवन बिना मतलब के हंसत जाता। आज नथुनी एगो अइसन गाना सुनवलेहा कि हमार हसी थम्हाते नइखे।"

"हमरा आज मालूम भइल हा कि लेफ्टिनेंट अमर के संगीतो से सवख हऽ।"

"अरे भाई, त तूं का जानत रहलूहा कि हम बिना सींग पोंछ के जानवर हईं। जाने लू नू कि जेकरा संगीत से सवख ना होखे, ओकरा के इहे विशेषन पुरनिया लोग देले बा।"

'आज तक तोहरा के कबो क्लब में हम एह सवख के पूरा करत ना देखलीं।"

"फोकटिया गीत हमरा पसन ना पड़े ! आछे जाए द, एगो कहल करबू ?"

'का हऽ ?

'पहिले हँ कह त कहीं।"

'-अइसन ब्लैंक चेक हम ना देवि।" हंसत शिप्रा कहली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"अरे, भाई हम सीधा-साधा आदमी हईं। कवनो फ्रॉड ना।" अमर कहत-कहत शिप्रा के मुँह अपना तरहथी पर उठवले आ लगले उनुका आँखी में ताके।

लजात-लजात शिप्रा बोलली—'कह का कहनाम बा ?'

एगो गीत सुनाव। अनुरोध आ प्रेम भमल स्वर में अमर निहोरा कइले। शिप्रा गद्-गद् हो गइली। उनुका आजु ले कवनों अइसन मौका ना मिलल रहे कि अमर कबो चिरउरी कइले होखसु। ऊ एगो पुरान पदावली गावे लगली—

'मरन रे तुहुँ मोर श्याम समान।
मेघ बरन तुझ मेघ जटा-जूट
रक्त कमल कर-रक्त अधर पुट
तास विमोचन करुन कोर तव
मृत्यु अमृत करे दान; मरन रे......।

अमर मस्त हो गइले। खांटी बंगाली स्वर। सामने शरत् के सब से सुन्दर नाइका लेखा एगो तरुनी बइठल। दिसम्बर के सांझ, गाँव-घर से हजार मील दूर। अइसन जगे जहाँ जीवन आ मरन में सांचो थोरही फरक बा। शिप्रा के हाथ धके ऊ चूम लेले—''वेरी स्वीट शिप्रा ! हाउ नाइस !!"

थोड़े देर तकले ओइजा मौन रहे। अमर का अंगुठिया वार में शिप्रा आपन अँगुरी फिरावत कहली—'मिसेज के बहुत याद आवता का ?'

"हमरा अस बैचलर के ई सौभाग्य कहाँ ? हँ, घर-दुआर साथी-संघतिया एह अनजान देस में इयाद पड़तारे।" अमर कहने वाकिर बुझाइल, 'बैचलर' कहत खा उनुकर गरदन केहू दबावत होखे।

कॉफी के चुस्की लेत शिप्रा कहली—"जीवन भर बैचलर रहे के कसम खइले बाड़ का ?"

'ना अइसन बात नइखे।' अमर कहले।

'आ शिप्रा' तूँ कब अपना शादी के मिठाई खियावतारू ?"

आपन बड़-बड़ आँखि अमर के ओर उठाइ के शिप्रा देखली आ कहली—"हमआपन 'मैच' के खोजतानी।"

"देखीं ई भाग्य केकर होला ?" अमर लालसा भरल निगाह से शिप्रा के देखले।

शिप्रा कहली कि चल अब मेसे में खाना खा लेल जाय। आज कर्नल भाटिया के स्वागत में जलसो बा। स्मार्ट बन। एकदम एही उमीर में थाकल थाकल लागतार।" आ अतना कहि के हँस देली। अमर उनुकर गाल थपथपा देले आ सोचले—'कतना बड़ हमार तकदीर होइत, जदि शिप्रा हमार हो जइती।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

मेस में बूफे 'सामूहिक ढंग' के भोजन होत रहे। एगो बड़हन सूअर भूंजि के टेबूल पर एगो ट्रे में धइल रहे। कुल्हि अंग ओकर साबूत रहे। अउर सब खाद्य-पदार्थ ओहिजा रहे। सभ लोग पारा पारी अपना प्लेट में सब सामान निकलले जात रहे। अमर 'वेजिटेरियन' 'ना रहले। संस्कार वश सूअर के ओह हालत में देखि के उनुका बुझाय कि कय हो जाई।

खइला के बाद नाच के प्रोग्राम रहे। शराव के दौरा चलत रहे। अमर अबहीं तकले लाल परी से परहेज राखत रहले। ऊ देखले कि कर्नल शिप्रा के अपना हाथे एगो लाल गिलास दे रहल बाड़े आ शिप्रा 'थैंक्यू' कहिके अतना कृतज्ञ भाव से ले रहल बाड़ी जानुक उनुका के संजीवनी बूटी दियात होखे।

थोड़े देर में 'बॉल' होखे लागल। अमर सोचत रहले कि अगर शिप्रा उठसु त उहो एक-दू राउण्ड नचिहें। कतना मजा आई। त ले कर्नल भाटिया शिप्रा के हाथ ध लेले आ ऊ लोग लागल नाचे।

का जाने काहे उनुका बड़ा खीस वरल। शिप्रा उनुकर विवहिता ना रहली। बाकिर अमर बड़-बड़ सपना देखत रहले। शिप्रा के हाव भाव से ऊ बूझत रहले कि उनुका ऊपर ऊ जान देतारी। उनुका बुझाइल कि ऊ सपना देखत रहलेहा जवन टूटि गइल। आ धीरे से उठि के अपना खेमा में चलि गइले। टेवुल पर दू-तीन गो चिट्ठी पड़ल रहे। ऊ आज के डाको ना देखले रहले। लगले उलटे। एगो अन्तरदेशीय पत्र मेहररूई लिखावट में आइल रहे। अमर पढ़े लगले—

"प्रान नाथ,

रउरा हमरा के बिसरि गइलीं। हमरा से जवन कसूर भइल होखे छेमा करबि। सुनलींहा कि जहंवा रउरा बानी, नागा आदमी के उठा ले जातारेस। मन घबड़ाइल बा। हम भगवती जी के चुनरी आ कहार भखले बानी कि रउरा देहे-जांगर नीके रहीं। आपन बदली करा घालीं। थोड़ा लिखना बहुत समझना।

राउर दासी—जानकी।"

अमर बिस्तर पर गिर पड़ले। अब उनुका बुझाइल कि ऊ कतना बड़ भाग्यवान बाड़े।

☐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अलबम

श्री ऋषीश्वर

सुरुआत कवनो विसेष बात से ना भइल, बिल्कुल साधारन ढंग से । छुट्टी के दिन रहे, नहाइल-धोवल फुरसत से करे के सोचि के हम कुछ पुरान चीजुन के झारि-पोंछि के जतन से सइहारे लगलीं । एमें कुछ पुरान किताब, फाइल आ हमार एके गो मनपसन काम फोटो खिचउवला (फोटोग्राफी) के कई गो अलबम रहे जेसे हमरा खास लगाव रहे । महीना दू महीना पर हम ए कुल्हिन के जरूर एक बेर सइहार दीं ; ओह दिन किताब आ फाइल त हम झारि-पोंछि के पुरनकी जगही पर ध देहलीं. बाकिर अबेर होत रहे एसे अलबम अबहिन ओसहीं भुइयाँ परल रहि गइलन स । सोचलीं पहिले नहा-खा के निपटि लीं फेरु मजे से दुन् पुरानी फोटो देखि देखि पुरनका दिन इयाद कइल जाई । एसे अलबम ओसहीं छोड़ि के हम गुसलखाना में नहाए चलि गइलीं । अबहिन नहाते रहलीं कि बहरा से जहीर के दमकति बोली हमरा कान में पड़ल ।

—'का हो सुरेस, कहवाँ लुकाइल बाड़ ? आजु भउजी के छुट्टी कके तुहीं रसोई बनावताड़ का ?'

नहाते-नहाते हम जवाब देहलीं—'के ह, जहीर !. बइठ भाई, बस एक मिनट में आवतानी । बस अब नहा भइल बानी ।'

जल्दीबाजी में हम गमछा लपेटलहीं कमरा में आ गइलीं । देखीं त ए बीचे जहीर साहब इतमीनान से एगो अलबम ठेहुना पर धइले कुरसी पर बइठल धियान से एक टक फोटू देखत जाताड़ें । फोटुन में एतना भुलाइल कि हमरा बुझाइल जे बेकारे हम दउरके भागल अइलीं हँ । उ एगो पूरा अलबम देखि भलें त ओके ध के दोसरका उठा लिहलें । उठावते बोललें ।

—'इयार बड़ा मजिगर फोटो बाड़न स, पहिले कबों ना खवल ?'

तनि हमार लजकोकुर सुभाव ह । एसे हम हरमेसा अपने परचार से लमहीं रहत अइल बानी । एही मारे बरिसन से छूटल ए महँगि 'हाबी' के चरचा हम अपना कवनो नया-पुरान सँघतियन से ना करीं । (हँ ई बाति दोसर बा कि कमरा में फोटोकमरा लटकल देखि के केहू खूदे हमरा पाछे लागि जा) । जहीर से हमार जान पहचान बहुत पुरानो ना रहे । तबो हमनीं का खब हिल-मिल गइल रहनी जां । कबो-कबो एक-दूसरा कीहाँ अइबो-जइबो करीजां । जब ना सूझल त हम ओसहीं एगो जवाब ठोंक दिहलीं ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—'फेंकल-पवारल पड़ल रहल ह, कवों खेआले ना आइल ना त जरूर देखवतीं, एमें का बा ! आजु सोचनी हँ तनि झारि-झूरि दीं।'

जहीर दोसरकाँ अलबम में अइसन भोराइल रहलें कि जइसे फोनोग्राफ अइसन हम बड़बड़ा गइल होखीं, सुनवे ना कइलन। जब दोसरका अलबम देखला क बाद तिसरको के नम्मर आइल तबले हम कुरता-पयजामा पहिर लेहलीं। फुरसत के साँस लेके लगहीं कुरसी खींच के समना बइठ गइलीं।

'ढेर दिन पर लउकल ह हो, कहीं बहरा गइल रहल ह का ? आ कि खूब लिखाई चलि रहल बा ?'

तनि रुक के हमरा ओर नजरि उठावत जहीर बोललें—'लिखाई-उखाई कुछ नइखे चलत, बस आजु काल ठंढाइल बानी। बहुत लिख चुकलीं ! अब तनी आराम करे के मन करता। जइसे-तइसे ई बात कह के ऊ फेरु तिसरका अलबम के तसवीरन में उलझ गइलन। ए बीचे हमार दिमाग उनकर लिखाई रुकला के कारन सोचे लागल।........जहीर एगो अच्छा लेखक हवें। जब लिखेलें त खूब लिखेलें। उनकर छूरी नियर चोख कहानी कुल अदबदा के सरगवासी 'मण्टो' के इयाद दिया देलीं। उनहीं अइसन जमाना के चाल में चाल मिलावत जहीर डेगे-डेगे आगे बढ़त जाताड़े बेथाकल, ताजा आ अपना पूरा रफ्तार के साथ। कुल रचना फरलांग से मील के पत्थर बनत आपन निसान छोड़त जाताड़ीसन।...... हम ई सोचते रहलीं कि जहीर चिल्ला पड़लें।

—'अरे ! कमाल हो गइल, ई फोटो तोहके कहाँ से मिलल ह ?'

हमरे विचारन के एगो झटका लागल—'कवन ?'

—'आरे इहे, ई बुरकावाला ग्रूप।'

हम अलबम उनका हाथ से लिहलीं त हंसी आ गइल, पुछनीं।

—'बुरकावाला त कवनो फोटउवे नइखे, कुल्हानी के मुँह उघार बा।'

—'हँ-हँ चेहरा त परदा के हटला से न लउकता, बुरका तवो एँड़ी से मूँड़ी ले बा।'

—हँ ई बात जरूर बा। बुरका बा बाकिर परदा हटल बा।.......भाई ए फोटू के बड़ा लमहर खिस्सा बा......छोड़.......समझि ल कवनोगाँ मिलि गइल।'

'आमाँ यार, बुझउवल मति बुझाव। साफ साफ बताव ई तोहके कहवाँ से मिलल बा ?'

'काहें ? का ई लोग तहरे जानकारी में के ह ?'

—'ना-ना ई बात नइखे, बाकी तूँ बताव ना कि ई तोहके मिलल कहाँ से ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—'भाई, एकरा खातिर धंटन लागि जाई।''''''अच्छा चल ले तोहके थोरके में आजु एगो अइसन वात सुनावतानी जवना पर तूँ एगो बढ़ियाँ कहानी लिख सके ल।'''बाकिर बताइब तबे जब तूँ जवान द कि एकरा पर तूँ कहानी जरूर लिखब। अच्छा पहिले ई बताव का पीअब ठंढा कि गरम?'

'मन त अवले गरमे पीये के रहल ह बाकिर अब ओसे काम ना चली, कुछ ठंढे मंगाव।'

उनके ए बात से हम अचम्हा में पड़ गइनी। देखीं त जहीर के लिलार पर ए बसन्ती फगुनहटो में पसीना के बुन्नी चमकति रहलि। अचकचा के हम पुछलीं।

'का बाति ह हो? वड़ा असर भइल बा ए फोटो के का?'

'अब बात छोड़ यार, बताव ना इ फोटो तोहके कइसे मिलल? ऊ एकदम जरूर लिखब।'

हम बतावल सुरू कइलीं—

'''बहुत पुरान बाति हो गइल, साइत अब से बारे-तेरे बरिस पहिले के''' ।' बारे-तेरे बरिस के नाँव लेते हमरे समना ऊ मनभावन रील चले लागलि जवना के हम अपना जिनिगीं के मधु आ नौटंकी नियर घटना मानेलीं।

'''ओ समे हम उत्तर प्रदेस में एगो हाइडिल प्रोजेक्ट पर काम करत रहनीं। सारदा पनबिजलीघर के नाँव से मसहूर ई पीलीभीत टनकपुर छोटी लाइन के एगो छोटहन रेलवे टीसन लोहियाहेड से करीब अढ़ाई कोस लामे जंगल के बीच में बा। अब त ख़ैर उहाँ अच्छा बसगित हो गइल होई बाकिर ओ समे चारू ओर से जंगल से घिरल ई बिजलीघर बड़ा तेजी से बनत रहे। दिन-रात माटी काटे आ ढोवेवाली भारी-भारी मसीनन, क्रेनन आ बगल से बहेवाली सारदा नहर के ऊँचाई से झरना जइसन तिरत पानी के मिलल-जुलल हल्ला आ जगहि-जगहि वेल्डिग के नीलही रोसनी क चमके उहाँ के मनुसाइल रहल। सन ५४ में हम उहाँ एगो इन्जियरी आफिस में का करत रहलीं। अकेले रहनी, सादी-बिआह अबहिन भइल ना रहे एसे कवनो बिसेष जिमेदारी ना रहल। पहाड़ के तराई के खुसनुमा जंगली इलाका आ हमरा जइसन घुमक्कड़ी तबियत के दू-चार दोसतन के संघति अउरुओ सोना पर सोहागा के काम कइलसि''''''।' रुक के हम एगो सिगरेट धरवनीं आ दोसरका जहीर के देके आगे कहल सुरू कइनीं।

'''अकसर छुट्टियन के दिन हमनी का चार-छव साथी पिकनिक जइसन पोरोगराम बनाके बीच जंगल में कवनो ओर खूब लामे निकल जाइल करींजा। साँझिखान लवटत बेर एने सूरज बूड़त रहल होखे आ उनकर लाल किरनि नहर ओह पार के पेड़न के नवकी धानी पतइन पर कुछ अइसन अकस डालें कि लागे जे नहर ओ पार के किनारे-किनारे के कुछ पेंड़ आ झाड़-झंखाड़ नीचा से ऊपर ले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मधिमाह लाल फूलन सें लदाइल होखें। उनकर ई गुलाबी छाहीं जब नहर के पानी में झिलमिला त ल गाई में आवा नहर के पानी लहरान-गुलाबी हो जा। ई अद्भुत लुभावेवाला सृष्टि के लीग देखत हमनी का नहर के किनारा धइले कोसन चलि आइल करींजा ···।'साइत तूँ उबियात होखब कि कहाँ से पुरान खोलि दिहले। अरे, तूँ त सिगरेटवो नाहीं पिअल, धइले-धइल पुरहर सुनुगि गइल। का बात ह? तोहार धियान साइत कहीं अउर वा?'

'ना ई बात नइखे, हम खूब धेयान से सुनतानी।' जहीर झुठलवलन।

हम बोलनी —

'बुझाता हम असली बात से लामे होत जातानी, बाकिर तूँ ना बुझल, एमें हमार कवनो दोस नइखे। असल में ऊ समइये रहे कि हमरा ऊ सुन्नर सृष्टि भुलाते नइखे। जादू अइसन कपारे चढ़ि ग ल वा।'

····'खैर, मतलब ई कि बड़ा मस्ती के दिन रहे। फोटवो खींचे के रवव हमरा उहँवे से सुरु भइल। झटसे एगो केमरा खरीद लेइनी। महीना में एक ब वेर हमनी के लोहिया हेड से दू-तीन टीसन आगे (नेपाल के सिवान से लागल भारत के आखरी टीसन) टनकपुर तक चलि जाईंजा। उहाँ से हिमाले के कुहासा अइसन धुँआइल तनी मधिम इस्लेटी रंग के फइलाव में उगत पहाड़न के चोटी एकदम साफ लउके। साँय···साँय···साँय····हहर···हहर, मैदान में चलति तेज बेयारि के सीटी अइसन आवाज मन में एगो अजबे डर आ ओमें मिलल एगो अनजान खुमारियो भरि दे। हम ओने जाईं त आपन फोटो केमरा ले गइल ना भुलाईं···।' एहीं बीचे अनुराधा (हमार सिरीमतीजी) हमन खातिर चाय के ट्रे लिहले कमरा में ढुकली। ट्रे देखत हम कहनीं—

··· 'आरे, चाय काहे खातिर ले अइलू ह, जहीर साहब त कुछ ठंढा पीहें··· माफ करिह भाई जहीर अपनी गपबाजी के आगे हम इनके बतावही के भुला गइनी हँ।'

अनू पुछली —'काहें, का बात ह? दिन त ओसहीं ठंढा बा। अच्छा रुखीं चाय रहे दीं हम सरवत बना ले आवतानी।' आ भीतर चलि गइली।

हमरे लमहर पुरान से उबिअइलो पर ऊ अजबे उत्सुकता से हमरा पर टकटकी बन्हले ओ घटना के इंतजारी में बेचैन रहलन। चाय के बारे में हम अनू से का कहनीं आ ऊ का जबाब देहली ओने का ओर उनकर धियाने ना रहे। ऊत सिरिफ हमरे मुँह का ओर देखत जात रहलें कि कब बात सुरू होखो। तबले भीतर से लवटि के अनू उनकरा हाथ में सरबत के गिलास थम्हा के देहली आ जहीर साहब बिना कुछ देखले-बोलले, गुमसुम- गटागट गिलास खाली क के ओके अनू का हाथ में लवटा देहले। हम आराम से चाय के एगो चुस्की देहलीं आ फेर इयादन के देव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में पहुँच गइलीं।....'हँ त हम कहत रहनी ह....कादो...अच्छा ले मन परि गइल। त एही तरे फगुनहट त उतरे लागल। हमनी छव-सात आदमी एक वेर पोरोगराम बनावलीं जाँ कि अगीला अतवार के बनवसा चलल जा। उहाँ नहरि जहाँ से निकलिल वा ओइजुओ चलल जाई ओइजू के वड़का पुल देखल जाई आ लवटानि वेर थरुहन के कवनो गाँव महें लवटत ओ सभन के रहन-सहन तनी देखल जाई। दू चार गो फोटुओ खींचल जाई। पोरोगराम पास हो गइल आ एकरा मुताबिक अगिला अतवार के ओने चलि देहलीं जाँ।'

'....बनवसा टीसन पर उतरि के ई तय भइल कि नहर के किनार धइले आगे पुल ले चलल जा आ हमनी का आगे बढे लगनी जाँ। वड़ा सुन्नर दिन रहे दहिने ओर बदमास लड़िका अइसन झरना से गिर के छलाँग लगावत, कबो दुलकी चाल मे बढ़त नहर वहत चलि आवति रहे। बाँवा बान्ह के नीचे सड़क के दुनू ओर परास के पेड़न के लमहर लाइन नीचे से ऊपर ले एँगा सुरुख अँगार अइसन धधकत लाल फूलन से लदलि रहे कि पत्ता त खैर रहवे ना कइलनस डाढ़ि-डाढ़ि ले फूलन से तोपा गइल रहल। बान्ह के ऊँचास से लाल पट्टी—जइसे खूब चाकर रिबन होखे—लउकति सड़क के पीछे दूर-दूर ले फइलल पहाड़ी के गोड़ चूमत हरियरी आ ओही में धुपछँहियाँ अइसन घाम में चमकत उज्जर आ जमुनी रंग में मिलल इस्लेटी रंग के पहाड़न के चोटीयन के वेहिसाव फइलाव बुझा जइसे धरती के आसमान से मिलला के रोके खातिर ई बीचे में खड़ा वा। तवना पर सुरुज भगवान के अलगे आँख मिचउनी। घरी में दूवर पिअराइल घाम आ घरीए में छाहें-छाहें। मौसम आ सृष्टि के सुन्नर ई दुनू मिलि के बुझा जे कवनो परपंच रचि के दुनिया के खेल देखावत होखे। बड़ा सुन्नर आ हुलसावे वाला समे हो गइल रहे। हमनी के बान्ह के नीचे वाली सड़क पर ना चलिके बान्ह के ऊपरे-ऊपरे चलत रहनी जाँ। हमन में एगो सरदारजी रहलन। नाँवे रहे सुरजीत सिंह। अचक्के में उनकर नजरि बान्ह से नीचे सड़कि पर गइल आ ऊ ठमकि गइलें। एक फरलांग दूर से आवत कुछ बुरकन के देखा के ऊ कहलन।

'ओय! ओहर देख; के आवत बा?'

सभकर नजरि एके ओर घूमि गइल। सभे देखल दूगो बुरकावाली चलल आवत रहली। उनके साथे एगो दस-वारह साल के लइकियो रहे। सरदारजी के पता ना सूझल कि हमरे पीठ पर एगो मजिगर धमक्का जमावत बोललें।

हे सुरेस! हमरा में बाजी लागि जा। तूँ वड़ा अपना के फोटोग्राफर बनत बाड़। जदि तूँ हे बुरकावालिन का खुलल मुँह के फोटो खींच लियाव त हम तहरा के वीस रुपया देइब।....बाकिर रुपया हम तवे देइबि जब फोटो देखि लेइब। जदि तूँ फोटो ना खींच पवल त इहे रकम तोहरा हमरा के देवे के परी।'

'वाह सरदारजी, बीस रुपया अकेले सुरेस के काहे देब! ओही के एगो बढ़ियाँ पार्टी होई।' हमरे में से एक आदमी बोलल।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'हमरा कवन एतराज बा बादसाहो ! रुपया चाहे सुरेस लेस भा पार्टी क देंउ'—सरदार जी कहले — हमरा त दूनो हालत में रुपया देवही के परी।'

'ठीक बा, हम पार्टी क देब। बाकिर सरदारजी, फेर मुकरिह मत, बात पक्का कर।' हमरो ताव आ गइल —'हमरा मंजूर बा।'

'पक्का-पक्की कहत बानी। हेतना लोग का सोझा एह बात के दोहरावत बानी कि फोटो देखला का बाद जदि हम बीस रुपया ना देईं त सरदार ना' आ ई कहि के ऊ जोस में दाढ़ी मोंछि पर हाथ फेरे लगले।

'''ओतनी घरी हमरा में पता नाहीं कहाँ से एतना जोस आ गइल—'सरदार से बीस रुपया लेके छोड़ब, उहो का इयाद करी कि कवनो पुरविहा से पाला पड़ल ह।' इहे सोचि के ओ सब के साथ छोड़िके आपन मतलब पूरा करे खातिर सड़क तक पहुँचे बदे हम बान्ह छोड़ि के ढलान पर उतरे लगलीं। उतरत-उतरत, बिना जान-पहचान के, उहो बुरकावाली मेहरारुन के फोटो खींचे खातिर मने मन कवनो उपाइ सोचे लगलीं। उनका नगीच पहुँचत-पहुँचत हमार दिमाग इहे सोचलस कि आपन बात साँच-साँच बिनती से कहि दीं। फेरु ऊ लोग चाहे त फोटो खींचे दे भा मति खींचे दे। खैर ओ समे त हम अपना पूरा विसवास के साथ उनकरा आगे जाके खड़ा हो गइलीं। उहो लोग ठमकि के रुकि गइल। बुरकन के भीतर चुलबुलाइल लोग। साफ रहल कि ई सब ओ लोग के बेचइनी के मारे भइल। हम साफ आ सीधा ढंग से आपन बात कहि दिहलीं।

'रउवाँ सभे हमके ए तरे राह चलत रोकत देखिके सोचत होखब कि हम बदमास हईं। बाकिर हम माफी चाहतानी कि ई बात नइखे। बात ई बा कि हमार ऊ साथी लोग (इसारा क के) हमसे एगो सरत बदि देले बा। ऊ लोग सरत ई बदले बा कि जो हम रउवाँ लोग के मुँह उघार फोटो खींच ले आइब त हमके बीस गो रुपया दी लोग, नाहीं त हमके बीस रुपया देवे के पड़ी। एकरा साथे हमरे इजति आ हारो-जीत के सवाल बा जवन कि अब रउवाँ सभ की मेहरबानी पर टिकल बा।'''जो रउवा लोग आपन पता बता देब त हम फोटू ओइजुग चहुँपा देब।'

'''''ए बीचे ऊ सब चुपचाप खड़ा रहलीं। उनकरा में से दूसरकी पहिलकी के बुरका पकड़ि के खींचे लागलि। एकर दूनो मतलब हो सकत रहे—ए मामिला से कवनोगाँ खसकि जाए के भा फोटू खिचावे खातिर मनावे के। साथे के लइकने चुप-चाप दूनो के बीच में खड़ा टुकुर-टुकुर अचम्हा से हमार मुँह देखति रहे। बात करते-करत हम अपने कान्ह पर से केमरा उतार लेहलीं आ ओ लोगन के मंजूरी जोहत फोकस मिलावे लगलीं। छन भर ले एक दूसरा के बुरका खिचला के बादो जब उनकर आपस में कवनो मौनी फइसला ना भइल त हमार उमेदि टूटे लागलि। बाकिर तबे ऊ लइकनियों सब काम आसान क देहलसि। अवले सब कुछ समझला के बाद ऊ फोटू

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खिंचावे खातिर मचलि गइल आ दुनू में से एगो के बुरका पकड़ि के झकझोरे लागलि।

'खिंचा ल न अम्न. फोटो। खोल मुँह।'

'....लइकनियाँ जब अउर मचले लागलि त आखिर आजिज आके झिझकि के ऊ अपना मुँह पर से परदा हटा देहली। परदा हटते हम त देखते रहि गइलीं। दस-बारह बरिस के लइकनी के महतारी के एतना रूप! एकदम बादर आ चान के सायराना सम्बन्ध नियर करिया बुरका के बीचे सोना अइसन चमकत आ संगमरमर अइसन चीकन मुसकात चेहरा के ऊ जोति अबहिन ले हमके इयाद बा। एमे कवनो सक ना रहल कि ऊ हमार विनती मानि गइली।

'....पहिलकी मेहर रू अब दोसरकी के बुरका पकड़ि के झटकारे लगली। दूसरकी बुरका के भीतरे से मूड़ी हिला-हिला के नाहीं करे लगली। बाकिर महतारी बेटी कवनोगाँ उनके राजी कइये लेहली आ आखिर में मजबूर होके उहो बेचारी आपन मुँह उघार देहली। हमार त आँखिए चउँन्हाँ गइल। साच कहतानी जहीर, ओइसन रूप हम आजु ले कहीं ना देखलीं। देखे खातिर त दुनिया में बहुत कुछ देखलीं बाकिर गोल संगमरमर के गढ़ल ऊ मुँह के गढ़नि आ ओहमे गड़लि ऊ बड़ बड़ पँवरति आ चलबिधर आँखिन के मतवाला रूप हम कहीं ना देखलीं। ऊ एगो अजबे छन रहे। कुछ देर खातिर हम सब किछु भुला गइलीं। जब हमरा होस पड़ल त झट से केमरा सँभरनी। बाकिर तब ले दोसर मुसकिल सुरू हो गइल। सुरुज महराज के धुपछहियाँ के खेल-फेरु चालू हो गइल। जब छन भर खातिर घाम भइल त झटे हम दू-तीन गो फोट... न के ओ लोगन के गुन गावत अपने स..तियन में आ मिललीं। फो..ो खींचे के जवन उत्सुकता हमरे मन में अबले रहल एकदम से बुता गइल आ अपने कामयाबी के खुसी के जगह एगो उदासी हमरे मन में भरत चलि गइल।'

'....सरदार त खैर हमार कामयाबी देखि के उदास होइये गइल रहले बाकिर हमरा में खुसी के जगह जब ऊ उदासी देखले त बड़ा अचरज से पूछलें।

'बादसाहो? फोटो त खींच लिअइल बाकिर अबले ... जहाँ कवन बात बतियावत रहल ह? लबटबो कइल त एकदम उदास—हेराइल-भुलाइल। बुझाता हमार बीस रुपया त ...रा के बड़ा मँहग पड़ल।'

हमके अब रीस आवत रहे। रोकत-रोकावत बोललीं—'सरदार, हमेसा मजाक नीक ना लागे। कबहीं त गम्भीर रहल कर।'

'अच्छा—पता ठेकाना त पूछ लेल ह न?'

'हँ, तूँ मिलब का। फोटउवो तूहीं दे अइह।' हमार रीसि अब आगि पकड़े लागलि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'नाराज का होत बाड़ काके। हम त एही तरे कहत रहलीं ह। फोटो चहुँपावे क बात तूँ जरूर कइले हो व आ ओकरा खातिर पता जानल जरूरी रहल ह।'

'हँ-हँ, एक बेर कहि न देहलीं कि पूछि लेले बानी आ देवहू जाइब। जो तोहरो जाए के होखे त बता देतानी—क्वार्टर न० २३ इहँवे 'हेड' पर- बस हो गइल न इन्क्वायरी, अब कुछ मत पुछिह।'

'...हमार बिगड़ल मिजाज देखके सरदार सकपका गइलन। सभे अब चुप-चाप चले लागल। एकरा बाद हमनी का ओसहीं घूमत घामत लवटि अइलीं जा। साँझि ले हमरा पर उदासी छवले रहे। ना जाने काहें बुरका के ऊ दुसरका चेहरा बेर-बेर आँखिन के आगे चमकि जा! मन टीसे लागे। बाकिर हमरे सँघतियन के ऊ फोटो देखे के भा ई समझ लीं कि सरदार से बीस रुपया लेके पार्टी उड़ावे के इच्छा अइसन जोर मरलस कि ओही दिने साँझ के कुछ अउरी उल्टा-सीधा फोटू खींच के हम रील पूरा कइनीं आ ओके धोवावे खातिर एक आदमी पीलीभीत भेजलीं। दोसरा दिने जवले ऊ लवट के ना आइल हमार कुल सँघतिया सेवाती के एगो बुन्नी खातिर आकास की ओर टकटकी लगवले रहले। अइला पर फोटू जब सभे देखल त दंग रहि गइल। धुपछहियाँ के खराब मौसम में भी ऊ फोटू कल एतना सुन्नर खिचाइल रहल कि सगरी प्रिन्ट साथी कुल हाऊ-हांऊ अपने में बाँटि लिहल आ हमरा हिस्सा में खाली निगेटिव पड़ल। फेर त सरदार रुपयो दिहले आ पार्टियो उड़ल। बाकिर ए बीचे हमके तनिको खुसी ना बुझाइल, बलुक पहिले जब हम फोटू देखनी त बड़ा धक्का लागल...।' त जनाब ई ह ए फोटो के कहानी।'

'फेर ओकरा बाद का भइल?' जहीर पूछलें। मोह भंग भइला पर असली हालत में आके जब हम जहीर की ओर देखलीं त उनकी कनपटी से गाल पर होत पसीना के एगो मोट हन लकारी गर्दन से होके धीरे-धीरे छाती का ओर सरकत रहे।

'ओकरा बाद का भइल?' जहीर फेर पूछलें।

'ओकरा बाद का भइल, कुछ ना।'

'हमार मतलब बा तूँ फेर फोटो देवे गइल कि ना?'

'ना, ओकरा बाद हम कबों ओ लोगन से ना मिललीं आ ना कबों बनबसा गइलीं।'

'काहें? तूँ त पतो जानत रहल।'

'हँ, बाकिर हम ए मारे ना गइलीं कि ओ लोगन खातिर कवनो परेसानी ना पयदा क दीं। ओह घरी ऊ लोग हमार बात राखि के हमरा पर बड़ा एहसान कइल लोग।'

एकबएक जहीर उठि गइलें—'अच्छा ले अब चलतानीं, बड़ा अबेर हो गइल।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—'काहें; जँचल ना। कुछ लिखब ना एपर ?'

—'ना, घटना त सचहूँ बड़ा दिलचस्प बा। जरूर लिखब आ फुरसत से लिखब। अच्छा सलाम। भौजी त भीतर बाड़ी उनहूँ के हमार सलाम कहि दीह। हमके तनी जल्दी बा।' कहत-कहत जहीर गोड़ से चप्पल सरिआवत मुड़ि के बिना देखल कमरा से बहरिया गइलें।

हम चुपचाप बइठले रहि गइलीं। इयाद के लहरि रहि-रहि के हमरा दिमाग के समुन्दर में उठत-गिरल रहल। बारह साल पहिले के भावुकता मन पर छपा गइल रहे। रहि-रहि के मन में एगो हिलोर उठे कि उनकर का भइल होई। ना जाने ऊ दुसरका मुखड़ा अब कहवाँ आ कइसनका हालत में होई ? अबले कई लइकन के महतारी हो गइल होइहें। पूरा गिरहस्ती के बोझा कपारे पर पड़ि गइल होई। जेकरी चिन्ता में उनका मुँह पर अनगिनत लेकारी खिंचा गइल होई। बे छल के साफ आँखिन के ऊ उज्जर कोआ अब पीअर-मटमइलाह हो गइल होइहें स आ आँखि कुछ भीतरी धँसि गइल होई। हम ई सब बकवास अबहिन सोचते रहलीं तब ले उनके खाए खातिर बोलावा आइल आ कुरसी पर से उठि के कुरता पर झरल सिगरेट के राखी झटकारी के हम भीतरी चलि गइनीं।

एकरा कुछ दिन बाद पहिले बेर जहीर एक दिन हजरतगंज में हमरा से कुछ दूर आगे जात लउकलें। कई बेर बोलवला पर जब ना सुनलें, बलुक एक नजरि पीछे देखियो के जब आगे बढ़े लगलें त हमसे ना रहाइल। उनकर रुसला अइसन बेहवार देखि के हमके अचरज आ दुख दूनो भइल कि देख जानि-बूझ के अनदेखी करताड़े। दउर के हम उनका लगे पहुँचनी आ खीझ के मारे पकड़ि के झकझोरि देहलीं। ठकुआ के ऊ ठाढ़ भ गइलें। हम करीब-करीब चिल्ला पड़लीं—

—वाह भाई जहीर, खूब ! कई बेर हाँक लगवली हँ। पहिले त सुनियो के ना रुकलह आ रूकवों कइलह अउर तेज भागे लगल ह, आखिर एकर कारन का ह ?'

—'कारन !...किछऊ ना।' उनकी मुँह पर हमसे मिलला के खुसी का जगह गहिर दुख आ घिरना के भाव साफ झलके लागल।

—'फेर काहें रुकल ना हव ? पहिले मिलत रहल ह त केतना भएवद्दी से...। जो हमसे कवनो गलती भइल होखे त माफी चाह तानी।'

ढेर देर बाद ऊ बोललें—'अइसन कवनो बात नइखे।' एने-ओने ताके लगलें —जइसे हम से आँख ना मिलावल चाहत होखे। हमार नजर उनके मुँह पर रहे आ उनकर सड़क ओह पार के मकानन पर टकरात हमसे बँचे के—जल्दी से जल्दी छुटकारा के रहता जोहे लागलि। उनकर ई अनबूझ बेबसी देख के हमरा दया आवे लागलि सोचनी का जाने का बात ह कि एके भीतरे-भीतरे घुन अइसन खातिया। उनकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाँहि खींचत हम कहनीं—'चल काफीहाउस में बइठि के फुरसत से बतिआवल जाई।'

घबड़ा के ऊ बोललें—'ना....ना हमके जल्दी बा। फेर कवों बइठल जाई।

—फेरु काहें ? आजु अइसन कवन जल्दी बा ? घर में सब ठीक -ठाक बा न ? भाभीजान एइजुवे नू बाड़ी ?'

'हँ...सब ठीके बा, पिछिला हफ्ता नइहर गइली।'

—'काहें, कवनो खास बात बा का ? तोहके त फेर बहुत तकलीफ होत होई ?'

—तकलीफ का होई।' फेरू तनी रुकि के कहलें—'पहिलहीं कवन बहुत ठीक रहल ह कि अब ठीक रही।' ओठ पर एगो फीका मुस्की फइल गइल।

जहीर अबले हमरे बात के लपेटा में आ गइल रहलें। धीरे-धीरे हम आगे बढ़े लगलीं। उहो साथे चले लगलें। अपने महमूली बातचीत का साथ हमनी का काफी-हाउस में घुसलीं जा। कोना का ओर एगो मेज देखि के ओहिजू बइठ गइलीं जा। दू कप काफी के आडर देके रहता के बात छोड़ि के हम दोसर परसंग पकड़ि लेहलीं।

'लिखल-पढ़ल कइसन चलता ?'

'ठीके चलता।' फेर ऊहे उदासी।

'हम ओह दिन जवन फोटूवाली बात सुनवलीं ओह पर कुछ लिखल कि ना ?'

'हँ...काफी कुछ लिखले-बानी, बस एक बेर देखि जाए के बा।'

'यार जहिर, कवनो तरे ओके पूरा कके काल्हि भेज द। हम अपने साप्ताहिक के एही अंक में ओके निकालि देइब।'

'काल्हि ! काल्हि त मुसकिल बा। खैर, हम पूरा कोसिस करब। अच्छा अब चलीं; एगो जरूरी काम बा।'

उठत बेर हम तगदिअवलीं—

'जो तूँ ना आ सक त रसीद का हाथे भेजि दीह।'

'रसीद से ?...अच्छा ठीक बा।'

काफी हाउस से बहरा आके हमनी का अलग गइनी जाँ। ऐ समे हम खूब-खुस रहलीं—अपना पर—अपना आस-पास के जगही पर आ जहिरो पर; बलुक कुछ देर पहिले हम उनके रूखर वेहवार से बड़ा खिसिया गइल रहलीं। हमार एगो पुरान महुआ अइसन मँहकत जानकारी आ इयाद आज जहीर का जरिए अब आपन असथान बना वे जात रहे।

दोसरा दिने सबेरहीं से उत्सुकता हमरे देहिं में आसन जमा लेहलसि। बेर बेर अपने छोटहन प्रेस के आफिस का बहरे हमार आँखि उठि-उठि जा, कवनो समे जहिर के परगट भइला के इन्तजार में। दुपहर ले इ हालि कुछ धीमा रहल। जस-जस घाम सरके हमार नजर चकपकात गइल। अब हमार ई हालि अपने आखिरी पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहुँचल. हम जहीर के छोट भाई रसीद के आवत देखलीं-करीब चार बजे। जइसन कि हम सोचले रहनी उनके हाथ में कहानी के कागज ना रहल।

आवते ऊ हमके सलाम कइलें आ हमरा कुछ पुछला के पहिलहीं थइली से एगो मोरल पुरजा निकाली के हाथे में थम्हा दिहलें।

भाई देहलें हँ।'

रसीद ठाढ़ रहलें। उनकरा सामने खड़े-खड़े हम ऊ पुरजा पढ़लीं आ पढ़ला के बाद ओके मेज पर दवा दिहलीं।

—'रसीद, तोहके हमरा साथे घरे ले चले के पड़ी, आव चलीं।'

उनके साथे लेके हम अइलीं। पुरनका बकसा में से अलबम निकललीं आ ओइमें मे बुरकावाला ग्रुप फोटो निकालि के एगो कागज में लपेटलीं आ रसीद के दे दिहलीं।

'उनके दे दीह।' ऊ जाए लगलें····'आ सुन, कहि दीह कि सबेरे ले कहानी जरूर भेज दीहें।'

बाकिर का जाने काहें हम अउर अगोर ना पवलीं। रसीद के गइला के करीब एके घंटा बाद हमसे ना रहाइल आ गोड़ अनपरासे घूमत-घामत जहीर का घर के ओर उठि गइल। दुआरी पर पहुँचि के हम धक् से रहि गइलीं। जवन कुछ देखलीं ओके उहाँ देखे के उमेदि हमरा सपनो में ना रहल। पहिलहूँ हम जहीर के संघे कई बेर उहाँ आइल रहलीं। बाकिर मुसलमानी रिवाज के मोताबिक उनका घर के केहू मेहरारू हमरा समना ना होखँसु। बाकिर आजु अनपरासे अनचितला में अइला से हम जवन कुछ देखलीं ओसे हमार माथा घूम गइल आ जब अहथिर भइल त जहीर के रुखराइल सोभाव आ कहानी ना भेजला के जगही फोटू मँगवला के कारन साफ लउके लागल। भीतर जाके देखीं त जहीर काल्हिए से बेमार बाड़े। ना त हमहीं कहानी खातिर कुछ कहलीं आ ना उहे फोटू मँगवला के सफाई दिहलें। दूनू जाना के मउनी आँखि एक दूसरा से आपन दुख-सुख खुदे कहि देहलसि। कुछ देर बिलमि के हम चलि अइलीं।

आ ओकरा ढेर दिन बाद ए कहानी के अब हम खुदे लिखतानी—अपने पहिली कहानी का रूप में। ओइसे एह में बहुत कुछ गलती होई। ई आजुओ काल्ह के ना कहा सके। काहें कि हमरा जानकारी में अपने मँजल कलम आ चतुराई से जेके जहीर लिख सकितें ओके अपने टूटल-फूटल भाषा में हमके खाली अपना निजी अनुभव आ मोह का सहारे लिखे पड़ता। भा साइत एक बात अउरी बा। ऊ ई कि जहीर जइसन हुसियार आ आजु-काल्हि के लेखक कइसे ए छोट बात के फेरा में पड़ि गइल। हो सकेला एकर सोरि कुछ अउर गहिरे होखे, जेके उकठावे खातिर तनी अउर गहिरे खोने के पड़े। □

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सब चलेला

मुक्तेश्वर नाथ सिन्हा

रउआ ना मानब त हमरा कहहीं के पड़ी। कहे के मन त नइखे करत। कुछो होखो, कइसनो होखो, हवे त आखिर अपने गाँव नु। टीसन से चालिस माइल दूर बाटे त ओसे का ? साल में चारे महीना एगो बस आवेला त का भइल ? बाकी आठ महीना गाँव के लोग गोड़े-गोड़े नदी-नाला टप के का बाहर ना जाला ? लिहीं, हम असल कीं बतिया छोड़ के लगली अपना गाँवे के बखान करे। असलकी बतिया जे वा से हम अपना होस में पहिल-पहिल देखनी। अब ई मन गमझ लीं कि हम अवहीं ठेघुनिये चलतानी। हम दोसरका होस का बारे में नु कहत बानी। जब ई होस आवेला तवे नु भोट गिरावे के मिलेला। साल भर पहिलहुं भोट भइल रहे। बाकी क.का कहले रले 'भगेलुआ, तें अबहीं होसगर नइखिस भइल। तोरा अवही भोट गिरावे के ना मिली।' अब रउये बताईं जेकरा खाये के मिलहीं के ना होखे उ चउका में ताक-झाँक के आपन मन पांच-छव किसिम के काहे करो। हमहुँ ठान लेहनी कि ओने ताकेब तक ना। जब काका-काकी आ भइया-भउजी जात रहे लोग भोट गिरावे तब हम दलानी में ढुक गइनी, किल्ली ठोक देहनी आ मुंह में चदर लपेट के चउकी पर पटा गइनी। केतनो उड़िस काटो बाकिर भगेलू टस-से-मस काहे के होखस। जवे अन्हार भइल तवे बाहर निकलनी।

अवकी नया मुखिआ चुनाये के रहलन। काका कहले-'भगेलुआ, अवकी तोरो भोट गिरावे के बाटे। तेहूँ अब होसगर भ गइले। मत पूछीं हमरा केतना खुशी भइल। रउआ अपना विआहो में ओतना खुशी ना भइल होखब। हम लगनी दिन गने। कबो-कबो गिनती भुला जाव। का कहीं जी, गिनतिये का मारे हम स्कूल से भगनी। सही गिनती का चलते माहटर साहेब एक दिन हमरा के रूई लेखा धून देहनी आ कहनी-'भगेलुआ तें गदहा के गदहे रह जइबे। कबो घोड़ा ना बनबे।' माहटर साहेब के ई बात हमरा ना बुझाइल बाकी हम फेर स्कूल कावर मुँह ना कइनी। हम फेर बहके लगनी। कको कहेले कि भगेलुआ बराबर वेलीख हो जाला।

गाँव में जेने जाईं ओने ईहे बतकही सुने में आवे। कोई पुरनका मुखिआजी के सराहे त कोई नया जवान मुखिआ चाहे। हमरा ई कुल्ह ना बुझाय। टुकुर-टुकुर ताकते रह जाईं। हमरा मन में त एकेगो बात मकई का भात अस खुदबुदात रहे कि कहिआ उ दिन आई आ हम भोट गिरायब। एक दिन दुपहरिआ में हम बगीचा कावर चल देनी। राहे में चमरटोली बाटे। चमरटोली का लगे चहुँपनी त हमार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आंख कटोरा अइसन खुलल के खुलले रह गइल। अइसन अजगुत बात देखनी कि रउआ कवनो जनम में ना देखले होखब। हमरा से कोई कहित कि 'भगेलुआ' जानतारे करूआ तेल दू रुपये सेर बिकाता त मान लेतीं, ई कहित कि बेटा का बिआह में अब केहू तिलक नइखे लेत, त इहो मान लेतीं, ई कहित कि अब कतहूँ कोई घूस नइखे लेत त जीव जांत के इहो मान लेतीं बाकी ई कहल ना मनतीं कि मुखिआजी चमरटोली में बइठल बाड़े। चमरन के देखिये के खिसी मुखिआ जी के आँख कपार पर चढ़ जाला आ लागेले मुँह से फेन उगिले। कइसे मनतीं? बिना गारी में सानल एको बातो ना कहले ओकनी से। बाकिर अपने आँख कइसे फोर लीं। आँख मलमल के देखनी। सनमुखे त बइठल रहस चटाई पर आ चमरटोली के कुल्ही मरद मेहरारु उनका आगा बइठल रहले स। तनी आउर आगा गइला पर बुझाइल कि मुखिआजी के त चोले बदल गइल बाटे। बुढ़वन के चाचा-भइआ कह-कह के हँस-हँस के समझावत-बुझावत रहस। हमार डेग आगे ना उठल। हम उहवें से लवटनी। दुअरा पर आके काका से कुल्ही कहनी त काका मुसकइले आ कहले कि भगेलुआ तें ना बुझबे ई कुल्ह। अच्छा बताव गिरगिट देखले बाड़ ? हम कहनी कि ओकरा के त रोजे देखील भुसउल पर। काका फेर कहलें—'अच्छा बताव उ कवना रंग के होला ? अब हमार कपार चकराइल। कबो लाल इयाद पड़े त कबो हरिअर। कबो पीअर बुझाय त कबो गदहा का रंग के। हमरा के चुप देख के काका मुसकाते-मुसकाते कहलें—'चकरा नु गइले। आरे, आदमियों के कवनो एगो रंग नानु होला।'

ओही दिन सांझ के खरिहानी काबर गइनी त बुढ़वा पीपर तर ढेर लोग लउकल। निअरा गइला पर देखनी कि कहरटोली, अहिरटोली, दुसाधटोली आ चमरटोली के लोग जमा भइल रहे। अहिरटोली के रामटहल खड़ा होके कहत रहस—'हमनी ढेर दिन ले बड़का लोग के सेवा-टहल कइनी। ढेर सहनी। अब हमनी का आउर ना सहे के चाहीं। हमनिये का भोट से जीत के हमनिये के दबावेला लोग, सतावेला लोग। अपना जमा का आदमी में से मुखिआ खड़ा करे के चाही। हमनी में से कोई मुखिआ हो जाई त बाबू लोग ना सताई। हमनिये किहाँ नाक दरी लोग। बाकिर ई कब होखी जानतानी ? जब हमनी अपना-अपना गोड़ पर खड़ा होखब, ढेर दिन से पड़ल आँख पर के परदा फाड़ देब आ एह बाबू लोग के झूठ-मूठ के गढ़ल लाज-लिहाज तिआग देब।' लोगन में खुसुर-फुसुर होखे लागल। कुछ लोग डेरा के दहिने-बांवे ताके लागल आ कुछ लोग लजा के मुरी नीचे लटका लेलख। सब में पुरनिआ हरखू महतो बोलले—'बतिआ जे तु कहत बार से कुछ-कुछ त बुझाता। बाकिर हमनी से ई कुल्ह ना पार लागी। तु नवका हवा-पानी खइले-पिअले बार। शहरो-बाजार जाल आ मरो-मुकदमा लड़ल। तूँही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खड़ा हो जा।' सभे हरखू का हँ-में-हँ मिलावल आ फरिआ गइल कि रामटहल राय मुखिआ खातिर खड़ा होखिहन। देखते-देखते चार जाना मुखिआ होखे खातिर खड़ा हो गइले। पुरनका मुखिआजी, बसावन सिंह, रामटहल राय आ बालदेव महतो।

गांव में ताना-तानी चले लागल। जस-जस दिन बितत गइल तस-तस गाँव चार गरोह में बटत गइल। रोज-रोज टंटा होखे लागल, कबो ऐने से त कबो ओने से। एक दिन त अइसन बुझाइल कि बस अब लोहा बाजिये के रही। रामटहल राय के बेटा बसावन सिंह का बेटा काबर ताक के हँस देलस। बस एतने बात पर बात बढ़ गइल। कुरता के बाँह चढ़ गइल, फेंटा कसा गइल; मुरी में अंगवछा लपटा गइल; लाठी निकल गइली सं आ दूनो ओर का लोग के मुँह चिचिआत-चिचिआत त फेनाइये गइल रहे। मेहरारू सं अपना-अपना दुमुहाँ में करिखाही हाड़ी लेके ठाढ़ रहली सं। एतने में दारोगाजी के फट-पटवा चहुँप गइल आ गहुँअन अइसन बिखिआइल लोग लागल दनादन दारोगा जी के सलामी दागे।

हमरा गांव के छुछुनर तिवारी के त रउआ जानते होखब। लोग उनका के माहिल मामा कहेला। का जाने काहे ! हम ना जानी। बाकिर मुँह पर सभे 'पाव लागी पंडितजी' त कहबे करेला। पंडितजी बड़ा बेचैन लउकस। कतो चैन ना रहे उनका। भोरे मुखिआजी का दालानो में लउकस त कलेवा का बेरा रामटहल का बथानी में। साँझ के बसावन सिंह का ओसारा में लउकस त खाये-पीये का बेरा बालदेव महतो का खरिहानी में। बेचारू का चारो कोना छिछिआते बीते। सब जगे उनकर खातिर बात होखे, जर जलखई मिले आ चले का बेरा सावा सेर चाउर भा पीसान मिलिये जाय। चारो कोना थाम्हल; चारो जाना के टिटकारल कवनो दोसरा आदमी के बात थोड़े रहे ?

एक दिन उनमुनाहे उठनी त देखतानी कि ओसारा का देवाल पर एगो लाल, एगो हरिहर, एगो पीअर आ एगो उजर कागज साटल रहे। एगो पर हाथी छापल रहे, एगो पर ऊंट, एगो पर भाकुर अइसन कवनो चिड़ई छापल रहे आ एगो पर गदहा अइसन कवनो जानावर। हमरा ना चिन्हाइल। काका बतवले कि उ चारो जाना के चुनाव चिन्ह रहे। अब रउये बताईं जेकरा के लइकाइयें से देखत आवत बानी ओकरा के चिन्हावे खातिर हाथी, उँट, भाकुर आ गदहा के कवन काम रहे। गाँव के सभे त सभका के जानते—चिन्हते बा टे। तनिको ना बुझाइल कि ओ लोग के अलग-अलग जानावर से चिन्हवला के कवन काम रहे ? काका कहले कि इ कुल्ह तें ना बुझबे, ई सरकारी काम हवे, चुनावे के कानून हवे। अब हम चुप ना रहतीं त का करतीं।

ओही दिन से गाँव मे धूम-धाम बढ़ गइल। ताना-तानी कसा गइल। छोट-छोट लइकन कबो हाथीआला झंडी लेके निकल सं त कबो ऊंटआला, कबो भाकुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आला त कवो गदहा आला। ओकनी का खेल के खेल हो जाय, खाये के बतासा मिल जाय आउर लाल, हरिअर, पीअर कागजो मिल जाय नाव बना के मोरी में बहावे खातिर। जस-जस दिन निअरात गइल तस-तस लोग बउरात गइल। लोग का ना खाये-पीये के फिकिर रहे ना खेत खरिहान के चिन्ता। खेलावन के चाह के दोकान कबो खाली ना होखे। ओकर केतली चढ़ले रहे चूल्हा पर। चानी काटत रहे चानी। दू चुकड़ी दे त चार चुकड़ी बतावे। केकरा गने के फूरसत रहे। बुझात रहे कि गांव का कुल्ही इनारन में भांग घोरा गइल होखे। सभे आपने कहत रहे। सुने आला कोई ना रहे।

चार-पाँच दिन बाद सांझ के काका कहले—'भगेलुआ विहान भोट गिरावे के बाटे। सवेरे उठिहे।' ई सुन के हमरा मन में गुदगुदी बरे लागल; आँख मुनाये लागल आ अइसन बुझाइल कि खुशी से धुकधुकिये बन हो जाई। रात भइल उउका में खाये गइनी त खिआते ना रहे। भउजी ठिठोली करत कहली—'का बात ह बबुआ? खात काहे नइख। गाल सिन्हारा अइसन काहे भइल बाटे? कतहु के देखनिहारो त अबही नइखं सं आइल। भउजी का ठिठोली सुझल रहे आ हमार त दमे निकसत रहे—"कइसे मोहर दागब, कइसे कागज मोड़ब आ कइसे बकसा में गिराएब।' केहू कहे हाथी पर मोहर दगीह केहू कहे ऊँट पर, केहु कहे भाकुर पर त केहू कहे गदहा पर। हम मन में निठाह कर लेले रहीं कि हम हाथी, उँट, भाकुर आ गदहा के फेर में ना परब। आँख मून के दाग देब मोहर। जहवाँ दगा जाव। चार कवर हाली-हाली मार के आके अपना खटोली पर पटा गइनी। कब दू आँख लाग गइल।

जब आँख खुलल त सूरज महराज चमकत रहस। भहरा के उठनी। लोटा लेके मैदान दउरनी आ हाली-हाली नहा धोआके धोअल धोती कुरता पेन्ह के काका से कहनी—'चलेके पुरवारी टोला भोट गिरावे।' काका कहलन—'अबहीं तनी देर बाद चलल जाई। ढ़ेर भीड़ होई अबहीं। देख ना सब टोला के लोग चिउंटी का लर अइसन चलल जाता। जब कुछ छेहर बुझाइल तब काका उठले आ हमहुँ उनका साथे डोरिया गइनीं। भुतहवा इमली तर चार-पाँच जाना पुर्जी काटत रहस। काका का हाथ में दुगो पूर्जी धरा देलस लोग। काका एगो हमरा के थम्हा देले आ कहले—'हमरा पाछे पाछे चल आव। घेरावा में ढुकला पर काका का भोट आला कागज मिलल आ उ अलोता में चल गइले मोहर दागे। हम हु काका लेखा अपना हाथ के पुर्जिआ कुर्सी पर बइठल बाबु के देहनी। अपना सामने पसारल कागज एने से ओने आ ओने से एने उलट-पलट के उ कहलन 'तोहार भोट त पहिलही गिरा देहल बा। दोबारा आइल बार का हो? हमरा के त ठकुआ मार दिहलस, मुंह बई आ गइल आ बकारे बन हो गइल। कतना आस लगवले रहीं बाकिर कवनों पहिलहीं झंटहा मार देलस। हम ठकुआइल खड़े रहीं ताले काका भोट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गिरा के आ गइले आ सब सुन के मुसकाते-मुसकाते कहले—'चल भगलुआ' अइसनो होला।' हमार मन त गाछा का पुलुंगी पर से गिर गइल आ भकर-भकर रोआई आवे लागल। काका ओतहीं लोग से बतकही करे लगले आ हम चुप-चाप आँखिन में लोर थम्हले, दउरा में डंग डालत दुअरा लवट अइनी। चउखटे पर भउजी खड़ा रहली। देखते पूछली—'का बात ह बबुआ? चहकत गइल ह आ अब मुँह काहे लटकवले बाड़? बकसवा के छेदवे ना मिलल ह का?' हम का कहतीं? आपन हारल आ मेहरी के मारल के कहेला? बुझाइल कि अब ना रोकाई पूका फार के रो देब। झट से मुँह फेर के दलाने में ढुक गइनी आ कवारी बन कइके टरत गइनी।

विहान भइला पर जब उठनी त काका कहले—"भगेलुआ, फेर से भोट होखी। ते नानु जनले। घड़ी भर दिन बाकी रहे तबे बुझावन सिंह के बेटवा भोटवा के बकसवे लेके भाग गइल।' हमरा त बुझाइल कि सुतले बानी आ सपना देखत बानी। थथम्हाते—थथम्हाते पूछनी—"अइसनो होला का काका?'

त मुसकाते कहलन—"सब चलेला रे।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुआँर सपना

ब्रजकिशोर दूबे,

ओह दिन समीर अइसन अनकसाइल रहन कि डेरा आवते लूंगी पहिरलन आ चट से कोठारी में कुरसी प। एकदम गुमसुम। फेर कपार-ककुलावत उठलन आ क़िल्ली बन क देलन। खने पीठ ककुलाय त खने गरदन। बिजुली के पुरकस अँजोर लागे जइसे सूई लेखा गड़त होखे। कले-कले कपार टनके लागल। दूनो आँख मिसे लगलन। तनिका आराम बुझाइल। टेबुल बेलकुल साफ। तबो बेरबेर फूँके लागस-फूऽ···फूऽ···। छितराइल किताब ऐने ओने करे लगलन। तले संपादकन के चिठियन प नजर परते सवालन के धूंध पसर गइल·········कुरसी प ओलर गइलन।

× × × ×

आखिर हमरो के बड़ा बबुअवा का समझेला ? कतना दिकदिकावेला हमरा के। हमरा प ताक के अइसन मुसकाला जवन एक संगे हजारन अझुराइल सवालन के जाल हमरा सहज मन प फेंक देला। मन हाथ भाँज के रह जाला। ओह दिन खिड़की से झाँकत खानी देख के कतना बेमाने बेमतलब के डँटले रहे—"आफिस में रहे के ई तरीका ना ह। एहिजा काम करे खातिर नोकरी मिलल बा। ऐने-ओने झांके आ दिन काटे खातिर ना·······।" एह सुर में ना जाने का-का बक देलस। चुपचाप टेबुल प हाथ धइले सुनत रह गइलीं। लागत रहे जइसे हमरा भीतरे सुतल नाग प रोरी फेंका गइल होखे। मन ममोस के रह गइल।

समाज में इज्जत आ साहित्यकार भइला का चलते हमरा नाँव से आवेवाली चिठियन के तार लागल रहेला। चिठिया देख के कतना अनकसाला। कवो-कवो त मुँह बना-बना के कहे लागेला—"लागेला जइसे समीरे जी हमनी के डाइरेक्टर होखस। इनका भिरी साहेबो से जादे चिठी आवेला। काम ना धंधा। खाली चिठियाँव।"

—"एह में ओकर का जाला। हमरा मन के ऊ का जानी। हमरा के खाली अपना अन्दर के एगो किरानी बूझेला। बस। उपरे के अफसरन के ओकरा प रोब-दाब बा त ऊ हमनी प जमइबे करी। हमरा के साहित्यकार बनला खातिर कवो भुलाइयो के नीमन बात ना कहे। बलुक उलटे बके लागेला—" का मिली एकरा से ? कवनो पेट भर जाई कहानी-कविता लिखे से ? झूठो के सिंगार आ नेह-परेम। ई समय बरबाद करे के एगो नीमन बहाना ह। (काम ना करेवाला लोग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के अइसनके एगो ढकोसला ह।) असमन बयखर जाला।... ई आफिस ह। एहिजा नोकर अइसन रहे के परी। हमरा कोमल भावना के लदरल गाँछ के जइसे जरकटा जाला।पोसल सेमर में ले भूआ उड़िआये लागेला। बोलत खानी चसमवा खने निकालेला खने लगा लेला। मन करेला कि......। कुछ कहे के सोचते रहीला कि कहे लागी...,' जादे दुख बा त साहित्य रउआ घरे लिखीं। केह पूछे ना जाई। एहिजा दोसरो लोग रउआ के देख के कहे लागी। उहो लोग बाहर जाये के मोका मांगे लागता। त इहे होई कि आफिसो चली। रावा अइसन सभे हो जाव त चेकिंग हो गइला प कवना भाव के परी ? का जबाब दिआई ?"

—'हमर चिठिया हमरा के देके ऊ आपन आग में पकावल गोल भंटा लेखा मुँह दूनो तरहँथी प अइसे रख लेला जइसे सोग परल होखे। बोलत खानी पेपरवेटवा वँवारा हाथवा से फेंक-फेंक के रोके लागेला। का ऊ वूढ़ हमरा के तउल लिही ? का तउली ऊ ? दोसरका किरनिया कतना खुस होखे ल सं। सबके जर बा हमार साहित्यकार वनल। काम त हमार सोरहो आना ठीक रहेला। बाकी रोव के धुन आफिस के चउकठ में लगवे करी। एही से आफिस में तनाव बढ़ रहल बा। सभे अपना के एक दोसरा से अलगा काट के राखता। ओहिजे के मन-दिमाग में बोआइल जहर घर अंगना में फर देवे लागता। जिनिगी तिकछ हो जाता।

कवो-कवो मौन हो के सवालन के जबाव सोचत रहीला कि टोक देल'—"का कुछ कवरता का ? महराज सनक जइवऽ। ना खइब ना खेलब। का ओइसे नीरस लेखा गाली प हाथ धइले रहेलऽ।" लागेला हजारन पद-विछी जवरे टुभुका देली सं। हमर साहित्यकार हमरा के डुरिआवे लागेला। अपना रछेया खातिर। वाकिर हम ओकर वकील वनल ना चाहीं। के फैसला करी ? हमार साहित्यकार इयारी में कुट्टी अइसन करे लागेला। मुसुका के बानन के चोखदार नोंख भोथर वना दिहिला। मन करेला कि नोकरी.........। वाकी ई वुरबकाही होई। आज-काल्ह स्वतंत्र लेखन बड़ा मोसकिल हो गइल बा। घर-परिवार के परवस्ती खातिर नोकरी कइल बहुत जरूरी बा। ना त भोजनो प आफत हो जाई। वाकी विना लिखलहँ त हम ना रह सकीं।

—उहो ठीके कहेला। हमरा के कामे करे खातिर नूँ राखल बा। कविता-कहानी लिखे खातिर थोरे! हम कुछो लिखवो त ना करीं ओहीजा। का लिखाई औहिजा ? हमरा प त चुप रहला खातिर हँसेल सं आ अपने अपना गरगंद मचावेल सं जइसे मछरी विकात होखे। डाइरेक्टरो साहेव मेजरटी के खेयाल कके—कवो कवो अनकासाइयो के कुछ ना कहस।—एक दोसरा के कमजोरी मालूम रहेला। ना त का अइसे ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—ऊ का जानी कि हमार कहानी-कविता पढ़ के लोग कइसन- कइसन चिठी हमरा भिरी भेजेलन। हमार अरदोआय बढ़ जाला। जीअल सोवारथ हो जाला। का ओकरा सपनो में ई सेख ......। ई किरानी। ओकर मनवो किरानी। रस के एकरा का पता वा। बानर का जानी...। जे हमार चीज पढ़ले रहेला ओकरा के आपन नाँव बताइला त कइसन करे लागला। मन-परान अगराये लागला। केहूँ हँसते-हँसत कह देला -"देखिह, एह कूल्हि के कतही लिख मत दिह। मन इतराये लागेला। ई का जानी कि हमरा कहानियन पर इनाम मिल चुकल वा। हमरा से मिलला प लोग कहेला कि आज के दिन नीमन वीतल। ई हमरा बारे में खाली अतने काहे सोचेला कि हम एगो किरानी हई। १०से ५बजे तक गोरू नियन खूँटा प रहे के वा। काम नाहियों त बइठल रह। बाकी वहरी ना। दिन पहाड़ लागे लागेला कटले ना कटाला। मन-जीव उजवुजा जाला। कुछ लिखल जाइत त मनो लागित। बाकी देखत·······। कपार के बार अंगुरी में लपेटा के खिंचा गइल। अंगुरी घुमावल बन। जइसे मन-देह दूनो बन्हा गइल होखे। देंह अइँठाते चारू ओरे लपेटाइले डोरा··········।

—मेहरारू के मेहरारू नियन रहे के चाहीं कि पुलिस नियन। जब देखऽ तब छतीसा। रूसल-फुलल त बुझाला लेइये के पैदा भइल बिया। आफिस से छूटला के बाद जेने-तेने घूमत रहिला। का संकराहे आईं ? मन में उमंग होखे तब त। ओकरा के देखते त बुझाला जइसे हमरा भावरूपी लाजवंतीं में केहू अंगुरी सटा दिहल। एकरा संगे हम बौना हो गइल बानी।···ओफ !—

हमरा प कवनो सवारी काहे नइखे चढ़ जात ! हम जीअत काहे खातिर बानी ? मन रोआइन- पराइन हो गइल। दाँत प दाँत चढ़ गइल। कतना वेदम रहिला। ई वूझे काहे ना ? एकरा से जान बचावे खातिर कतना खराब-खराब लोग के संगे रहे के परेला। खराब-खराब सुने के परेला। ना चाहीं तवनो खाये-पीये के परेला। ना जाने ई कब हमरा के उबारी। मन ना करे। बाकी का करीं। ऊ कइसन लोग होला जेकर मेहरारू जिनिगीं में सुबास भर देले। मुसुकाले त हरसिंगार झर जाला। ई मनहूस मेहरारू ! ना कबो मन से बतिआवे; ना हँसे। के जाने कइसे जीयेले। चउबिसो घंटा चन-चन। बिआह करे के त हमार बाबूजी क देलन। बाकिर भोगे के त हमरे नू परता। बहुते बाप के पसन वेटा खातिर सराप बन जाला। हमर फिफिहिया भइल केहू का जानी। ना जाने बा देख के बिआह कइले। करम ! का मानी करम के बात। करम एगो हमरे खातिर बा। आउरो लोग के त करम बड़ले वा। सभका हमरा से सुघर मेहरारू मिलल बाड़ी सं। हमरा खातिर इहे धइल रहे।

कबो बके लागेले—' मकान मलकिनी के कतना नीमन छापावाला साड़ी हईन। बड़ी नीमन सिकरी बनववले बाड़ी। जरला प नीमक पर जाला। सभ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समुझ के चुरी साध लिहिला। अनचाहे खीस बरै लागेला। बरौबर कुछो ना कुछो कह के हमार रिसत घाव कोंच देले। ई कह कहके कतना लजवावेले—"सेनूर देत लाज ना लागल आ अब हमरा के घुमावे-फिरावे आ सिनेमा देखावे में लाज लागता।—मरद खाली आपन सुख देखेला—कहके त जइसे ऊ चमेटा चला देले। कइसन सुख? कहाँ मिलल? खाली ताकत रह गइलीं। ऊ दिन आज ले ना आइल। के जाने आई कि ना? ई बूझे काहे ना कि एकरा संगे हमरा बोले के इचिको भर मन ना करे। रोज मन करेला कि ओनहीं रह जइतीं। के जाने कवन अइसन चीज वा जवन बारह एक बजे ले खिचिये लावेला। इहे कूल्हि भो1 खातिर।

करकरहट के मारे आठे वजे जवने छूँछ-रूख बनल रहेला खा के भागे के परेला। पेट-कपार बथे के बहाना करे के परेला। तब तनीं जान बाँचेला। लाख पेरेले बाकिर मन ना करे कि ओकरा ओर ताकीं। कवो-कवो त भाव हिलकोरा मारते रहेला कि कुछो-ना-कुछो कह के मठीया देले।

एगो जुग हो गइल जवले हमरा रसोई नीमन नइखे लागत। कवो हुलस के-अगरा के ना खिआवे। छिपा राख के ना पाता। साधे लागत रह गइल कि ऊ बइठ के मीठ-मीठ बोलित आ पता ना चलित कि कब खा लेलीं। ई सुख सपने रह गइल। खाइला ना.........। कवो सिंगार-पटार क के हमरा भुखाइल नजर के तिरपित ना करे।

हरदम चाहेले कि कहला में रहितीं। सुगा अइसन जवन पड़ाइत पढ़ितीं। ऊ समझे काहे ना कि हम हरदम एकरे संगे ना रह सकीं। हमरा आउरो ढेर कुछ देखे के वा।

—एकरो सोचल ठीके हइस। एकर सवख त अब हमहीं नूँ पूरा करब। एकर का दोस वा? मेहरारू त गाय हइसन। चाहे जेकरा खूँटा प बान्ह द। ना जाने समय कब बदली। ओकरा के हमरा कुछ ना कुछ देवे के चाहीं। कव-कव बेर मकान मलकिनी कहली बाकी ई घूमे ना जाय। बुझाला लाजे ना जाय। ऊ लाज हमहीं जानतानी। एकरो त मन-जीव बइये नूँ वा। के जाने काहे हरदम खखुआ के बोलेले। कतना सुख के काँट हो गइल विया। सोरहो घरी जर-जर पीन-पीन करत रहेले। आँख त बुझाता कि लउकते नइखे। अबहीं का उमिर होई एकर। तीस नाहीं बतीस। अबहीं त एकरा गदराइल-फुलाइल लउके के चाहत रहे। अधेड़ भइलो प मकान मलकिनिया कतना मोटाइल विया। मरदो बड़ी मानेलहिस। कतना सुघर आ गुलफुलाह लागेले। ललच जाइला कि हमरो.........। तनिको डाँट देला प आँख छलछला जालहिस। कइसे जीहीं एकरा संगे। खाली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुखे-दुख। कलम के खोंपी चरचाये लागल। कले-कले ढील ढील भइल। मुँह प दूनो हाथ फेर के अंगुरी पड़कावें लगलन।

× × × ×

ई दूनो लइकवा हमार दुख-तकलीफ काहे ना समझ सं। बुझाला कि आकास के तरइयो दे देला प मन ना भरी। सोरहो घरी अ-का लइकन के पहिरल-ओढल के बखान करे में तबाह रहेल स। पइसा। छने—छने पइसा। जइसे पइसा हमरा भिरी फरत होखे। केनहूँ लिआ जाये खातिर कतना नकनकावेलनस। अनचाहे हाथ उठ जाला। कवो चुप ना। कुछ ना कुछ गड़बड़- सड़बड़ कइलहीं रहेले सं। कुछ लिखहूँ के मन रहेला त ना लिख पाईं। मन करेला कि घरे से भगा दिहीं। सुतल दुलम के देलेसन। टेबुल प मुठी गिर परल-धम! एगो झंझट बा ई परिवार बनेवाला खातिर। बाकी रहलो त ना जाई एकरा बिना। एही लइकन खातिर मकान मलकिनी वात निकलला प कतना डबडबा जाली। जब दोसरा के लइकन के देखादेखी नीमन स्कूल में पढ़े खातिर कहेल सं त हमार बरियार मन भीतरे-भीतरे भहराये लागेला। हमार मजबूरी जान जइतन सं त अइसे ना करितन सं। ई जान सन काहे ना.............।

इकनी खातिर मोहो लागेला। बापे से नूँ कहिहन सं। इकनी के मन ना पूरा कइला के चलते हमर मन कइसन हो जाला— ई हमरा नियन बापे जान सकेला। बूझ जइत सन त अतना हरान ना रहतीं। जोर से जम्हाई आ गइल आऽऽ—आऽऽ——आऽ। पूरा देह बइठले-बइठल कसमसा गइल। साध-सपना के खोंपड़ देवाल चरमराये लागल।

× × × ×

—एगो हमार इयार बाड़ सं कि बूझेल सं कि घमंडी हो गइल बानी। कतना जल्दी लोग ई पदवी दे देला। जीव पितपिता के रह जाला। उकनी के मन कि चउबीसो घंटा उकनिये का संगे रहितीं—दारू पिअतीं आ रंडी के कोठा प परल रहितीं। साँचो बेकाम के आदमी दोसरा के.......... । हमरा के कइसन बना देलस सं। ई सभ कइसे हो गइल। तनीको पता ना चलल। थोरिके देर उनकी भिरी ठहरीला। बाकी पूरा घुल-मिल जाइला। उनकी के कवो बिसव से ना होखे कि मन से संगे बानी। ना त काहे के ई कुल्हि बकवास। ओह दिन रंडी के कोठा प जे देखलीं ओकरा के एगो कहानी में दे देलीं। बहुत पसन कइले रहे लोग। हमरा भिरी चिठियो आइल रहे। तवो मने-मने हमरा के छँटले रहेल सं। —"जादे बड़ बन ताड़न। हमनी के इनकर का बरोबरी क ब जा। जीव जरजरा जाला। सुनहूँ-सहे के एगो हद होला। मनलीं कि हम आदती नइखीं त कवनो आदर्शो नइखे। परहेज से बड़ा डर लागेला। ओइसन परहेज कवना काम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के जवना के ढोअला से जिनिगी नीरस हो जाय ? हम उनकी संगे कतना मन खोल के मिलिला-बतिआइला ! ऊ एकदम ना जान सं ।

रोज कान अइंठीला कि अब ना जाइब बाकी मन के का कहीं । न जाने कत बरिस हो गइल जब ले हमार मन नइखे लागत । मन लागे खातिर लाग जाला बाकी उलुटे आउर घवाहिल हो जाला । आदमी आदिमिये में नु रही ? जाई कहाँ ? ना त हमरा अइसन अदिमी के.........। कुछ ना कुछ त सहहीं के परी । नाहियों चहला प दोसरो के मन राखहीं के परी । कतनो किरिया धराइला तबो कुछ न कुछ कह के ...।—"हमनी के भाई छोट अदमी बानी जा । लाजानाइन हमनी का संगे रहे में । उपर के मन से बतिआवेलन । हमनी से आछा आदमी बाड़न का ? ऊ जान जइअन सं कि भीतरे-भीतर हम कतना टूटल रहिला, त अइसे"'। उदासी मिटो कहाँ से आउर बढ़ जाला । केनहूँ के ना रह जाईं । घर-अंगना के तनाव आ आफिस के किचकिच से लदाइल हमार जिनगी असमन लदना बैल हो गइल बा । दुनो सुपुली रगराये लागल । दूनो बाँह ऊपरे उठ गइल । फेर पूरा देह तनल आ बाँह नीचे सरकल त लुँगी कसे लगलन ।

× × × × ×

—कहानी के इनाम मिलला का चलते संपादकन के रचना खातिर चिठियन के तार नइखे टूटत । ऊ संगरह निकलला बरिस हो गइल । तबले रामो.रहीम ना लिखलीं । ना लिखला का चलते दिन प दिन कतना खाली आ सून भइल जा तानी । बुझाता जइसे कुछ लिखबे ना करीं । जो इहे हाल रहल त ""। का लिखाईं! दिमाग ठीक रहो तब त । जगला से सुतला तक त मन धनुस अइसन चढ़ल रहता। लिखे के काम कोमले भइला प हो सकी । भाव मन परान में रसगर हिलकोरा के संगे फफाला । त कब कोमल"'। लोग कसे सुरूम क दिहल —'-भइल से भइल । अब ई एको डँड़ेर ना लिख पइहें ।" ई समाज कवनो गवें दम ना लेवे दिही । आंख्य कर—त ई कइसे क देलस । जबून कर—त ई एकरा करहीं के रहे । लोग बूझत काहे नइखे कि हमार जिनगी ....। कब कब बेर कतना नीमन-नीमन भाव अँखुआइल। बाकी जुरते अँखुआ जर गइल । फेर ऊ कबो सपनो में ना आवे । हो सकत रहे कवनो आउर सेसर कहानी... । फेर इनम मिलित । का कहीं ? समय हमरा के...। अब कड़ा ना रहब । एही में ले समय निकाल के जरूर कुछ ना कुछ लिखब । अब अलग से त जिनिगी ना नू"" । जो असहीं चलत रहल तब त ... । बाकी मनोजवा के माई मन परते मन कसाइ हो गइल । टेबुल प से मुँह उठ गइल । फेर देहि प ऐने-ओने हाथ फेरे लगलन ।

× × × ×

पढ़ाई के दिन अउरे होला । साँचो सुनहला होला । का दिन रहे । बुझाय कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लईका लइकी के झुंड मउज में पदाइल ऐने-ओने सपना के पाँख प उड़त होखे। कवनो फिकिर ना। खाली मउजे मउज। मन-चिरई के पांख केहू छुअनहुँ न रहे। अब त बुझाता जइसे केहू जबरन ध के नोंच देले होखे।

—के जान काहे हमरा के रोज देख के मसका देले। फेर कान्ही प गिरल रेसम नियन बार सरिआवत चल देले। फेर ना त के। कतना खुस लागेले। मन करेला कि एक टके देखत रह जइतीं।...मुसुकी देखते हमार मन से मुठी के एक मुठी हो जाला।

—ओह घरी हम हर वाद-विवाद प्रतियोगिता में अउवल होत रहीं। ऊ अपना सखिअन से हमार बड़ाई करे में अघाते ना रहे। क ना सीधा रहीं। ओकरा से बोलला के दोसर अरथ लगावते ना रहीं। ओकरा से बोले खातिर लड़िका छछन के रह जात रह सं। हमरा से बले बोलत रहे। कवो-कवो डाँटियो देत रहीं त चुप लगा जात रहे। बलुक दोसरा लइकियन के दुख लाग जात रहे। ऊ ओकनी से बड़ाई छोड़ के कुछ बतियावते ना रहे। कतना लजवावत रही सन ओकराके बाकी ऊ अखेयाने ना करत रहे। चुपचाप मुसुका के मूड़ी गाड़ लेत रहे। का हो गइल ऊ दिन ? तकला प...। हमरा से थोरे बोलत रहे। हमरा प्रतिभा से बोलत रहे। लइकन के कतना डाह बरत रहे। कापी-किताब त बले ले लेत रहे।

—ओह दिन बरमदा में किताब लेवे खातिर ओकर हाथ ध लेलीं त कइसन एक बे तकलस आ फेर मुसुकात चल देलस। हमरा कुछ ना बुझाइल। अब जनम दिन बीतल जाता अरथ साफ भइल जाता। कतना निफिकिर रहत रहीं। कवनो मतलवे ना रहे। बोलो चाहे मत बोलो। पुरवा बहो भा पछेया।

—कब-कब बेर कहलस कि ओकर बाबूजी-माई हमरा के देखन चाह तारन जा बाकी निहोरो प ना गइलीं। हमार गुमानी मन समय के शंख बजावल ना सुन के दोसरे सुनत रहे। उहे भइल जवन ना होखे के चाहत रहे, जागल भाग जर गइल। चनन के लकड़ी समूझ लेलीं ना त जरूर ऊ हमरा संगे....।

जवानी में एह मन के बुरबकाही का कहाव। कतहूँ ना ठहरे। सपना के मेला लाग जाला। किसिम-किसिम के भाव। खल-खल के सपना। बिसवामे ना होखे संतोस त एकदमे ना। अउर नीमन-आउर नीमन के पाछा मन-हरिना छिछिआइल फिरेला। कतना अगिया बैताल होले। कुछो सोचीं-दोसरे छन फुर्र—।

ऊ रोज रेक्सा प चढ़ के जाले। जरूर सुख,चैन से बिया। पहिरन-ओढ़न आ ओठन प उभरल मुसुकी के हरफ। केहू कह दिहीं। एह घरीं त ओह घरी से जादे निमन लागेले। सउँसे देह भर गइल हइस। सटका अइसन देह प ललका गोराई। मन भोरावेवाला मूरत हो गइल बिया। बड़ी मानत होई ओकर मरद। उहो नोकरी करत होई। लइका-फइका होइहन सं त बड़ा नीमन ले राखत होई। उहो निमने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वनिहन सं। साँचो माई-बाप जइसन चाही..........। एकर घर अनमन परग लागत होई। दूनो मरद्-मेहरारू के गंगा-जमुना में लइकन के मीठ वोली के सुरसती मिल जात होइहें। घर अंगना परयाग हो जात होई।

— मन करेला कि रेक्सा रोकवाईं। तले नँउवे भूला जाला। आज-काल्ह वड़ा कम इयाद रहता। के जाने ई का करी ? सव भुला जाइव का ?.............. धुकधुकी तेज हो गइल। जइसे साँप प गोड़ पर गइल ? झूठो के सपना। अनेरिया उमंग।

— कि हमरा दसा प मुसुकाले ? सोचत होई का कइलीं। अतना पढ-लिख के। कहाँ कुछो कइलीं। किरानी। का अतने बने के ताकत रहे ? हम काहे ना दउरलीं। लकवा कइसे मार देलस। कुछ ना धराइल। ढेर चढ़े के रहे। हरान हो गइलीं। अब दुलुकियो ना सँपरी। का होई ? आज ओकर-हमार .... सपना धराला ना खाली ललचावेला। खूब ललचावस। आजले ना धुआइल। कुछो हूव-दूव ना वुझाय। मन हल-दल कइले रहेला। साँचो। तेज आदमी बड़ा तबाह रहेला। सभ क देल चाहेला। एही में छितरा जाला।

— हमार पढ़ल-लिखल सव वेकार भइल। आज ऊ हमार...........। जवन लिखतीं नीमन होइत। जीये के मन करित। बाकी ई त अइसन घंटी गर में परल कि गरदने टूटे के नतीजा लागल बा। का एकरा के हमरा जिनिगी भर बजावे के परी ? अतना लमहर जिनिगी.................ओह ! कइसे पार होई ? एकरा से जान ना बाँची ? कवो जीये के मन ना करी ? ई उदासी वरोवरे रह जाई ? कवो ना ओराई ? दूनो आँख बन हो गइल। जइसे सऊसे कोठरी सड़ दे घुम गइल।

"..........खाये के बा कि ना ?" मनोजवा के माई सड़ले उगिल के चल देलसि। मन के सहन में दरार फाटे लागल।

ओह......... इहे जिनिगी ह। साहित्य के कुछ देवे के सपना ले के मन अकुलाइल चलता। बाकी जिनिगी अइसन सरकवाँसी में पर जाता कि लाख चहलो प कुछ नइखे उजियात। विना कुछ कइले प्रतिभा माटी में मिल जाता। ढेर देसन में अइसन प्रतिभावाला लोगन खातिर सरकार तबाह रहेले। ऊ लोग के वातावरन दिआला। सांस्कृतिक चेतना दमगर जोगदान से आपरुपी आगे बढ़ जाला। जो देस के कलेयान करेवाला राज बनावे के बा त सामाजिक आ आर्थिक संरक्षण के दिया जरावे के परी नां त नीमन जोगदान ना मिलता से देस के बहुते बढ़हन चेतना मुँहदुव्वर हो जाई। जवना काम में जे निपुन बा ऊ काम करे दिआइत त फेर का कहे के ? बाकी हो जाता दोसरे। नीमन गावेवाला किरानी त नाटक लिखेवाला दोकानदार। त अव जिनिगी के दलदली से थोरे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ निकल सकी। वहुते देसन में जेंकर जवन चीज में रूचि रहेला ओंकरा के उहे करे दिआला। फेर त.......। जो अइसन ना होई त सपना कुआँरे रह जाई। हमार सपना.........।

ठाँय ! केंवाड़ी वाजल। ....फेर आ गइली ई मनोज के माई। दू-चार कवर खाहीं के पड़ी। बिना खइलहूँ त पेट ना मानी। ई त मनोजवा के माई बिया कि कहूँच के, खिसिया के, कोहना के भा रिगीर कके खिआ देले, ना त जिनगी का चक्का तर दरमसाइल हमार सपना ओइसहीं लागित जनू कवनो लावारिस कुक्कुर के लाश ट्रक से चिपइलो पर ढेर देर ले सड़के पर पड़ल रह जाला. आ...लोग-वाग कगरी काट के आपन राह ध लेला ! समीर केंवाड़ी खोल के वहरा निकलले आ मुड़ी गड़ले रसोई घर की ओर चल देलन !

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चरवाही के दाग

□ अरविन्द कुमार श्रीवास्तव

भिनसार हो गइल रहे । गाछी पर चिरई-चुरुंग के कचरो-ढवरो शुरु हो गइल रहे। बाकी; अभी तक रामखेलावन के नीन ना टुटल रहे । रामखेलावन एह वेरा अपना मालन के आधा पेट खिया लेले रहेले । का जाने काहे रामखेलावन का रात भर नीन ना आइल । वगल का टोला में जब शहनाई बाजे त बुझाव केहू चिउंटी काट के जगा देले होखे । रात भर उखी-विखी में पड़ल रहलें । तवहीं एक वायेक जब कवनो जनाना के रोवला के आवाज सुनाई पड़ल, उ चदरा फेंक के दुआरा पर अइलें। चरमरात बैलगाड़ी के आवाज आ फुलझरिया के कुहकल, सांप का बिख लेखा संउसे देह में फइल गइल । ऊ एक बेर बैलगाड़ी कावर तकलें आ दोसरका बेर ओहार कावर तकलें, फेर मुंह बना के लवट गइलें । फेर गिलेफ ओढ़ के सुत गइलें । उनका बुझाइल कि ऊ गिलफे उनका के अन्हार कोठरी में बन्द क देले होखे आ ऊ कवनो नाटक देखत होखस—

—'गरमी के दिन के नाटक । चरवाही में गाय के दूध दुह के खीर बनल रहे। केरा के पतईन पर खायेक परोसाइल रहे । रामखेलावन कूट के टोपी, ठेहूना पर ले जामा, मलकोंका के माला, 'उजर धोती पेन्हले दुलहा बन के बेदी पर बइठल रहलें ।' अन्तर-मंतर घोंघा सारी, पेट वथे त चल घोनसारी' । हई पानी मुरी पर छिरीक ल, टीक छू ल । " रामधेयान के इ मन्तर सुनके लड़िका थपरी पार-पार हंसत रहले सं । झगरूआ, मोतीया आ मोहना बजनियां बनल रहले सं । गाँव के सरेह का टुटही मन्दिर में उनकर कोहबर रचावल गइल रहे । धोती पेन्हे खातिर रामखेलावन ठनले रहले—"हमरा घड़ी आ सब नेग चाहीं, तबे धोती पेन्हेब ।" बकी लइकी के बाप रहलें, ऊ कहस कि दोंगा में दिआई । रामखेलावन जिद कइले रहले। तवही अगना के हंसदरूआ लोग मजाक क देलस । एही मजाका- मजाकी में जामा फाट गइल । जामा बिअहुति रहे । ऊ अपना मामा के जामा चोरा के चरवाही में ले गइल रहलें । उनका पंच बजिया टरेन से ओही दिन दिघवा-दुबौली लइका के विषय में जाये के रहे । रामखेलावन का पसीना आ गइल । बाकी रामखेलावन केकरा से का कहस ? ऊ त ओह दिन एक-दू घंटा खातिर दुल्हा बनल रहलें । अफसोस कइला में घटी छोड़ के नाफा ना रहे । लइकी कहती सं जे लइकवा मंगनी जामा पेन्ह के विआह करे आइल वा । ऊ सब नाटक रहे बाकी तेहू पर रामखेलावन का अइसन ना बुझाइल ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अबगे मिलन के विधि लड़िका करत रहले सं। काहे कि अब घरे जाये के टायम हो गइल रहे। तबहीं रामखेलावन के मामा जामा खोजत चरवाही में पहुँच गइलें। मामा के देख के त ऊनकर मन कइलस जे भाग जास, बाकी कवले भगतें -सांझ के त घरे जाहीं के रहे। जवन मुक्का-चमेटा भाग में लिखल रहे तवन त कबहूँ बजरबे करीत। रामखेलावन के मामा जामा के कांख तर फाटल देख के अगिया-बैताल हो गइलें, आ लगलें पीटे। सब लइका मुँह वना के देखत रहले सं। अबगे त्रे चारा दुलहा बनल रहल ह, आ अबही कान में कनइठी लाग गइल। फुलझरिया का भी ई सब नीमन ना लागल, ऊ मुँह बना देलस। आ, मन्दिर में भाग गइल जहवां ओकरा मांग में माटी के सेनूर दराइल रहे। लड़िका फुलझरिया से मजाक कर सं "रे' जो ना। तोर घरे पिटातारें, आ ते इहवां बइठल बारे ?"

रामखेलावन का ओह दिन मामा के चटकन के चोट ना लागल। ओह दिन जिनगी में पहिलका खेप इरखा के चोट लागल रहे। ओह दिन रामखेलावन चरवाही से आके गाय बान्ह देलन। आ, चुपचाप ओही चरवाही में भाग गइलें जहवां ऊ मन्दिर रहे, ऊ मंडप रहे। चरवाही एकदम सुन-भकसावन लागत रहे। रामखेलावन चरवाही में ओही मन्दिर का भीतर सुसकत रहलें। तवही बुझाइल केहू आवता। अन्हारा में देह साफ ना लउकत रहे। देखलें त फुलझरिया ठारा रहे। उनका के चुप करावत रहे—'चुप रह आज चल हमरा किहें। खीस बुता जाई त घरे जइह।" रामखेलावन सुसकत आ गमछी में लोर पोंछत कहले—'ते जो फुलझरिया जिनगी एक दिन के ना होखे'।

फुलझरिया के इ आवाज ओजा अइसहीं गूंजत रहे। रामखेलावन उठ के वहरा अइलें त फुलझरिया के रोआई आउर तेज होत सुनाई पड़ल। ओह दिन रामखेलावन रोअत रहलें आ आज फुलझरिया रोअत भिनसार में जात रहे। आज उनका ओह दिन के सब बात इआद पड़े लागल। फुलझरिया के रोवाई राम-खेलावन का करेज प कबहीं के लागल दाग उटकेर के हरियर करत रहे। फुलझरिया ओह दिन कहले रहे बाकी रामखेलावन आज कह सकत बाढ़न कि चुप रहु। आज चल हमरे किहें ! ओह दिन खीस बुता गइल रहे बाकी बुझाता कि ओकरा राख तरे कवनो लुत्ती बाँचल रह गइल। करेजा में उहे लुत्ती सुनुगत बुझाता ओकरे दाग रात भर रामखेलावन के कल ना लेवे देलस ह आ आज फुलझरिया के ई रोवाई आगहूँ जब-जब इयाद पड़ी करेजा के साल जाई.! पुरवैया का लहरा में दरद उपट जाला। चरवाही के दाग ओइसनके दरद बनके करेजा में टँगाइल रही।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूतहा पीपर

□ डा० बसन्त कुमार

पीपर का दूर फइलल फुनगियन पर चइत पुनवाँसी के अंजोरिया अझुरा गइल रहे। कहीं-कहीं हवा का मधिम झोंका से सरसरात पतइन का फाँक से सँसरत चान के किरिन। अंजोरिया पीपर के वीरान पड़ल पक्का चबूतरा आ आस-पास के झाड़-झंखाड़ के अपना दुधिया मुस्कान से गुदगुदावत रहे, चितकाबर बनावत रहे। ना जाने कतना जवाना के पकठाइल बा ई झरनाठ पीपर। बढ़म बाबा का नाँव से मशहूर ई पुरखे पुरनियाँ का राज से अजहूँ गाँव के छोट-बड़ लोगन के देवता बनल बा। अबरखन का समय एजियें बढ़म-भोज होला, रामलीला आ कीर्त्तन के इहे पवित्र केन्द्र बनल बा। बरका गाँव से आधा माइल का फासला पर बा ए पीपर के आपन अकेल जिन्दगी जे गाँव जवार के केतना उतार-चढ़ाव देखले बा। आस-पास ना दोसर कौनो गाँव, ना ठाँव। सटले दखिन में एगो कच्ची सड़क पीपर के महातम आउरो बढ़ा देले बा। गरमी का झुलसन से बचे खाती बटोही कुछ देर एजियें खैनी मलेले आ सुस्ताले। आवत-जात डोली में बइठल कनियाँ भा बहुरिया के एजियें बिसराम पियाला। कँहार भाई लोग आपन पसेना एजियें सुखावेला। उत्तर बगल, जहाँ से पीपर के छितनार लमहर डारन के सीमा बा, ओकरा निगचे बा एगो छोट तलैया। चानी खानी चमकत तलैया के पानी एजा चबूतरा से साफ देखाई देता। अँजोरिया आज ओमें चुपके उतर के मन्त्रमुग्ध होके आपन रूप निहार रहल बियां।

ऊपर का रूप से अलग-थलग पीपर के एगो दोसरो व्यक्तित्व बा। एह व्यक्तित्व से गाँव के बच्चा-बच्चा वाकिफ बाड़े। पीपर पर एगो बढ़म पिचासो रहत आइल बा। कबो तरकुल खानी लम्मा आ कबो हाथ भर के बौना। ए पिचास के देखेवाला में गाँव के दू-चार आदमी जरूर बाड़े जे ए पिचास के खेलावेले आ आपन पूजा लेले ई बात दोसर बा कि आजुले बढ़म बाबा का किरपा से पिचास केहूके अहित नइखे कइले। कुछ लोग त इहो कहेला कि जब-जब पिचास कुछ खराबी करेके चाहेला, बढ़म बाबा अपना बेंत का छड़ी से ओकर धुनाई करे लागेले। अइसन समय ओकरा चिल्लाहट आ फेंकरला के सोर बहुत लंग सुनले बा। कुछ इहे वजह बा कि गाँव-जवार में ई पीपर भुतहा-पीपर का नाँव से जनाला। गदबेर भइला पर एजा केहू जाये के जल्दी हिम्मत ना करे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज रात के तकरीबन दस बजे दूर शहर से आइल अविनाश पीपर के टूटल चबूतरा का एगो कोना में चुपचाप बइठल कुछ आहट ले रहल बाड़े। उनकर नजर अदो बदो हवा के हिलकोरा आ अँजोरिया से चकमकात तलैया का पानी पर थिर हो जाता, लपटा जाता। निगचे कहीं सियारन का आवाज से उनकर रोवाँ-रोवाँ खड़ा हो जाता। ओ आवाज का लगले वाद वरका गाँव का कुत्तन के भौंकल शुरू हो जाता। कभी-कभी पीपर का आकाशी डारन से चिड़इन के फदफदाहट एजा के मुर्दा सन्नाटा के तूरे लागता। आज जानबूझ के एजा अपना के साँसत में डाले आइल बाड़े अविनाश। उनका आज भूत से जबाब तलब करे के बा। बढ़म पिचास के ना, कौनो दोसरे भूत के खोजत ऊ एजा पहुँचल बाड़े। आजुए साँझ खा ऊ अपना घरे बरका गाँव पहुँचले ह। बिना कुछ खइले-पियले अपना मतारी वो पत्नी के भुलावा देके घूमत-घामत पीपर तर आ गइले ह। अइसे त अपना पत्नी का चिट्ठी से सब कुछ परगट होइये गइल रहे, बाकी अविनाश का अपराधी मन में धिरजा ना धरा सकल। जे कुछ भइल, ओ सबके जिमवार अविनाशे बाड़े। ए बात के ना उनकर पत्नी रेख। जानतारी, ना उनकर बाप-मतारी, ना गाँव के आउर केहू। ई बोझा अब अकेले अविनाश का ढोवे के बा। एह दुनिया में एके आदमी रहे जे अविनाश का दिल पर बइठल एह वजनदार पत्थल के हटावे में मदत कर सकत रहे। ऊ अपने त चालाकी से सरक गइल आ अविनाश का माथा पर हमेशा खाती ई बोझा ध गइल। नीरजा का अइसने करे के रहे त कम से कम चिट्ठियो लिख के अविनाश से पूछ लेती, भा उनका के बोला लेती। बाकी जइसन फितकाल में ऊ पड़ गइल रही, ओकर दोसर उपायो त ना रहे। अविनाश के अगर सर्विस के बन्धन ना रहित, त उहो एजियें गाँवें में रहिते। नीरजा आ उनका कुल खानदान के इज्जत बचावे खातिर ऊ अपना के दाँव पर लगा दीते। जइसहीं नीरजा घबड़ा के अविनाश के चिट्ठी लिखली, अविनाश छुट्टी लेके भागल-भागल अपना गाँवे अइबो कइले। नीरजा उनका के देखिये के रोवे लागल रही। सुसकी प सुसकी चढ़े लागल रहे। उनका हिरनी जइसन कजरारी आँखन में पीड़ा के टीस त हरदम झलके, आज उहे टीस बदरी बन के बरिसे लागल रहे। बड़ा मुश्किल से अविनाश नीरजा के तोख दे पवले। रेखा के आँख बचा के नीरजा के लोर से तर-बतर आँखन के चूम ले ले, जइसे नीरजा के सउँसे पीड़ा के अपना ओठन से खींच लेवे के चाहत होखस। अन्त में अपना साथे ले आइल दवाई के पोटली नीरजा के थमा देले। बताइयो देले कि कइसे ओकर उपयोग होई, आ कइसे एक हफ्ता का भीतरे नीरजा निफिकिर हो जइहें।

बाकी नीरजा का तकदीर में निफिकिर होखे के ना लिखल रहे। दवाई कौनो काम ना कइलस। अगर अविनाश दवाई के प्रभाव देखे खाती कुछ दिन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपन छुट्टी आउरो बढ़ा लेले रहिते त साइत ई सब होइबे ना करित।......मगर एजा रहियो के का कर लीते ऊ? नीरजा के दूर शहर में कौन वहाना से ले जइते? उनका मतारी भा भाई-भउजाई के का कहके समुझइते? ...... ना, नीरजा खाती दोसर कौनो रास्ता बाँचिये ना गइल रहे। ए सबके जिमवारी अकेले अविनाश पर बा। अगर ऊ नीरजा का जिन्दगी में ना आइल रहिते त ई सब बाजा काहे बाजित? नीरजा पर उनकर का अधिकार रहे, पीड़ा से धनकत केहूके जिन्दगी का साथे ऊ काहे खेलवाड़ कइले? काहे, काहे?...............

अविनाश के माथा पसेना से चुहचुहा गइल। विचार के धार अवहीं अतना जल्दी ना टूटित अगर अविनाश का वगल में उपजल धतूरा के झाड़ी ना खरखराइत। चिहा के अविनाश ओने तवले। एगो सियार पीपर के पाकल पकुहा खोजत झाड़ी से निकलल। अविनाश रूमाल से पसेना पोंछत अपना सिर के कुछ झटका देले, जइसे विचार का प्रवाह में अधिका डुबकी लगावे के उनका हियाव अब बाँचल ना होखे। थोड़ही देर में अपना तरोताजा अतीत का जाली में आखिर उनका अझुराहीं के पड़ल ......

अविनाश बरका गाँव का कीचड़ में कमल वन के जनम लेले रहले। एक मामूली गरीव परिवार में अपना निरक्षर वाप-मतारी के ऊ एकलौता सन्तान रहस। गाँव में एक से एक धनवान आ शान शौकत का साथ जीयेवाला लोग रहे। वाकी विद्या आ ज्ञान के जइसन हीरा अविनाश के बपसी महेन्दर राय का मिलल ऊ आज ले ओ जवार में केहू का ना मिल सकल। जौना दिन से अविनाश गाँव का पाठशाला में पढ़ल शुरू कइले, ओही दिन से जइसे सरस्वती देवी उनका के अपना गोदी में वइठा लेली। उनकर बुद्धि आ तेजी देख के गुरु जी लोग दाँत काटे लागल। पाठशाला से स्कूल, स्कूल से कॉलेज-कतहूँ केहू उनकर पीठ ना लगा सकल। हर इम्तहान में फस्ट त अइवे कइले, कै कै गो छात्रवृत्ति आ सोना के तमगा जीतले। इंजीनियरिंग के पढ़ाई खतम होत होत उनका टाटा का फैक्टरी में एगो अच्छा ओहदा पर सर्विस लाग गइल।

अविनाश का पढ़ाई, चरित्र आ सर्विस के अइसन महातम रहल, जे ऊ अपना गाँव-जवार में देवता खानी पुजाये लगले। जेकरा दुआर पर ऊ वइठ जास आ दू चार टुम ......वात कर लेस ऊ अपना भाग के सराहे लागे। सीधा-सपाटा महेन्दर राय से गलती इहे भइल कि ऊ कुछ लोग का चढ़वला बोलला से वेटा के शादी कुछ अगतहीं क देलें, उहो एगो निरक्षर, गँवार लड़की का साथे। अविनाश विरोध करेके चहले, बाकी बपसी के वात आज ले कबो कटले ना रहले। मन के विरोध मनही में दुबुक गइल। सोचले, निरक्षर रेखा के ऊ धीरे-धीरे अपना साँचा में ढाल लीहें। बाकी इहे सोचल उनका खाती माहुर हो गइल। जवन वात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ सपनों में ना सोचले रहस, उहे साँच बन गइल। आज से अविनाश के सिर झुकल रहत केहूका सोझा ? उनका चरित्र के दीया कबहूँ टेम्हाइल रहल बाकी ई सब का हो गइल, अविनाश के गोर अचक्के कइसे फिसल गइल ? उनका में आ एगो मामूली गुण्डा में अब का तफरका रह गइल बा ?.......

सामने तलैया का पिघलत चानी में एक बा एक कौनो सजोर बाधा पड़ल। पानी में हिलकोरा उठे लागल आ ओकरे साथे चानी के बनत-बिगड़त साँपन क छटपटाहट बढ़त गइल। साइत कौनो ढाबुस का छरपटा से शान्त तलैया कुलबुला गइल रहे। पीपर के चितकाबर छाँह अब किछ अधिका लम्बा होके बायाँ तरफ सनसनात गेहूँ का खेती पर पसर गइल रहे। अविनाश दोहरा के अपना पसेनाइल गाल आ तरहथी के पोंछले। कुछ देर चबूतरा पर खड़ा होके देह सीधा कइले। अगल-बगल ताक ताक के कुछ देखे लगले, जइसे केहूका इन्तजारी मे होखस। फेर ऊ कब बइठ गइले, कब विचारन का लहर में दहाये लगले, ई खुद उनका पता ना चलल......।

निरक्षर रेखा के पढ़ावे के सवाल सिर पर आ गइल। टटके वियाह भइल रहे। अविनाश दूर शहर का काॅलेज में होस्टल में रहके पढ़त रहलें। एही से महीना में एकाध दिन खाती गाँव आके रेखा के खुदे पढ़ावल मुश्किल काम रहे। बाकी समस्या आसानी से सुलझ गइल। बड़गाँव के सबसे बड़का घर राय बहादुर बाबू किसुन देव सहाय के मानल जाव। सहाय जी अपना समय के एह जिला के सबसे बड़ जमीन्दार रहीं। ना अब जमीन्दारी रहल, ना सहाय जी। बाकी सहाय जी के लड़िका बबुआ गोकुल नाथ अपना कुल खानदान के इज्जत आज ले ओइसहीं निमाहत आइल बाड़े। गाँव के मुखिया त बड़ले बारे, आर्य समाज के कट्टर समर्थक का रूप में उनकर सोहरत जिला भर में फइलल बा। ना जाने अबले कतना अनाथन के अनाथालय में पहुँचवले होइहें, कतना विधवन के दोसर शादी करवले होइहें, कतना लोगन के वैदिक धर्म में दीक्षित कइले होइहें। उनका घर में मरद स मेहरारू ले सभे आपन काम चलावे लायक पढ़ाई कइले बा। सादगी, सफाई आ सुन्दरता के कहीं एके जगे देखे के होखे त बबुआ जी के घर देखल जा सकेला। इहाँ छोट बच्चा से लेके उमरगर सवाँग ले, मालिक, मलकिनी सभे जइसे रूप का एके साँचा में ढालल गइल होखे। केहू दूसे लायक ना, ना केहू कौनो गुन में ओछ।

नीरजा, बबुआ जी के खास आपन सबसे छोट बहिन। बबुआ जी के परिवार का खूबसूरती के नगीना। धप-धप गोर इकहरा देह। पातर कमर। बोझिल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छाती का अनुपाते में गुलथुल नितम्ब के फैलाव। भरल-पूरल चेहरा। गोल सुघर नाक, पपनीदार बड़का-बड़का कजरारी आँख। अनार का दाना खानी उजर दाँत के पाँत। पातर पातर संवेदनशील लाल-लाल रसदार ओठ। नीरजा जब सोलह के उमिर में उतरली, उनका भाई आ मतारी दूनू का चिन्ता समा गइल। अइसन अद्भुत रूप के लड़की ज्यादे दिन कुँआरी ना रखल जा सके। कहीं खाल-ऊँच गोर पड़ जाय त खानदान के नाक कटा जाई। योग्य वर के खोज शुरु हो गइल। आखिर एगो सम्पन्न परिवार में एक सुन्दर, स्वस्थ आ शिक्षित लड़का मिल गइल। बड़ा धूमधाम से शादी भइल। बाकी नीरजा का लिलार में सुख ना लिखाइल रहे। शादी का मुश्किल से दू महीना बीतल होई कि नीरजा के पति बीमार हो गइले। लगभग एक महीना पलँग पर पड़ल रह गइले। दवा-दारु आ चिकित्सा पर बबुआ जी पानी खानी रूपया बहा देले। मगर अन्त ले बीमारी के पहचान ना हो सकल। जले कुछ दोसर बात सोचाव, बहनोई दम तोड़ देले। हाहाकार मच गइल। काँच उमिर के नीरजा एह सांघातिक चोट के बान ना सह सकली। मूर्च्छा पर मूर्च्छा आवे लागल खाना-पीना सब छूट गइल। रोवत बिलखत भाई कइसहूँ अपना दुलरुई बहिन के उठा-पठा के अपना घरे ले अइले। नीरजा का स्वस्थ होखे में एक वरिस बीत गइल। ऊ शरीर से त अच्छा हो गइली, मन से कवहूँ स्वस्थ ना भइली। जौना आँखिन में कभी रस आ रंग लहरात रहे ओमें अब मुर्दई पीड़ा समा गइल। शरीर के गठन भा रूप में कौनों ज्यादे फर्क ना आइल, बाकी ओकरा हाव-भाव में जइसे लकवा मार देले होखे।

अविनाश त अपना बचपने से बबुआ जी का पूरा परिवार के स्नेह पावत आइल रहले। उनका तेजस्विता आ विनयी स्वभाव पर सवसे ज्यादे लट्टू रहली नीरजा आ उनकर मतारी। अगर शहर से घर अइला पर अविनाश बबुआ जी का घरे ना जा पावस, त उनका मतारी का पास ओरहन पर ओरहन आवे लागे। ई ओरहन लेके अविनाश किहाँ आवे वाली निरजे होखस। नीरजा का कहीं बाहर आवे-जाये में पाबन्दी रहे, खाली अविनाश के घर छोड़ के। अविनाश के जवसे शादी भइल, रेखा नीरजा के भौजाई त होइये गइली उनकर परम सहेली भी बन गइली। धीरे-धीरे अविनाश का मन के भाव ऊ पढ़ लेली आ खुशी-ख़ुशी रेखा के पढ़ावल शुरु कर देली।·····

चबूतरा का सामने आगा एगो लम्बा करिया छाया कुछ हिलल-डुलल। अविनाश का सपनाइल नजर में एगो रोमांचक चेत जगा देलस। कहीं उहे त ना ह? अविनाश चकचिहा के छाया के टोह लेवे लगले। मालूम भइल कि पीपर का छाँव से सटले बाहर जौन लम्बा खजूर के पेड़ बा, ओकरे परछाहीं इहाँ ले फइलल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चल आइल बा। अविनाश का अपना वेवकूफी पर हँसी बरल। विचार के विन्दु फेर पसरे लागल……।

निरक्षर रेखा के पढ़ाई का अवहीं सुलहाल एको महीना ना बीतल रहे कि अविनाश का नाँवें रेखा के लिखल एगो चिट्ठी पहुँचल। चिट्ठी पढ़के अविनाश के मन जइसे अगरा गइल होखे — त रेखा अतना जल्दी अइसन सुन्दर लिखावट आ मंजल भाषा में चिट्ठी लिखे लगली! पहिले त आँख पर विश्वासे ना भइल। ऊ कै वार चिट्ठी के उलट-पुलट के पढ़ले, छानवीन कइले। चिट्ठी मे कुछ अइसन बात लिखल रहे जे एगो भावुक पत्नियें अपना पति पास लिख सकेले। ना, नीरजा अइसन प्रेम में सनल श्रृंगारिक वात अविनाश का पास खुद कइसे लिख सकेली?…

कुछ दिन का बाद जव अविनाश छुट्टी में अपना घरे गइले त सव भेद खुल गइल। साँचो रेखा के लिखल ऊ चिट्ठी ना रहे। नीरजे रेखा का जानते में खत के मजमून तैयार कइले रही। ई सव सुनते अविनाश पहिले कुंछ लजइले। बाद में रेखा का सामनहीं नीरजा का आँख में आपन खोजी नजर डलले। बुझाइल जइसे नीरजा के सकुचाइल आँखिन में कौनो अवूझ प्यास के रंग तिर गइल होखे। जइसे नीरजा अपना हकासल-पियासल आँखन में अविनाश के समेट ले ले होखस। प्राय: अइसन हालत में पत्नी के छठा इन्द्रिय जाग जाला आ ऊ पति पर आवत संभावित खतरा के तुरन्ते भाँप जाले। वाकी अइसन कुछ भइल ना। उलटे रेखा का तरफ से शह मिले लागल। ई साइत एसे भइल जे रेखा के मन नीरजा अव ले अपना बात, वेवहार आ प्रेम से जीत ले ले रही। बड़ घर के बेटी भइला के आ दीगर रहे। तेपर भरल जवानियें में नीरजा के दुखी जिन्दगी रेखा के मन डोला देले रहे। पति का मोकावले अपना अज्ञान आ गँवारु संस्कार का चलते रेखा शादिये का समय से एगो हीन भावना से ग्रस्त रहत आइल रही। ऊ केहू तरे कौनो कीमत पर अविनाश के खुश राखे के चाहत रही। साइत इहे सब कारण मिलजुल के रेखा के मुँह बन्द कर देलस। एने अविनाश आ नीरजा गतें-गतें एक दूसरा कावर बढ़त चल गइल लोग ……

असल में विधवा भइला का पहिलहीं से अविनाश का मन में नीरजा के रूप-रंग ले के कुछ कमजोरी जरूर रहत आइल रहे। ई दोसर बात बा कि ऊ एह कम-जोरी के अपना चरित्र का बल पर बरजोरी धकियावत आइल रहले, कबहूँ पनपे ना देले। हँ, नीरजा जब विधवा हो गइली त उनका खाती इनका मन में प्रेम का वदले सहानुभूति आ दया के भाव उफनाये लागल रहे। उनका ई बात देख-सुन के अचरज भइल कि अपने बहिन खाती बबुआ जी के सब आर्य-समाजी आ सुधारवादी रूप जानू कहाँ बिला गइल। जे आदमी आज ले समाज के अइसने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विकृतियन पर भाषण देत आइल रहे, काम करत रहे, ऊ मजधार में डूबल नीरजा के उबारे खाती एकदमे चुपा गइल। अब उनका आपन कुल आ खानदान के सोहरत देखाई पड़े लागल, नीरजा के दोसर बियाह कके ऊ ओमें कलंक लगावे के ना चहले। 'परोपदेश पाण्डित्यम्' के अइसन सुन्दर नमूना अविनाश का सामने फेर दोसर ना आइल। कभी-कभी उनका मन में विद्रोह के आगो लहकल। ऊ चहले कि बबुआ जी के समझावस लजवाबस। बाकी बबुआ जी उनका से उमिर आ प्रतिष्ठा में एतना बड़ रहले कि अविनाश के मसूबा उनका मने में रह गइल। उनका हिम्मत ना भइल कि ऊ आपन बात के केहूका सामने खोल सकस।.......

अविनाश के आज ले केहू बेवजह कौनो लड़की से बात करत ना देखले होई। ऊ स्कूल आ कॉलेज से घर लौटस त माथा निहुरंवले। ना केहू कावर ताके के चाव आ ना झुके के लालसा। उनकर व्यक्तित्व सब मिला के गंभीर, सुरूप आ लजालु रहे। ऊपर से उनकर तेजस्विता उनका चेहरा का पोर-पोर में एगो गजब के खिचाव भर देले रहे। गरीब परिवार में जनमलो पर ऊ अपना गाँव-जवार का लड़कियन के चहेता बन गइल रहलें। जबले ऊ अपना घर रहस, गाँव के बड़का घरन से अपना रूप आ गुण पर गुमान करेवाली लड़कियन के ताँता लागल रहे। कौनो ना कौनो बहाना से अविनाश के एको नजर देखे के लालसा ओ लोग के खींच के ले आवत रहे। बाकी अविनाश पर आज ले केहूके दाल ना गलल। उनकर मन भावुक भइलो पर लड़खड़ा ना पावल। एही से लड़कियन का समाज में ऊ 'लज-कोकर' का नाँव से मशहूर हो गइले।... ...

एने नीरजा के लेके जब एक बार अविनाश के मन हिलल त ओमें भूकम्प के धक्का लागत गइल। ऊ खुदे ना समझ सकले कि ई सब का हो रहल बा। ऊ कौना अनजान किनारा पर खिचाइल जातारे। जे नीरजा पहिले रेखा के चिट्ठी का बहाने अपना मन के भेद खोलल शुरु कइले रही, ऊ धीरे-धीरे अब अपनहीं लम्बा-लम्बा खत लिखे लगली। ओकरा जबाब में अविनाशो के कविताई भरल उत्तर मिले लागल। आ, एही तरे, अविनाश अपना जिन्दगी का एह फफनाइल दरियाव में दहत चल गइले ....

एकाएक तलैया का चमचमात पानी में कुछ लउके लागल। बुझाइल जइसे कौनो जवान औरत के लाश दहत होखे। चँदनियाँ देह में सटल उजर धप-धप साड़ी। करिया भॉवर केशन के पानी पर उतरात गुच्छा। अविनाश तनी ध्यान से देखलें हँ, लाशे त ह। त जेकरा से मिले खाती ई एह सुनसान में एतना रात बितला आइल बाड़े उ पहुँचिये गइल। अविनाश के देह थरथराये लागल। आँख जइसे चोन्हिया गइल होखे। सउँसे देह पसेना में सउँना गइल। छाती के धड़कन तेज हो गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ अपना देह आ मन के परवाह ना क के तलैया कावर लपटाइल कदम से चल देले। सोच के चलले कि अब उनकर जिनगी त अकारथ होइये गइल बा। लाश का सँगे एकाकार भइले में एकर सार्थकता बा। अन्हार सें भरल पीपर का छाँव में उनकर गोर कै बेर झाड़ी में फँसल, कै बेर उनका पैर के धमक सुनके झाड़ी में छिपल जीव एने-ओने भगले, सरसरइले। बाकी अविनाश त ए सबसे बेखबर रहले। उनका सामने लाश का अलावे ना कुछ लउकत रहे, ना जनात रहे। गिरत-पड़त जब ऊ तलैया का भिण्डा पर अइले त आँख फाड़ के झँकले। आसमान में हँसत-ठठात चनरमा के किरिन अबले तलैया का चुलबुल पानी का सतह पर सीधा साधी लहराये लागल रहे। अविनाश के आहट पाके किनार पर बइठल एगो बेंग छपाक से पानी में कूद गइल। थोड़े देर खातीं तलैया जइसे भीतर से बाहर ले काँप गइल होखे। अँजोरिया में लपटाइल लहरन के पाँत पर पाँत उठे लागल। बाकी कहाँ गइल लाश जेसे खिंचा के अविनाश एजा पहुँचल रहले? लाश जइसन कवनो चीज तलैया में कतहूँ ना लउकल। त ई भरम रहे अविनाश का मन के। अविनाश का धीरे-धीरे अपने नजर पर, अपने मन पर विसवास ना रह गइल। ऊ ओजियें घास-पात से भरल भिन्डा का एगो कोना में धस से बइठ गइले। टटका अतीत उनका मन के फेर उटकेरे लागल......।

अबकी बार अविनाश दुर्गा पूजा का छुट्टी में घर आइल बाड़े। उनका घर अइला का पहिलहीं रेखा अपना नैहर चल गइल रही। अविनाश एह छुट्टी के उपयोग नीरजा के पढ़ाके मैट्रिक के परीक्षा दिलावे खाती शुरू कर देले। नीरजा के भाई-मतारी का भी ई बड़ी नीक लागल। अविनाश का चाल चलन पर ओलोग के अन्धा विश्वास रहे। एने नीरजा अविनाश कावर आउरो खिंचात गइली। घर का बाहर एगो एकान्त कोठरी में पढ़ाई होखे। एक दिन मन के बाग ना अड़ाइल। अविनाश का आपन सुध-बुध ना रहल। दूनू जने एक दोसरा का अँकवारी में समा गइले। प्यास के तह पर तह खुले लागल। तृप्ति के लहर पर लहर मिठास भरत गइल। ई सिलसिला लगभग एक महीना ले चलत रह गइल। कॉलेज खुलला पर अविनाश बड़ा दुखी मन से नीरजा से विदाई ले के शहर चल अइले। नीरजा ओजा अविनाश का विरह में लोर ढुरकावत रह गइली ....

एकरा बाद घटना बड़ी तेजी से आगे बढ़ल। नीरजा के पीरियड जब तीसर महीना ले रुकल रह गइल त उनकर मन संसा में टंगा गइल। अब त विश्वास हो गइल कि पेट में कुछ बा। नीरजा घबड़ा के अविनाश का पास चिट्ठी लिखली। चिट्ठी बाँच के अविनाश का एरी से कपार ले कँपकँपी समा गइल। हिम्मत जवाब देवे लागल। बाकी ऊ काहिल ना रहले। नीरजा के मझधार में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छोड़के कगरिया जास, ई सोचे में भी उनका शरम बुझाइल। जे होखे, हिम्मत से काम लेवे के होई। अगर नीरजा के बचावे खाती अविनाश का अपना के होम भी कर देहल जरुरी होखे त ई खुशी-खुशी आपन जिन्दगी निछावर कर दीहें। एही उत्साह से कुछ दवाई के पोटली बन्हले ऊ घरे अइले आ नीरजा के समझा-बुझा के दू-तीन दिन का बादे अपना कॉलेज चल गइले।

एने नीरजा दवा के पूरा कोर्स चलवली। बाकी कौनो फल ना निकलल। घबड़ा के ऊ अविनाश के दोबारा चिट्ठी लिखलीं। जब ले ई चिट्ठी अविनाश का मिलो, एगो दोसर खतरा नीराज का सिर पर मंडराए लागल। उनका मतारी के अनुभवी नजर नीरजा पर पड़ल त पड़ले रह गइल। ऊ सब कुछ भाँप गइली। दुख अउर क्षोभ से कपार ठोक लेली। नीरजा के कुलच्छनी अभागी वगैरह कतना गारी सुन के पड़ल। आज ले अपना मतारी का मुँह से ऊ प्यार आ पुचकार का बदले डाँट-फटकार के भी शब्द ना सुनले रहीं। मतारी खोद-खोद के पूछे लगली —"बताव, केकर ह?" नीरजा केकर नाँव लेस? चुपचाप लोर ढुरकावत रह गइली। अपना पति के त ठीक से देखियो ना पवले रहीं। जबले ससुराल में रहीं लाज में छुईमुई बनल रह गइली। पति से प्यार जतावे क ना उमिर रहे, ना होश। जले उनकर चेत जागो तले सब कुछ उजड़ चुकल रहे। अपना जिन्दगी में पहिल बार गलत भा सही ढंग से ऊ अविनाश के आपन प्यार लुटा देले रहीं। त ई प्यार अइसन घटिया हो गइल कि ऊ अपना उदार दिल प्रेमी के नाँव बता देस? उनका के समाज का आँख में गिरा देस? ना, ई काम नीरजा से ना हो सके, भले एकरा चलते उनकर चमड़ी उधेर लेहल जाव, उनका के फाँसी पर लटका देहल जाव। नीरजा एपर जतने सोचत गइली, उनकर मनोबल ओतने मजबूत होत गइल। पहिले कहीं मन में अपराध के कौनो भाव कचोटत रहे। बाकी अब सब साफ हो गइल। कहीं कुछ गलती ना लउकल। ऊ अविनाश से प्यार कइली, ठीके कइलीं। उनका मन में एकर कौनो पछतावा नइखे। अविनाश उनकर देवता बाड़े, देवता रहिहें। अपना देवता के मरजाद बचावे खातिर नीरजा कुछ ऊ उठा ना रखिहें। समाजो देख लेव जे नीरजा के जीयते कइसे उनकर सर्वस्व अविनाश के कुछ बिगाड़ लेता......

ओने मतारी के हठ कठोर से भयंकर होत गइल। कमरा बन्द क के ऊ नीरजा के केश नोंचल शुरू कइली, थप्पड़, घूसा के चोट एलहदा। नीरज बेहोश होके गिर गइली, तबहूँ उनकर रक्षा ना हो सकल। मतारी के एके गो जिद रहे —"बताव, केकर ह?" जानू पीड़ा आ चोट का कौना दौर में नीरजा का मुँह से निकलिये गइल —"धनेसर?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"कौन ? धनेसरा ?" नीरजा के मतारी के हाथ एका-एक थम गइल। अचरज आ घृणा से उनकर मुँह खुलल के खुलल रह गइल। देखत-देखत उनका आँखिन में हिंसा के ललाई चुभचुभाये लागल। एने नीरजा का कुछ देर ले आपन पीड़ा बिसर गइल। ई ऊ का कह देली ? अब त गरीब आ ईमानदार धनेसर के खैर नइखे। धनेसर के परिवार पुश्तैनी से बबुआ जी का घर मे चाकरी करत आइल रहे। धनेसर खुद एक हँसमुख, मुँहबोला, देखे में सुरूप आ स्वस्थ युवक रहे। रात-दिन बबुआ जी के काम जोगावे में लागल रहे। ऊ बेचारा कौन कसूर कइले रहे नीरजा के ?.....

दिन के लगभग चार बजे के ई घटना ह। ओही दिन सांझ खा नीरजा के मतारी अपना बेटा बबुआ जी का कान में कुछ खुसुर-पुसुर कइली। बबुआ जी के क्रोध मशहूर रहे। एक त ऊ कभी बिगड़स ना, बाकी क्रोध अइला पर भूत हो जास। धनेसर जइसन नीच गँवार उनका इज्जत का साथे खेलवाड़ करे, ई कइसे सहल जा सकत रहे ? पहिले त ऊ मतारी के कुछ समुझवले। बाद में अपना दलान में अकेले होके धनेसर के बोलवले। धनेसर से दु चार टुम नीमने बात कइले। फेर ओकरा के बिना कुछ बतवले लगले ओकर पिटाई करे। चिल्लाहट सुन के घर के लड़िका-सयान भय से पीयर पड़ गइल। केहूका साहस ना पड़ल जे बबुआ जी का चंगुल से धनेसर के छोड़ावल जाव। दोसर केहूका दिमाग में कौनो बात अँटबे ना कइल। एने नीरजा का मन पर धनेसर के रोवना चिलइला के एगो दोसरे प्रतिक्रिया भइल। जइसे धनेसर का शरीर के एक-एक चोट नीरजा के सोखत जात होखे, लीलत जात होखे। नीरजा कुछुवे देर में नीरजा ना रहे गइली। जानू कौनो प्रेत के छाया नीरजा का रूप में देह धइले आ गइल होखो। त नीरजे धनेसर के दुर्दशा के कारण बाड़ी। ऊ अपना भाई-मतारी का आँख के काँट त बनिये गइल बाड़ी। गरीब धनेसर के खून से चुहचुहाइल देह नीरजा का आगा आपन फरियाद लेके आइल बा —"बबुईजी, हम राउर का त्रिगाड़ देले रहनी हँ ? हमरा के अनेरे ए कींचड़ में काहे घसीट रहल बानी ? हम त अब मरिये जायब, बाकी हमरा अनाथ परिवार के का होई ? के देखी ओकरा के ? भूख से बिलबिलात नीरजा के साँस जइसे टँगाइल जात होखे। ना, अब ई सब ना सहा सके। बहुत सह चुकली नीरजा। ....धीरे-धीरे अन्हरिया रात ससार के अपना भुतही डैना में समेट लेलस। घर के सभे खा-पी के सुत गइल। धनेसर के का भइल, ई जाने के कौनो चेत नीरजा का ना रह गइल रहे। ऊ ओह रात उदासे पड़ गइल रही। जब सभे सुत गइल त धीरे से केंवारी खोल के घर का बाहर अइली। चारू ओर सन्नाटा। खाली पुरवैया के सनसनाहट सुनाई पड़त रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धीरे-धीरे उनकर पाँव भुतहा पीपर कावर अपनहीं बढ़त गइल। तलैया का पास आके ऊ कुछ देर ठमक गइली। जानू केहू इयाद आ गइल होखे। दोसरे छन आँख मूँद के पानी में कूद पड़ली। तलैया में डूबे लायक भरपूर पानी रहे। दोसरा दिन सबेरे उनकर लाश पानी पर उतरात नजर आइल ....

नीरजा बिना अविनाश का पूछले ई सब काहे कर देली? ऊ धनेसर के नाँव का बदले अविनाशे के नाँव काहे ना बता देली? अविनाश त पहिलहीं से नीरजा खातिर सब कुछ झेले खातिर तइयार बइठल रहले। ....

चनरमा अब आकश का एक तरफ झुक गइल रहले। साइत आधा रात हो गइल होई। एक बार फेर सियारन के फेंकरल शुरू भइल। अविनाश भिण्डा पर खड़ा हो गइले। कुछ घड़ी बाद तलैया में उतर के पानी के दू-चार बूँद अपना माथा पर चढ़वले। एकरा दोसरे छन उनकर भारी कदम झाड़-झंखाड़ का बीचे बड़का गाँव का तरफ बढ़ चलल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपराधी

□ डा० शिव प्रसाद सिंह

संझा के वेला। डूबत सूरज के गेरूई छांह गंगाजी के छाती पर लोटे लागलि। संझौती हवा अपना झँकोर में फुहार लेके उड़े लागल। कगार पर हरियर चादर लेखा जौ के जेत जेमा वीच-वीच में सरिसो के पीयर बुट्टा जइसे गंगा मैया के अरार के केहू छींट ओढ़ा के ढाँप देलस। ए कोने से ओकोने तक फैलल खेत के बीच मेंपातर टेढ़-मेढ़ रहता जइसे कुँवार लइकी के मोलायम करिया वार के बीच दूध नियर चमकत माँग।

आगे के महुआ के फेड़ के कगरिया के लाल बाबू अरार से उतरि के आ गइलन। ऊ जइसे केहू के खोजत होखन। एनी ओनी बड़ा तकलन। केहू ना लउकल त मन मारी के गंगा जी के धार देखे लगलन। एतने में बीच धार में से एक ठे छोट बुची डोंगी आवत देखाइल। करिया-सा डोंगी अपने मन से चुप-चाप बहल चलि आवति रहे जइसे कवनो मगर मन के मउज में वहल जात होखे। एतने में ऊ डोंगी किनारे लगलि। ओपर एगो लइकी वइठ के मछरी मारति रहे। किनारे आके ऊ अपन कँटिया डोर सँभरलस, आ चले के भइल, त लाल बाबू तनी आगे वढ़लीं आ पूछ देलीं—'का होत हऽ' ?

'मछरी....' ऊ मलाह के लइकी बोललस, 'का एहू घाट पर चूंगी लागे लागल ?'

"नाहीं नाहीं।', लाल बाबू कहलन "हम त असहीं पूछ देलीं ह कवनों बात रहे।' एतना कह के ऊ ओकरा ओर चललन तले अरार प से केहू पुकरलस, 'मूंगा।' लाल बाबू देखलन कि उप्पर से एगो करिया अदमी उतरल। ओकरा देँह पर एगो लाल गउदी गमछा के अलावा कुछ रहे ना। बाकी ओकर देह ओही में अइसन लागत रहे जइसे सेमर के करिया डार में अंगार के फूल लागल होखे। गठल देँह, बाजू त अइसन कि ताल ठोक के छुवैं त मछरी लेखा तरक जाय, मैगल हाथी नियर चलके ऊ मूँगा के पास आइल।

'मछरी मिलल ?'

'हँ' मूँगा ओकरे ओर आँख घुमाय के देखलस आ मधुरे मुस्कराय के कहलस 'दूठे लपचा, बस !'

मलाह ओकरा आँचर में बाँन्हल मछरी टोय के शरारत से बोलल, "आ दूनो जीयते, अयँ ?"

'बेहया,' लाल बाबू मारे करोध के फट्ट से बोल देलन। ऊ दूनो घूम के देखलन स आ का जानी काहें बड़ा जोर से खिलखिलाय के हँस देलन स। ऊ मलाहवा मूँगा के हाथ धर लेलस आ कनखी ताक के लाल बाबू के ओर घूइर के देखत बालू के अरार पर अपना गोड़न के निशान उतारत चल देलस। लाल बाबू देर ले ओह निसान के पाँत के देखत रहलन, फेर चुपचाप एक ओर चल देलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२

आज मलाह टोल में बाड़ा अनसनी फैलल बा। गाँव के छवरा के बीचो-बीच एक पुरान बर के फेंड़ ह जवना में डोर नियर लटकल बरोह के गाँव के लइका पकरि-पकरि घुमरि परउआ खेलेलन स, आ ऊ फेंड़ जानव जे बूढ़ दादा नियर अपन दाढ़ी खींचेवाला लइकन के दुलरावेला। ए गाँव के अइसन के वा, जे ए वर के नीचा छाँह में बइठल ना होखे आ छुटपन में ए बरोह में झूलल ना होखे। वाकी आज त एइजाँ लइका न के कहे चिरईं क पूतो नइखे देखात, छाँह में जहाँ रोज-रोज मंगरू क ललका कुक्कुर बइठेला ऊँहे बँसखट पर थानेदार साहेब वइठल वार्नी, पँजरहीं फेंड़ के एक ठे मोट सोर में रसरी में बाँधल सुमेर मलाह बइठल ह जेकरा पखुरा, का्‍ह आ जाँघ पर मारे बेंत के निसान के लाल हो गइल ह। कत्तों-कत्तों त टटके लोहू चिपचिपात ह आ कत्तों लोहू जम के बइठ गइल बा जइसे खयर जम गइल होखे। थानेदार साहेब के पास में लाल बाबू वइठल बाड़न, उनके कहनाम बा कि उनके घरे से जवन चोरी भइल ह तवने में सुमेर मलाह के हाथ बा। थानेदार साहेब मार के थक गइलन आ उनकर हाथ मारे दरद के बेहाल वा, वाकी इ मलाह बा कि घाघ, एक बात ना वतवलस।

थानेदार के कहला से छोटन मियाँ बेंत उठवलन, आ अपन कुल हाथ देखा देलन बाकी सुमेर कुछ ना उगललस। बगल से दउर के ओकर मेहर रू फेंकर के ओकरे ऊपर गिर गइल जइसे ऊ ओकरे देह पर छा जाये चाहत हो। "मूँगा" सुमेर बोलल, "जा जा घर में जा" आ फिर ऊ मूँगा के ओर आँखउठा के देखलस। जानीं का रहे ओकरे आँख में, पीड़ा, तकलीफ निराशा कि मूँगा बिना कुछ वोलले आँख पोछत सामने के घर में चल गइल। लाल बाबू कनखी ताक के थानेदार के ओर इसारा कइलन। चार गो सिपाही आ थानेदार ओ घर में घूस के ओकरा कोना-कोना ढूँढ़ फेंकलन, लेकिन ना त लाल बाबू के कवनो सामान मिलल ना त मूँगा। लाचारे दावे थानेदार सुमेर के थाने ले गइलन, ओके बाद चोरी के जुरुम में छः महीना के जेहल हो गइल।

३

पाँच महीना बीत गइल। कुआर के महीना आ गइल। गंगा जी के पानी थिराय के दूध नियर निखर गइल। साँझ के वेला में नीला रंग के आसमान के छाँह से पानी साँवर लगत रहे जेकरे बीच में एक ठे छोट-सा डोंगी, बत्तख नियर हिलत डूलत किनारे ओर आवति रहे।ओकरा पीछे पानी पर एक ठे रेखा उभर गइल उजर जइसन साफ आसमान में कचवचिया के पाँत होखे।

कगार पर से आज फेन लाल बाबू उतरलन। किनारे पहुँच के देखलन कि ओ डोंगी पर उहे अवरत हाथ में कँटिया मछरी ले ले बइठल ह। ऊ ओकरा पास गइलन, आ ओके चिढ़ाय के, ओकर दिल दुखा के हँसे खातिर आ ओके उदास देख के, दुखी देख के खुश होवे खातिर, पूछलन, "ऊ अपराधी का भइल ?"

मूँगा उनके देखलस आ मुस्कुरा के बोलल, "ऊ त इहाँ बा, हमारा गोद में दूध पियता" आ अपन अँचरा उठा के देखवलस एक ठे छोटा बच्चा, दुवक के पड़ल रहे।

हवा के झंकोरा उठल, लहर करइलीं, किनारे पर धक्का मार के पानी खिलखिलाय के हँस उठल, आसमान में हवा कुरचि के सनसनाये लागल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ कारीगर रहे

□ दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ'

ऊ सिल्पी रहे—दिल्ली दरबार के प्रधान सिल्पी। सिल्प ही ओकर जीवन, सिल्प ही ओकर आनन्द, सिल्प कला ही धन, परिवार, संसार, सब कुछ रहे।

उमर ओकर साठ बरिस रहे। दुबर पातर सरीर, कमर झुकल, मांस के कहीं पता ना, सजीव कंकाल मात्र। बाकी ओकर उजरा आँखि में तेज के जोति दमकति रहे। मुँह पर आत्म-बिसवास के जीअत जागत प्रभा रहे।

ऊ दिन भर गगनचुम्बी मचान पर बइठ के, सैंकड़न सिल्पी आ हजारन मजदूरन के साथ --धूप के धूप. सीत के सीत, आ बरखा के बरखा ना समुझि के—राज भवन के निरमान में बरिसन बितवले रहे, एही में आपन गौरव आ सन्तोष समझले रहे।

राति-राति भर जागि के ऊ कला के बारीकी, खोदाई. पच्चीकारी, रंगसाजी, नक्कासी, चित्रकारी आदि के चिन्तन क के ओह महल के निरमान में आपन स्वास्थ के साथ-बलि चढ़ा देले रहे, तब कहीं महल तैयार भइल रहे।

साँझ के फाटक के सामने खड़ा होके अपना कारीगरी के ऊ घंटन तक बड़ा ध्यान से देखलसि। फिर दू बूँद आनन्द के आँसू गिरा के अपना सहायक सिल्पियन के साथ, घर के ओर रवाना भइल। ओकरा पीछे हजारन मजदूर ओकर कुछ हथियार ले ले, चुपचाप ओकरा के घरे पहुँचावे खाती चललनि। घर पहुँचला पर ऊ भरल कंठ से उन्हनि के सम्बोधित करके कहलसि—'जा लोग। भगवान तोहन लोग के सुखी रखिहें। हमनी के गरीब हइजा परिसरम ही हमनी के धरम ह, याद रखिह लोग।'

× × ×

काल्ह बादशाह के सवारी नया महल में जाई। नया महल में गृह परवेस होई। हजारन पुरुष-स्त्री सजधज के महल के बाहर भीतर दौड़त रहन। बेगमन के ऐसआराम के सामान, बादशाह के आराम गाह खातीर इतर, फुलेल, केसर, कस्तुरी आदि सुगन्ध, फर्सफानूस आदि सजावट के सामान, गुलाब जल से भरल हम्माम, आम आ खास दरबार के सजावट, सेना के परदरसन - सब के तैयारी में राज करमचारी बेआकुल रहनस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खास अफसर साँझ के महल में गइले आ सब के निरीक्षन क के वापस अइलें। परबन्ध सब ठीक रहे। सहर में मुनादी कर दिहल गइल कि नया महल में बादसाह जी काल्हि प्रवेस करिहें आ ओहिजे आम दरबार होई।

× × ×

रात के सन्नाटा में, महल के परधान फाटक के सामने चौड़ा सड़क प खड़ा-खड़ा एक बूढ़ गरीब अँजोरिया के परकास में महल के सोभा निरखत रहे घंटा भर बीत गइल तबो ओहिजे चुपचाप खड़ा रहे ऊ एक टक महल निरेखत रह गइल।

थोड़े देर बाद तीन चार अधेड़ आदमी ओहिजा अइले। ओह बुढ़ा के बगल में खाड़ हो के ऊ लोग भी महल के देखे लगलें।

सभे चुपे रहे एक आदमी थोड़े देर बाद कहलसि, "गुरुदेव ! एतना दिन के परिसरम के फल के ई सौंदर्य रासि के रूप में सामने खड़ा देख के कतना आनन्द होत बा।"

बूढ़ा सिल्पी के. धेयान टूटल। ऊ तीनों आदमी के कहलसि, 'तूं लोग हव ? कब अइल ? का कहल ह ?'

एक आदमी आपन बात फेर दोहरवलसि। बूढ़ आदमी कहलसि कि कलाकार के कला के त इहे सच्चा पुरसकार ह !

× × ×

ऊ महल के ओर देखत फाटक में घुसत रहे कि सिपाही आगे बढ़ि के रोकलसि कि भीतर जाये के हुकुम नइखे।

सिल्पी अचरज में पड़ि के पूछलसि, "केकर हुकुम नइखे ? तू के हव" ?

सिपाही कहलसि—बादसाह के। हम फौज के एक सिपाही हईं। सिल्पी कहलसि—"ई घर हमहन के ना बादसाह के ह ? हम एह में ना जा सकीं ? अच्छा !"

ऊ लौट गइल। तेजी से ऊ घर के ओर चलल जात रहे। सिर ओकर नीचे झुकल रहे आ मन ओकर आकास में। आकास पताल के सोचे में बेआकुल रहे।

× × ×

हाथी, रिसाला, फौज फिर राजा महाराजा आ अमीर उमराव के सवारी उनकर चोबदार आ खवास सब एक-एक क के फाटक के भीतर घुस गइले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्त में बादसाह के सवारी आइल । सोना के तामदान, जरीदार मखमली पोसाक से सजल कहाँरन के कान्ह पर, ओह्र में मूँगा, मोती, हीरा... जवाहर से लदल बादसाह रहन।

चोबदार सलामी देलन स । चारण लोग यस गवलनि आ सिपाही लोग गोड़ पटक के सलामी दीहलनि ।

जब तामदान फाटक में घुसे लागल तब एक साठ बरिस के बूढ़ सड़क के दोसरा किनारे से डाँट के कहलसि, -"खबरदार तामदान आगे मत जाय ।"

अङ्गरक्षक सिपाही लोग तरुआरि खींच लेलन । बल्लमदार भाला सम्हारि के आगे बढ़लनि । बादसाह इसारा से ओके मना कइलें आ तामदान रोके के हुकुम देले । ऊ बुढ़ा बोलावल गइल ।

बादसाह पूछलनि, "तू के हव ?"

बूढ़ उत्तर देलसि, "एही राज भवन के मुख सिल्पकार। हमहीं एह महल के हजारन सहायकन के साथ बनवले हईं । महल हमार ह। बिना हमरा आज्ञा के एह में रवां के जाये वाला हईं ?"

बादसाह मुस्कुरइलन । हुकुम देलनि, "पुराना महल के ओर जूलूस लौटाव !"

× × ×

हजारों भूखल गरीब मजदूरन के बीच से मुख सिल्पी के ले जाके दू चोबदार सजल दरबार में बादसाह के सामने खड़ा कइलन। चोबदार कहलसि, "बादसाह के कोरनीस कर ।"

सिल्पी चोबदार के देखलसि आ चुप खड़ा रहल। बादसाह पुछलन, "तू हीं राज परसाद बनावे वाला मुख सिल्पी हव ?"

सिल्पी विरक्त होके कहलसि—"जी हँ ।"

"काल्ह तू ही साही सवारी के आगे बढ़े में बाधा देले रहल ?"

"हाँ ! दोसरा के घर में जाये से रोकले रहीं।" जब साही खजाना से तोहरा के महल बनावे वास्ते खरच आ तोहरा सुल्क मिलल रहे, तब महल तोहार कइसे भइल ?"

"साही खजाना केकर ?"

"परजा के। बाकिर बादसाह ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"परजा के सेवक, खजाना के रखवार ?"

"फेन राउर महल कईसे भइल ? इ परजा के ह ?"

"खाली हमार ना, इ हम हजारन मजदूरन के महल ह ?, जे टिकस दे के साही खजाना के कायम कइले बाड़ नि. धूप आ सीत में आपन खून सुखा के महल के तैयार कइले बाड़नि ! का इ हजारन मजदूरन के परिसरम के कीमत रउआ समझतानी, ख़ाली ओही ताँवा के कुछ टुकड़ा के जे उहे लोग रउआ खजाना में जमा कइले बाड़नि ?"

अतना कहके सिल्पी बादसाह के ओर अइसन ताके लागल जइसे कुछ पूछत हो। बादसाह चुप रहन, उनकर सिर झुकल रहे।

सिल्पी चोबदार के ओर देख के कहलसि, 'तू लोग कह ताड़ कि कोरनीस कर। अपना कृतघ्न सेवक के, ओकरा स्वार्थीपन खातिर सलाम करीं ? कबहूँ ना !'

समूंचे दरबार में तरुआरि चमके लागल। बादसाह के एक इसारा के देर रहे; ओह गुस्ताख सिल्पी के सिर धड़ से अलग हो जाइत।

बाकिर बादसाह ओहि तरह सिर नीचा कइले गम्भीर होके बइठल रहन। सिल्पी धीरे-धीरे दरबार से बाहर निकलल। ओकरा के रोके के केहू के हिम्मत ना परल।

सब मजदूर जयकार के साथ ओकर स्वागत कइले। दोसरा दिन लोग देखले कि नया महल से सब साही सामान निकाल के पुरान महल में जात रहे आ बुढ़ा सिल्पी के अध्यक्षता में एक सिल्प विद्यालय आ कला प्रदर्सनी खोले वास्ते ओह महल में तइयारी होत रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एगो रेखा-चित्र

हरीश

☐ गुलाब चन्द्र प्रसाद 'अभय'

करीब पचीस बरिस बाद हरीश हमरा भेंटाइल रहन। कुल पैंतीस-छतीस के उमर में ही उनका सिर के सब बाल झड़ गइल रहे आ जे कुछ बाँचल-खुचल रहे तवनो पाक के ऊजर हो गइल रहे। हम त पहिलका नजर में उनका के देख के पहचानिये ना सकनी, उहे हमरा बचपन के नाम ध के पुकरले रहन। पहिले त हम अकचकइनी कि ई कवन बूढ़ आदमी हमरा बचपन के नाम से पुकारत बा। पहचानला पर हम गले मिलनी आ हाल-समाचार पूछे लगनी। समाचार के बाद ऊ बतवलन कि एगो अखबार के सम्पादक बाड़न। हम उनका जिनगी के पचीस साल पाछे वाला इतिहास सोचे लगनी।

हरीश जब सात बरिस के रहन तबी इनकर माई मर गइल रहली। एक बरिस का बाद इनकर बाबूजी भी परलोक सिधार गइलन। हरीश, एगो खूब तेज लइका – अपना कलास में प्रथम होखे वाला। ओही घरी से इनकर छोटहन-छोटहन रचना पत्र-पत्रिकन के बाल-स्तंभ में बड़ा रोचक ढंग से छपे। इनका स्कूल के मास्टर आ गाँव-जवार के लोग इनका पर नाज करे कि इ बचवा जब बड़हन होई तब देश के नाम रौशन करी।

बाबूजी के मुअला पर हरीश अनाथ हो गइलें आ अब अपना चाचा-चाची के साथ रहे लगलें। पढ़ाई-लिखाई में तेज भइला के अलावे इनका में हम एगो विशेष गुण देखले रहनीं। ई बचपने से नियम बना के रोज एक घंटा सूत कातस। ओही सूत के बुनकर से कपड़ा बिनवा के कुरता-पाजामा सिलवावस। देखे वाला लोग कहे कि ई बचवा केतना गुणगर बा। ई जरूर गान्धी बाबा आ विनोबा नाहिन देश में कुछ करी।

आज से कुछ बरिस पहिले देहातन में लइकाइयें में शादी-बियाह हो जात रहे। इनकर चाचा-चाची लोग चाहे कि इनकर बियाह कर दिहल जाव आ पढ़ाई छोड़ाके इनका के खेती-गृहस्थी के काम में भिड़ा दिहल जाव। कुछ बरतुहारो भी आवे लगलें। एक बार बरतुहार अइलें त ई मुँह में करिखा आ चूना पोत के बरतुहारन के सामने गइलें, जवना खातिर इनकर खूब पिटाई भइल रहे। दोसरका बार ई मूँजी में लुका के दू दिन तक बिना खइले-पीयले छिपल रहन। तीसरका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

वार ई लंगड़ आ कान बन के बरतुहार लोग के भड़कवलें। इनका दिल में त पढ़-लिख के महापुरुष बने के आग धधकत रहे।

जवना लइका के माई-बाप बचपने में मर जाला, ओकरा बारे में ई बात खूब आसानी से सोचल जा सकत बा कि ओकरा केतना संकट झेले के परेला। कुछ अइसने संकट के व्यूह में हरीश भी परल रहन। इनकर पढ़ाई छोड़ावे के एको उपाय इनकर चाचा-चाची ना छोड़लें। बाकिर वाह रे हरीश, बचपने में ई संघर्ष करे के सीख गइल रहन। इनका संघर्ष के फेहरिस्त लड़ा लंबा बा, मगर हम इहाँ थोड़े में ही इनका बारे में कहे चाहत बानी।

धोवी किहाँ कपड़ा धोवावल त इनका खातिर सपने रहे, साबुन सोडा भी चाचा-चाची लोग ना दे सकत रहे। ओकर उपाय भी ई निकाल ले ले रहन। ऊ देखले रहन कि केला के सूखल पतई के राख से कपड़ा साफ होखेला। केला के पतई जरा के ओकरा राख में पानी डाल के रस निकाल के ऊ कपड़ा साफ कर लेस। सूत कात के अपना जरूरत भर के कपड़ा बनवाइये लेस।

उनकर चाचा उनकर खाना भी बन्द क देले रहन। ऊ लोग इनकर पढ़ाई छोड़ावे खातिर कोटिन उपाय कइलन। खाये-पीये के चिंता छोड़ के ऊ अपना जिनगी के अरमान पूरा करे में लागल रहन, मगर बिना खइले-पीयले कय दिन चलो! भूख लगला पर पानी पी-पी के परान जियावत कुछ दिन खेयलें। जब भूख के आग सहाये से फाजिल हो गइल त एगो उपाय सोचलें।

आम जामुन के दिन में बगइचा में भाग जास आ आम जामुन खा के पेट भर लेस। गाँव के पच्छिम अमरूद के एगो बड़हन बगइचा रहे, ओह में घुस के अमरूद खा लेस। ई सब ना भेंटाव त जगल में फरे वाला लाल-लाल पाकल तिरकोल भा ऊँख के खेत में घुस के ऊँख के रस चूसस। एहू से हरला पर चना भा मटर के ढेंढ़ी तूर के भूख मेटावस। एगो आउर बात जवन ऊ ओही घरी हमरा से सुनवले रहलें—हँसियो आवे आ आँख से लोर भी टपक पड़े। ऊ एगो बाँस के फोंफी रखले रहन। घर में भंइस त रहवे करे, जब खने ना मिले तब दूध कइसे मिलो। कभी जब दूध पीये के मन करे त घर में जब कोई ना रहे त घुस जास आ दही जमावे खातिर औंटत दूध में फोंफी भिरा के पाव भर-आध सेर दूध सुरूक लेस। छाली ना हटावस, काहे कि पकड़ाये के डर रहे। घर के लोग समझे कि दूध ढेर जर गइल होई भा बिलाई पी गइल होई।

एही तरे छ-सात महीना बीत गइल। हरीश ओह दिन तीन दिन से भुखाइल रहन। संघर्ष करते-करते मन हटुवा हो गइल रहे, हिम्मत टूटल जइसन बुझात रहे। आखिर दुखो के एगो सीमा होला। दुखं से गुलाब जइसन खिलल चेहरा झांझर हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गइल मुरझा गइल। आखिर एतना सितम ऊ काहे खातिर उठावस—खाली पढ़हीं खातिर नूँ !

जब देखलें कि कवनो उपाय अब लउकत नइखे त बहुत उदास मन से एगो बात सोचलें। सोचलें कि अब जी के का होई जब जिनगी के अरमान पूरे ना होई तब !

भादों के घुप्प अंधरिया ! करिया कुचकुच बदरी आसमान में फइलल रहे। कभी-कभी कुछ बूँदा-बाँदी भी होत रहे। हरीश केहू के मुँहे सुनले रहन कि धतूर के बिया खइला से आदमी मर जाला। धतूर के बिया लेके ओही मसानघाट में पहुँचले जहाँ उनका माई-बाबूजी के आखिरी संस्कार भइल रहे। ऊ अपना माई-बाबूजी के दुलार आ भगवान के इयाद करत रहन आ उनका आँख से झर-झर लोर ढरत रहे। रोवते-रोवते उनकर आँख झँपक गइल। मसानघाट के सटले जामुन के एगो बड़हन गाछ रहे। आँख झँपकला पर उनका बुझाइल कि जामुन के गाछ से कोई कह रहल बा—जहर खाके परान गँवावल पाप ह। जेकरा जिनगी में जेतने संघर्ष होला ओकरे जिनगी के कहानी इतिहास में लिखाला। अभी तहरा बड़-बड़ काम करे के बा। तू सोच ल कि तहरा जिनगी में तहार कोई साथ देवे वाला नइखे। ई बात जान ल कि महापुरुष लोगन के जिनगी सपाट ना होले। ओह लोग के जिनगी में कठिनाई के बड़-बड़ पहाड़ आवेला, दुख के घनघोर बदरी छा जाले, विपति के भयानक-भयानक तूफान मचले ला। एसे जे ना घबराला आ जिनगी के चारों ओर फइलल घनघोर अंधरिया के छाती चीर के जीवन-ज्योति जरावत आगे बढ़ेला—इतिहास के पन्ना में ओकरे नाम लिखाला ओकरे चलल राह पर लोग चले लागेला।

ई हरीश के अन्तरात्मा के पुकार रहे। ई उनका जिनगी के दिशा बदल दिहलस। धतूर के बिया बिग के नया जिनगी के शुरुआत के सहारा खोजे निकल पड़लन। भोर भइला पर आपन बास्ता उठा के स्कूल चल दिहलन। अभी त छठवाँ क्लास में पढ़त रहस बाकिर सोचलन कि स्कूल से आपन साटिकफिकिट लेके कवनों शहर में भाग जायेब आ उहाँ कवनों होटल-वोटल में काम क के पढ़ाई वाला आपन अरमान पूरा करेब।

ओह दिन स्कूल में बड़ा उदास बइठल रहस। चूँकि पढ़े में काफी तेज रहन एह से स्कूल के मास्टर लोग उनका के खूब माने। उनका के उदास देख के एगो मास्टर अपना पास बुला के उदासी के कारण पूछलन। कारण का बतावस—फूट-फूट के रोये लगलन। रोवते-रोवते अपना साटिकफिकिट के बात कहलन त मास्टर एकर कारण पूछलन। बहुत थोड़ा में कारण बता के फेरू रोये लगलन। कारण जान के मास्टर इनका के बहुते ढाढ़स बँधवलन आ कहलन कि तू घबड़ा मत हम तहरा खातिर कुछ सोचत बानी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मास्टर साहब इनका के एगो डाकदर किहाँ छोट लइकन के पढ़ावे खातिर रखवा दिहलन। खाये-पीये आ रहे के समस्या हल हो गइल। धीरे-धीरे हरीश उनका परिवार में एतना घुलमिल गइलन कि उहे उनकर आपन घर बुझाये लागल। शुरू में जब कभी एकांता में रहस त फूट-फूट के रोवस, काहे कि दस-बारह बरिस के उमर में आपन घर छोड़ के दोसरा किहाँ रहे में जवन एगो बाल-सुलभ मनोवैज्ञानिक कठिनाई होला ओह के ऊ कइसे मेटा सकत रहलें।

डाकदर साहेब किहाँ रह के खूब अच्छा अंक से प्रथम श्रेणी में मैट्रिक पास कइलन। मैट्रिक के बाद आगे पढ़े-लिखे के लालसा रहे, एह से कालेज में नाम लिखवलन। कालेज में नाम त लिखा गइल, बाकिर शहर के खर्चा कइसे चलो। थोड़ा बहुत मदत डाकदर साहब भी कइलन आ दु गो ट्यूशन खोज के पढ़ावे लगलन। अच्छा अंक से मैट्रिक पास कइला से उनका कुछ सरकारी वजीफा भी मिले। एह तरे सब मिलके कालेज के खर्चा चल जाव आ पढ़ाई लिखाई भी चले लागल। आई० ए० भी प्रथम श्रेणी से पास कइलें आ भगवान के किरपा से उनका प्रतिभा छात्रवृत्ति मिल गइल। एह तरे बी० ए० (आनर्स) पास क गइले। आनर्स भा एम० ए० में अच्छा श्रेणी खाली योग्यते के आधार पर ना मिले, ओकरा खातिर कुछ सोर्स पैरवी भी चाहीं, एह से द्वितीय श्रेणी में अच्छा स्थान मिलल।

हरीश संघर्ष करते-करते चूँकि टूट गइल रहन, एह से एगो हाई स्कूल में मास्टरी करे लगलें आ स्वतंत्र रूप से एम० ए० के इम्तिहान देवे के सोचे लगलें। मास्टरी के समय ही गहरा अध्ययन शुरु कइले, मगर दुर्भाग्य उहाँ भी उनकर पाछा ना छोड़लस। जब हाई स्कूलन के सरकारीकरण ना भइल रहे त ऊ हेडमास्टर आ सेक्रेटरी के निजी सम्पति समझल जाव आ मास्टर लोग के घरेलू नोकर। हरीश अपना अध्ययन में लागल रहन एह से कोई के चापलूसी करे के ना चाहस। नतीजा इ भइल कि उनका स्कूल के मास्टरी छोड़ देवे के परल।

एक बार फेरु उनकर गर्दिश के दिन आइल। सोचते-सोचते एम०ए० के इम्तिहान त ना दे सकलें मगर साहित्य के गहन अध्ययन कइलन। केतना अखबार के जनम दिहलन आ श्राद्धो कइलन। केतना फेरु के कभी-की उनका चना चबाके दू-दू चार-चार दिन गुजारे के परल।

एही बीच उनके धन-दौलत के लालच देखा के उनकर बियाह कर दिहल गइल। पहिले त ऊ सोचले रहन कि जिनगी भर बियाह करबे ना करब, मगर विधि के लिखल के मेटाई ! जवना लालच में ऊ बियाह कइले तवन धोखा साबित भइल।

अब हरीश के तीन गो लइका भी हो गइल। एह तरे पत्नी के मिला के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चार जोड़ी आउर आँख उनका तरफ आसरा लगा के ताके लागल। आपन जिनगी त इहाँ तक ऊ कइसहूँ खींच ले आइल रहन, मगर अब चार गो आउर जिनगी के भार उनका माथा पर चढ़ गइल। हार-पाछ के नोकरी ढूँढ़े लगलें। केतना इन्टरभिउ भी देहलें मगर आज के जमाना में अगर तुलसी बाबा भी नया जनम ध के नौकरी वाला कवनों इन्टरभिउ पें जास त पैरवी के बिना छँटा जइहें। नौकरी त ना भेंटाइल, बाकी बचपन से सीधे बुढ़ापा आ गइल। कुछ दिन फ्रीलांसर पत्रकार रहन, केतना किताबो लिखलें—कुछ छपल कुछ अलमारी के शोभा बढ़ावत बा।

अध्ययन आ अध्यवसाय त ऊ अपना जिनगी के ध्येय रखले ही रहन आ ई बात माने के परी कि साहित्य में उनकर गहन अध्ययन भी रहे, लेकिन आचार्य शिवपूजन जी आ दिनकर जी के जमाना बड़ा पीछे छूट गइल रहे कि बिना पी० एच० डी० आ डी० लि० कइले उनका साहित्य के मान्यता मिलो हालांकि ई बात साँच बा कि ऊ केतना लेखक आ पत्रकार पैदा कर देले बाड़न।

ओह दिन जब उनका से भेंट भइल रहे त ऊ एगो बात बड़ा मार्मिक कहलन। कहलन कि लइकाईं से लेके आज तक जे से बहुत लड़नी—एह आसरा में लड़नी कि कहियो त रोशनी भेंटाई! मगर रोशनी के टोह में जेने गइनी, अंधारे भेंटाइल। अंधार से केतना लड़ीं, अब मन हटुवा हो गइल बा, स्वास्थ्य भी साथ नइखे देत। लइकाईं हम रोटी खातिर तरसनी, गज भर कपड़ा खातिर ललचनी, सिर छिपावे खातिर, बिता भर जमीन खातिर कठोर मेहनत कइनी, आज हमार बच्चा रोटी खातिर रोवत बाड़न बीमार परला पर एक घूँट दवा के इंतजाम नइखीं कर सकत, खटिया पर कराहत पत्नी के मुट्ठी भर सुख नइखी दे पावत। हम लोग के कवन जवाब दीं जेकर स्नेह पा के हम लड़त गइनी, हम ओह मसान भूमि के सपना कइसे साकार करब, हम आगे वाला लोग के कइस बतायेब कि घोर संघर्ष से आदमी महान बन सकेला? हम जिनगी भर अन्हरिये से लड़नी आ बुझात बा कि अन्हरिये में कबहूँ बुता जायेब।

हरीश के बात सुन के हमरो आँख भर आइल। हम हरीश से एतने कहनी कि हम जानत बानी कि तहार समूचा जिनगी संघर्ष के एगो लमहर कहानी बा, मगर अभी हिम्मत हार गइल ठीक ना कहाई।

हरीश बच्चा नाहिन रोवे लगलें आ कहलें कि हम जिनगी जिये के राहे गलत पकड़ लेहनी। पत्रकार आ लेखक बने के साथ हमरा के कवनों आफिस में किरानियो ना बने देलक। अगर हम किरानियो बनल रहितीं त आज कम-से-कम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीये के एगो आसरा त रहित ? हम त ई उपदेश देब कि भूल के भी कोइ पत्रकार भा लेखक बने के सपना मत देखे, अगर ऊ पत्रकार भा लेखक बनहीं के चाहे त भूखे रहे के आदत डाल लेत, बियाह ना करे आपन कफन अपने खरीद के रख लेव काहे कि हो सकता कि ऊ जंहिया मरी, कफन के बिना ओकर लाश नंगा जले के नौवत आई, जिनगी भर छछनते परान छटी।

ओह दिन के वाद से हरीश से मुलाकात ना भइल। दू तीन बरिस वाद एक दिन अखबार उलटत रहीं कि एगो कोना में पढ़े के मिलल— हरीश नामक एक महात्त्वाकांक्षी पत्रकार की आत्महत्या। मन मसोस के रह गइल। सोचनी— आज हरीश दोसरा देश में पैदा लेले रहितन त उनका प्रतिभा के पूजा होइत। संघर्ष करे वाला लोग उनका से प्रेरणा लीत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मरजादा

□ राजवल्लभ सिंह

गोदावरी के पावन हिलकोरा में जइसे केहू जहर घोर देले होखे। लहर-लहर में जइसे केहू के परछाहीं झलमलात होखे। बयार के डोलल आ दूर-दूर ले कवनो चिरई चुरुंग के चहचहाइल तक बन्द हो गइल रहे। कब केने से दुश्मन के वार होई, ई केहू ना जानत रहे। सभे सशंकित आ भीतरे-भीतर भयाइल रहे। युद्ध के ईहे हाल होला। युद्ध में सिपाही खाली एह भय से दोसरा के वेध देलन कि कहीं ओह आदमी का हाथे उनुकर सिर पँगाए के ना लिखल होखे। अपना जान पर आ पड़े एकरा पहिलहीं ऊ दोसरा का प्रान के लीक लेलन, अपना हाथ का हथियार पर।

गोदावरी के तट गवाह रहे बाजीराव बल्लाल पेशवा आ निजाम का बीच चले वाला जुझारू संग्राम के। दूनू ओर से भयंकर मार-काट मचल रहे। के केकरा पर बीस पड़े, के केकरा के दरमस के साफ क देवे—ए खातिर खचाखच तलवार के वार होत रहे आ सैनिक अपना-अपना दाँव-पेंच में लागल रहस। पेशवा का ओर से लड़ेवाला मुछइल रजपूतन के हियाव दरियाव हो गइल रहे। मन में कतहीं बरबस गोदावरी के लहर हौसला के हरहरात तरंग बन जाय आ 'हर-हर महादेव' के गुरु-गम्भीर नाद आकास हिला देव। पेशवा का दल में रोज उत्साह नया भइल जाव। ई धरती हमार ह, ई नदी हमार ह, ई कूल-किनारा के पेड़-पौधा हमनी के धरोहर ह; एह जमीन के चप्पा-चप्पा हमनी का बाप-दादा के ह, एह गोदावरी का बूँद-बूँद में हमनी के इतिहास कल-कल इठिलात बा। एपर कवनो मलेच्छ के परछाहीं ना पड़े के चाहीं। पेशवा के सैनिकन के जोश तलवार का मूँठ पर कठोर पकड़ बन जाय आ एड़ी सुग्रीव का पाँव लेखा धरती में धस जाय!

शक्ति आ संगठन दूनू में निजाम के सेना कमजोर पड़ गइल रहे। पेशवा का सेना का सोझा निजाम का सेना के गोड़ उखड़े लागल रहे। पेशवा के जीत दूर ना रहे। निजाम का हार कबूलहीं के पड़ी—पेशवा का सोझा नाक रगरहीं के पड़ी—अब एमें कवनो सन्देह ना रह गइल रहे।

एही बीचे एगो मुसलिम तेवहार आ गइल। तेवहार त मनावल धरम के बात होला—चाहे धरम कवनो होखे! इहाँ हालत खस्ता रहे। निजाम का लगे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बटोरल-सहेजल रसद चूक गइल रहे। एक-दू जून के जोगाड़ो कठिन रहे। एपर कोढ़ में खाज खानी माथा पर तेवहार के भूत चढ़ दउड़ल।

रसद का कमी से तेवहार ना मनावल जाई—ई बात निजाम का सैनिकन का गरे ना उतरल। तेवहार का सँगे जे भावना जुटल रहे, ओपर आघात सहे जोग ना रहे। निजाम का लागल कि अगरचेत रसद के कवनो बनबस ना होई त सेना में बलवा हो जाई ? फौज जब भड़क जाई त लड़ाई हाथ से गइले रहे !

खूब सोच-विचार भइल। रसद कहाँ से कवना तरे जुटावल जाय—ई ना बुझाय। कवनो बेंवत ना जुटे। भूख से सभे बिलबिलात रहे। अधपेटा खाके कहीं तलवार चली ? ओहू में तेवहार पर छूँछे पेटे ?

अन्त में दोसर उपाय ना देखके निजाम सोचलन कि चल भाई, रसद पेशवे से माँगल जाय ! ई अपने-आप में एगो अजगूत प्रयोग रहे। भला कतहूँ बैरी से कवनो लड़वइया रसद मँगलस ह ! बाकिर निजाम के बउराह मति में ई अनहोनी बात अस ढुकल कि ऊ खत लिख के पेशवा के रसद खातिर निहोरा कइलन !

चिट्ठी लेके जब दूत पेशवा का छावनी में पहुँचल त सभे चिहा गइल। बात खुलल त लोग का हँसी बरे लागल। भला अइसन बुरबकाही के करी ?

अपना दुश्मन के रसद पहुँचा-पहुँचा के के मजबूत करी। लड़ाई में दया-ममता के गुंजाइश ना होला। युद्ध में त रसद-पानी व्यवस्था भंग कके दुश्मन के भूख से तड़पा-तड़पा के मार देवे के इन्तजाम कइल जाला ! इहाँ बेचारा निजाम अपना सेना के खिआवे खातिर अनाज चाहता ! जे सुने से ही ठहाका लगावे। साँचो, निजमवा के मति बउराइए गइल बा। हार का अनेसा से मतखोर हो गइल बुझाता।

पेशवा अपना सरदारन के बोलवलन आ निजाम के निहोरा सोझा रखलन।

—"भला अइसनकां होला ! दुश्मन के आगा रसद के थाली लागेला भला !! ....एह चिट्ठी का पाछा कवनो ओकर चाल बुझाता। लड़ाई में जीते खातिर तरे-तरे के माया सिरजाले नाना प्रकार के ढोंग रचाला, गँव गँव के पेंच पड़ेला।"

—"रसद भेजल त जान-बूझ के खतरा कीनल बा। दुश्मन के दाना-पानी रोकल युद्ध के नियम हवे। हमनी का रसद देवे से इनकार क देवे के चाहीं।"

—'ईहे मौका बा। रसद का अभाव में भूख से जब अँतड़ी कुलबुलाई त तलवार भाँजे के केकरा सूझी ? सरकार, खाए-पीए के सामान ना रही त निजाम के सेना अपने ढह जाई ! तब ओकरा दमे ना रही लड़े के। हमनी के जीत नगीचा गइल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तरे-तरे के विचार आइल आ सभे एक सुर से सलाह दीहल कि निजाम के निहोरा के ठुकरा दीहल जाव। अभाव से घिरल सेना के हरावल सहज हो जाई।

बाकिर पेशवा का माथा पर के सलवट ना गइल। उनका ई नीमन बुझाइल कि दुश्मन के भूख से तड़पा-तड़पा के अधमरू क दीहल उचित होई।

—'भाई सभे, दुश्मन के दयनीय हालत के लाभ उठा के ओकरा से लोहा मनवा लीहल का बहादुरी क काम होई? मरद त लोहा बजावत चित चाहें पट करेला? जे खुदे पेटकुानए भहरात हाखे ओकरा छाती पर कटार के धार राखल का वीरोचित करम कहाई? ई हमनी का क्षत्रिय-धरम का अनुकूल ना कहल जा सके। भूखा के दू कौर खिला दिहल आ पियासल प्राणी के दू बूँद पानी दिहल त हिन्दू धरम के पत राखल भइल! शरणागत के रक्षा करे के चाहीं। जे पुरखा पुरानया करत आइल बा ओह मरजादा के निबाहल हमनी के कर्त्तव्य वा।' पेशवा कहलन।

—'तव?' लोग पूछल।

—हमनी का अपना उदार मरजादा का अनुसार निजाम के रसद देवे के चाहीं। दुश्मन जो खाली हाथ होखे त वार कइल धोखा ह।....हमार विचार बा किभुक्खड़न के मारल-काटल मरदानगी ना कहाई। एसे हमनी का पूरा रसद निजाम किहाँ पेठवा देवे के चाहीं ताकि ऊ लोग तेवहार मना लेव आ कुछ पेट में पूजा चढ़ला पर तनी दम से तलवार पकड़ो।"

पेशवा के राय सुनके सभे चुप हो गइल आ निजाम का मँगाहटो से ज्यादा रसद पेशवा भिजवा दिहलन।

निजाम का उम्मीद ना रहे। आशा का विपरीत जब रसद आवत देखलन त अचम्हा भइल। तेवहार के रसद त बँटा गइल बाकिर उनकरा मन में दूर ले कुछ लेसा गइल रहे। आँख में लोर भर गइल।

जे दुश्मनो के आत्मबल बचावे के कोशिश करी, ऊ इन्सान ना देवता होई। निजाम का मन में रह-रह के हूक उठे। रात भर ऊ करवट बदलत बिहान कइलन आ होत भिनुसहरे चल दिहलन मराठा सरदार से समझौता करे! पेशवा अस इन्सान के दोस्ती अनमोल होई जे मरजादा खातिर अपना जीतो के दाव पर लगा देवे में हिचकिचाय ना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परमपद

□ स्वामी विमलानन्द सरस्वती

"खेदू भाई ! जिनगी क कवन ठेकान बा ? ढेली तोहार पलिवार हउवनि बेटा आ भतीजा दूइ ना ह। केतना नेह-छोह से तोहार सेवा करत बाड़न। हाथ मइल न गोड़ मइल। बइठल चिक्कन सुरस भोजन मिलत बा। ऊधो क लेना न माधो क देना, कल से राम-राम कहे के बा। तोहरा के दूसर का चाहीं ? उनसे अनराज काहें रहन बाड़ ? पलिवार से विरोध ना राखे के ?'

'बुढ़वती आइलि। थाहि के डेग धरे के चाही। हमन का दरियाव का आरी क फेड़ बानीं जा। आज गिरलीं भा काल्हि ! पाकल आम का चुवे में कवन देर बा ?'

"मीठ आ मोलायम बोलि के लोग आन केहू के आपन बना लेत बा। ढेनी त खून ठहरलन। हमनीं का अमिरित के घरिया नइखीं पियले कि अमर रहबि जा। वेमतलब क काहें माँथे कलंक क टीका लेत बाड़ ? मुवलो पर ऊहे मुँहें आगि दीहन; पिंडा-पानी आ काम किरिया करिहँन।'

'तोहार कवनो कुसंच होखे त हमसे बताव। हम तोहार उपाय करब। दस-पाँच दिन में बोवनी ओरियाले त चलल जाय कि बगसर गंगा-असनान होखे आ लीखि-पढ़ि के एकोर कइ द। आगे क खरखसा टूटो।"

राजनारायन राय क ई बतकही खेदू का बड़ा जबून लागल। उनका मन में पाप भरल रहे। केहू क समझावल तनिको लाद में ना धँसे। कुछ देर का बाद बइठकी उड़सलि आ सभ केहू आपन-आपन डहरि नापल।

खेदू राय तोसकि तकिया लगवले पलगरी पर बइठल गुड़गुड़ी पीयत रहलन। देहि में भुँड़ीदार बन वाली मिरजई, कपार में कनटोप, आँखि में चसमा लगवले दोहरि ओढ़ि के बइटल रहलन।

× × ×

कातिक क भोरि, लोग बोवनी में बाझल रहे। ढेली दूइ घरी राति गइला टँड़ वाँहीं ले बैल हँकले अइलन। ओसारी में हर-टांड़ि, हेंगा आ बीया क दउरी धरवाइ के गरुवारी करे लगलन। अकसरुवा आदिमी सभ काम अपनहीं सम्हारे के रहे।

काम ले खाली होइ के बखरी में गइलन कि दू कवर भोजन करीं त ओइजा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूसरे तमासा लागल रहे। उनकर वूढ़ि मँहतारी आ ढेली बो भउजी रोवत-विलखत रहली जा।

"का रे माई! ई कवन तमासा लगवले बाड़ू स?" माई सुसुकत आ अँचरा से लोर पोंछत लोटा क पानी आगा धइलसि—'ए बचवा! खेदू क अनेति आ गारी फजिहति केतना सहीं जा। दूइ चारि दिन पर कवनो न कवनो अनखुन जोहि कें झगरा ठानत आ विरही बोलत बाड़न। इहे उनकर सखुनतकिया हो गइल बा। आजुवो झनकि के ठहरि पर ले थरिया पटकि के उठि गइलनि ह। कहत बाड़न कि "हमरा के वासी रसोई देत बाड़ी स। दालि में माँड़ मेरावल वा आ दूध धिकले नइखें। हमार हकहीसा लेई के हवेखत बाड़न जा। हम खेत महपातर के दे देवि तवन सवुर बा, वाकिर तोहर लोग के पसर चरे खातिर ना रहे देवि।"

ढेली बड़ा लेहाजी रहलन। खेदू राय क दस गो फूहर पातर सहि लेसु वाकी जबाब ना देसु। उनके वाप ले कम नाजानसु। उनका खातिर सभ इंतिजाम रखले रहलन। खेदू राय का दुवार पर वइठल कटरावें-पागे के रहे। कवे-कवे भुखाली साहु का ठाकुरबारी पर वगसर क महंथ जी आवसु त कथा सुने भा दरसन करे जासु।

× × ×

आज क हालि सुनि के ढेली बड़ा दुखी भइलन। खाइल-पीयल का नीमन लागे? कइसहूँ दू चारि कवर घोंटि के चउका पर ले उठि गइलन। बरावर कुछ न कुछ बखेड़ा खड़ा भइल रहे। सांप क वीलि तहाँ पूत क सिरहान, ढेली खातिर कुफुति रहे वाकी करसु का?

राजनारायन राय का दलानि में रोज वइठकी होखे। गंगा राय, काशी राय, रघुनाथ मिसिर, सोहावन भगत चउकिदार, सभ वइठल खेदू आ ढेली क बाति वतियावत रहल। एतने में बीड़ी पीयत ढेली पहुँचि के राजनारायन का ओरिचना वइठलन।

'मजे में वइठत काहें नइँख?' -राजनारायन राय का ई कहला पर ढेली का लोर आ गइलि आ ऊ आँखि पोंछे लगलन। राजनारायन राय पूछे लगलन कि बाति का ह ढेली? आजुवो कुछ खटपट भइल रहल ह का?'

गंगा राय मेंही सरदार रहलन। ढेली क चाची परशुराम का माई से उनकरा भोजभात रहे। गंगा राय के भउजाई आ परशुराम का माई क नइहर एकही गाँव में रहल। एही कारन से भितरिया मेहरुवी मनसउदा क सुनगुन गंगा राय कुछ सुनले रहलन। परशुराम क महँतारी चरित्तरवन का हरिकिशुन दास क चेलिनि रहली।

गंगा राय कहलन कि तोहन लोग बेकार खेदू क पोंछि सुहुरावत बाड़।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खेदू पोंछी पानी ना ठेके दीहन। हरिकिशुन दास उनकर कान भरले बाड़न। परशुराम क माई बुढ़िया कुटनी क काम करत बाड़ी। खेदू सोनहुली तसवीरि देखि रहल बाड़न। उनकर मन बत्तीस घोड़ा का बग्गी पर असवार बा। तोहन लोग का कहला समुझवला में कुछ नइखे। ढेली सबुर करसु। इनकर बाल बच्चा अपना कमाई से ना जीहँन-खइहँन त पत्तल चटले के दिन काम चली ?

२

"खेदू ! धन-दउलति लेइ के न केहू आवल बा न लेइ के जाई। मरे का बेर भाई दयाद करधनि तक तोरि लिहन ! धरमें सँगे जाई। दान धरम करे के चाहीं। ऊहे न आखिर में आँटी। अब तोहरा ठाकुर जी का शरन मे रहि के दूइ कवर परसाद पावे आ गंगा नहाये के चाहीं। आगे क डहरि बनावल न ठीक बा। एहिजा साधु महातमन क सतसंग बा। भगवान क भजन कइके परमपद पावे खातिर जतन कर। दखिनहा भूचड़न का संगे का कुकुरचोंथ कइले बाड़ ? उसरा टाँड़ पर जीव मति द। मरि जइब त गोड़ घिसियाइ के बीगि दीहँन स। बबूर-परास का बन में फुँकइब, गंगा से भेंट ना होई।"

'ददुरा का दुबाइन क नइखा देखत कइसन कंचन चरति बाड़ी। इनकरो केहू नइखे। दस बिगहा बेटी दमाद के दिहली आ पनरह बिगहा ठाकुर जी का नावँ से रागभोग खातिर लिखाइल ह। धरती ले सोना दान कइला क बेसी फल ना होखे। एह जनम में जे धरती दान करी ऊ अगिला जनम में राजा होई।"

खेदू पगरी उतारि के महंथ जी का चरन पर धइ दिहलन—'महराज ! रउरा त ठाकुर जी का राग-भोग-सेवा खातिर कहत बानी। ई हमार उदय भागि कि हमार धन भगवान का काम में आवे। हमार मन अब महिला ले उचटि गइल बा। ओइजा रहला में इज्जति नइखे। हम त मन में इहे ठानि के चलल बानीं कि कतहीं कवनों मंदिर ठाकुर बारी में लीखि के ओनिये मरि-हरि जाइब। रउरा नाहीं राखब त ई धरती महपातर का गरे मढ़इहन बाकी ढेली आ उनका बाल बच्चन के हरघुमावे खातिर ना रहे देब। ढेली क हमरा सोरि कवारि के दम लेवे के बा। ढेली के भीखि ना मंगवबलीं त जनेव गदहा का गर में बान्हि देब।'

'ठाकुर जी क मरजी आ साधु महातमा क दया। हमरो मन बा कि गंगा नहाईं, ठाकुर जी क सेवा करीं आ तीरथ-परसाद पाईं। जगहि जमीनि ठाकुरे जी न देले बाड़न। सभ संपति उनहीं क ह त देबि केकरा के ? ईहे चाहत बानीं कि राजनारायण आ गंगा न जाने पावसु। राजनारायण जवार क चउधुर आ हुँड़हा ठहरलन। जवार में उनकर दाब-हाँक बा। ऊहे आजकाल अवँती का बाबू साहेब क तसिलदारो बाड़न। जानि जइहँन त छत्तीस गो बखेड़ा रचिहन।"

जवन रोगिया चाहे बयदा उहे बतावे। महंथ जी मने मन खुश भइलन। दावपेंच जानल आ मामिला मोकदमा लड़ल इहे त उनकर भजन रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'घबँड़ा मति खेदू ! हम अइसन उपाय करब कि केहू पता ना पाई। कचहरी जाये क कवनो जरुरते ना परी। हम उड़ती चिरई के हरदी लगाईला। हमके केहू का सिखाई ?'

महंथ जी का ठाकुरवारी ले पंजरे रजिहटार साहेब क डेरा रहे। साँझि-विहान रोजे भेंट होखे। अवसर अइला पर महंथ जी उनके पंजीरी-परसाद भेजसु। ओही राति में सभ सलाह आ मनसउदा ठीक हो गइल। होत बिहान चतुरभुज बरम्हचारी साइकिल दउराइ के देवानलाल किहें ले टीकठ फारम ले अइलन। खेदू राय का बेमारी क दरखास देइ के महंथ जी रजिहटार साहब के मठिये में आवे खातिर फीस जमा कइ दिहलन। पूरा माल मिलल रहे। कवनो जाँगर के कमाई खरच करे के रहे कि असकति लागित ! चान्दी क मारि मारल गइल। हाकिम-अमला-पियादा-चपरासी सभ रसगुल्ला छीलल आ दूध से कुल्ला कइल।

बाप दादा क कमाइल धरती। केतने पुस्त क जोगावल आ कोड़ल-कमाइल, खेदू क आज संग छोड़ि के चलि दिहली ! खेदू अँगुठा बोरि के अपने आपन हाथ काटि लिहलन। ठीक कहल बा कि ई, पिरथू, मान्धाता, बली, आ रावँन क साथ ना धइली त दूसरा क कब होइँहन ?

× × ×

देहाति-जवार क लोग जमदूतिया नहाये मथुरा जात रहलन। महँथ जी के मोका लागि गइल। खेदू राय क मन टुकटुकात देखि के उनका के जवार का जमाति का संगे मथुरा भेजि दिहलन। चस्तिरदन क कुछ अचारी बाबा लोग भी जात रहलन। खेदू खातिर सोना में सोहागा परि गइल।

पांच-सात दिन में मथुरा-वृंदावन, नंद गाँव बरसाने, गोबरधन सभ परिकरमा कइ के खेदू साधुन का जमाति में ओह लोग क खढ़िया ढोवत चित्रकूट चलि गइलन। एह किसिम से काशी होत बाइसवां दिने घूमि-घामि के ठाकुरबारी पर आ गइलन।

महीना बीति गइल बाकी केहू पता ना पावल। महंथ जी कचहरी का अमलन के मिलवले रहलन। गाँव-जवार जानत रहे कि खेदू राय पड़ियारी का पंडित संगे मथुरा जी गइल बाड़न।

२

कले-कले थोरहीं दिन में भेद खुले लागल। लोग खेदू राय का करनी क पता पावल। जवार क जेही सुनल गारी दिहल। ढेली का कवनो टिशुना ना रहे, बाकी लोगन का कहला-सुनला से जवार क चारि गो चउधुरी बटोरलन। मुँखराव, पड़ियारी, चँड़ेश आ नागपुर के पंच लोग गंगा राय का दुवारे अइलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोलवला पर पहिले त खेदू राय बड़ा कतरी कटवलन बाकी सोहावन भगत का समझवला पर अइलन।

मुखरांव के कतवारू राय पूछलन—"खेदू दादा! ई का कइल ह? ढेली क गरदनि ना कटल, तोहरो संगही कटा गइलि। अइसन ना चाहत रहल ह।" नागपुर के राजनेति दादा बड़ा दुखी रहलन। रहि-रहि के उनका आँखि से लोर बहे।

उहो कहे लगलन कि —'खेदू भाई! तोहार बाप हमार संगी रहलन। तोहरा के देखि के मोह होत बा। तूं वंश के टांगी हो गइल। रेंड़ का जरी धमोइ होई के जमल। अबहीं तोहरा हरियरी लउकति बा, कुछे दिन का बाद जब अँचारिन क टोकना मले आ चाँटी काटे परी त मालुम होई।' राजनेति राय, राजनारायन राय क संगी रहलन। राजनारायन राय उनकरे गाँव क कथा उभारि के सभ पंचन के सुनावे लगलन। "राजनेति भाई! अचारिन क हालि तोहरा से छिपलि बा? तपोवन ले ओकर नाँव चरित्तर बन हो गइल बा। तीसो दिन ओइजा रंगरंग के चरित्तर हो रहल बा। शंख-चक्र से दागि के सांढ़ बनावे में ओह लोग का देरी ना लागे। खेत-बारी लिखवावे के रही तवले खूब आदर रही। बाद में गारी-फजिहत आ गोइंठा करे के परेला।"

चंड़ेश के बदिरी राय कहलन कि "हमहूं सुनलीं ह, आजकाल ओइजा क बड़ा सिकाइति बा।"

बसगित भगत कहलन कि "बसवली हमार समधियान ह। परसो ओइजा ले अइलीं। मुनादासी बसवली क पड़ाइन रहली ह। दूइ चार बरिस ले साधुनि हो गइल रहली ह। बरिस दिन ले माधो दास का मठिया का हाता में कोठारी बनाइ के रहत रहली ह। माधो कमकर क जाति। पहिले त पड़ाइन के मलकिन बना के चाभी दिहलन। कुछ दिन में जब रुपया आ गहना गुरिया कुल्हि मूंसि लिहलन आ मुनादासी खूंख हो गइली त लतियावे लगलन। अब मुना कहाँ जासु घर ले उपरवार फानि के गइले रहली। ओइजा ऊ हालि।"

एतने ना, "जब-जब आगि खढ़ पंजरा रही त उधियाइ के जरबे करी। मुनामाधो का दिन में झगड़ा होखे आ राति में मेल हो जाय। जब मुनादासी क गोड़ भारी हो गइल त दावा-दरपन होखे लागल। बाकी आखिर में मुना दासी असपताल में जाके परमपद पवली।"

× × ×

खेदू मूड़ी नीचे कइले सभकर सुनत रहलन। लोग क कहल-सुनल उनका बरछी नियर लागे। अंत में सोहावन चउकिदार जरला पर नून छिरिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिहलन। सोहावन बड़ा फटकरलन—'चउधुरी, राउर मति बिगरि गइलि बा। हमन क बाप-दादा सात पुहुति ले एही में गलल-पचल। का सभई नरके गइल बा? गिरहस्त ले बढ़ि के साधु के बा? गोहूँ-वासमती, मेवा, मलाई उपराजि के जे राजा रंक, साधु-फकीर, पशु-पंछी सभके जियावत-खियावत बा ओके का मानल जाय। साधु लोग जवना पत्तल में खात बा अब ओही में छेद करत बा। ठीके कहाउति कहल जाला—'बाभन कुत्ता हाथी, तीनों जाति क घाती।''

अंत में उखड़ा-उखड़ी हो गइलि। खेदू राय कहलन कि हमरा भाई भतीजा से कवनो काम नइखे। केहू हमार पिंडा पानी मति करी। जमीनि हमार हम भाट के दे देबि दूसर क का लागे?

३

हरिकिशुनदास रंगरसिया महंथ रहलन। नेवार का पलंग पर हाथ ऊँच गद्दा बिछल रहे। तकिया-मसनंद लगावल रहे। बिजली बत्ती आ पंखा, मसहरी सभ इलत्रास जुटल रहल। पूवा-रावड़ी, दूध-मलाई आ सेव-अंगूर बिछिलहरि भइले रहे। चानी कटति रहे, दिनरात पाँचों अंगुरी घीवे में बूड़ल जानीं। छतीसो राग-रागिनी क दरबार होखे आ तबला-हरमुनिया, मिरदंग-सितार क बजारि सजल रहे।

मठिया में साधु-अभागत आवसु त ओह लोग के करगी-करहनी के भात आ खेसारी के दालि मिले। ई कवनो नया रेवाज ना रहे। अँचारी लोग किहें बहरिया-भितरिया, बड़गल-तिंगल केतना भेद बा के थाह पावे?

× + ×

ईहे कबीर क—'लड़िका बूड़े सीलि उतिराय' ह। किसान मजूर गली-गली मरसु आ बाबा लोग इनरासन में बइठल मउज करे। धरम का नावें पर आज काल अइसन जुलुम सगरे होत बा। बाकी अनेति ढेर दिन ना चले। महंथ जी क अँजोरिया मधिमाये लागलि। उनका दरबार में-पूड़ी फराठा दूनों क सवाद लियाय। कबे पूड़ी भोग लगावसु त कबे मनफेर फराठा। पूरनवाँसी का चनरमा नियर महंथ जी छीजे लगलन। फुलबसिया पूड़ी आ रमेश फराठा रहलन।

४

ठाकुरबारी क धन ढोइ के फुलबसिया का दुमहला कोठा बनि गइल। रेडियो, बिजुलीवत्ती, पंखा सभ सिंगार जुटे में देरी कवन रहे? मालपूवा-मलाई आ सेव-अँगूर ओकरा घर में गाँजल रहे। कले-कले महंथ जी बदनाम हो गइलन। पाप क भंडा फूटे लागल। मन क लगामि ढील भइला पर दसो भुटिया घोड़ा बासना का सड़कि पर सरपट दउरि के महंथ जी का रथ के गड़हा में गिराइ दिहलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पंचकोंस क मेला रहे। रामचउतरा का मयदान में महंथ लोग क खेमा गड़ल रहे। असावँ, पयकवली, घरवास-डीह, सगरे क महंथ जुटल रहलन। कथा, सतसंग आ गाना बजाना भइल। राति का वेरा सभ महंथन का आपस क बटोरि रहे। असावँ क महँथ जी बड़कवा मानल जासु। उनकर सुभाव बड़ा सीधा आ सत्तजुगी रहे। महंथ नारायनाचारी हरिकिशुन दास के बोलाइ के समझवलन कि "साधुन क नाकिं मति काटीं। पियास लागल त मोका से पानी पी लिहल जाला, गरदनि में घइली के बान्हि के लटकदले ना फिरल जाय। रउरा फुलबसिया के असथान से दूर राखीं।"

× × ×

थोरहीं दिन का बाद महंथ जी के अठइसी (थयसिस) रोग धइ लिहलसि। दवाई बीरो होखे लागल ? डाकदर-वैद में रुपया बहुत फुँकाइल बाकी बेमारी घटलि ना, बढ़ते गइलि। देंहि सूखि के पीयर हो गइलि। मुँह ले कवे-कवे खून आवे लागल। कुछ दिन में उहाँ का एकदम खटिया पर हो गइलीं।

मठिया क कारबार हरदेवाचारी देखे लगलन। महंथ जी मने मन पछतासु आ रोवसु। आखिर में बेमारी बिगड़े लागलि त साधु लोग सेवा से भागे लगलन।

एहिजा का केकरा से नाता बा। सभ झूठे लपिटाता। महंथ जी ठाकुर वारी क इंतिजाम बान्हि के हरदेवाचारी के महंथी लीखि दिहलन।

खेदू राय गुरु महाराज के दुख देखि के कोना में बइठल रोवसु। अब ऊ खेदू राय से खेदन दास बनि चुकल रहलन। कातिक महीना, अछय नउमी मंगर का दिने दस बजे महंथ जी खेदनदास के छोड़ि के परमपद पवलन। महंथ जी का परमपद भइला क खबरि सवँसे चरित्तर बन में बिजुली नियर फइलि गइलि।

सभ साधु महंथ जुटलन। विमान बने आ सजाये लागल। फोटो खींचे वाला बोलावल गइल। चंदन का लकड़ी क चिता बोझे के तइयारी होखे लागलि।

खेदू राय अब गंगा नहासु आ ठकुरवारी क काम देखसु। गाइ चरावल, गोबर-गोंइठा कइल, बैलन के सानी-पानी कइल-ईहे उनकर रोज क पूजा रहे। दस बजे ले सभ धंधा से खाली होखसु त नहाइ के लिलार पर फटाका लगावसु। एही सनदि के देखवला पर त परमपद क फाटक खुले के आस रहे। पासा-सीरी आ माला-अयनक क पसारी वाली झोरी अबे बान्हते रहसु तबले अधिकारी पुजारी लोग डाँक-जुरह लगावे —"खेदनदास ! चल चाउर दालि अमनियां करे आ साग सुधारे के हरज होत बा।"

"अइलीं सामीजी-तनी भगवान क नावँ लेत बानीं।" साधु लोग खेदू राय के बइठे ना दिहल चाहे। अधिकारी उनका पर बिगड़ते रहसु। उनकर कहनाम रहे कि कारज कई के भगवान क परसाद पावल जाला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खोभसन सहत आ काम करत-करत खेदू दुबराइ के अँठई हो गइल रहलन। अब बहुता त बेमारे रहसु। बाकी बेमारो रहला पर सारि सहोथहीं के परे।

उनका अपना करनी पर पछतावा होखे। मन में झंखसु कि 'बुढ़वा महंथ जी हमके गाढ़ में डालि के चलि गइलन। मन मिरिगा नियर टिशुना में परल, आगे ना जाने कइसे निसतार होई ?'

ढेली क सोरि कवारे चलल रहलन, अब उनहीं क कवरुति रहे। ढेली कवहीं उनकर जबाब ना देले रहलन, एहिजा उढ़रन क फजिहति भी विरही वानी रोजे सहे के परे। अगल-वगल का मठियन आ मलाहन का घरे वइठि के रोवसु-कलपसु। अब के उनकर बयान आ अरजीदावा सुने ? भगवान का कचहरी में उनकर मामिला फरियाये के रहे ! पंच-परमेसर के ठोकर मारि के उठि गइला क फल पावत रहलन।

हरदेवाचारी नया महंथ रहलन। घर क एकदम कंक-बाँकुड़ा। एहिजे महंथ जी किहें खासु-पियसु आ संसकीरित पढ़सु। मधिमा पढ़ि के अछर कट्टू हो गइल रहलन। पुरुब जनम के करम कमाई कि महंथी हाथ लागि गइलि। खखाइल रहलन, हवके क मोंका पा गइलन। गहुँवन का मरला डोंड़ के टीका दिहल रहे। डेढ़ सइ बिगहा धान-चइती क नभ सुहेल खेत। पयदा पूरा होखे बाकी ओतना से ठाकुरबारी क खरचे ना चले। बखारि आ खजाना का धन में मूँस लागि गइल त अँटे कइसे ?

बुढ़वा महंथ का मुवला पर बसमतिया का घर क मानि-बीयरि वंद भइल त नयका महंथ जी का गाँव क सूमि खोदि के तइयार हो गइलि।

दरार फाटल धान का करइल खेत में पानी क थाह ना लागे। रोहुँड़ा पक्का पिटाये लागल आ रेहन कवाला किनाये लागल। भाईन क बियाह ना होत रहे तहां तिलकहरू दुवार खांचे लगलन।

असाढ़ चढ़ते खेदू राय वेमार परलन। पहिले त मियादी बोखार धइलसि। पाछे ले सिरिहिनी हो गइलि। दावा-दरपन क कवनो इंतिजाम ना रहे। मरवाड़ी-असपताल आ आउर बैद का खैराती दवाखाना से अपने टहरि-घूमि के दवाई ले आवसु। पाछे चलि के पवरुख थाकि गइल त के ले आवे ? नेम से दवाई ना भइला से बेमारी बेकाबू होखे लागलि। चतुरभुज दास ब्रह्मचारी कवे रहसु त खेदू क कुछ खबरि लेसु। समय से सुवधान पानी दुलम हो गइल। दूसर सेवा करे का पंजरा के जाला ?

सावन चढ़ते हरदेवाचारी रोपनी कराबे ददुरा आ महिला चलि दिहलन, ओनहीं उनके पूरा महीना बीति गइल। पचासी बिगहा जमिनि त खेदू आ परशुराम क माई मीलि के महिले में दिहले रहली। सावन चढ़ते मेघ उमड़ल से बीसन दिन बरिसते रहे। खेदू के रहे खातिर बुढ़वा महंथ क अठइसी वाली कोठरी मिललि रहे। बहुत दिन ले बेमरम्मंत रहला से बरखा भइला पर चूवे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओही कोठरी में एगो झिलिंगा बँसहट पर फटहा टाट क टूक बिछाइ के खेदू परल रहसु। दस्त क बेमारी बिगड़लि त शरीर बेक़ाबू हो गइल। घर का कोना में फराकित होखसु आ बिहान भइला अपनहीं उठाइ के बीगसु।

हरदेवाचारी का कुटी में महिला का गंगाराय आ सतनारायन क लइका लोग रहि के पढ़े। भादो बदी चउथि सनीचर का दिने साँझि का बेरा जब लइका पढ़ि के अइलन त खेदूराय ओह लोग के बोलवलन।

कोठरी में बरखा क पानी चूइ के डबहा लागल रहे। बदुरी आ केशो दादा क दुरगति देखि के रोवें लगलन। खेदू दादा क आँखि भी छलछला के बहि चललि।

दादा का झिलिंगा बँसहट का आराम कुरसी पर ले उठे क सकत न रहल। टाट, बँसहट खटिया आ पानी मेले मइला चफनल-उतिराइल रहे। बदुरी-केशो मीलि के कोठरी साफ कइलन आ दादा क लूगा-कपड़ा बदलवा के फिचलन जा। मेंटा में पानी धइ के ऊ लोग अपना डेरा में चलि गइलन।

पहर रात गइला बरखा नधियाइल आ गरजे-तड़पे लागल। कोठरी में चिराग तक ना रहल। भादो क अन्हरिया अइसनि कि लात तर क ना सूझे। खेदू दादा का आगा त अइसहीं अन्हार छवले रहल। जेनिये ताकसु अन्हारे अन्हार! सभ ओरि क डहरि त बंद हो चुकलि रहली स। ठाकुर जी का नाँव पर खेदू क कान कटाइल आ उनका के दागि के साँढ़ बनावल गइल। अब ठाकुरो जी आँखि मूदि देले रहलन।

महंथ-पुजारी का हलुवा पूड़ी उड़त रहे आ खेदू झिलिंगा पर झंखत परमपद क डहरि ताकसु!

राम-जानकी के मूरति धरम क ई तसवीरि देखि के पत्थल हो चुकलि रहे।

बेपरमान जल बरिसल। खेदू भींजत-किकियात रहलन। खटिया तर बयतरनी बहति रहलि। करीब दूइ बजे क बेरा भइल होई। पंजरे पीपर का पेड़ पर उरुवा बोलत रहे। एतने में राति ढरकल जानि के सियारिनि फेंकरलि!

ओने आकाश में जोर से बिजुली चमकलि आ तड़तड़ाइलि। एही घरी ना जाने, नव में कवना दुवारि से खेदूओ का देहि क बिजुली निकलि के अकास का बिजुली में समा गइलि। हिरामन सुगना का उड़ते पिंजड़ा उदास परि गइल।

होत बिहान सभ मठियन में बोलावा गइल कि खेदनदास क 'परमपद' हो गइल बा। घरी दूघरी में सभ साधु भयवद्दी में बटुरइलन। बिमान सजाये लागल। महंथ जी भी दक्खिन ले आ गइल रहलन!

बिमान में चारो ओर लाल-पीयर कागज सटाइल आ पूरा सिंगार भइल। खेदनदास के नहवाइ के एक सइ एगारह क लमहर फटाका लगा दियाइल। गर में फूल क बीसन गजरा आ तुलसी क माला गाँजि दियाइल। फोटो खींचेवाला पहिलहीं ले बोलावल रहे। महंथ जी खेदनदास का परमपद क तसबीरि खिंचवा लिहलन कि मोंका पर काम करी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment; Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon